# नबियों का सरदार(स)

## (आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का पवित्र जीवन)

लेखक
मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद(र)

| | | |
|---|---|---|
| पुस्तक | : | नबियों का सरदार(स) |
| लेखक | : | मिर्ज़ा बशीरूद्दीन महमूद अहमद(र) |
| अनुवादक | : | अबदुर रऊफ़ नय्यर |
| पुरूफ़ रीडर | : | शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री व अली हसन एम.ए |
| संख्या | : | 3000 |
| प्रकाशन | : | दिसम्बर 2005 ई. |
| प्रकाशक | : | नज़ारत नशरो इशाअत, क़ादियान । |
| प्रेस | : | फज़ले उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान । |

**ISBN : 81-7912-081-3**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

# आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हालाते ज़िन्दगी

# नबियों का सरदार

ख़ुदा तआला का यह एक बहुत बड़ा निशान और इस्लाम की सच्चाई का एक महान प्रमाण है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन के हालात जितने स्पष्ट हैं किसी और नबी के जीवन के हालात उतने स्पष्ट नहीं । इसमें भी कोई शंका नहीं कि इस विवरण के परिणामस्वरूप हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जितने आरोप लगाऐ गए हैं। उतने आरोप किसी नबी के व्यक्तित्व पर नहीं हुए किन्तु इस में भी शंका नहीं कि इन आरोपों के दूर हो जाने के बाद जिस खुले दिल और नि:स्वार्थता (ख़ुलूस) से एक व्यक्ति मुहम्मद रसुलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के व्यक्तित्व से मुहब्बत कर सकता है । और किसी इंसान के व्यक्तित्व से उतनी मुहब्बत कभी नहीं कर सकता है। क्योंकि जिनके जीवन गुप्त होते हैं उनकी मुहब्बत में विघ्न पड़ जाने का हमेशा डर रहता है । मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जीवन एक खुली पुस्तक थीं । विरोधियों के आरोपों के हल होने के पश्चात कोई ऐसा कोना नहीं रहता जिस पर से मुड़ने के बाद आप के जीवन से संबन्धित एक नया दृष्टिकोण हमारे सामने आ सकता हो, न कोई परत ऐसी शेष रहती है जिसके खोलने के बाद किसी और प्रकार की सच्चाई हम पर प्रकट होती हो। लोगों के मस्तिष्क में आकाशीय पुस्तकों को उचित ढंग से बिठाने के लिये अनिवार्य है कि उसके साथ महान आदर्श भी हो। अत: सबसे महान आदर्श वही हो सकता है जिस पर वह किताब उतरी हुई हो । यह रहस्य बारीक तथा गहरा है और बहुत से धर्मो ने तो इसकी वास्तविकता को समझा ही नहीं। अत: हिन्दु धर्म वेदों को प्रस्तुत करता है, परन्तु वेदों के लाने वाले ऋषियों और मुनियों के इतिहास के संबंध में बिल्कुल ख़ामोश है । हिन्दु धर्म के विद्वान इस की आवश्यकता को आज तक भी नहीं समझ सके । इसी

प्रकार ईसाई, यहूदी विद्वान और पादरी बड़ी बे-बाकी (मूँह फट हो कर) से कह देते हैं कि बनी-इस्राईल के फ़लां नबी में फ़लां दोष था, फ़लां नबी में फ़लां दोष था । वह इस बात को समझ नहीं सकते कि जिस व्यक्ति को अल्लाह तआला ने अपने कलाम (ईश्वरवाणी) के लिये चुना । यदि वह कलाम उसकी इस्लाह नहीं कर सका तो किसी दूसरे की क्या करेगा और यदि वह व्यक्ति सुधार योग्य था ही नहीं तो ख़ुदा तआला ने उसे चुना क्यों ? क्या कारण है कि किसी और को नहीं चुन लिया? आख़िर ख़ुदा तआला के लिये क्या मजबूरी थी ? कि वह ज़बूर के लिये दाउूद को चुनता। वह बनी-इस्राईल में से किसी और व्यक्ति को चुन सकता था। अत: यह दोनों बातें अनुचित हैं। यह ख़्याल कर लेना कि ख़ुदा तआला ने जिस पर कलाम उतारा, वह कलाम उसका सुधार न कर सका या यह ख़्याल कर लेना कि ख़ुदा तआला ने एक एसे व्यक्ति को चुन लिया जो सुधार के योग्य ही नहीं था। यह दोनों बातें बुद्धि के बिल्कुल विरुद्ध हैं । परन्तु फिर भी विभिन्न धर्मो में अपने मूल स्रोत से दूरी के कारण इस प्रकार के ग़लत विचार पैदा हो गए हैंया यूँ कहो कि मनुष्य की बुद्धि की उन्नति के पूर्ण न होने के कारण पुराने ज़माने में इन चीज़ों का महत्व का समझा ही नहीं गया। परन्तु इस्लाम में शुरू ही से इसके महत्व को समझ लिया गया था। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी हज़रत आइशा(र) तेरह चौदह वर्ष की आयू में आप से बियाही गईं और लगभग सात वर्ष तक आपके साथ रहीं। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहांत हुआ उनकी आयु 21 वर्ष की थी । वह पढ़ी लिखी भी नहीं थीं। परन्तु इसके बावजूद यह फ़ल्सफ़ा उनपर स्पष्ट था । एक बार किसी ने आप से प्रश्न किया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ (चरित्र) के संबन्ध में कुछ फ़र्माऐं तो आप ने फ़र्माया

كَانَ خُلُقُه كُلُّهُ القُران

*कान ख़ुलुक़ुहू कल्लुहुल् क़ुर्आन*

(बुख़ारी व अबू-दाऊद बाब फ़ी सलातिल् लैल्)

अर्थात आप के चरित्र का क्या पूछते हो जो कुछ आप कहा करते थे उन्हीं बातों का क़ुर्आन करीम में आदेश है और क़ुर्आन करीम की शाब्दिक

शिक्षा आपके कर्म से भिन्न नहीं हैं। प्रत्येक चरित्र जो क़ुर्आन करीम में बयान हुआ है उस पर आप(स) का चलन था और प्रत्येक कार्य जो आप(स) करते थे उसी की क़ुर्आन करीम में शिक्षा है । यह कैसी लतीफ़ (अच्छी) बात है । ऐसा प्रतीत होता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ इतने विशाल और इतने महान थे कि एक नौजवान लड़की जो पढ़ी लिखी भी नहीं थी। उसके ध्यान को भी उस तक फिराने में सफ़ल हो गए । हिन्दु, ईसाई, यहूदी और मसीही फ़लसफ़ी जिस बात की वास्तविकता को नहीं समझ सके। हज़रत आयशा(र) ने उस बात की वास्तविकता को पा लिया और एक छोटे से वाक्य में आप ने यह लतीफ़ फ़ल्सफ़: बयान कर दिया कि यह किस प्रकार हो सकता है कि एक सत्यवादी और सद्भावक इन्सान दुनिया को एक शिक्षा दे और फिर उस पर अमल न करे अथवा ख़ुद एक सत कर्म करे और दुनिया से उसे छुपाऐ इस लिये तुम्हें मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चरित्र को जानने के लिये किसी इतिहास की आवश्यकता नहीं। वह एक रास्तबाज़ (सत्यवादी) और सद्भावक व्यक्ति थे। जो कहते थे वह करते थे । और जो करते थे वह कहते थे। हमने उनको देखा और क़ुर्आन करीम को समझ लिया और तुम जो बाद में आए हो क़ुर्आन करीम पढ़ो और मुहम्मद रसूलुल्लाह को समझ लो ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ
وَبَارِكْ وَسَلِّمْ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

## मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रकटन के समय मूर्ति पूजा

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस ज़माना में पैदा हुए उस ज़माना के हालात को भी आपके हालात का एक हिस्सा ही समझना चाहिये क्योंकि उन्हीं हालात को अपने समक्ष रखकर ही आप(स) के जीवन के हालात की वास्तविकता को एक व्यक्ति भलि भांति समझ सकता है। आप(स) मक्का मुकर्रमा में पैदा हुए और आप(स) का जन्म सूर्य के हिसाब से अगस्त 570 ई.

बनता है ।(लाईफ़ आफ़ मुहम्मद(स) (मयूर) पृष्ठ 5 प्रकाशन-सन् 1857 ई.)

आप(स) के जन्म पर आप का नाम मुहम्मद(स) रखा गया। जिसका अर्थ प्रशंसा किया गया के हैं । जब आप का जन्म हुआ उस समय सम्पूर्ण अरब देश कुछेक को छोड़ कर मुशरिक (अनेकेश्वरवादी) था । यह लोग अपने आप को इब्राहीम(अ) के वंशज में से मानते थे, और यह भी मानते थे कि इब्राहीम मुशरिक नहीं थे लेकिन इसके बावजूद वह शिर्क करते थे । और दलील यह देते थे कि कुछ लोग उन्नति करते करते ख़ुदा तआला के इतने निकट हो गए हैं कि उनकी सिफ़ारिश ख़ुदा तआला के दरबार में अवश्य क़बूल की जाती है। चूँकि ख़ुदा तआला का वजूद बड़ा महान है उस तक पहुँचना प्रत्येक व्यक्ति का काम नहीं है। कामिल (सम्पूर्ण) व्यक्ति ही उस तक पहुँच सकते हैं । इस लिये साधारण व्यक्तियों के लिये ज़रूरी है कि वह कोई न कोई वसीला (साधन, ज़रिया) बनाएँ । अतः इसी वसीला (साधन) द्वारा ख़ुदा तआला की रज़ामन्दी (सहमति) और सहायता प्राप्त करें। इस अद्भुत अक़ीदा की दृष्टि से वह इब्राहीम(अ) को एकेश्वरवादी मानते हुए भी अपने लिये शिर्क (अनेकश्वरवाद) का रास्ता भी खोल लेते थे। इब्राहीम बड़ा पाकबाज़ था। वह ख़ुदा के पास सीधे पहुँच सकता था। किन्तु मक्का के लोग इस दर्जा के नहीं थे। इस लिये उन्हें कुछ बड़ी हस्तियों को वसीला बनाने की ज़रूरत थी। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये वह उन हस्तियों के बुतों (मूर्तियों) की पूजा करते थे । इस प्रकार वह अपने ख़याल में उनको ख़ुश करके ख़ुदा तआला के दरबार में अपना वसीला बना लेते थे।

इस अक़ीदा (विश्वास) में जो दोष और बे-जोड़ हिस्से हैं। उनको हल करने की ओर उनका ध्यान कभी गया ही नहीं था। क्योंकि कोई एकेश्वरवादी शिक्षक उनको मिला नहीं था। जब किसी क़ौम अथवा जाति में अनेकेश्वरवाद आरम्भ हो जाता है , तो फिर वह बढ़ता ही चला जाता है। एक से दो बनते हैं, और दो से तीन। अतः मुहम्मद रसूलुल्लाह, सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जन्म के समय ख़ाना क़ाबा में (जो अब मुसलमानों की पवित्र मस्जिद है और हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का बनाया हुआ इबादत की जगह है ।) इतिहासकारों के कथनानुसार वहां 360 तीन सो साठ बुत थे । (बुख़ारी किताबुल मज़ाज़ी बाब फ़त्ह मक्का एवं

ज़रक़ानी भाग 2, पृ. 334) मानो क़मरी (चन्द्रमा) महीनों के अनुसार हर दिन के लिये एक बुत था। इन मूर्तियों के अतिरिक्त आस पास के इलाक़ों के बड़े बड़े क़स्बों में बड़ी-बड़ी क़ौमों के केन्द्रों में और भी बुत थे। मानो अरब का चप्पा चप्पा मूर्ति पूजा में लीन था। भाषा की शिष्टता और उसके सुधार का अरब बहुत ध्यान रखते थे। उन्होंने अपनी भाषा को अधिक से अधिक ज्ञानवर्धक बनाने का प्रत्यन किया किन्तु उनके निकट ज्ञान के इससे अतिरिक्त और कोई अर्थ न थे । इतिहास, भुगोल , गणित इत्यादि में से उन्हें किसी का कोई ज्ञान न था। अपितु जंगलों में रहने और उसमें यात्रा करते रहने के कारण खगोल विद्या में बड़े निपूर्ण थे । सारे अरब में एक भी शिक्षा केन्द्र नहीं था । मक्का मुकर्रमा में केवल गिनती के लोग ही पढ़ना लिखना जानते थे। आचरण की दृष्टि से अरब एक अद्भुत एवं प्रतिकूल जाति थी। उनमें कुछ कुछ बहुत ही भयानक पाप पाए जाते थे और कुछ ऐसी नेकियां भी उनमें थीं जो उनकी क़ौम को महानता प्रदान करती थीं ।

## मदिरापान तथा जूआ

अरब शराब के अत्यधिक आदी थे । तथा शराब के नशा में बेहोश हो जाना या बकवास करने लगना उनके निकट बुराई नहीं बल्कि गुण था । एक शरीफ़ व्यक्ति की शराफ़त की निशानियों में से यह भी था कि वह अपने मित्रों तथा पड़ोसियों को बहुत शराब पिलाए । धनि लोगों के लिए दिन में पाँच बार शराब की सभाएँ लगाना अवश्यक था । जुआ उनका क़ौमी खेल था। परन्तु इसको उन्होंने एक कला बना लिया था । वे जुआ इसलिए खेलते थे कि अपने धन को बढ़ाएँ। बल्कि जूए को उन्होंने दान शीलता तथा बड़ाई का साधन बना रखा था। उदाहरण के लिए जुआ खेलने वालों में यह समझौता होता था कि जो जीते वह जीते हुए धन से अपने मित्रों तथा अपनी क़ौम की दावतें करे । युद्धों के अवसर पर जुअे को ही रुपया इकट्ठा करने का साधन बनाया जाता था । युद्ध के दिनों में आजकल भी लॉटरी का रिवाज बढ़ रहा है । परन्तु यूरोप तथा अमरीका के लाटरी बाज़ारों क्रो मालूम होना चाहिए कि इस खोज का श्रय अरबों के सर जाता है । जब कभी युद्ध होता था तो अरब क़बीले आपस में जुआ खेलते थे । तथा जो जीतता था वह जंग के अधिकतर

खर्चे उठाता था । भाव संसार की समृद्धियों तथा आसानियों से वंचित होने का बदला अरबों ने शराब तथा जूए से लिया था ।

## व्यापार

अरब लोग व्यापारी थे । तथा उनके व्यापार के क़ाफ़िले दूर दूर तक जाते थे । एवं सीनिया से भी वे व्यापार करते थे । तथा शाम व फ़िलास्तीन से भी वे व्यापार करते थे । भारत से उनके व्यापारिक संबंध थे ।उनके धनी लोग भारत की बनी हुई तलवारों को विशेष महत्तव देते थे । कपड़ा अधिकतर यमन तथा शाम से आता था । यह व्यापार अरब के शहरों के हाथ में था । शेष अरब, यमन तथा कुछ उत्तरी क्षेत्रों के अतिरिक्त बदवी जीवन व्यतीत करते थे । न उनके कोई नगर थे न उनकी कोई बस्तियाँ थीं । केवल क़बीलों ने देश के क्षेत्र विभाजित कर लिए थे । उन क्षेत्रों में वे चक्कर खाते फिरते थे । जहाँ का पानी समाप्त हो जाता था वहाँ से चल पड़ते थे । और जहाँ पानी मिल जाता था वहाँ डेरे डाल देते थे । भेड़, बकरियाँ, ऊँट उनकी पूँजी होते थे । उनके बाल तथा ऊन से कपड़े बनाते थे । उनकी खालों से ख़ीमे तैय्यार करते तथा जो हिस्सा बच जाता उसे मंडियों में ले जाकर बेच डालते थे ।

## अरब निवासियों के कुछ और हालात तथा चरित्र व स्वभाव

अरब सोने चाँदी से अप्रचित तो नहीं थे किन्तु सोना चाँदी उन्हें बहुत ही कम प्राप्त था। यहां तक कि उनके साधारणजन तथा ग़रीब लोगों में अपने आभूषण कोड़ियों तथा सुगंधित मसालों से बनाए जाते थे। लोग, ख़रबूज़े तथा कक्ड़ियों आदि के बीजों तथा इसी प्रकार की और चीज़ों से वह हार तैयार करते थे। उनकी स्त्रियाँ वह हार पहन कर आभूषणों से बेपरवाह हो जाती थीं। दुराचार व व्यभिचार उनमें बहुत अधिक थी, चोरी कम थी परन्तु डाका बहुत अधिक था। एक दूसरे को लूट लेना वह जातीय अधिकार समझते थे । परन्तु इसके साथ वचन बधता जितनी अरबों में मिलती है उतनी किसी और जाति में नहीं मिलती है। यदि कोई व्यक्ति किसी शक्तिवान आदमी या क़ौम के पास आकर यह कह देता कि मैं तुम्हारी शरण में आ गया हूँ तो उस व्यक्ति अथवा क़ौम के लिये अनिवार्य होता था कि वह उसको शरण दे। यदि

वह क़ौम उसे शरण न दे तो वह सारे अरब में तिरस्कृत समझी जाती थी। कवियों को बड़ी मान्यता प्राप्त थी। मानो वे क़ौम के नेता समझे जाते थे। लीडरों के लिये भाषा की शिष्टता तथा यदि हो सके तो कवि होना अवश्य था। अतिथियों नवाज़ी अपने शिखर पर थी। जंगल में भूला भटका मुसाफ़िर यदि किसी क़बीला में पहुँच जाता और कहता कि मैं तुम्हारा मेहमान आया हुँ तो वह बिना संकोच के बकरे, दुंबे और ऊँठ ज़िबाह कर देते थे। उनके लिये मेहमान के व्यक्तित्व में कोई रूचि नहीं थी। मेहमान का आ जाना ही उनके लिये क़ौम की इज़्ज़त और सम्मान को बढ़ाने वाला था और क़ौम पर फ़र्ज़ हो जाता था कि उसकी इज़्ज़त करके अपनी इज़्ज़त को बढ़ाऐ। औरतों को कोई अधिकार इस क़ौम में प्राप्त नहीं थे। कुछ क़बीलों में यह सम्मान की बात समझी जाती थी कि बाप अपनी बेटी को मार डाले, इतिहासकार यह कथन ग़लत लिखते हैं कि पूरे अरब में लड़कियों को मारने का रिवाज था। यह रिवाज तो स्वभाविक रूप से भी पूरे देश में नहीं हो सकता, क्योंकि यदि सारे देश में यह रिवाज हो जाये तो फिर उस देश की नस्ल किस प्रकार शेष रह सकती है। वास्तव में बात यह है कि अरब और हिन्दुस्तान तथा दूसरे देशों में जहां जहां भी यह रिवाज पाया जाता है। उसकी रूप रेखा यह हुआ करती है कि कुछ परिवार अपने आपको बड़ा समझकर या कुछ परिवार अपने आपको ऐसी मजबूरियों में फंसा देखकर कि उनकी लड़कियों को उनकी शान के अनुसार रिश्ते नहीं मिलेंगे, लड़कियों को मार दिया करते थे। इस रिवाज की बुराई उसके अत्याचार में है न कि इस बात में कि सारी क़ौम में से लड़कियां मिटा दी जाती है। अरबों की कुछ क़ौमों में तो लड़कियों को मारने का तरीका इस प्रकार प्रचलित था कि वह लड़की को जीवित ही दफ़न कर देतें थे। और कुछ में एक इस प्रकार कि उसका गला दबा दिया करते थे। और ढंगों से मार दिया करते थे। अरब असली मां के अतिरिक्त दूसरी मांओं को मां नहीं समझते थे। और उनसे शादियाँ करने में कोई संकोच नहीं करते थे। अत: बाप के मरने के पश्चात कई लड़के अपनी सोतेली माओं से विवाह कर लेते थे। एक से अधिक विवाह करना सामान्य बात थी। विवाह करने के लिये कोई निश्चित आदेश न थे। एक व्यक्ति एक से अधिक बहनों से भी शादी कर लेता था। लड़ाई में भीषण अत्याचार करते थे। जहां द्वेष बहुत

अधिक था। ज़ख्मियों का पेट फाड़कर उनके कलेजे चबा जाते थे । नाक, कान काट देते थे। आंखें निकाल देते थे। ग़ुलाम बनाने का रिवाज बहुत था आस पास के कमज़ोर क़बीलों के व्यक्तियों को पकड़ कर ले आते थे तथा उनको दास बना लेते थे । दास को कोई हक़ प्राप्त न था। प्रत्येक स्वामी अपने दास से जो चाहता व्यवहार करता। उसके विरुद्ध कोई सुनवाई न थी । यदि वह कत्ल भी देता तो उस पर कोई अरोप नहीं आता था । यदि किसी दूसरे व्यक्ति के दास को मार देता तब भी वह मृत्यु की दण्ड से सुरक्षित समझा जाता था तथा मालिक को कुछ उसके बदले में देकर आज़ादी हासिल कर लेता था । दासियों को कामवासना की पूर्ति के लिये स्वामी का कानूनी अधिकार समझा जाता था । दासियों की संतान भी आगे दास ही होती थी । संतान वाली दासियाँ भी दासियाँ ही रहती थी । मानों जहां तक शिक्षा और उन्नति का प्रश्न है अरब लोग बहुत पीछे थे । जहां तक क़ौमों में रहम (दया) सद्व्यवहार का सवाल है अरब लोग बहुत पीछे थे । किन्तु कुछ व्यक्तिगत और बहादुरी के गुण उनमें अवश्य पाये जाते थे और इतने अधिक पाए जाते थे कि शायद ही उस ज़माना में किसी दूसरी जाति में उसका उदाहरण मिल सके ।

## आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जन्म

ऐसे वातावरण में मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पैदा हुए। आप(स)के जन्म से पहले ही आप(स) के पिता जिनका नाम अब्दुल्ला था का देहान्त हो गया । आप(स) को और आप(स) की माँ हज़रत आमना को उनके दादा अब्दुल मुत्लिब ने अपनी कफ़ालत (पालन पोषण) में ले लिया था। अरब के रिवाज के अनुसार आप(स) दूध पिलाने के लिए ताइफ़ के पास रहने वाली एक औरत को दे दिए गये । अरब लोग अपने बच्चों को गांव की औरतों के संरक्षण में कर दिया करते थे । ताकि उनकी भाषा शुद्ध हो जाये और वे स्वस्थ हो जायें अभी आप(स) की आयु छः वर्ष थी कि वह अपने ननिहाल वालों से मिलने गई तथा मदीना और मक्का के मध्य मृत्यू हो गई। वहीं आपको दफ़न कर दिया गया। एक सेविका आपको अपने साथ मक्का लाई और आपके दादा के सुपुर्द कर दिया। आप(स)अभी आठवें वर्ष में थे कि

आप(स) के दादा जो आपके संरक्षक थे स्वर्गवास हो गए। तत्पश्चात आप(स) के चाचा अबुतालिब अपने पिता की वसीयत के अनुसार आप(स) के निगरान बने।

अरब से बाहर जाने का आप को दो तीन बार अवसर प्राप्त हुआ। जिनमें से एक यात्रा आप(स) ने अपने चाचा अबुतालिब के साथ 12 वर्ष की आयु में की जो कि व्यापार के लिये शाम (सीरिया) की ओर गए थे। आप(स) की यह व्यापारिक यात्रा सम्भवत: शाम (सीरिया) के दक्षिण पूर्व के शहरों तक सीमित थी। क्योंकि इस यात्रा में बैतुल्-मुक़द्दस आदि का कोई वर्णन नहीं मिलता है। इसके पश्चात आप(स) जवानी तक मक्का में ही रहे।

## मज्लिस हिलफुल फुज़ूल में आप का सम्मिलित होना

आपका स्वभाव बचपन से ही सोच विचार की ओर रहता था। लोगों की लड़ाईयों तथा झगड़ों मेंआप हस्तक्षेप नहीं किया करते थे अपितु उपद्रवों के दूर कराने में भाग लिया करते थे। अत: मक़्क़ा और उसके आस पास के क़बीलों की लड़ायों से तंग आकर जब मक्का के कुछ नौजवानों ने एक संस्था बनाई। जिस का उद्देश्य यह था कि वह पीड़ित की सहायता करेंगे। इस मज्लिस में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी बड़े उत्साह से शामिल हो गए। इस मज्लिस के सदस्यों ने क़स्में खाईं थी कि:

''वह पीड़ित की सहायता करेंगे तथा उनके अधिकार उनको लेकर देंगे। जब तक कि समुद्र में एक बूँद पानी की मौजूद हैं। यदि वह ऐसा नहीं कर सकेंगे तो वह स्वंय अपने पास से पीड़ित का अधिकार अदा कर देंगे।''*

इस क़सम पर चलने का अवसर लगभग आप के अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं हुआ। जब आप ने नबुव्वत का एलान किया। उस समय सबसे अधिक मक्का के सरदार अबु-जहल ने आप का विरोध किया और लोगों से कहना शुरू किया कि मुहम्मद सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से कोई बात न करे। उनकी कोई बात न माने। प्रत्येक ढ़ंग से उनको ज़लील करे। उस समय एक व्यक्ति जिसने अबु-जहल से कुछ क़र्ज़ा लेना था, मक्का में आया और

---

* *इब्ने हश्शाम भाग 1, पृष्ठ 36*

अबु-जहल ने उसका क़र्ज़ा देने से इन्कार कर दिया। उसने मक्का के कुछ लोगों से इस की शिकायत की। कुछ लोगों ने शरारत से उसे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पता देकर कहा कि उनके पास जाओ। वह इस संबन्ध में तुम्हारी सहायता करेंगे। वे चाहते थे कि या तो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस विरोध के कारण जो साधारणतया मक्का वालों और विशेष कर अबु-जहल की ओर से हो रही थी। उस की सहायता करने से इन्कार कर देंगे और इस प्रकार नऊज़ुबिल्लाह (अल्लाह न करे) अरबों में ज़लील हो जायेंगे तथा क़सम तोड़ने वाले कहलाएँगे या फिर उसकी सहायता के लिए अबु जहल के पास जायेंगे और वह आपको ज़लील करके अपने घर से निकाल देगा। जब वह व्यक्ति मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गया। और उसने अबु-जहल की शिकायत की तो आप तत्काल मैं उठ कर उसके साथ चल पड़े और अबु-जहल के दरवाज़े पर पहुँच कर, उसे बुलाया, अबु-जहल घर से बाहर निकला और देखा वही क़र्ज़ लेना वाला व्यक्ति मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ दरवाज़े पर खड़ा है। आपने उसे उसी समय ध्यानाकर्षित किया कि तुम ने इस का यह हक़ देना है। उसको अदा कर दो। अबु जहल ने चुप चाप उस का हक़ उसे अदा कर दिया। जब शहर के सरदारों ने उसे बुरा भला कहा कि तुम हम से तो यह कहा करते थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़लील करो और उससे कोई सम्पर्क नहीं रखो, परन्तु तुम ने ख़ुद उसकी बात मानी और उसका सम्मान प्रतिष्ठित किया । इस पर अबु जहल ने कहा ख़ुदा की क़सम! यदि तुम मेरी जगह होते तो तुम भी यही करते। मैंने देखा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के दाऐं और बाऐं मस्त ऊँठ खड़े हैं। जो मेरी गर्दन मरोड़ कर मुझे मारना चाहते हैं।

(इब्ने हश्शाम, भाग 1, पृ-1301)

अल्लाह ताला ही बेहतर जानता है कि इस की रिवायत में कोई वास्तविक्ता है या नहीं या उसे वास्तव में अल्लाह ताला ने कोई निशान दिखाना था या केवल हक़ का रौब उस पर छा गया। अतः उसने यह देख कर कि सारे मक्का का निंदित और प्रकोप ग्रस्त इंसान एक मज़लूम की सहायता के जोश बिना किसी दूसरे की सहायता के अकेला मक्का के सरदार के

दरवाज़े पर खड़े हो कर कहता है कि इस व्यक्ति का जो हक़ तुमने देना है। वह अदा कर दो। इस प्रकार हक़ के रौब ने उसकी शरारत की रूह (आत्मा) को कुचल दिया। अत: उसे सच्चाई के आगे सर झुकाना पड़ा।

## हज़रत ख़दीजा(र) से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शादी

जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम 25 वर्ष के हुए। उस समय तक आपकी नेकी और आपके तक़वा (संयम) की प्रसिद्धी फैल चुकी थी। लोग आपकी और उँगलियां उठाते और कहते यह सच्चा इंसान जा रहा है। यह अमानत वाला (ईमानदार) इंसान जा रहा है। यह ख़बरें मक्का की एक धनवती बेवा (औरत) को भी पहुँची। उसने आपके चाचा अबुतालिब से इच्छा प्रकट की कि वह अपने भतीजे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से कहें कि उसकी जो व्यपारिक वस्तु शाम (सीरिया) के व्यापारी क़ाफ़ले के साथ जा रही हैं । वह उसका संरक्षण अपने हाथ में ले लें। अबु तालिब ने इस का आप से वर्णन किया तथा आपने इस बात को स्वीकार कर लिया । इस यात्रा में आप को बड़ी सफ़लता हुई आप आशा से भी अधिक लाभ के साथ लौटे। ख़दीजा(र) ने यह अनुमान लगाया कि यह लाभ केवल मंडियों की अवस्था के कारण नहीं अपितु अमीर काफ़ला की नेकी और दयानत के कारण हैं। उसने अपने दास मैसर से जो आप के साथ थे, आपके विषय में पूछा । उसने भी आपके अनुमान को उचित ठहराया और बताया की यात्रा में जिस दियानत दारी और भलाई के साथ आपने काम किया है। वह केवल आपका की काम था। इस बात का हज़रत ख़दीजा(र) के स्वभाव पर विशेष प्रभाव पड़ा। यद्यापि उस समय आप की आयु चालीस थी। उन्होंने अपनी एक सहेली को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास भिजवाया। ताकि पता करे कि आप उनके साथ शादी करने के लिये राज़ी हैं या नहीं। वह सहेली आपके पास आई और उसने आपसे पूछा कि आप शादी क्यों नहीं करते? आप ने कहा कि मेरे पास कोई अर्थ नहीं है। जिस से मैं शादी करूँ। उस सहेली ने कहा यदि यह मुश्किल दूर हो जाए। एक शरीफ़ अमीर औरत से आपकी शादी हो जाये जो फ़िर? आपने फ़र्माया वह कौन औरत हैं ? उसने कहा ख़दीजा(र)। आप(स)

ने फ़र्माया मैं उस तक किस तरह पहुँच सकता हूँ? उस पर उस सहेली ने कहा यह मेरे उपर रहा। आप ने फ़र्माया मुझे मंज़ूर है। तब ख़दीजा(र) ने आप के चाचा के द्वारा शादी का फैसला पक्का किया और आपकी शादी हज़रत ख़दीजा(र) से हुई। एक दरिद्र व अनाथ नौजवान के लिये दौलत का यह पहला दरवाज़ा खुला। परन्तु उसने इस दौलत का जिस प्रकार प्रयोग किया वह सारी दुनिया के लिये नसीहत देने वाली घटना है।

## दासों की आज़ादी और ज़ैद(र) का वर्णन

आप की शादी के पश्चात जब हज़रत ख़ुदीजा(र) ने महसूस किया कि आप का संवेदनशील मन ऐसे जीवन में कोई आनंद प्राप्त नहीं करेगा कि आप की बीवी धनवती हो और आप उसके मोहताज हों। अतः आपने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि मैं अपना माल और अपने दास आपकी सेवा में प्रस्तुत करना चाहती हूँ। आप(स) ने कहा, ख़दीजा(र) क्या सचमुच ? जब उन्होंने पुनः वैसे ही कहा, तो आपने फ़र्माया, मेरा पहला कार्य यह होगा कि मैं दासों को आज़ाद कर दूँ। अतः आपने उसी समय ख़ुदीज(र) के दासों को बुलाया और फ़र्माया तुम सब लोग आज से आज़ाद हो और माल का अधिकतर भाग ग़रीबों में बांट दिया। जो दास आपने आज़ाद किये, उनमें एक दास 'ज़ैद' नाम का था। वह दूसरे दासों से अधिक बुद्धिमान तथा होशियार था। क्योंकि वह एक शरीफ़ और माननीय परिवार का लड़का था। जिसे बचपन में डाकू उठाकर ले गए थे। वह बिकता बिकाता मक्का में पहुँचा था। इस नौजवान ने अपनी बुद्धिमता और चातुर्य से इस बात को समझ लिया कि आज़ादी की उपेक्षा इस व्यक्ति की दासता अच्छी है। जब आपने ग़ुलामों को आज़ाद किया, जिन में ज़ैद(र) भी इस पर ज़ैद(र) ने कहा कि आप मुझे आज़ाद करते हैं परन्तु मैं आज़ाद नहीं होता। मैं आपके साथ ही रहना चाहता हूँ। अतः वह आपके साथ रहे। दिन प्रति दिन वह आप की मुहब्बत में बढ़ता ही चला गया। वह चूँकि एक मालदार परिवार के लड़के थे। उसके बाप और चाचा डाकूओं के पीछे पीछे अपने बच्चे को तलाश करते हुए निकले। अन्ततः उन्हें मालूम हुआ कि उनका लड़का मक्का में है। अतः वह मक्का में आए और पता लेते हुए मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम की मज्लिस में पहुँचे और आप से कहा कि आप हमारे बच्चे को आज़ाद करदें और जितना रूपया चाहें ले लें। आपने फ़र्माया ज़ैद को तो मैं आज़ाद कर चुका हूँ और वह बड़ी ख़ुशी के साथ आप के साथ जा सकता है। फिर आपने ज़ैद को बुला कर उनके बाप और चचा से मिलवा दिया। जब दोनो आपस में मिल चुके और आँसूओं से अपने मन की भड़ास निकाल चुके तो ज़ैद के पिता ने उससे कहा कि इस शरीफ़ व्यक्ति ने तुम को आज़ाद कर दिया है। तुम्हारी मां तुम्हारी याद में तड़प रही है। अब तुम जल्दी चलो और उसके मन को शांति व संतुष्टि प्रदान करो। ज़ैद ने कहा कि मां बाप किस को प्यारे नहीं होते। मेरा मन भी उस प्रेम से विरक्त नहीं है। परन्तु मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत मेरे दिल में इतना प्रवेश कर चुकी है कि उसके बाद मैं आप से अलग नहीं हो सकता। मुझे ख़ुशी है कि मैंने आप लोगों से मिल लिया। किन्तु मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत से अलग होना मेरी शक्ति से बाहर है। ज़ैद के बाप और चाचा ने बहुत ज़ौर दिया परन्तु ज़ैद उनके साथ जाने से अस्वीकार कर दिया। ज़ैद की इस मुहब्बत को देखते हुए मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हुए, फ़र्माया, ज़ैद तो पहले ही आज़ाद था परन्तु आज से यह मेरा बेटा है। इस नई स्थिति को देखते हुए ज़ैद(र) के बाप और चाचा वापस अपने देश चले गए। इस प्रकार ज़ैद(र) सदैव के लिये मक्का के हो गए।

## ग़ारे हिरा में ख़ुदा की इबादत करना

जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आयु तीस वर्ष से अधिक हुई तो आप(स) के मन में अल्लाह की इबादत करने की मुहब्बत पहले से अधिक जोश मारने लगी।

अन्ततः आप नगर के लोगों की शरारत और बुराइयों और ख़राबियों से विरक्त हो कर मक्का से दो तीन मील की दूरी पर एक पहाड़ी की चोटी पर, एक पत्थरों से बनी हुई छोटी सी ग़ार (गुफ़ा) में अल्लाह ताला की इबादत करने लग गए। हज़रत ख़दीजा(र) कुछ दिनों के लिये भोजन तैयार करके दे देतीं। वह लेकर आप हिरा(ग़ार) में चले जाते थे तथा इन दो तीन पत्थरों के अन्दर बैठ कर रात दिन ख़ुदा ताला की इबादत में लगे रहते।

पहली क़ुर्आनी वही(ईशवाणी): जब आप चालीस वर्ष के हुए, एक दिन आप ने उसी ग़ार (गुफ़ा) में कश्फ़ी नज़्ज़ारा (दिव्य दृश्य) देखा (आत्मशक्ति द्वारा गुप्त बातों का ज्ञान) कि एक व्यक्ति आप से संबोधित हो कर कहता है कि '' पढ़ये'' आप ने फ़र्माया कि मैं तो पढ़ना नहीं जानता, इस पर उसने दूसरी तथा तीसरी बार कहा और आख़िर उसने पांच वाक्य आप से कहलावाए,

اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّکَ الَّذِیْ خَلَقَ o خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ o اِقْرَأْ وَرَبُّکَ
الْاَکْرَمُ o الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ o عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَالَمْ یَعْلَمْ o

अपने रब्ब का नाम ले कर पढ़ जिस ने (सारी वस्तुओं को) उत्पन्न किया।

(और जिस ने) मनुष्य को एक ख़ून के लोथड़े से पैदा किया।

(फिर हम कहते हैं कि क़ुर्आन को) पढ़ कर सुनाता रह क्योंकि तेरा रब्ब करीम है (अर्थात् बहुत कृपा करने वाला है)।

वह रब्ब जिस ने क़लम के साथ ज्ञान सिखाया है (और भविष्य में भी सिखाएगा)।

उस ने मनुष्य को वह कुछ सिखाया है जो वह पहले नहीं जानता था।

(सूर:अल्-अलक़ आयत2-6)

यह वह पहली क़ुर्आनी वही है जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल (उतरी) हुई। इस का अभिप्राय यह है कि सारी दुनिया को अपने रब्ब के नाम पर जिसने तुझे और सारी सृष्टि को उत्पन्न किया है पढ़कर आकाशीय संदेश सुना दे। वह ख़ुदा जिसने मानव को इस प्रकार उत्पन्न किया है कि उसके मन में ख़ुदा ताला और उसकी सृष्टि के प्रेम का बीज पाया जाता है। हां सब दुनिया को यह संदेश दे दे कि तेरा रब्ब जो सबसे अधिक सम्मान वाला है तेरे साथ होगा वह जिसने दुनिया को ज्ञान सिखाने के लिये क़लम (लेखनी) बनाया है और वह मानव को वह सब कुछ सिखाना चाहता है जो इसे से पहले मानव नहीं जानता था। यह कुछ एक शब्द क़ुर्आन करीम की उन सभी शिक्षाओं पर हावी है जो भविष्य में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम पर नाज़िल (उतरने) होने वाली थी। और दुनिया की इस्लाह (सुधार) का एक महत्वपूर्ण बीज इनके अन्दर पाया जाता था। उनकी व्याख्या तो क़ुर्आन शरीफ़ में यथा स्थान आयेगी। इस अवसर पर इन आयतों का वर्णन इस लिए कर दिया गया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन की यह एक महत्वपूर्ण घटना है और क़ुर्आन करीम के लिये यह आयात आधार हैं । मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जब यह कलाम अवतरित हुआ तो आपके मन में यह भय उत्पन्न हुआ कि क्या मैं ख़ुदा ताला की इतनी बड़ी दायित्व को निभा सकूँगा ? कोई और होता तो घमंड और अहंकार से उसका दिमाग़ फिर जाता कि क़ादर (सर्वशक्तिमान) ख़ुदा ने एक कार्य मुझे सौंपा है । परन्तु मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम काम करना जानते थे। काम पर अहंकार करना नहीं जानते थे। आप इस हल्हाम (ईश्वरीय वाणी) के बाद हज़रत ख़दीजा(र) के पास आए। आप(स) का चहरा उतरा हुआ था और घबराहट भी प्रकट हो रही थी। हज़रत ख़दीजा(र) ने पूछा कि आख़िर हुआ क्या ? आपने सारी घटना सुनाई और फ़र्माया मेरे जैसा कमज़ोर व्यक्ति इस बोझ को किस प्रकार उठा सकेगा? इस पर हज़रत ख़दीजा(र) ने कहा

كَلَّا وَاللّٰهِ مَا يُخْزِيْكَ اللّٰهُ اَبَدًا اِنَّكَ لَتَصِلُ الرَّحِمَ وَتَحْمِلُ الْكَلَّ وَتَكْسِبُ الْمَعْدُوْمَ وَتَقْرِى الضَّيْفَ وَتُعِيْنُ عَلٰى نَوَائِبِ الْحَقِّ.

''कल्ला वल्लाहि मा युख़्ज़ीकल्लाहु अबदन् इन्नक लतसिलुर्रहिम व तह्मिलुल्कल्ल व तक्सिबुल् मादूम व तक़्रियिज़्ज़ैफ़ व तुअीनु अला नवाइबिल् हक़्क़े।'' (बुख़ारी बाब बदऊल् वही)

ख़ुदा की सौगन्ध यह कलाम ख़ुदा ताला ने आप(स) पर इस लिये नहीं उतारा कि आप नाकाम व नामुराद हों और ख़ुदा आपका साथ छोड़ दे। ख़ुदा ताला ऐसा कब कर सकता है । आप तो वह हैं कि रिश्तेदारों के साथ नेक व्यवहार करते हैं और दु:खित और बे असहाय लोगों को बोझ उठाते हैं। वह अख़्लाक (चरित्र) जो देश से मिट चुके थे। वे आपके द्वारा पुन: स्थापित हो रहे हैं । अतिथि की सेवा करते हैं। मुसीबतों में लोगों की सहायता करते हैं।

क्या ऐसे व्यक्ति को ख़ुदा ताला परीक्षा में डाल सकता है? फिर वह आप(स) को अपने चचेरे भाई वर्क़ा बिन नोफ़ल के पास ले गईं। जो ईसाई हो चुके थे। उन्होंने जब यह घटना सुनी तो तत्काल बोल उठे। आप पर वही फिरिश्ता उतरा है जो हज़रत मूसा पर उतरा था। यथा इस्तिसना बाब 18, आयत 18, वाली पैश्गौई (भविष्यवाणी) की ओर इंगित किया। जब इस बात की ख़बर आपके आज़ाद किये हुए दास ज़ैद(र) को मिली जो उस समय 25-30 वर्ष के थे और अली(र) आपके चाचा के बेटे जो कि ग्यारह वर्ष के थे पहुँची, दोनों आप पर तत्काल ईमान ले आए।

हज़रत अबु-बक़र(र) का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाना: अबुबक़र(र) आप के बाल्यावस्था के मित्र जो शहर से बाहर गए हुए थे। जब उन्होंने शहर में प्रवेश किया तो उसके साथ ही उनके कानों में यह आवाज़ें पड़नी शुरू हुईं, तुम्हारा दोस्त दीवाना हो गया है। वह कहता है कि आसमान से फ़िरिश्ते उतर पर मुझ से बातें करते हैं। अबु बक़र(र) सीधे आपके दरवाज़े पर आए और दस्तक दी जब आपने दरवाज़ा खोला तो उन्होंने आपसे वास्तविकता के बारे में पूछा। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने दोस्त को ठोकर से बचाने के लिये विस्तारित चाहा। अबु बक़र(र) ने रोका और कहा कि मुझे केवल इतना उत्तर दीजिये कि क्या आपने यह घोषणा की है कि ख़ुदा के फ़िरिश्ते आप के पास आये और उन्होंने आप से बातें कीं। आप ने फिर विस्तारित बताना चाहा, परन्तु अबु-बक़र(र) ने क़सम देकर कहा कि केवल मेरे इस प्रश्न का उत्तर दीजिये और कुछ न कहें, जब आपने हां में जवाब दिया तो अबुबक़र(र) ने कहा गवाह रहें कि मैं आप पर ईमान लाता हूँ और फिर कहा हे अल्लाह के रसूल ! आप तो प्रमाण देकर मेरे ईमान को कमज़ोर करने लगे थे। जिस ने आप के जीवन को देखा हो क्या उसे आपकी सच्चाई के लिये किसी और दलील की ज़रूरत हो सकती है।

**मोमिनों की छोटी सी जमाअत :** यह एक छोटी सी जमात थी जिससे इस्लाम की बुनियाद पड़ी। एक औरत जो बुढ़ापे की आयू को पहुँच रही थी, एक ग्यारह साल का बच्चा, एक जवान दास आज़ाद किया हुआ, अन्य देश तथा पराये लोगों में रहने वाला जिसके पीछे कोई न था, एक नौजवान दोस्त और एक इल्हाम (ईश्वरीयवाणी) का दावेदार। यह वह छोटा सा क़ाफ़िला

था, जो दुनिया में नूर (दिव्य ज्योति) फैलाने के लिये कुफ़र (अन्धकार) और गुमराही (पथभ्रष्टता) के मैदान की ओर निकला। लोगों ने जब बातें सुनीं तो उन्होंने ठट्ठा किया। एक दूसरे से आखें मिलाईं और आँखों ही आँखों में इशारा कर दिया। यह वह लोग हैं जो मजनून (पागल) हो गए हैं। इनकी बातों से हैरान न हों बल्कि सुनो और मज़ा उठाओ। किन्तु हक़ (सच्चाई) अपनी पूरी शान (कान्ति) के साथ प्रकट होना शुरू हो गया और यसइयाह नबी की पेश्गोई (भविष्यवाणी) के अनुसार'' हुक्म पर हुक्म, हुक्म पर हुक्म। क़ानून पर क़ानून, क़ानून पर क़ानून'' (बाब 28, आयत 13) होता गया। '' थोड़ा यहां थोड़ा वहां'' और '' एक अजनबी भाषा से जिससे अरब पहले अज्ञान थे ख़ुदा ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा अरबों से बातें करनी शुरू कीं। नौजवानों के दिल कांपने लगे। सच्चाई की तलाश करने वालों के शरीर में कपकपी पैदा हुई। उनकी हंसी और ठट्ठे की आवाज़ों में पसंदीदगी और प्रशंसा के शब्द भी धीरे धीरे ऊँचे होने शुरू हुए। दासों, नौजवानों और पीड़ित औरतों का एक जत्था आप के समीप जमा होने लगा। क्योंकि आपकी आवाज़ में औरतें अपने अधिकार की सुरक्षा देख रही थीं। दास अपनी आज़ादी का ऐलान सुन रहे थे और नौजवान बड़ी बड़ी उमीदों और उन्नि के रास्ते खुलते महसूस कर रहे थे।

## मक्का के सरदारों का विरोध करना

जब हँसी और ठट्ठा की आवाज़ों में से भी तारीफ़ और प्रशंसा की आवाज़ें आनी शुरू हो गईं, तो मक्का के सरदार घबरा गए। शासकों के दिलों में भय पैदा होने लगा। वह इकट्ठे हुए उन्होंने परामर्श किये, मन्सूबे बनाए तथा हँसी ठट्ठा के स्थान पर ज़ुल्म, अत्याचार, सख़्ती, और सम्बंध तौड़ने का निर्णय किया और उन पर काम करना शुरू कर दिया। अब मक्का वालों ने गम्भीरता से इस्लाम के साथ टकराने का निर्णय कर लिया था। अब वह पागलपन की घोषणा वास्तव में उन्नति करने वाले नज़र आने लगी। मक्का की राजनीती के लिए भय मक्का की सभ्यता के लिए भय, और मक्के के रस्म व रिवाज के लिए भय दिखाई दे रहा था। इस्लाम एक नया आसमान और एक नई ज़मीन बनाता हुआ नज़र आ रहा था जिस नए आसमान और

ज़मीन के होते हुए अरब का पुराना आसमान और पुरानी ज़मीन स्थापित नहीं रह सकते थे। अब प्रश्न मक्का वालों के लिए हँसी का प्रश्न नहीं रह गया था। अब यह जीवन और मृत्यू का प्रश्न बन गया था। उन्होंने इस्लाम के चैलैंज को स्वीकार किया और उसी भाव के साथ स्वीकार किया जिस भाव के साथ नबियों के शत्रू नबियों के चैलैंज को स्वीकार करते चले आये थे । वह प्रमाण का जवाब प्रमाण से नहीं तीर व तलवार के साथ देने पर राज़ी (तत्पर) हो गए। इस्लाम की भलाई का जवाब उन्होंने अच्छे चरित्र की अपेक्षा गालियों और अपशब्द से देने का निर्णय कर लिया। एक बार फिर दुनिया में कुफ़र और इस्लाम की लड़ाई आरम्भ हो गई। एक बार फिर शैतान की फ़ौजों ने फ़िरिशतों पर हमला बोल दिया। सोचें उन मुठ्ठी भर लोगों की ताकत ही क्या थी कि मक्का वालो के सामने ठहर सकें औरतें निर्लज्जता से क़त्ल की गईं । पुरुष पैर चीर चीर कर मार डाले गए । दास तपती हुई रेत और खुरदरे पत्थरों पर घसीटे गए। यहां तक कि उन के चमड़े इन्सानी चमड़ों से बदल कर जानवरों के चमड़ों जैसे होगए। एक लम्बे समय के पश्चात् जब इस्लाम की विजय के ज़मानों में इस्लाम का झंडा पूर्व पश्चिम में फ़हरा रहा था। एक बार एक प्रथम युग के नये हुए मुसलमान ख़बाब की पीठ नंगी हुई तो उन के साथियों ने देखा कि उन की पीठ का चमड़ा इंसानों जैसा नहीं जानवारों जैसा है। वह घबरा गए और उन से पूछा कि आप को यह क्या बीमारी है? आप हँसे और कहा यह कोई बीमारी नहीं यह यादगार है उस समय की जब अरब के लोग हम नये मुसलमान दासों को मक्का की गलियों में सख़्त खुरदरे पत्थरों पर से घसीटा करते थे और लगातार यह अत्याचार हम पर किये जाते थे। उसे के परिणामस्वरूप मेरी पीठ का चमड़ा इस रूप का हो गया है।

## मुसलमान दासों पर कुफ़्फ़ारे मक्का का अत्याचार

यह ग़ुलाम जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाये थे । कई जातियों के थे । उन में हब्शी भी थे। जैसे बिलाल(र) ,रूमी भी थे जैसे सुहैब(र) ,फिर उन में ईसाई भी थे । जैसे जुबैर(र),और सुहैब(र), मुशरेकीन (मुर्ती पूजा करने वाले) भी थे, जैसे बिलाल(र) और अम्मार(र)। बिलाल(र) को उस के मालिक तपती रेत पर लिटा कर ऊपर या तो पत्थर रख

देते थे या नौजवानों को छाती पर कूदने के लिए खड़ा कर देते। हब्शी नस्ल के बिलाल(र) उम्य्या बिन ख़लफ़ नाम के मक्का के सरदार के दास थे। उम्य्या उन्हें दोपहर के समय गर्मी के मौसम में मक्का से बाहर लेजाकर तपती हुई रेत पर नंगा कर के लिटा देता था और बड़े बड़े पत्थर उन की छाती पर रख कर कहता था। कि लात और उज़्ज़ा (बुतों के नाम) की ख़ुदाई को मानो और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अलग होने की घोषणा करो बिलाल(र) उस के जवाब में कहते 'अहद' ,'अहद' अथार्त ख़ुदा एक है। अल्लाह एक ही है। बार बार आप का यह जवाब सुन कर उम्य्या को और गुस्सा आ जाता और वह आप के गले में रस्सी डाल कर शरारती लड़कों को दे देता कि इन को मक्का की गलियों में से घसीटते हुए ले जाओ। जिस के कारण उन का शरीर ख़ुन से लतपत हो जाता। किन्तु वह फिर भी 'अहद' 'अहद' कहते चले जाते। अर्थात ख़ुदा एक है ख़ुदा एक है। इस के बाद जब अल्लाह ताला ने मुसलमानों को मदीना में अमन दिया जब वह आज़ादी से इबादत करने के योग्य हो गए तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बिलाल(र) को आज़ान देने के लिए नियुक्त कर दिया। जब यह हब्शी दास आज़ान में اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 'अश्हदु अंल्लाइलाह इल्लल्लाहु' के स्थान पर اَسْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 'अस्हदु अंल्लाइलाह इल्लल्लाहु' कहता तो मदीना के लोग जो इन की स्थिति नहीं जानते थे। हँसने लग जाते। एक बार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को बिलाल(र) की आज़ान पर हँसते हुए पाया तो आप लोगों की ओर मुड़े और फ़र्माया तुम बिलाल(र) की आज़ान पर हँसते हो। किन्तु ख़ुदा ताला आसमान पर उस की आज़ान सुन कर प्रसन्न होता है। आप का संकेत इस ओर था कि तुम्हें तो यह नज़र आता है कि यह 'शीन' अथवा 'सीन' नहीं बोल सकता परन्तु 'श' और 'स' में क्या रखा है। ख़ुदा ताला जानता है कि जब तपती रेत पर नंगी पीठ के साथ उस को लिटा दिया जाता थाऔर उस की छाती पर ज़ालिम अपनी जूतियों के साथ नाचा करते थेऔर पूछते थे कि क्या अब भी शिष्टा आई कि नहीं (पाठ मिला के नहीं) तो यह अपनी टूटी फूटी ज़ुबान में 'अहद' 'अहद' कह कर ख़ुदा ताला की तौहीद (एकेश्वरवाद) की घोषणा करते रहते थे। इस प्रकार अपनी वफ़ादारी और अपने तौहीद के अक़ीदा और अपने दिल की मज़बूती व

दृढ़ता का प्रमाण देते थे। अतः उस का 'असहदु' बहुत से लोगों के 'अश्हदु' से अधिक कीमती था। हज़तर अबु-बक़र(र) ने जब उन पर यह अत्याचार देखा तो उन के मालिक को उन की कीमत दे कर आज़ाद करवा दिया। इसी प्रकार और बहुत से ग़ुलामों को हज़रत अबु-बक़र(र) ने अपने माल से आज़ाद करवाया। इन ग़ुलामों में से सुहैब(र) एक मालदार आदमी थे। वह व्यापार करते थे और मक्का के श्रेष्ठ लोगों में से समझे जाते थे किन्तु बावजूद इस के कि वह मालदार भी थे और आज़ाद भी हो चुके थे क़ुरैश उन को मार मार कर बेहोश कर दिया करते थे। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिजरत कर के मदीना चले गए तो आप के बाद सुहैब(र) ने भी यह चाहा कि वह भी हिजरत कर के मदीना चले जाऐं। परन्तु मक्का के लोगों ने उन को रोका और कहा कि जो धन सम्पत्ति तुम ने मक्का में कमाई है तुम उसे मक्का से किस प्रकार बाहर ले जा सकते हो। हम तुम्हें मक्का से बाहर जाने नहीं देंगे। सुहैब(र) ने कहा कि यदि मैं यह सब की सब धन सम्पत्ति छोड़ दूँ तो क्या फिर तुम मुझे जाने दोगे? वह यह बात मान गए और वह अपनी सारी धन सम्पत्ति मक्का वालों को दे कर ख़ाली हाथ मदीना चले गये और रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। आप(स) ने फ़र्माया तुम्हारा यह व्यापार पहले सब व्यापारों से लाभदायक रहा। अर्थात् पहले तुम सामान के बदले रुपया प्राप्त करते थे। किन्तु अब तुम ने रुपया के मुकाबला में ईमान प्राप्त किया है। इन दासों में से अधिकतर तो अन्दर बाहर से ईमान में पक्के रहे परन्तु कुछ एक से ज़ाहिर में कमज़ोरियां में हुईं। अतः एक बार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अम्मार(र) ग़ुलाम के पास से गुज़रे तो देखा कि वह सिस्कियां ले रहे थे और आँखें पोंछ रहे थे। आप(स) ने पूछा कि अम्मार(र) क्या बात है। अम्मार(र) ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! बहुत ही बुरा, वह मुझे मारते गए, और दुःख देते गए ,और उस समय तक नहीं छोड़ा जब तक मेरे मुँह से आप के विरुद्ध और देवताओं की ताईद (समर्थन) की बात नहीं निकलवा ली। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम अपने दिल में क्या महसूस करते थे? अम्मार(र) ने कहा कि दिल में तो अटल ईमान महसूस करता, आप(स) ने फ़र्माया दिल ईमान पर संतुष्ट था तो अल्लाह ताला तुम्हारी कमज़ोरियों को

क्षमा कर देगा। आप के पिता यासिर(र) और आप की माँ सुमय्याह(र) को भी क़ुफ़्फ़ार बहुत दुःख देते थे। अतः एक बार जब कि उन दोनों को दुःख दिया जा रहा था। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन के पास से गुज़रे, आप(स) ने उन की तकलीफ़ों को देखा और आप(स) का दिल दर्द से भर आया। आप उन से सम्बोधित हो कर बोले, صَبراً ال یاسر موعد کم الجنة हे यासिर के ख़ानदान ! सबर (धैर्य) से काम लो। ख़ुदा ने तुम्हारे लिए जन्नत तैयार कर रखी है। (इब्ने हश्शाम जिल्द-1 पृ-110) और यह भविष्यवाणी थोड़े ही दिनों में पूरी हो गई । क्यों कि यासिर(र) मार खाते खाते मर गए । परन्तु उस पर भी क़ुफ़्फ़ार को सबर (धैर्य) न आया और उन्होंने उन की वृद्ध पत्नी सुमय्या(र) पर अत्याचार जारी रखे। अतः अबु-जहल ने एक दिन क्रोध में आकर उन की रान पर ज़ोर से नेज़ा मारा कि जो रान को चीरता हुआ पेट में घुस गया और तड़पते हुए उन्होंने जान दे दी ।

नबिरा(र) एक दासी थी । उन को अबु-जहल ने इतना मारा कि उन की आँखें नष्ट हो गईं । अबु-फ़कीहा(र),सफ़्फ़ान बिन उमय्या के दास थे । उन को उनका मालिक और उस का ख़ानदान गर्म तपती हुई रेत पर लिटा देता था और बड़े-बड़े गर्म पत्थर उन के सीना पर रख देता था। यहां तक कि उन की जीभ बाहर निकल आती । यही अवस्था शेष दासों का भी था । निःसन्देह यह अत्याचार मानवीय शक्ति से बहुत अधिक थे । परन्तु जिन लोगों पर यह अत्याचार किये जा रहे थे वह देखने में तो मानव थे परन्तु अन्दर से फ़िरिश्ते थे। क़ुर्आन केवल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिलों और कर्मो पर नाज़िल (उतरना) नहीं हो रहा था। ख़ुदा उन लोगों के दिलों में भी बोल रहा था और कभी कोई धर्म स्थापित नहीं हो सकता जब तक उस के प्रारम्भिक के मानने वालों के दिलों में से ख़ुदा ताला की आवाज़ सुनाई न दे। जब इंसानों ने उन को छोड़ दिया। जब रिश्तेदारों ने उन से मुँह मोड़ लिया तो ख़ुदा ताला उन के दिलों में कहता था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं तुम्हारे साथ हूँ। अतः यह सब अत्याचार उन के लिए राहत (संतोष) बन जाते थे। गालियां दुआऐं बन कर लगती थीं । पत्थर मरहम हो जाता था। विरोधता बड़ती गई परन्तु ईमान भी साथ साथ उन्नति करता गया । ज़ुल्म अपनी चरम सीमा को पहुँच गया परन्तु श्रद्धा भी अपनी पहली घेराबन्दी से ऊपर निकल गया ।

# आज़ाद मुसलमानों पर अत्याचार

आज़ाद मुसलमानों पर भी कुछ कम अत्याचार नहीं होते थे। उनके वंश के बड़े और बुज़ुर्ग लोग भी उन्हें तरह तरह के कष्ट देते थे। हज़रत उस्मान लगभग चालीस वर्ष के थे और मालदार आदमी थे। इस के बावजूद जब क़ुरैश ने उनपर अत्याचार का फ़ैसला किया तो उनके चाचा हकम ने उन्हें रस्सियों से बांध कर बुहत पीटा। ज़ुबैर बिन अल्-अवाम एक बहुत बहादुर जवान थे। इस्लाम की विजयों के समय वह एक ज़बरदस्त जर्नेल साबित हुए। उनका चाचा भी उनको अत्याधिक कष्ट देता था। चटाई में लपेट देता और नीचे से धुआं देता। ताकि उनका सांस रूक जाये और फिर कहता था कि क्या अब भी इस्लाम छोड़ोगे या नहीं? किन्तु वह उन कष्टों का सहन करते हुए यही जवाब देते कि मैं सच्चाई को पहचान कर उस से इन्कार नहीं कर सकता।

हज़रत अबु-ज़र(र) ग़फ़्फ़ार क़बीला के एक व्यक्ति थे। वहां सुना कि मक्का में किसी ने ख़ुदा ताला की तरफ़ से होने की घोषणा की है। वह वास्तविक्ता के लिए मक्का में आए तो मक्का वालों ने कहा कि मुहम्मद(स) तो हमारा रिश्तेदार है। हम जानते हैं कि उस ने एक दुकान खोल रखी है। परन्तु अबु ज़र(र) अपने इरादा पर डटे रहे और कई उपाय करके अन्ततः रसूलुल्लाह(स) के पास जा पहुँचे। रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की शिक्षा बताई और आप मुसलमान हो गए। आपने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आज्ञा ली कि यदि मैं कुछ समय तक अपनी जाति को अपने मुसलमान होने की ख़बर न दूँ तो कोई बात तो नहीं ? आप ने फ़र्माया कि यदि कुछ दिन चुप रहें तो कोई बात नहीं। इस आज्ञा के साथ वह अपने क़बीला की ओर वापस चले गए और दिल में फैसला कर लिया कि थोड़े समय में हालात ठीक कर लूँगा तो अपने इस्लाम को प्रकट करूँगा। जब वह मक्का की गलियों से गुज़र रहे थे तो उन्होंने देखा कि मक्का के सरदार इस्लाम के ख़िलाफ़ गाली गलोच कर रहे हैं। कुछ दिनों तक अपने अक़ीदा (धारणा) को छुपाए रखने का उनका विचार मन से निकल गया और तत्क्षण उन्होंने इस मज्लिस में यह घोषणा कर दी कि :

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَـهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ.

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह एक है। उसका कोई साथी नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं। दुश्मनों की इस मज्लिस में इस आवाज़ का उठना था कि सब लोग उनको मारने के लिये खड़े हो गए और इतना मारा कि बेहोश हो कर गिर पड़े फिर भी उन्होंने अपना हाथ नहीं रोका और मारते ही चले गए। इतने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा अब्बास(र) जो उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे, वहां आ गए। उन्होंने उन लोगों को समझाया कि अबू ज़र(र) के क़बीला में से होकर तुम्हारे अनाज के क़ाफ़िले आते हैं यदि उस की जाति को क्रोध आ गया तो मक्का भूखा मर जायेगा। इस पर उन लोगों ने उनको छोड़ दिया। हज़रत अबू ज़र(र) ने एक दिन विश्राम किया और दूसरे दिन फिर उसी मज्लिस में पहुँचे। वहां तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरुद्ध बातें करना दैनिक कार्य था। जब यह ख़ाना काबा में गए तो फिर वही बातें हो रही थीं। उन्होंने फिर खड़े हो कर अपने अकीदा-ए-तौहीद (ऐकेश्वर वाद) की घोषणा कर दी। फिर उन लोगों ने मारना पीटना शुरू किया। इस प्रकार तीन दिन तक होता रहा। इस के बाद वह अपने क़बीला की तरफ़ चले गए।

## हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अत्याचार

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वंय भी सुरक्षित न थे। कई प्रकार से आपको दुःख दिया जाता। एक बार आप इबादत कर रहे थे कि लोगों ने आपके गले में पटका डाल कर खींचना आरम्भ कर दिया। यहां तक कि आप की आखें बाहर निकल आयीं। इतने में हज़रत अबूबकर(र) वहां पहुँच गए और उन्होंने आप(स) को यह कहते हुए छुड़ाया कि हे लोगो ! क्या तुम एक व्यक्ति को केवल इस अपराध में क़त्ल करते हो कि वह कहता है कि ख़ुदा मेरा आक़ा (मालिक) है। (बुख़ारी जिल्द-1 पृ-544)

एक बार आप(स) नमाज़ पढ़ रहे थे कि आप(स) की पीठ पर ऊंट की

ओझड़ी लाकर रख दी और उसके बोझ से आप उस समय तक अपना सर नहीं उठा सकेजब तक कि कुछ लोगों ने पहुँच कर इस ओझड़ी को हटा नहीं दिया। (बुख़ारी)

एक बार आप बाज़ार से जा रहे थे कि मक्का के बुरे लोगों की एक पार्टी आप के गिर्द हो गई और पूरा रास्ता थप्पड़ मारती चली गई और कहते कि लोगो यह वह व्यक्ति है जो कहता है कि मैं नबी हूँ।

आपके घर में आस पड़ोस के घरों से निरन्तर पत्थर फ़ेंके जाते थे। रसोई घर में गन्दी चीज़ें फेंकी जाती थीं। जिनमें बकरों ऊँटों की अन्तड़ियां भी होतीं। जब आप नमाज़ पढ़ते तो आप पर मिट्टी धूल डाली जाती। यहां तक कि विवश होकर आप को चट्टान में से निकले हुए पत्थर के नीचे छुप कर नमाज़ पढ़नी पढ़ती थी। किन्तु यह अत्याचार व्यर्थ नही जा रहे थे। शरीफ़ एवं भद्रपुरूष इन को देखते और उनके मन इस्लाम की ओर खिंचे चले जाते थे। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दिन ख़ाना काबा की समीप सफ़ा(नामी) पहाड़ी पर बैठे हुए थे कि अबूजहल आप का सबसे बड़ा शत्रु और मक्का का सरदार वहां से गुज़रा और उसने आपको गालियां देनी शुरू कीं। आप उसकी गालियां सुनते रहे और कोई जवाब नहीं दिया और ख़ामोशी से उठ कर घर चले गए। आप के ख़ानदान की एक दासी इस घटना को देख रही थी। शाम को आपके चचा हम्ज़ा(र) जो कि अत्याधिक निडर और बहादुर व्यक्ति थे, और जिनकी बहादुरी के कारण शहर के व्यक्ति उन से डरते थे, शिकार खेल कर जंगल से वापस आए, कंधे के साथ कमान लटकाए हुए बड़े मान से अपने घर में दाखिल हुए। दासी का मन प्रातः काल की घटना से बड़ा व्याकुल था। वह हम्ज़ा(र) को इस प्रकार देख कर सहन न कर सकी और उसने ताना देकर कहा कि तुम बड़े बहादुर बने फ़िरते हो, हर समय हथियार लगाए रहते हो, परन्तु क्या तुम्हें पता है कि अबूजहल ने सुबह तुम्हारे भतीजे के साथ क्या किया, हम्ज़ा(र) ने पूछा क्या किया ? उसने वह सारी घटना हम्ज़ा (र) को सुनाई यद्यपि हम्ज़ा(र) मुसलमान नहीं थे परन्तु दिल के शरीफ़ थे। इस्लाम की बातें तो सुनी हुई थीं और विश्वसनीय है कि उनके मन पर भी प्रभाव था परन्तु अपने आज़ाद जीवन के कारण इस संबन्ध में ध्यान देने का अवसर ही नहीं मिला था किन्तु इस घटना को सुन कर उन्हें

जोश आ गया । आंखें खुल गईं और उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि एक बहुमूल्य वस्तु उनके हाथों से निकली जा रही है। उसी समय घर से बाहर आए और ख़ाना काबा की ओर गए जो मक्का के सरदारों का परामर्श का विशेष स्थान था। अपनी कमान कंधे से उतारी और ज़ोर से अबू जहल को मारी और कहा कि सुनो ! मैं भी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का धर्म अपनाता हुँ। तुमने उसे प्रातः काल बिना कारण गालियां दीं। इस लिये कि वह आगे से जवाब नहीं देता। यदि बहादुर हो तो अब मेरी मार का जवाब दो। यह घटना इतनी अचानक हुई कि अबू जहल भी घबरा गया। उसके साथी हम्ज़ा(र) से लड़ने के लिये उठे किन्तु हम्ज़ा की बहादुरी और उनके शक्तिशाली जत्था का ध्यान करके अबू-जहल ने सोचा कि यदि लड़ाई हो गई तो उसका परिणाम बहुत ख़तरनाक निकलेगा। अतः कूटनीति से काम लेते हुए उसने अपने साथियों को यह कहते हुए रोक दिया कि चलो जाने दो वास्तव में मैंने उसके भतीजे को बहुत बुरी तरह गालियां दी थीं।

(इब्ने हश्शाम, जिल्द-1 पृः 99, तबरी जिल्द-3 पृः 1187,प्रिंट लंदन)

## इस्लाम का संदेश

जब विरोध बहुत अधिक हो गया और उधर से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा(र) ने मक्का वालों को ख़ुदा ताला का यह संदेश पहुँचाना शुरू किया कि संसार का पैदा करने वाला एक ख़ुदा है। उस के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं। जितने नबी आये हैं वह उस की तौहीद (एकेश्वरवाद) के मानने वाले थे। और अपनी जाति के लोगों को भी इसी शिक्षा की ओर बुलाया करते थे। तुम एक ख़ुदा पर ईमान लाओ। इन पत्थर की मूर्तियों को छोड़ दो कि यह बिल्कुल बेकार हैं। और उनमें कोई शक्ति नहीं कि इनके सामने जो भेंट चढ़ाई जाती हैयदि उन पर मक्खियां आ कर बैठ जायें तो वह उनको उड़ाने की शक्ति भी नहीं रखते, यदि कोई उन पर हमला करे तो वह अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते, यदि कोई इनसे प्रश्न करे तो वह उत्तर नहीं दे सकते, यदि कोई इनसे सहायता मांगे तो यह उसकी सहायता नहीं कर सकते किन्तु ख़ुदा जो एक है वह तो मांगने वालों की आवश्यकता पूरी करता है, सवाल करने वालों को जवाब देता हैसहायता

मांगने वालों की सहायता करता है। और अपने दुश्मनों को पछाड़ता है और अपनी इबादत करने वालों को बड़ी बड़ी उन्नति प्रदान करता है। उससे (ख़ुदा से) प्रकाश आता है जो उपासकों के मन को प्रकाश मय कर देती है । फिर ऐसे ख़ुदा को छोड़कर तुम क्यों बुतों के आगे झुकते हो और अपनी आयु नष्ट करते हो। तुम देखते नहीं कि ख़ुदा ताला की तौहीद को छोड़ कर तुम्हारे विचार भी दूषित और मन भी मलिन हो गये हैं । तुम भिन्न भिन्न वहमों एवं भ्रमों में पड़ गए हो, तुम में हलाल व हराम का फ़र्क नहीं रहा, अच्छे बुरे में तुम फ़र्क नहीं कर सकते, अपनी माताओं का अपमान करते हो, अपनी बहनों और बेटियों पर अत्याचार करते हो, उनके अधिकार उन्हें नहीं देते, अपनी पत्नियों से तुम्हारा व्यवहार अच्छा नहीं, यतीमों (अनाथों) के हक़ मारते हो और विधवाओं से बुरा व्यवहार करते हो दूसरे का अधिकार मार कर अपनी बड़ाई दिखाना चाहते हो। झूठ और धोखा से तुमको लज्जा नहीं, चोरी और डाका से तुम को नफ़रत (घृणा) नहीं, जूआ और शराब तुम्हारा प्रत्येक दिन का काम है। शिक्षा प्राप्त करने और सेवा भाव की ओर कोई ध्यान नहीं। ख़ुदा-ए-वाहिद(एक ईश्वर) की ओर से कब तक आँखें मूँदे रहोगे । आओ और अपना सुधार करो, और ज़ुल्म छोड़ दो । हर हक़दार को उसका हक़ दो। ख़ुदा ने यदि धन-सम्पत दिया है तो देश व जाति की सेवा और कमज़ोरों और ग़रीबों की उन्नति के लिये उसे ख़र्च करो । औरतों की सम्मान करो, और उनके अधिकार दो अनाथों को अल्लाह तआला की अमानत समझो और उनके संरक्षण को उत्तम नेकी समझो । विधवाओं का आसरा बनो, नेकियों और तकवा (भलाई) को स्थापित करो । इन्साफ़ तथा न्याय ही नहीं बल्कि रहम तथा एहसास (उपकार) को अपनी आदत बनाओ । इस दुनिया में तुम्हारा आना व्यर्थ न होना चाहिए । अच्छे चिन्ह अपने पीछे छोड़ो ताकि चिरकाल नेकी का बीज बोया जाए । हक लेने में नहीं बल्कि बलिदान तथा त्याग में वास्तविक सम्मान है । अतः तुम त्याग करो । ख़ुदा के समीप होओ । ख़ुदा के बन्दों के मुकाबले में त्याग का उदाहरण दिखाओ । ताकि ख़ुदा तआला के समीप तुम्हारा अधिकार स्थापित हो । निसन्देह हम कमज़ोर हैं परन्तु हमारी कमज़ोरी न देखो । आसमान पर सच्चाई की हकूमत का निर्णय हो चुका है । अब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के द्वारा न्याय की तुला

रखी जायेगी और इन्साफ़ तथा रहम की हकूमत स्थापित की जायेगी । जिस में किसी पर अत्याचार न होगा । धर्म के सम्बन्ध में हस्तक्षेप न किया जायेगा औरतों तथा दासों पर जो अत्याचार होते रहे हैं वह समाप्त कर दिये जाएँगे । तथा शैतान की हकूमत के स्थान पर एक खुदा की हकूमत स्थापित कर दी जायेगी ।

## कुफ़्फ़ारे मक्का की अबू तालिब के पास शिकायत और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दृढ़ संकल्प

जब (इस्लाम की) यह शिक्षाऐं मक्का वालों को बार-बार सुनाई जाने लगीं और भद्रपुरुषों की रुचि इस्लाम में बढ़ने लगी तो एक दिन मक्का के सरदार इकत्रित हो कर आप(स) के चाचा अबू-तालिब के पास आए तथा उनसे कहा कि आप हमारे रईस(सरदार) हैं तथा आपके कारण हमने आपके भतीजे मुहम्मद(स) को कुछ नहीं कहा। किन्तु अब समय आ गया है कि हम आपके साथ अन्तिम फ़ैसला करें या तो आप उसे समझाऐं और उससे पूछें कि आख़िर वह हम से क्या चाहता है। यदि उसकी इच्छा सम्मान प्राप्ति की है तो हम उसे अपना सरदार बनाने के तैयार हैं। यदि धन की इच्छा रखता है तो हममें से प्रत्येक अपने धन का कुछ भाग उसको देने के लिये तैयार है, यदि उसे विवाह की इच्छा है तो मक्का की लड़कियों में से जो उसे पसन्द है उसका नाम ले, हम उससे उसका विवाह कराने के लिये तैयार हैं। हम उसके बदला में उससे कुछ नहीं चाहते और न किसी बात से रोकते हैं । हम केवल इतनी इच्छा करते है कि वह हमारे बुतों (मूर्तियों) को बुरा कहना छोड़ दे। वह नि:संदेह कहे कि ख़ुदा एक है किन्तु यह न कहे कि हमारे बुत बुरे हैं यदि वह इतनी बात मान जाये तो हमारी उसकी सुलह(संधि) हो जायेगी। आप उसे समझाऐं और हमारा यह प्रस्ताव मानने के लिये तत्पर करें। अपितु फिर दो बातों में से एक होगी या आपको अपना भतीजा छोड़ना पड़ेगा या फिर आप की जाति आपकी सत्ता से विरोध करके आपको छोड़ देगी। अबू-तालिब के लिये यह बात अत्याधिक असम्भव और कठिन थी। अरबों के पास रूपया पैसा तो थोड़ा बहुत ही होता था। उनकी सारी ख़ुशी उनकी रियासत (राज्य एवं सत्ता) में हाती थी। सरदार क़ौम(जाति) के लिये जीवित रहते थे और

जाति (क़ौम) सरदारों के लिये जीवित रहती थी। अबू-तालिब यह बात सुनकर व्याकुल हो गए। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बुलवाया और कहा ऐ मेरे भतीजे ! मेरी जाति मेरे पास आई है और उसने मुझे यह संदेश दिया है कि ....? और साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया है कि यदि तुम्हारा भतीजा इन बातों में से किसी को भी मानने के लिये तैयार नहीं तो फिर हमारी ओर से हर प्रकार का प्रस्ताव प्रस्तुत हो चुका है यदि वह इस पर भी अपने काम से नहीं रूकता तो फिर आप का काम है कि उसे छोड़ दें। यदि आप उसे छोड़ने के लिये तैयार नहीं तो फिर हम आप की रियासत को अस्वीकृत करके आपको छोड़ देंगे। जब अबू-तालिब ने यह बात की तो उनकी आंखों में आंसू आ गए इस पर आप(स) ने फ़र्माया कि हे मेरे चाचा मैं यह नहीं कहता कि आप अपनी जाति को छोड़ दें और मेरा साथ दें आप चाहें तो मेरा साथ छोड़ दें और अपनी जात के साथ मिल जायें, परन्तु मुझे ख़ुदा-ए-वहदहू ला शरीक (वह ख़ुदा जिस का कोई साथी व साझी नहीं) की क़सम है कि यदि (वह) सूर्य को मेरे दाएँ और चन्द्रमा को मेरे बाएँ लाकर खड़ा करदें तब भी मैं अपने ख़ुदा तआला की तौहीद (एकेश्वरता) का प्रचार करने से नहीं रुक सकता, मैं अपने काम में लगा रहूँगा जब तक ख़ुदा मुझे मौत न दे दे। आप अपनी मुक्ति स्वयं सोच लें यह ईमान और शिष्टाचार से भरा हुआ जवाब अबू-तालिब की आंखें खोलने के लिये बहुत था उन्होंने समझ लिया यद्यपि मुझे ईमान लाने की तौफ़ीक़ नहीं मिली। किन्तु इस ईमान का रूप देखने की तौफ़ीक़ मिलना ही सब दौलतों से बड़ी दौलत है, और आपने कहा हे मेरे भतीजे जा और अपना कर्तव्य पूरा करता रह यदि जाति मुझे छोड़ना चाहती है तो नि:संदेह छोड़ दे। मैं तुझे नहीं छोड़ सकता।

(इब्ने हश्शाम भाग प्रथम पृ-88,व तबरी )

## हब्शा(अफ़्रीका) की ओर हिजरत

जब मक्का वालों का अत्याचार अत्यधिक बढ़ गया तो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने साथियों को बुलाया और फ़र्माया पश्चिम की ओर समुद्र के उस पार एक ज़मीन है। जहां ख़ुदा की प्रार्थना के कारण अत्याचार नहीं किया जाता। धर्म बदलने के कारण क़त्ल

नहीं किया जाता। वहां एक न्याय करने वाला राजा है। तुम लोग हिजरत (स्वदेशत्याग) करके वहां चले जाओ। शायद तुम्हारे लिए आसानी का मार्ग खुल जाए । कुछ मुसलमान पुरूष व औरतें आपके आदेश पर एबेसीनिया की ओर चले गए। इन लोगों का मक्का से निकलना कोई साधारण बात नहीं थी। मक्का के लोग अपने आपको ख़ाना काबा का मुतवल्ली (ट्रस्टी) समझते थे और मक्का से बाहर जाना उनके लिये एक असहनीय दु:ख था। यह बात केवल वही व्यक्ति कह सकता था जिसके लिए संसार में कोई ठिकाना न रहा हो अत: इन लोगों के लिये निकलना एक बहुत ही दुखदायी घटना थी। फिर निकलना भी चोरी से पड़ा। क्योंकि वह जानते थे कि यदि मक्का वालों को पता चल गया तो वह हमें निकलने भी नहीं देंगे । और इस कारण वह अपने निकट सम्बन्धियों से भी अन्तिम भेट किये बिना ही जा रहे थे। उनके दिलों की जो अवस्था थी वह तो अपनी जगह, परन्तु उन के देखने वाले भी उनकी तकलीफ से प्रभावित हुए बिना रह न सके । अत: जिस समय यह काफ़िला निकल रहा था । हज़रत उमर(र) जो उस समय क़ाफ़िर और इस्लाम के कट्टर शत्रु थे और मुसलमानों को तकलीफ देने वालों में अग्रणी थे । संयोगवश इस क़ाफ़िले के कुछ लोगों को मिल गये। उनमें एक सहाबिया उम्मे अब्दुल्लाह नाम की भी थी, बन्धे हुए सामान और तैयार सवारियों को जब हज़रत उमर(र) ने देखा तो आप समझ गए कि यह लोग मक्का को छोड़ कर जा रहे हैं। आपने कहा उम्मे अब्दुल्लाह यह तो हिजरत के सामान नज़र आ रहे हैं। उम्मे अब्दुल्ला कहती हैं मैंने जवाब में कहा हां ख़ुदा की क़सम हम किसी और देश में चले जायेंगे क्योंकि तुमने हमको बहुत दु:ख दिये हैं और हम पर बहुत अत्याचार किये हैं । हम उस समय तक अपने देश नहीं लौटेंगे। जब तक ख़ुदा ताला हमारे लिये कोई और रास्ता न खोले। उम्मे अब्दुल्लाह बयान करती हैं कि उमर(र) ने जवाब में कहा अच्छा ख़ुदा तुम्हारे साथ हो । और मैंने उनकी आवाज़ में कंपन महसूस किया जो, उससे पहले मैंने कभी महसूस नहीं की थी फिर वह जल्दी से मुँह फेर कर चले गए और मैंने महसूस किया कि इस घटना से उनका स्वभाव गंभीर रूप से दु:खी हो गया है जब इन लोगों के हिजरत करने की मक्का वालों को सूचना मिली तो उन्होंने उनका पीछा किया,

और समुद्र तक उनके पीछे गए परन्तु यह काफ़िला उनके समुद्र तट तक पहुँचने से पूर्व ही हब्शा की ओर प्रस्थान कर चुका था परन्तु जब मक्का वालों को यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने फ़ैसला ये किया कि एक प्रतिनिधि मण्डल हब्शा के राजा के पास भेजा जाए जो उसे मुसलमानों के विरूद्ध भड़काए और वह मुसलमानों को मक्का वालों को सौंप दे । ताकि वह उन्हें उनकी इस दुष्टता का दण्ड दें कि वह नगर के सरदारों की यातनाओं को सहन न करते हुए, मक्का से क्यों भागे थे। इस प्रतिनिधि मण्डल में अमर बिन आस भी थे जो बाद में मुसलमान हो गए और मिस्र (सीरिया) उन्हीं के हाथों विजयी हुआ था। यह मण्डल हब्शा गया और राजा से मिला तथा वज़ीरों (मंत्रियों) और साहित्यकारों को ख़ूब उत्तेजित किया किन्तु अल्लाह ताला ने राजा के दिल को मज़बूत कर दिया अत: उसने बावजूद लोगों के और दरबारियों के आग्रह करने के उसने मुसलमानों को क़ुफ़्फ़ार को सौंपने से इन्कार कर दिया। जब यह प्रतिनिधि मण्डल असफल वापस आ गया तो मक्का वालों ने इन मुसलमानों को बुलाने के लिये एक और युक्ति सोची कि हब्शा जाने वाले कुछ क़ाफ़िलों में यह ख़बर फैला दी कि मक्का के सब लोग मुसलमान हो गए हैं । जब यह ख़बर हब्शा पहुँची तो अधिकतर मुसलमान ख़ुशी से मक्का की ओर लौट पड़े किन्तु मक्का पहुँच कर उन्हें पता चला कि यह ख़बर धोखा देने के लिए प्रसिद्ध की गई थी। और इस में कोई वास्तवकिता नहीं है। इस पर कुछ लोग तो वापस हब्शा चले गए और कुछ मक्का में ही ठहर गए। इन मक्का में ठहरने वालों में से उस्मान बिन मज़ऊन भी थे जो मक्का के एक बहुत बड़े रईस के बेटे थे। इस बार उनके पिता के मित्र वलीद बिन मुग़ैरा ने उनको पनाह (शरण) दी और वह अमन से मक्का में रहने लगे परन्तु इस समय उन्होंने देखा कि कुछ दूसरे मुसलमानों को दु:ख दिये जाते हैं। और उन्हें कठिन से कठिन यातनाऐं दी जाती हैं। चूंकि वह ग़ैरतमन्द नौजवान थे वलीद के पास गए और उसे कह दिया कि मैं आपकी की शरण को वापस करता हूँ क्योंकि मुझसे यह नहीं देखा जाता कि दूसरे मुसलमान दुख उठायें और मैं आराम में रहूँ अत: वलीद ने घोषणा कर दी कि अब उस्मान मेरी शरण में नहीं ।

इस के पश्चात् एक दिन अरब का प्रसिद्ध कवि लबीद मक्का के सरदारों

में बैठा अपनी कविता सुना रहा था कि उसने एक पद (शैर) पढ़ा कि

وَكُلُّ نَعِيْمٍ لَا مَحَالَةَ زَائِل

*"व कुल्लो नईमिन् ला महालत ज़ाइलू"*

जिसका अर्थ यह है कि प्रत्येक न्यामत (उपकार) अन्ततः मिट जाने वाली है।

उस्मान(र) ने कहा यह झूठ है क्योंकि जन्नत (स्वर्ग) की न्यामतें सदैव रहने वाली हैं। लबीद एक बड़ा आदमी था यह उत्तर सुनकर क्रोध में आ गया और उसने कहा कि हे क़ुरैश के लोगो! तुम्हारे अतिथि को पहले तो इस प्रकार अपमानित नहीं किया सकता था । अब यह नया रिवाज कब से शुरू हो गया है। उस पर एक व्यक्ति ने कहा कि यह एक मूर्ख व्यक्ति है इस की बात की परवाह न करें। हज़रत उस्मान(र) ने अपनी बात पर आग्रह किया और कहा कि मूर्खता की क्या बात है जो बात मैंने कही है वह सच है। उस पर उस व्यक्ति ने उठकर ज़ोर से आपके मुँह पर घूंसा मारा जिससे आपकी आंख निकल गई । वलीद उस मज्लिस में बैठा हुआ था। उस्मान के पिता के साथ उसकी बड़ी गहरी दोस्ती थी। अपने दोस्त के बेटे की यह हाल उससे देखा न गया । परन्तु मक्का के रिवाज के अनुसार जब तक उस्मान उसकी पनाह में नहीं थे तो वह उनका समर्थन भी नहीं कर सकता था । इसलिए वह और तो कुछ कर न सका पर बड़े ही दुःख से उस्मान को संबोधित करते हुए कहा, हे मेरे भाई के बेटे! ख़ुदा की क़सम तेरी यह आंख बच सकती थी जबकि तू एक ज़बरदस्त पनाह में था.। (अर्थात् मेरी पनाह में था) किन्तु तूने स्वयं ही उस पनाह को छोड़ दिया और यह दिन देखा। उस्मान(र) ने जवाब में कहा, जो कुछ मेरे साथ हुआ मैं ख़ुद इसकी इच्छा रखता था, तुम मेरी फूटी हुई आंख का मातम् (रोना-धोना) कर रहे हो जबकि मेरी स्वस्थ आंख इस बात के लिये तड़प रही है कि जो मेरी बहन के साथ हुआ है वह मेरे साथ क्यों नहीं होता। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम् का नमूना मेरे लिये बहुत है, यदि वह तकलीफ़ उठा रहे हैं, तो मैं क्यों न उठाऊँ। मेरे लिये ख़ुदा का समर्थन क़ाफ़ी है।

# हज़रत उमर(र) का इस्लाम स्वीकार करना

उसी समय मक्का में एक घटना घटी जिसने मक्का में आग लगा दी और घटना इस प्रकार घटी कि उमर जो बाद में इस्लाम के दूसरे खलीफ़ा हुए जो इस्लाम के प्रारम्भिक युग में सबसे बड़े शत्रुओं में से थे । एक दिन बैठे बैठे उनके मन में विचार आया कि इस समय तक इस्लाम के मिटाने के लिए बहुत प्रयास हुए हैं परन्तु सफलता प्राप्त नहीं हुई क्यों न इस्लाम के संस्थापक का वध कर दिया जाय और इस फितना (उपद्रव) को सदैव के लिए समाप्त कर दिया जाए । यह विचार आते ही उन्होंने तलवार उठाई और घर से निकले और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तलाश में चल पड़े । मार्ग में उनका कोई मित्र मिला और इस अवस्था में देखकर कुछ हैरान हुआ और आपसे प्रश्न किया उमर कहाँ जा रहे हो ? उमर ने कहा मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को क़त्ल करने के लिए जा रहा हूँ । उस ने कहा तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को क़त्ल करके मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के क़बीला से सुरक्षित रह सकोगे ? ज़रा अपने घर की तो कुछ खबर लो । तुम्हारी बहन और तुम्हारे बहनोई भी मुसलमान हो चुके हैं । यह खबर हज़रत उमर(र) के सिर पर बिजली की तरह गिरी । उन्होंने सोचा मैं तो इस्लाम का सबसे बड़ा शत्रु हूँ और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को मारने के लिए जा रहा हूँ और मेरी ही बहन और बहनोई इस्लाम को स्वीकार कर चुके हैं । यदि ऐसा है तो पहले मुझे अपनी बहन और बहनोई से निपटना चाहिए । यह सोचते हुए अपनी बहन के घर की तरफ चले, जब दरवाज़ा पर पहुँचे तो उन्हें अन्दर से मधुर आवाज़ में किसी कलाम (ईश्वरीय पुस्तक) के पढ़ने की आवाज़ें आईं । यह पढ़ने वाले ख़बाब(र) थे, जो उनकी बहन और बहनोई को क़ुर्आन शरीफ़ सिखा रहे थे । उमर शीघ्रता से घर में प्रवेश कर गए उनके कदमों की आवाज़ सुनकर ख़बाब(र) तो किसी कोने में छुप गए और उनकी बहन ने जिनका नाम फातिमा था क़ुर्आन शरीफ़ के वह पन्ने जो उस समय पढ़े जा रहे थे, छुपा दिए । हज़रत उमर(र) ने कमरे में प्रवेश किया तो क्रोध से पूछा मैंने सुना है कि तुमने धर्म परिवर्तन कर लिया है । और यह कह कर अपने बहनोई पर जो उनके चचेरे भाई भी थे हमला

कर दिया । फातिमा(र) ने जब देखा की उनके भाई उमर(र) उनके पति पर हमला करने लगे हैं तो वह दौड़ कर अपने पति के आगे खड़ी हो गईं । उमर(र) हाथ उठा चुके थे उनका हाथ ज़ोर से उनके बहनोई के मुँह पर पड़ने ही वाला था कि फातिमा(र) के चेहरे पर लगा और फातिमा(र) की नाक से खून के फव्वारे बहने लगे । फातिमा(र) ने मार तो खा ली परन्तु निडरता से कहा उमर यह सच है कि हम मुसलमान हो चुके हैं और याद रखिए हम अपने इस दीन को नहीं छोड़ सकते आपसे जो कुछ हो सकता हो कर लें । उमर(र) एक निडर आदमी थे अत्याचार ने उनकी बहादुरी को मिटा नहीं दिया था । एक स्त्री और फिर अपनी बहन को अपने ही हाथ से ज़ख्मी देखा तो लज्जा और ग्लानि से सिर झुक गया । बहन के चेहरे से खून बह रहा था और उमर(र) के दिल से अब उनका क्रोध दूर हो चुका था ।अपनी बहन से क्षमा माँगने की इच्छा ज़ोर पकड़ रही थी । और तो कोई बहाना न सूजा, बल्कि बहन से बोले अच्छा लाओ मुझे वह कलाम तो सुनाओ जो तुम लोग अभी पढ़ रहे थे । फ़तिमा(र) ने कहा मैं नहीं दिखाऊँगी क्योंकि आप इन पन्नों को नष्ट कर देंगे । उमर(र) ने कहा नहीं बहन मैं ऐसा नहीं करूँगा । फातिमा(र) ने कहा आप तो नजिस (अपवित्र) हैं पहले स्नान करें फिर दिखाऊँगी । उमर(र) अत्यधिक शर्मिन्दगी के कारण सब कुछ करने को तैयार थे । वह स्नान करने को तैयार हो गए । जब स्नान करके वापस आए तो फातिमा ने उनके हाथ पर क़ुर्आन करीम के पन्ने दे दिए । यह क़ुर्आन करीम के पन्ने सूरत ताहा की कुछ आयतें थीं ।

اِنَّنِیۡۤ اَنَا اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعۡبُدۡنِیۡ وَ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِذِکۡرِیۡ ۝ اِنَّ السَّاعَۃَ اٰتِیَۃٌ اَکَادُ اُخۡفِیۡہَا لِتُجۡزٰی کُلُّ نَفۡسٍۢ بِمَا تَسۡعٰی ۝

निस्सन्देह मैं अल्लाह हूँ । मेरे सिवा कोई उपास्य नहीं । अत: तू मेरी ही उपासना कर तथा मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर ।15। निश्चय ही क़यामत (प्रलय) आने वाली है । निकट है कि मैं उसे प्रकट कर दूँ ताकि प्रत्येक जीव को उस के कर्मों के अनुसार प्रतिफल दिया जाए ।16।

हज़रत उमर(र) जब इस आयत पर पहुँचे तो यकायक उनके मुँह से

निकल गया कि यह कैसा अद्भुत तथा पवित्र कलाम है । ख़बाब(र) ने जब यह शब्द सुने तो वह उस स्थान से जहाँ वह छुपे हुए थे बाहर निकल आए और कहा कि ये रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दुआ का फल है । मुझे ख़ुदा की कसम मैंने कल ही यह दुआ करते हुए सुना था कि ईश्वर उमर बिन खत्ताब अथवा अमरो इब्न हश्शाम में से किसी एक को अवश्य इस्लाम की ओर मार्गदर्शन कर । उमर(र) खड़े हो गए और कहा मुझे बताओ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) कहाँ हैं ? जब आपको बताया गया कि आप दारे-अरकम् में रहते हैं तो आप इसी तरह नंगी तलवार हाथ में लिए हुए वहाँ पहुँचे और दरवाज़ा खटखटाया । सहाबा(र) ने दरवाज़ा की दराज़ों से देखा तो उन्हें उमर नंगी तलवार लिए खड़े नज़र आए । वह डरे कि कहीं ऐसा न हो कि द्वार खोल दें तो उमर अन्दर आकर कोई उपद्रव (झगड़ा) करे । परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फर्माया, हुआ क्या, द्वार खोल दो । उमर(र) उसी तरह तलवार लिए अन्दर प्रवेश हुए । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आगे बढ़े और फर्माया उमर किस इरादा से आए हो ? उमर(र) ने कहा हे अल्लाह के रसूल मैं मुसलमान होने आया हूँ । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह सुनकर कहा अल्लाहा अकबर अर्थात अल्लाह सबसे बड़ा है । और आपके सब साथियों ने भी यही शब्द ज़ोर से दुहराए । यहाँ तक कि मक्का की पहाड़ियाँ गूँज उठीं और थोड़ी देर में यह सूचना मक्का में आग की तरह फैल गई और उमर(र) से भी वही पीड़ादायक व्यवहार शुरू हो गया जो पहले दूसरे सहाबा से होता था । मगर वही उमर(र) जो पहले मारने और कत्ल करने में मज़ा लेते थे अब मार खाने और पीटे जाने में आनन्द प्राप्त करने लगे । अत: स्वयं उमर(र) का बयान है कि ईमान लाने के बाद मक्का की गलियों में मारे ही खाता रहता था ।

## मुसलमानों से बाईकाट (पूर्ण रूप से संबंध तोड़ना)

अत: अत्याचार अब सीमा से बाहर हो रहे थे । कुछ लोग मक्का छोड़ कर चले गए थे और जो शेष थे वह पहले से भी अधिक अत्याचारों का शिकार हो रहे थे परन्तु अत्याचारियों के दिल अभी शान्त नहीं हुए थे । जब उन्होंने देखा कि हमारे पिछले अत्याचारों से मुसलमानों के दिल नहीं टूटे, और उनके ईमानों में

कोई कमी नही आयी बल्कि वह सब एक खुदा की ईबादत (उपासना) में औरभी बढ़ गए हैं और बढ़ते ही चले जा रहे हैं । और बुतों से उनकी और अधिक होती ज़ा रही है । तो उन्होंने फिर एक मज्लिसे-शौरा (परामर्श-कमेटी) बनाई और यह निर्णय किया कि मुसलमानों के साथ पूर्ण रूप से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया जाए । कोई व्यक्ति सौदा उनके पास न बेचे । कोई व्यक्ति उनके साथ आदान प्रदान न करे । उस समय मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) कुछ अनुयायियों और बीवी बच्चों के साथ और कुछ ऐसे सम्बंधियों के साथ जो इस्लाम स्वीकार न करने के बावजूद आप का साथ छोड़ने को तैयार न थे, एक अलग स्थान में जो अबु तालिब की जायदाद थी, शरण लेने पर विवश हो गए* । इन लोगों के पास न रुपया था न सामान न खाद्यान्न जिनकी सहायता से वह जीवित रहते । वह उस तंगी की अवस्था में से जिन परेशानियों में से गुज़रे होंगे उनका अनुमान लगाना दूसरे व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं । सम्भवत: तीन वर्ष तक यह स्थिति इसी प्रकार रही । और मक्का के बाईकाट के निर्णय में कोई फ़र्क़ न आया । लगभग तीन वर्षों के बाद मक्का के पाँच भद्र पुरुषों के दिल में इस अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह पैदा हुआ । वह शुअबे अबी तालिब नामक घाटी के द्वार पर गए और महसूरीन (पिछरे हुए लोगों) को आवाज़ देकर कहा कि वह बाहर निकलें कि वह इस बायकाट की सन्धि को तोड़ने के लिए तैयार हैं । अबू-तालिब जो इस लम्बे घेराव और भूख के कारण बहुत कमज़ोर हो रहे थे बाहर आए और अपनी जाति को बुरा भला कहा किउनका यह लम्बा अत्याचार किस प्रकार उचित हो सकता है ? उन पाँच भद्र पुरुषों का विद्रोह शहर में बिजली की तरह फैल गया । और मानवीय प्रकृति ने भी सिर उठाना शुरू कर दिया । भलाई की आत्मा ने फिर एक बार साँस ली । और मक्का के लोग इस शैतानी अत्याचार को तोड़ने पर विवश हो गए । बाईकाट तो समाप्त हो गया परन्तु तीन साल की भूख प्यास ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया था । थोड़े ही दिनों में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की आज्ञाकारी पत्नी हज़रत ख़दीजा(र) इन बाईकाट के दिनों के कष्टों के कारण दिवंगत हो गईं। और इसके एक माह बाद अबू तालिब भी स्वर्ग सिधार गए ।

---

** इब्ने हश्शाम, भाग 1, पृ. 30, ज़रकानी भाग 2, पृ. 279 ।*

# हज़रत खदीजा और अबू तालिब के स्वर्गवास के पश्चात तब्लीग़ में बाधाएँ और आँ हज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की ताईफ़ यात्रा

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा अब अबू तालिब के परामर्श से वंचित हो गए और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की घरेलू ज़िन्दगी की साथी हज़रत ख़दीजा(र) भी आप को छोड़ गईं । इन दोनों के निधन से उन लोगों की हमदर्दी और सहानुभूति भी न रही जो इन दोनों से संबन्ध रखने के कारण अत्याचारियों को अत्याचार से रोकते रहते थे । अबू तालिब की शीघ्र हुई मृत्यु के कारण और अबूतालिब की वसीयत के अनुसार कुछ दिनों तक आपके कट्टर शत्रु, अबू तालिब के छोटे भाई और अबू लहब् ने आपका साथ दिया किन्तु जब मक्का वालों ने उसकी भावनाओं को यह कहकर उभारा के मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तो उन सभी लोगों को जो तौहीदे इलाही (एकेश्वर) को नहीं मानते, मुजरिम और सज़ा के क़ाबिल समझता है, तो अपने बाप दादा के आत्म सम्मान (ग़ैरत) के जोश में अबू लहब ने आपका साथ छोड़ दिया और यह प्रण किया कि वह भविष्य में पहले से भी अधिक विरोध करेगा । तीन वर्षों तक घेराव (मुहासरा) का जीवन व्यतीत करने और रिश्तेदारों से कटे रहने के कारण आपस में रिश्तेदारी के सम्बन्ध भी ठण्डे पड़ गए थे । मक्का वाले भी मुसलमानों से बातचीत न करने के आदी हो चुके थे। इसलिए तब्लीग़ का क्षेत्र भी सीमित हो कर रह गया था । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब यह स्थिति देखी तो आपने फ़ैसला किया कि वह मक्का के स्थान पर ताइफ़ जाकर लोगों को इस्लाम की ओर बुलाऐं । आप यह सोच ही रहे थे कि मक्का वालों के विरोध ने इस इरादा को और भी शक्ति दी । सर्वप्रथम मक्का वाले बात ही नहीं सुनते थे, दूसरे अब उन्होंने ने यह मार्ग अपना लिया कि वह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गलियों में चलने ही नहीं देते थे । जब आप बाहर निकलते, आप के सिर पर मिट्टी फैंकी जाती ताकि आप लोगों से मिल ही न सकें। एक बार इसी स्थिति में वापस लौटे तो आपकी एक पुत्री सिर से मिट्टी झाड़ते हुए रोने लगी । आप(स)

ने फ़र्माया, हे मेरी बच्ची रो नहीं, क्योंकि अवश्य ही ख़ुदा तुम्हारे बाप के साथ है। (सीरत इब्ने हश्शाम भाग प्रथम पृ. 145)

आप(स) कष्टों से घबराते नहीं थे किन्तु मुश्किल यह थी कि लोग सुनते ही नहीं थे । जहां तक कष्टों का प्रश्न है आप(स) उन्हें ज़रूरी समझते थे । बल्कि आपके लिये सबसे अधिक कष्ट का दिन वह होता था जब कोई व्यक्ति आप को कष्ट नहीं देता था । लिखा है कि एक दिन आप मक्का की गलियों में तब्लीग़ के लिये निकले किन्तु उस दिन किसी परामर्श के अनुसार किसी व्यक्ति ने भी आप(स) से बात नहीं की और न ही आप को किसी प्रकार का कष्ट दिया न किसी दास ने और न किसी आज़ाद ने तब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुखी व चिन्तित होकर चुप चाप लेट गए । यहां तक कि ख़ुदा तआला ने आपको तसल्ली दी और फ़र्माया जाओ ! और अपनी क़ौम को फिर और फिर और फिर होशियार करो और उनके ध्यान न देने की परवाह न करो । अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह बात बुरी नहीं लगती थी कि लोग आप(स) को दुख देते थे, परन्तु ख़ुदा का नबी जो दुनिया को हिदायत देने (रास्ता दिखाने) के लिये भेजा गया वह इस बात को कैसे सहन कर सकता था कि लोग उससे बात ही न करें और उसकी बात सुनने के लिये तैयार ही न हों । ऐसी बेकार ज़िन्दगी उसके लिये सबसे अधिक कष्ट दायक थी । अत: आपने दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब आप(स) ताइफ़ की ओर जायेंगे और ताइफ़ के लोगों को ख़ुदा का संदेश पहुँचाऐंगे और ख़ुदा के नबियों के लिये यही मुक़द्दर (निर्दिष्ट) होता है कि वह इधर से उधर विभिन्न जातियों को संबोधित करते फिरें। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ भी ऐसा ही हुआ । कभी वह फिर्औन की जाति को सम्बोधित करते तो कभी इस्हाक़ की जाति को और कभी मदयन के लोगों को । हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को भी तब्लीग़ की इच्छा कभी जलील के लोगों के पास और कभी यरदन पार के लोगों के पास ले गई तो कभी यरोशिलम के लोगों को और कभी दूसरे लोगों को संबोधित करना पड़ा । जब मक्का के लोगों ने बातें सुनने से ही इन्कार कर दिया और यह फैसला कर लिया कि मारो पीटो परन्तु बात बिल्कुल न सुनो तो आप ताइफ़ की ओर चल पड़े। ताइफ़, मक्का से लगभग साठ मील की दूरी पर दक्षिण पूर्व की ओर एक शहर है जो अपने फलों और अपनी खेती के कारण प्रसिद्ध है । यह शहर मूर्ति पूजा में मक्का वालों से कम नहीं था । ख़ाना काबा में रखे हुए

बुतों के अतिरिक्त लात नामी एक प्रसिद्ध बुत ताइफ़ की प्रसिद्धि का कारण था । जिसके दर्शन के लिये अरब वासी दूर-दूर से आया करते थे। ताइफ़ के लोगों की मक्का में बहुत सी रिश्तेदारियां भी थीं । ताइफ़ और मक्का के बीच बहुत से हरे भरे स्थानों पर मक्का वालों की जायदादें भी थीं । जब आप(स) ताइफ़ पहुँचे तो वहां के सरदार आप से मिलने के लिये पहुँचने लगे परन्तु कोई व्यक्ति भी हक़ स्वीकार करने के लिये तैयार न हुआ । लोगों ने भी अपने सरदारों का अनुसरण किया तथा ख़ुदा के पैग़ाम (संदेश) को तुच्छ नज़रों से देखा । दुनिया दारों की दृष्टि में असहाय नबी तुच्छ् ही होता है । वह तो हथियारों और फौजों की आवाज़ सुनना जानते हैं । आपके सम्बन्ध में बातें तो पहुँच ही चुकी थीं। अतः जब आप ताइफ़ पहुँचे और उन्होंने देखा कि बजाये इसके कि आपके साथ कोई फौज और जत्था होता, आप(स) केवल ज़ैद(र) के साथ ताइफ़ के प्रसिद्ध स्थानों में तब्लीग़ करते फिरते हैं तो दिल के अन्धों ने अपने सामने ख़ुदा का नबी नहीं एक तुच्छ और धुत्कारा हुआ व्यक्ति पाया और समझे कि मानों इसको दुख देना और कष्ट पहुँचाना हमारे लिये क़ौम के सरदारों के सामने सम्मान जनक होगा । वह एक दिन इकट्ठे हुए, उन्होंने कुत्ते अपने साथ लिये, लड़कों को उकसाया और पत्थरों से अपनी झोलीयां भर लीं तथा बेदर्दी से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पथराओ करना शुरू किया । वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को धकेलते हुए शहर से बाहर ले गए । आप(स) के पाँव लहूलुहान हो गए और ज़ैद(र) आप को बचाते हुए ज़ख़्मी हो गए परन्तु अत्याचारियों का मन ठण्डा न हुआ, वह आप के पीछे चलते गए और चलते गए, जब तक शहर से बाहर कई मील दूर की पहाड़ियों तक नहीं पहुँच गए, उन्होंने ने आप(स) का पीछा नहीं छोड़ा। जब यह लोग आपका पीछा कर रहे थे तो आप(स) इस भय से कहीं इन पर ख़ुदा का क्रोध न भड़क उठे, आसमान की ओर नज़र उठा कर देखते और बड़ी ही विनती करते हुए दुआ करते । इलाही ! इन लोगों को माफ़ कर यह नहीं जानते कि यह क्या कर रहे हैं । घायल, थके हुए तथा लोगों की ओर से धुतकारे हुए आप(स) ने एक अँगूर के बाग़ की छाया में शरण ली । अंगूरों का यह बाग़ मक्का के दो सरदारों का था । यह सरदार उस समय बाग़ में थे । पुराने और कट्टर दुश्मन जिन्होंने दस साल तक आप के विरोध में अपना जीवन व्यतीत किया था । मानो कि वह उस समय इस बात से प्रभावित हो गए कि एक मक्का के व्यक्ति को

ताइफ़ वालों ने घायल किया है या मानों वह क्षण ही एसा क्षण था जब नेकी का बीज उनके दिलों में सिर उठा रहा था। उन्होंने अँगूरों का एक थाल भरा और अपने दास अद्दास को कहा कि जाओ उन मुसाफ़िरों को दो। अद्दास नैनवा का रहना वाला एक ईसाई था। जब उसने यह अंगूर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने प्रस्तुत किए और आपने यह कहते हुए अंगूरों को लिया कि ख़ुदा के नाम पर जो बहुत ही कृपा करने वाला और बार बार दया करने वाला है, मैं यह लेता हूँ। तो एक बार फिर ईसाइयत की याद उसके मन में ताज़ा हो गई। उसने महसूस (प्रतीत) किया कि उसके सामने खुदा का एक नबी बैठा है, जो इस्राईली नबीयों की भाषा में बातें करता है। उससे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम कहां के रहने वाले हो ? जब उसने कहा नैनवा का तो आपने फ़र्माया। वो नेक मानव यूनुस(अ) जो मती का बेटा था और नैनवा का रहने वाला, वह मेरी तरह ख़ुदा का एक नबी था। फिर आपने उसको अपने धर्म की तबलीग़ शुरू की। अद्दास की हैरानी कुछ ही पलों में आश्चर्य में बदल गई और आश्चर्य ईमान में बदल गया। थोड़ी ही देर में वह अजनबी दास आंसूओं से भरी हुई आंखों के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ लिपट गया और आपके हाथों और पैरों को चूमने लगा। अद्दास की बातों से निश्चिंत हो कर आप(स) अल्लाह तआला की तरफ़ मुख़ातिब हुए, आप(स) ने ख़ुदा से इस प्रकार दुआ मांगी :-

اَللّٰهُمَّ اِلَيْکَ اَشْکُوْ ضُعْفَ قُوَّتِیْ وَقِلَّةَ حِيْلَتِیْ وَهَوَانِیْ عَلَى النَّاسِ يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَنْتَ رَبُّ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ وَاَنْتَ رَبِّیْ اِلٰى مَنْ تَکِلُنِیْ اِلٰى بَعِيْدٍ يَتَجَهَّمُنِیْ اَمْ اِلٰى عَدُوٍّ مَلَکْتَهٗ اَمْرِیْ اِنْ لَمْ يَکُنْ بِکَ عَلَیَّ غَضَبٌ فَلَا اُبَالِیْ وَلٰکِنْ عَافِيَتُکَ هِیَ اَوْسَعُ لِیْ اَعُوْذُ بِنُوْرِ وَجْهِکَ الَّذِیْ اَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَصَلَحَ عَلَيْهِ اَمْرُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ مِنْ اَنْ تُنَزِّلَ بِیْ غَضَبَکَ اَوْ يَحُلَّ عَلَیَّ سَخَطُکَ لَکَ الْعُقْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِکَ.

(सीरत इब्ने हश्शाम जिल्द अव्वल पृ. 147)

अर्थात् हे मेरे रब्ब ! मैं तेरे ही पास अपनी कमज़ोरियों और अपने सामानों की कमी और अपने लोगों की नज़रों में अपने तुच्छ होने की शिकायत करता हूँ । लेकिन तू ग़रीबों और कमज़ोरों का ख़ुदा है और तू मेरा भी ख़ुदा है । तू मुझे किसके हाथों में छोड़ेगा । क्या अजनबियों के हाथों में जो मुझे इधर उधर धकेलते फिरेंगे या उस दुश्मन के हाथ में जो मेरे देश में मुझ पर आधिपत्य रखता है । यदि तेरा ग़ज़ब (क्रोध) मुझ पर नहीं तो मुझे इन दुश्मनों की कोई चिन्ता नहीं । तेरा रहम मेरे साथ है । और तेरी सुरक्षा मेरे लिये बहुत बड़ी है । मैं तेरे चेहरा की रोशनी में शरण चाहता हूँ । यह तेरा ही काम है कि तू अन्धेरा दुनिया से भगा दे और इस संसार तथा दूसरे संसार में अमन प्रदान कर । तेरा क्रोध और तेरी ग़ैरत मुझ पर न भड़के । तू यदि नाराज़ भी होता है तो इस लिए कि फिर खुशी प्रकट करे और तेरे अतिरिक्त कोई वास्तविक शक्ति और वास्तविक शरण का स्थान नहीं ।

यह दुआ मांग कर आप(स) मक्का की ओर चल पड़े । परन्तु बीच में 'नख़ला' नामक स्थान पर ठहर गए । कुछ दिन वहां आराम करके फिर मक्का की ओर चल पड़े परन्तु अरब प्रथा के अनुसार लड़ाई के कारण मक्का छोड़ देने के बाद आप मक्का के मूल निवासी नहीं रहे थे । अब मक्का वालों को अधिकार था कि यह आप(स) को मक्का में आने देते या न आने देते । इसलिए आप(स) मक्का के एक सरदार मत्अम् बिन अदी को संदेश भेजा कि मैं मक्का में प्रवेश करना चाहता हूँ क्या तुम अरब की प्रथा अनुसार मुझे प्रवेश होने की आज्ञा देते हो ? मत्अम बावजूद कट्टर शत्रु होने के एक शरीफ़ व्यक्ति था । उसने उसी समय अपने बेटों और रिश्तेदारों को साथ लिया और हथियार धारण करके काबा के सहन् में जा खड़ा हुआ और आपको संदेश भेजा कि वह आपको मक्का में आने की आज्ञा देता है । आप मक्का में दाख़िल हुए । काबा का तवाफ़ (चक्कर) किया और मत्अम अपनी औलाद और रिश्तेदारों के साथ तलवार खींचे हुए आप को आपके घर तक पहुँचाने के लिये आया । यह शरण नहीं थी क्योंकि इसके बाद बराबर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अत्याचार होते रहे और मत्अम ने आप(स) की कोई सुरक्षा नहीं की बल्कि यह केवल मक्का में प्रवेश पाने की कानूनी आज्ञा थी ।

आपकी इस यात्रा के सम्बन्ध में दुश्मनों को भी मानना पड़ा है कि इस यात्रा में आप(स) ने ऐसे त्याग और दृढता का आदर्श दिखाया है जिसका क़ोई उदाहरण नहीं है । सर विल्यम मयूर अपनी पुस्तक ''मुहम्मद'' में लिखते हैं कि:-

*''मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के ताइफ़ के सफ़र में एक शानदार और बहादुरी का रंग पाया जाता है एकेला व्यक्ति जिसकी अपनी क़ौम ने उस को तुच्छ भाव से देखा और उसे धुतकार दिया। ख़ुदा के नाम पर बहादुरी के साथ नैनवा के यूना: नबी की तरह एक बुतपरस्त शहर को तौब: की और ख़ुदाई मिश्न की दावत देने के लिये (निकल पड़ता है) यह बात उसके उस ईमान पर कि वह अपने आप को पूर्णरूप से ख़ुदा की तरफ़ से समझता था एक बहुत तेज़ रोशनी डालता है ।''*

(दी लाइफ़ आफ़ मुहम्मद(स) पृ. 117)

मक्का ने फिर कष्ट देने और हंसी ठठ्ठा करने के द्वारा खोल दिए । फिर ख़ुदा के नबी के लिये उसका देश उसके लिये नर्क का नमूना बनने लगा । परन्तु इतना होने पर भी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहादुरी से लोगों को ख़ुदा की शिक्षा पहुँचाते रहे । मक्का के ग़ली कूचों में ''ख़ुदा एक है, ख़ुदा एक है।'' की आवाज़ें उठतीं रहीं ।'' मुहब्बत से प्यार से भला चाहते हुए, आप मक्का वालों को मूर्ती पूजा के विरुद्ध उपदेश देते रहे । लोग भागते थे तो आप(स) उनके पीछे जाते थे । लोग मूँह फैरते थे तो आप(स) फिर भी बातें सुनाए चले जाते थे । सदाकत (सच्चाई) धीरे-धीरे घर कर रही थी । वह थोड़े से मुसलमान जो हिजरते हब्शा से बचे हुए मक्का में रह गये थे । वह अन्दर ही अन्दर अपने रिश्तेदारों दोस्तों, साथियों और पड़ासियों में तब्लीग़ कर रहे थे । कुछ के दिल ईमान से मुनव्वर (प्रकाशित) हो जाते तो वह खुलकर अपना ईमान प्रकट कर देते थे और अपने भाईयों के साथ मारें खाने, और कष्ट उठाने में शामिल हो जाते परन्तु बहुत थे जिन्होंने रोशनी को तो देख लिया परन्तु उनको उसे मानने की शक्ति नहीं मिली थी। वह उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे । जब ख़ुदा की बादशाहत पृथ्वी पर आए और वह उसमें प्रवेश करें ।

# मदीना के लोगों का इस्लाम क़ुबूल करना

(ताएफ़ से वापस मक्का आने के बाद) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा तआला की ओर से सूचना दी जा रही थी कि तुम्हारी हिजरत करने का समय आ रहा है और आप को यह ज्ञात हो चुका था कि आपकी हिजरत का स्थान एक ऐसा शहर है जिसमें कुएं भी हैं, और ख़जूर के बाग़ भी हैं । पहले आपने सोचा कि वो शहर यमामा है ।

(बुख़ारी बाब हिजरतुन्नबी स.अ.व.)

परन्तु शीघ्र ही यह विचार आपके मन से निकाल दिया गया और आप इस प्रतीक्षा में रहने लगे कि ख़ुदा तआला की पेशगोई (भविष्यवाणी) के अनुसार जो भी शहर मुक़द्दर है वह अपने आप को इस्लाम का गढ़ बनाने के लिये स्वयं प्रस्तुत करेगा । इसी बीच हज का समय आ गया । अरब के चारों ओर से लोग हज के लिये इकट्ठे होने लगे। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी आदत अनुसार के जहाँ कुछ लोगों को इकट्ठा खड़े देखते उनके पास जाकर उन में एकेश्वरवाद का प्रचार करने लग जाते तथा ख़ुदा की बादशाहत की ख़ुशख़बरी देते थे । उन्हें अत्याचार और बदकारी, (व्यभिचार) और दंगा फ़साद तथा शरारतों से बचने का उपदेश देते थे । कुछ लोग आपकी बात सुनते और हैरानी प्रकट करके अलग हो जाते । कुछ बातें सुन रहे होते तो मक्का वाले उनको वहां से हटा देते । कुछ लोग जो पहले से मक्का वालों से बातें सुन चुके होते थे हंसी मज़ाक करके आपसे अलग हो जाते । इसी अवस्था में आप(स) मिना नामक घाटी में फिर रहे थे कि छः सात आदमी जो कि मदीना के थे उन पर आप की नज़र पड़ी । आपने उनसे कहा कि आप किस क़बीला से संबन्धित हैं ? उन्होंने कहा ख़ज़रज क़बीला से । आपने कहा वह क़बीला जो यहूदियों का हलीफ़ (एक दूसरे की सहायता करने के लिये वचन बद्ध) है ? उन्होंने कहा हाँ । आप(स) ने फ़र्माया क्या आप लोग थोड़ी देर बैठ कर मेरी बात सुनेंगे ? उन लोगों ने चूंकि आपके सम्बन्ध में सुना हुआ था और मन में आपके दावा के लिये कुछ दिलचस्पी भी थी, उन्होंने आप की बात मान ली और आप के साथ बैठ कर आपकी बातें सुनने लग गए । आपने उन्हें बताया कि ख़ुदा की बादशाहत निकट आ रही है । अब

बुत दुनिया से मिटा दिये जायेंगे । संसार में तौहीद (एकेश्वरवाद) स्थापित कर दी जायेगी । नेकी व तक़्वा (संयम) एक बार फिर दुनिया में स्थापित हो जाऐंगे । क्या मदीना के लोग इस महान नेअमत (उपकार) को स्वीकार करने के लिये तैयार हैं ? उन्होंने आपकी बातें सुनीं और प्रभावित हुऐ और कहा कि हम आपके उपदेशों को तो स्वीकार करते हैं । दूसरी बात कि मदीना इस्लाम को शरण देने के लिये तैयार है या नहीं। इसके लिये हम मदीना वापस जा कर अपनी क़ौम से बात करेंगे अत: हम दूसरे साल अपनी क़ौम का फैसला आपको बताऐंगे । (इब्ने हश्शाम जिल्द 1, पृ. 150- 156)

यह लोग वापस गए और उन्होंने अपने रिश्तेदारों और दोस्तों में आपकी शिक्षा का प्रचार करना शुरू किया । उस समय मदीना में दो क़बीले औस और ख़ज़रज रहते थे तथा तीन यहूदी क़बीले बनू कुरैज़ा और बनू नज़ीर तथा बनु क़ैनक़ा । औस और खज़रज की आपस में लड़ाई थी । बनू नज़ीर और बनू कुरैज़ा औस के साथ तथा बनू क़ैनक़ा ख़ज़रज के साथ मिले हुए थे। लम्बी लड़ाई के बाद उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा कि हमें एक दूसरे के साथ सुलह (संधि) कर लेनी चाहिए । अन्तत: एक दूसरे के साथ परामर्श करने के बाद यह फ़ैसला हुआ कि अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल जो ख़ज़रज का सरदार था, उसे सारा मदीना अपना बादशाह मान ले । यहूदियों के साथ सम्बन्ध होने के कारण औस और ख़ज़रज तौरात की पेशगोइयां सुनते रहते थे। जब यहूदी अपने दुखों और कष्टों का वर्णन करते तो अन्त में यह कह दिया करते थे कि एक नबी जो मूसा का मसील (स्वरूप) होगा प्रकट होने वाला है । उसका समय निकट आ रहा है। जब वह आएगा, हम एक बार फिर दुनिया पर विजयी हो जायेंगे । यहूद के दुश्मन तबाह कर दिये जायेंगे । जब इन हाजियों से मदीना वालों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में सुना तो आपकी सच्चाई उनके दिलों में घर कर गई । उन्होंने कहा यह तो वह नबी ही ज्ञात होता है जिसकी यहूदी हमें ख़बर दिया करते थे अत: बहुत से नौजवान मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा की सच्चाई से प्रभावित हुए और यहूदियों से सुनी हुई पेशगोइयां (भविष्यवाणियां) उनके ईमान लाने में सहायक सिद्ध हुईं । अत: अगले वर्ष फिर मदीना के लोग हज के लिये आये । इस बार बारह आदमी मदीना से यह निश्चय करके चले कि ये मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के

दीन (धर्म) में दाखिल हो जायेंगे । उनमें से दस ख़ज़रज क़बीला के और दो औस के थे । वह आपसे मिले और उन्होंने आपके हाथ पर इस बात का प्रण लिया कि वह ख़ुदा के अतिरिक्त किसी और की पूजा नहीं करेंगे, वे चोरी नहीं करेंगे, बदकारी नहीं करेंगे, वह अपनी लड़कियों को कत्ल नहीं करेंगे । वह एक दूसरे पर झूठे आरोप नहीं लगाएँगे । न वे ख़ुदा के नबी की अन्य नेक बातों में नाफ़र्मानी (अवज्ञा) करेंगे । यह लोग वापस गए तो उन्होंने अपनी क़ौम में और भी तेज़ी से प्रचार शुरू कर दिया ।

(इब्ने हश्शाम भाग प्रथम, पृ. 150-156)

मदीना में घरों में से बुत निकाल कर बाहर फैंके जाने लगे । बुतों के आगे सिर झुकाने वाले लोग अब गर्दन उठा कर चलने लगे । अब लोगों के माथे ख़ुदा के अतिरिक्त किसी के सामने झुकने के लिये तैयार न थे । यहूदी हैरान थे कि सैंकड़ों वर्षों की मित्रता और सदियों की तब्लीग़ (प्रचार) से जो तब्दीली (बदलाव) वह उत्पन्न न कर सके इस्लाम ने वह तब्दीली कुछ ही दिनों में पैदा कर दी । तौहीद (एकेश्वरवाद) का उपदेश मदीना वालों के दिलों में घर करता जाता था । एक के बाद दूसरे लोग आते और मुसलमानों से कहते कि हमें अपना दीन सिखाओ, परन्तु मदीना के नये मुसलमान न तो स्वंय इस्लाम की शिक्षा की पूर्ण जानकारी रखते थे और न उनकी इतनी संख्या थी कि वे सैंकड़ों हज़ारों व्यक्तियों को इस्लाम के सम्बन्ध में विस्तार से बता सकें । इसलिये उन्होंने मक्का [illegible] आदमी भिजवाने और मुबल्लिग़ (प्रचारक) की मांग की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुस्अब बिन उमैर(र) नामी एक सहाबी को जो हब्शा की हिजरत से वापस आये थे मदीना में इस्लाम की तब्लीग़ (प्रचार) के लिए भिजवाया हज़रत मुस्अब(र) मक्का से बाहर पहले इस्लामी मुबल्लिग़ थे ।

## अखा

इन्हीं दिनों में ख़ुदा तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भविष्य के लिए फिर एक महत्वपूर्ण सुसंदेश दिया । आप(स) को एक क़श्फ़ (दैव ज्ञान) में बताया गया कि आप यरोशिलम गए हैं और नबियों ने आप के पीछे, आपकी इमामत में नमाज़ पढ़ी है । (इस कश्फ़

को इस्लाम में असा कहते हैं।)

(इब्ने हश्शाम, भाग प्रथम, पृ. 138, ज़रक़ानी भाग प्रथम पृ. 306)

यूरोशिलम का अभिप्राय मदीना था जो भविष्य में ख़ुदा-ए-वाहिद (एक ख़ुदा) की इबादत का केन्द्र बनने वाला था, और आपके पीछे नबियों के नमाज़ पढ़ने का यह अभिप्राय था कि विभिन्न धर्मों के लोग आप(स) के धर्म में दाख़िल होंगे और आप(स) का धर्म विश्वव्यापी हो जायेगा । यह समय मक्का में मुसलमानों के लिये बड़ा ही कठिन था और मुसलमानों पर अत्याचार अपनी चरम सीमा को पहुँच चुका था । इस कश्फ़ का सुनाना मक्का वालों की हंसी और उपहास का एक और नया कारण बन गया । और उन्होंने प्रत्येक मज्लिस (बैठक) में आपके इस कश्फ़ पर व्यंग करना शुरू कर दिया परन्तु कौन जानता था कि नए यूरोशिलम का निर्माण शुरू हो गया है । पूर्व व पश्चिम की क़ौमे ख़ुदा के आख़री नबी की आवाज़ सुनने केलिये कान लगाए ध्यान पूर्वक खड़ी थीं।

## रुमियों के ग़ल्बा की पेशगोई अर्थात् रुमियों के विजयी होने की भविष्यवाणी

इन्हीं दिनों में क़ैसर (रोम) तथा क़िसरा (ईरान) में ख़तरनाक जंग हुई तथा क़िसरा (ईरान) को विजय प्राप्त हुई । शाम (सीरिया) में ईरानी फ़ौजें फैल गईं । यूरोशिलम तबाह कर दिया गया । यहां तक कि ईरान की फ़ौजें यूनान और एशियाए कोचक तक पहुँच गईं । तथा बासफ़ोर्स के मुहाना पर ईरानी जरनैलों ने क़ुस्तुनतुनिया से दस मील की दूरी पर तम्बू गाड़ दिये । इस घटना पर मक्का वालों ने खुशियां मनाईं और कहा कि ख़ुदा का फ़ैसला प्रकट हो गया है । बुतों की पूजा करने वाले ईरानियों ने अहले किताब ईसाइयों को पराजित कर दिया है । उस समय आप(स) को ख़ुदा तआला की ओर से बताया गया कि :-

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ○ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ○ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ. لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۚ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ○ بِنَصْرِ اللّٰهِ ۚ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ○ وَعْدَ اللّٰهِ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ○

*''रूमी अरब के निकटवर्ती देश में पराजित होंगे परन्तु अपनी पराजय के बाद फिर उनको विजय प्राप्त होगी, कुछ सालों के अन्दर-अन्दर इस घटना से पहले भी अल्लाह का शासन होगा और बाद में भी उसी का शासन रहेगा । जब वह विजय अथवा फ़तह का दिन आयेगा उस समय मोमिनों को भी अल्लाह की सहायता से बहुत प्रसन्नता होगी। अल्लाह जिनको चुन लेता है उसकी सहायता करता है । वह बड़ी शान वाला और बड़ा मेहरबान एवं दयावान है । यह उस ख़ुदा का वादा है जो अपने वादों को बदला नहीं करता, परन्तु बहुत से लोग ख़ुदा की क़ुदरतों (शक्तियों) को समझते नहीं हैं ।''* (आयत 3-15, सूर: रूम )

कुछ ही वर्षों पश्चात् ख़ुदा ने यह भविष्यवाणी (पेशगोई) पूरी कर दी । एक ओर रूमियों ने ईरानियों को पराजित करके अपने देश को आज़ाद करा लिया तथा दूसरी ओर जैसा कि कहा गया था उन्हीं दिनों में मुसलमानों को मक्का के लोगों के खिलाफ़ फ़तूहात (विजयें) प्राप्त होनी शुरू हुईं । जबकि मक्का के लोग यह समझ रहे थे कि उन्होंने लोगों को मुसलमानों की बातें सुनने से रोक कर तथा उन पर अत्याचार करने के लिए आमादा (तत्पर) करके इस्लाम का ख़ात्मा कर दिया है । ख़ुदा का कलाम लगातार इस्लाम की फतूहात (कामयाबियों) की ख़बरें दे रहा था और बता रहा था कि मक्का वालों की तबाही की घड़ी निकट से निकटतम होती जा रही है ।

अत: उन्हीं दिनों में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूरी शक्ति से ख़ुदा तआला की इस वही (भविष्यवाणी) की घोषणा कर दी कि :-

وَقَالُوْا لَوْ لَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ اَوَلَمْ تَاْتِيْهِمْ بَيِّنَةُ مَافِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ○ وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيَاتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ○ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ○

*''मक्का वाले कहते हैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अपने रब्ब के पास से कोई निशान क्यों नहीं लाता ? क्या पहले नबियों की पेशगोइयां जो उसके हक़ में हैं उसके लिये काफ़ी निशान नहीं हैं । यदि हम मक्का वालों को पूरी तब्लीग़ (प्रचार) किये बिना पहले ही हलाक (तबाह) कर देते तो मक्का वाले कह सकते थे कि हे हमारे रब्ब। तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम ज़लील एवं अपमानित तथा निन्दित होने से पूर्व तेरी शिक्षा का अनुसरण करते । तू कह दे प्रत्येक व्यक्ति को अपने समय की प्रतीक्षा करनी पड़ती है । अत: तुम भी उस समय का इन्तिज़ार करे । जब सबूत पूरे हो जायेंगे । तब तुम अवश्य ही जान लोगे कि सीधे रास्ता पर और ख़ुदा तआला की हिदायत पर कौन चल रहा है ।''*

(सूर: ताहा, आयत 134-136)

प्रतिदिन ख़ुदा की नई वही (भविष्यवाणी) उतर रही थी और प्रति दिन इस्लाम की उन्नति और कुफ़्फ़ार (मक्का वाले जिन्होंने इस्लाम को नहीं माना) की तबाही की खबरें दे रही थी । मक्का वाले कभी अपनी ताक़त और वैभव को देखते तथा दूसरी ओर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके साथियों की कमज़ोरी को देखते थे और फ़िर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वही में ख़ुदा तआला की सहायताओं और मुसलमानों की सफलताओं की खबरें पढ़ते थे तो हैरान हो कर सोचते थे कि या तो वे पागल हो गए हैं या मुहम्मद(स) 'रसूलुल्लाह' पागल हो गया है । मक्का वाले तो यह आशा लगाए हुए थे कि हमारे अत्याचरों और हमारी यातनाओं के कारण मुसलमानों को मायूस (निराश) हो कर हमारी ओर आ जाना चाहिये तथा मुहम्मद(स) (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को स्वंय भी और उनके साथियों को भी उनके दावा में शंकाएं पैदा हो जानी चाहिये, परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह घोषणा कर रहे थे :-

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ○ وَمَا لَاتُبْصِرُوْنَ ○ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ○ وَّمَاهُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ○ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ؕ قَلِيْلًا مَّاتَذَكَّرُوْنَ ○ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعَالَمِيْنَ ○ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ○ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ○ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ○ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِيْنَ ○ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ○ وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ○ وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِيْنَ. وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ. فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ○

*"हे मक्का वालो ! तुम जो विचार रखते हो वह ठीक नहीं । मैं क़सम खा कर कहता हूँ उन चीज़ों की जो तुम्हें दिखाई दे रही हैं । और उन की भी जो अभी तुम्हारी नज़रों से छुपी हुई हैं । यह क़ुर्आन एक महान रसूल की ज़ुबान से तुम को सुनाया जाता रहा है । यह किसी कवि की काव्य रचना नहीं है, परन्तु तुम्हारे दिल में ईमान कम पैदा होता है । यह किसी कहानी की तुक बन्दी नहीं है । परन्तु अफसोस है कि तुम बहुत कम नसीहत हासिल करते हो । यह पूरे संसार को पैदा करने वाले ख़ुदा की तरफ़ से उतारा गया है, और हम जो पूरे संसार के रब्ब (पालन हार) हैं तुमसे कहते हैं कि यदि यह (अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) एक आयत भी झूठी बना कर हमारी तरफ़ से बयान करता तो हम इस को दाहिने हाथ से पकड़ लेते और फिर इसकी श्वास नली काट देते । फिर यदि तुम सब मिल कर भी उसे बचाना चाहते तो न बचा सकते परन्तु यह क़ुर्आन तो केवल ख़ुदा से डरने वालों के लिये एक नसीहत (उपदेश) है । अतः हम जानते हैं कि इस क़ुर्आन को झुटलाने वाले भी तुम में पाये जाते हैं । परन्तु हम यह भी जानते हैं कि इसके उपदेश इसके न मानने वालों के दिलों में पश्चाताप उत्पन्न कर रहे हैं । और वे खेद के रूप में कह रहे हैं कि यह शिक्षा हमारे पास होती । और हम यह भी जानते हैं कि जिन बातों का वर्णन क़ुर्आन करीम में किया*

*गया है, उन का एक-एक शब्द पूरा हो कर रहेगा। अतः हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) इन लोगों के विरोध की परवाह न कर और अपने सर्व शक्तिमान रब्ब के नाम की स्तुति (प्रशंसा) करता चला जा।''*

*(सूर. अल् हाक़्क़ा, आयत 41-53)*

अन्ततः तीसरा हज भी आ पहुँचा और मदीना के हाजियों का काफ़िला मुसलमानों की एक बड़ी संख्या पर आधारित मक्का में आया। मक्का वालों के विरोध के कारण मदीना के लोगों ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एकांत में मिलने की इच्छा प्रकट की। अब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विचार इस ओर हो गया था कि हो सकता है कि हिजरत मदीना की तरफ़ मुक़द्दर हो। आप(स) ने अपने विश्वस्त रिश्तेदारों से अपने विचार प्रकट किये। उन्होंने आपको समझाना शुरू किया कि आप ऐसा न करें, मक्का वाले भले ही दुश्मन हैं फिर भी उनमें आप के रिश्तेदारों में से बड़े बड़े प्रभावशाली व्यक्ति हैं, पता नहीं मदीना में क्या हो ? वहाँ आपके रिश्तेदार आपकी सहायता कर सकें या न कर सकें, किन्तु आप समझ चुके थे कि ख़ुदा का फैसला यही है। आपने अपने रिश्तेदारों की बातें ठुकरा दीं और मदीना जाने का फैसला कर दिया।

आधी रात के पश्चात् मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मदीना वाले उक़्बा घाटी में इकट्ठे हुए। इस समय आपके साथ आपके चाचा अब्बास(र) भी थे। इस बार मदीना से आने वाले मुसलमानों की संख्या 73 थी। (इब्ने हश्शाम भाग 1, पृ. 154)

इनमें 62 ख़ज़रज् क़बीला के और 11 औस (क़बीला) के थे। इस क़ाफ़िला में दो औरतें भी थीं। जिन में से एक बनी नजार क़बीला की उम्मे अमारः(र) भी थीं। चूँकि मस्अब(र) के द्वारा उन लोगों तक विस्तार से इस्लाम पहुँच चुका था यह लोग ईमान और विश्वास से परिपूर्ण थे। बाद की घटनाओं ने प्रकट कर दिया कि यह लोग इस्लाम का स्तम्भ साबित होने वाले थे। उम्मे अमारः(र) जो उस दिन शामिल हुईं उन्होंने अपनी औलाद में इस्लाम का इतना प्रेम प्रवेश कर दी कि उनका बेटा हबीब(र) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद मुसैलमा कज़्ज़ाब की फ़ौज के हाथों क़ैद हो

गया तो मुसैलमा ने उसे बुलाकर पूछा कि क्या तू गवाही देता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं ? हबीब(र) ने कहा हां । फिर मुसैलमा ने कहा कि क्या तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ ? हबीब(र) ने कहा नहीं । उस पर मुसैलमा ने आदेश दिया कि इनका एक अंग काट लिया जाये । अत: मुसैलमा ने फिर उन से पूछा क्या तू गवाही देता है मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं ? हबीब(र) ने कहा कि हां। फिर उसने कहा कि क्या तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ ? हबीब(र) ने कहा कि नहीं । फिर उसने आपका दूसरा अंग काटने का आदेश दिया । एक एक अंग काटने के बाद वह प्रश्न करता जाता था कि क्या तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ और हबीब(र) कहता था कि नहीं । इस प्रकार उसके सभी अंग काटे गए। अन्तत: वह इस प्रकार टुकड़े-टुकड़े होकर अपने ईमान की घोषणा करते हुए ख़ुदा से जा मिले । स्वंय उम्मे अमार: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बहुत सी जंगों में सम्मिलित हुईं । भाव यह कि यह एक मुख़लिस (सद्भावक) और ईमान वाला क़ाफ़िला था । जिसके लोग मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से धन और माल मांगने नहीं आए थे । बल्कि केवल ईमान मांगने आए थे अब्बास(र) ने उनको संबोधित करते हुए कहा हे ख़ज़रज क़बीला के लोगो ! यह मेरा अज़ीज़ (प्यारा) अपनी क़ौम में मुअज़्ज़ज़् (प्रतिष्ठित) है । इसकी क़ौम के लोग चाहे वह मुसलमान हैं या नहीं हैं इस की सुरक्षा करते हैं, परन्तु अब इसने फैसला किया है कि वह तुम्हारे पास जाये । हे ख़ज़रज के लोगो ! यदि यह तुम्हारे पास गया तो सारा अरब तुम्हारा विरोधी हो जायेगा, यदि तुम अपनी ज़िम्मादारी को समझते और इन ख़त्रात को पहचानते हुए जो तुम्हें इस के दीन की सुरक्षा में पेश आने वाले हैं उस को ले जाना चाहते हो तो प्रसन्नत से ले जाओ । अपितु इस इरादा को छोड़ दो। इस प्रतिनिधि मण्डल के सरदार अल-बरा थे । उन्होंने कहा हमने आपकी बातें सुन लीं । हम अपने इरादा में पक्के हैं । हमारी जानें ख़ुदा के नबी के क़दमों पर नियौछावर हैं । अब फैसला उसके अधिकार में है । हम उसका हर फैसला मानेंगे । इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें इस्लाम की शिक्षा समझानी शुरू की । और ख़ुदा की तौहीद (एकेश्वरवाद) की स्थापना का उपदेश दिया । और उन्हें कहा कि यदि वह

इस्लाम की हिफ़ाज़त अपनी पत्नियों और बच्चों की तरह करने का वादा करते हैं तो वह आपके साथ जाने को तैयार हैं। आप अपनी बात समाप्त न कर पाये थे कि मदीना के 72 जान नियौछावर करने वाले एक ज़ुबान होकर चिल्लाए हां ! हां !! उस समय जोश में उन्हें मक्का वालों की शरारतों का ध्यान न रहा। उनकी आवाज़ें आकाश में गूँज उठीं। अब्बास(र) ने उन्हें होशियार किया और कहा शांत ! शांत, ऐसा न हो कि मक्का वालों को इस घटना का पता चल जाये। परन्तु अब वह ईमान प्राप्त कर चुके थे। अब मौत उनकी नज़रों में तुच्छ हो चुकी थी। अब्बास(रज़) की आवाज़ सुनकर उनका एक सरदार बोला। हे अल्लाह के रसूल ! हम डरते नहीं। आप आज्ञा दें, अभी मक्का वालों से लड़कर उन्होंने आप पर जो अत्याचार किये हैं उसका बदला लेने को तैयार हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया अभी खुदा तआला ने मुझे उनके मुक़ाबला पर खड़ा होने का आदेश नहीं दिया। उसके बाद मदीना वालों ने आपकी बैत (दीक्षा) की और सभा समाप्त हो गई।

मक्का के लोगों को इस घटना का पता लग गया और वे मदीना के सरदारों के पास शिकायत ले कर गए, परन्तु चूँकि अबदुल्लाह बिन उबई इबने सलूल मदीना के क़ाफ़िला का सरदार था और उसे स्वंय इस घटना का ज्ञान नहीं था। इस लिये उस ने उन्हें आश्वासन दिलाया और कहा कि उन्होंने व्यर्थ कोई झूटी अफवाह सुन ली है। ऐसी कोई घटना नहीं हुई। क्योंकि मदीना के लोग मेरे परामर्श के बिना कोई काम नहीं कर सकते। परन्तु वह क्या समझता था कि अब मदीना के लोगों के दिलों में शैतान के स्थान पर ख़ुदा तआला की बादशाहत स्थापित हो चुकी है। इसके पश्चात मदीना का काफ़ला वापस चला गया।

## मक्का से मदीना की ओर हिजरत

और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके साथियों ने हिजरत की तैयारी शुरू की। एक के बाद एक खानदान मक्का से निकलना शुरू हुआ। और अब वे लोग भी जो ख़ुदा तआला की बादशाहत की प्रतीक्षा कर रहे थे दलेर हो गए। कभी कभी एक ही रात में मक्का की एक पूरी

गली के मकानों को ताले लग जाते थे । प्रातः काल जब नगर के लोग गली को ख़ामोश पाते तो पूछने पर उन्हें पता चलता था कि इस गली के रहने वाले सभी लोग मदीना की ओर हिजरत कर गए हैं। इस्लाम की इस गहरी छाप को देख कर जो अन्दर ही अन्दर मक्का के लोगों में फैल रही थी वे हैरान हो जाते थे।

अन्ततः मक्का मुसलमानों से ख़ाली हो गया केवल कुछ ग़ुलाम स्वंय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत अबू बकर(र) और हज़रत अली(र) मक्का में रह गए । जब मक्का के लोगों ने देखा कि अब शिकार हमारे हाथों से निकलता जा रहा है तो नगर के सरदार फिर एकत्रित हुए और परामर्श के बाद उन्होंने यह फैसला किया कि अब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़त्ल कर देना ही उचित है । ख़ुदा तआला की विशेष इच्छा से आप के क़त्ल की तिथि आपकी हिजरत की तिथि के साथ पड़ी । जब मक्का के लोग आपके घर के सामने आप(स) के क़त्ल के लिये जमा हो रहे थे । आप रात के अन्धेरे में हिजरत के इरादा से अपने घर से बाहर निकल रहे थे । मक्का के लोग अवश्य ही शंका करते होंगे कि उनके इरादा की ख़बर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी मिल चुकी होगी परन्तु फिर भी जब आप उन के सामने से गुज़रे तो उन्हों ने यही विचार किया कि ये कोई और व्यक्ति है । अतः आप पर हमला करने के स्थान पर पीछे हटते हुए आप से छुपने लग गऐ ताकि उनके इरादों का मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को पता न लगे । उस रात से पहले दिन ही आपके साथ हज़रत अबू बकर(र) को भी हिजरत करने के सम्बन्ध में सूचित कर दिया गया था। अतः वह भी आप(स) को मिल गए । इस प्रकार दोनों मिलकर थोड़ी देर में मक्का से चल पड़े तथा मक्का से तीन-चार मील दूर सोर नामी पहाड़ी के मुख पर एक गुफा में शरण ली ।

(बुख़ारी बाब हिजरतुन्नबी स.अ.व.)

जब मक्का के लोगों को पता चला कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से चले गए हैं तो उन्होंने एक फ़ौज इकट्ठा की और आप का पीछा किया । एक एक खोजी उन्होंने अपने साथ लिया । जो आप की खोज लगाते हुए सोर पहाड़ पर पहुँचा । वहां उसने उस गुफ़ा (ग़ार) के पास पहुँच

कर जहां आप अबू बकर(र) के साथ शरण लिए हुए थे, पूरे विश्वास के साथ कहा कि या तो मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) इस गुफ़ा में है अथवा आकाश पर चढ़ गया है । उसकी इस घोषणा को सुनकर अबू बकर(र) का दिल बैठने लग गया । अतः उन्होंने धीरे से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा दुश्मन सिर पर आ पहुँचा है । और अब किसी भी क्षण गुफ़ा में घुसने वाला है । आप(स) ने फ़र्माया :

لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا

*ला तह्ज़न् इन्नल्लाह मअना*

(बुख़ारी बाब मनाक़िबिल् मुहाजेरीन्)

अबू बकर डरो नहीं ख़ुदा हम दोनों के साथ है । अबू बकर(र) ने कहा, हे अल्लाह के रसूल ! मैं अपनी जान के लिये नहीं डरता क्योंकि मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ । मारा गया तो एक व्यक्ति ही मारा जायेगा । हे अल्लाह के रसूल ! मुझे तो केवल यह डर था कि यदि आप की जान को कोई नुकसान पहुँचा तो दुनिया में से रूहानियत (आत्मिकता) और दीन एवं धर्म का नाम मिट जायेगा । आप(स) ने फ़र्माया कोई परवाह नहीं यहां केवल हम दो नहीं, तीसरा ख़ुदा भी हमारे साथ है । अतः अब समय आ चुका था कि ख़ुदा तआला इस्लाम को बढ़ाए और उन्नति दे और मक्का वालों की छूट का समय समाप्त हो चुका था । ख़ुदा तआला ने मक्का वालों की आंखों पर पर्दा डाल दिया और उन्होंने खोजी से हंसीं ठट्ठा शुरू कर दिया और कहा कि क्या उन्होंने इस खुली जगाह में शरण लेनी थी । यह कोई शरण लेने की जगह है । फिर इस जगह अत्यधिक अधिक सांप बिच्छू रहते हैं । यहां कौन बुद्धिमान पनाह ले सकता है । अतः ग़ार (गुफा) में झांके बिना ही खोजी से मज़ाक करते हुए चले गए ।

दो दिन उसी गुफ़ा में प्रतीक्षा करने के बाद पहले से निश्चित योजना के अनुसार रात के समय गुफ़ा के पास सवारियां पहुँचाई गईं और दो तेज़ रफ़तार ऊठनीयों पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके साथी चल पड़े। एक ऊठनी पर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और रास्ता दिखाने वाला सवार हुए तथा दूसरी ऊठनी पर हज़रत अबू बकर(र) और उनके

सेवक आमिर बिन फ़हीरा सवार हुऐ ।

मदीना की ओर चलने से पूर्व रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना मुँह मक्का की ओर किया । उस पवित्र नगर पर जिसमें आप पैदा हुए । जिस में आप मब्ऊस हुए (भेजे गए) और जिस में हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के ज़माना से आप के बाप दादा रहते चले आए थे । आपने आख़री बार नज़र डाली और अफ़सोस के साथ शहर को संबोधित करते हुए फ़र्माया: हे मक्का की बस्ती तू मुझे सब जगहों से अधिक प्यारी है परन्तु तेरे लोग मुझे यहां रहने नहीं देते । उस समय हज़रत अबू बकर(र) ने भी बड़े दुख के साथ कहा इन लोगों ने अपने नबी को निकाला है अब यह ज़रूर हलाक (तबाह) होंगे ।

(ज़रक़ानी जिल्द 1, पृ. 328, ब-हवाला मस्नद अहमद व तिर्मिज़ी)

## सुराक़ा का पीछा करना और उसके सम्बन्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक भविष्यवाणी

जब मक्का वाले आप(स) को तलाश करने में नाकाम रहे तो उन्होंने घोषणा कर दी कि जो भी मुहम्मद(स) अथवा अबू बकर(र) को ज़िन्दा या मुर्दा वापस ले आयेगा तो उसको सौ ऊँठनी इनाम दी जायेंगी । इस घोषणा की खबर मक्का के चारों ओर के क़बीलों को भी पहुँचा दी गई । अत: सुराक़ा बिन मालिक एक देहाती सरदार इस इनाम की लालच में आप(स) के पीछे निकल खड़ा हुआ । उसने तलाश करते करते आप(स) को मदीना के निकट जा लिया । जब उसने दो ऊँठनियों और उनके सवारों को देखा और समझ लिया कि वे मुहम्मद(स) और आपके साथी हैं तो उसने अपना घोड़ा उनके पीछे दौड़ा दिया परन्तु घोड़े ने रास्ता में ज़ोर की ठोकर खाई और सुराक़ा गिर गया । सुराक़ा बाद में मुसलमान हो गया । वह अपनी घटना स्वंय इस प्रकार वर्णन करता है । जब मैं घोड़े पर से गिरा तो मैंने अरबों की प्रथा के अनुसार तीरों से फ़ाल (शगुन) निकाली परन्तु शगुन बुरा निकला किन्तु इनाम की लालच में मैं फिर घोड़े पर सवार हो कर पीछे दौड़ा । रसूले करीम(स) बड़े वक़ार (प्रतिष्ठा वान) के साथ अपनी ऊँठनी पर सवार चले जा रहे थे । उन्होंने मुझे मुड़ कर नहीं देखा, परन्तु हज़रत अबू बकर(र) (इस डर से कि रसूले करीम

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई तकलीफ पहुँचे) बार-बार मुँह मोड़ कर मुझे देखते थे । जब दूसरी बार मैं उनके निकट पहुँचा तो फिर मेरे घोड़े ने जोरदार ठोकर खाई और मैं गिर गया। इस पर मैंने फिर अपने तीरों से फ़ाल (शगून) निकाली और वह ख़राब निकली मैंने देखा कि घोड़े के पाँव रेत में इतने धंस गए कि उनका निकालना मुश्किल हो रहा था । तब मैंने समझा कि यह लोग ख़ुदा की हिफ़ाज़त (सुरक्षा) में हैं । उस समय मैंने उन्हें आवाज़ दी कि ठहरो और मेरी बात सुनो । जब वे लोग मेरे पास आये तो मैंने उन्हें बताया कि मैं इस इरादा से यहां आया था परन्तु मैंने अपना इरादा बदल दिया है । अत: अब वापस जा रहा हूँ क्योंकि मुझे विश्वास हो गया है कि ख़ुदा तआला आप के साथ है । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया, बहुत अच्छा जाओ किन्तु हमारे सम्बन्ध में किसी को कुछ न बताना । उस समय मेरे मन में यह विचार आया कि चूँकि यह व्यक्ति सच्चा प्रतीत होता है । इस लिये अवश्य ही एक दिन कामयाब होगा। इस विचार के आते ही मैंने प्रार्थना की कि जब आपको ग़ल्बा (सत्ता प्राप्त हो, उस समय के लिये मुझे कोई अमन का परवाना लिख दें । आपने आमिर बिन फ़हीरा हज़रत अबू बकर(र) के ख़ादिम को आदेश दिया कि इसे अमन का परवाना दिया जाये। अत: उन्होंने अमन का परवाना लिख दिया ।

(बुख़ारी बाब हिज्रतुन्नबी स.अ.व.)

जब सुराक़ा लौटने लगा तो उसी समय अल्लाह तआला ने सुराक़ा का भविष्य आप(स) पर ग़ैब (परोक्ष) से प्रकट कर दिया । अत: उसके अनुसार आप(स) ने उसे फ़र्माया, सुराक़ा, तेरी उस समय क्या अवस्था होगी जब तेरे हाथों में किसरा के कंगन होंगे । सुराक़ा ने हैरान होकर पूछा, किसरा बिन हुर्मुज़ शहनशा ईरान के ? आप(स) ने फ़र्माया हां । (अस्सीरतुल् हल्बीय्यतु जिल्द 2 पृ. 50)

आप(स) की यह पेशगोई (भविष्यवाणी) लगभग 16-17 साल बाद पूरी हुई । सुराक़ा मुसलमान हो कर मदीना आ गया । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद पहले हज़रत अबु बकर(र) फिर हज़रत उमर(र) ख़लीफ़ा हुए । इस्लाम की बढ़ती हुई शान देख कर ईरानियों ने मुसलमानों पर हमले शुरू कर दिये। इस प्रकार इस्लाम को कुचलने की अपेक्षा

वे स्वंय कुचले गए । किसरा का राजकीय महल इस्लामी फ़ौजों के घोड़ों की टापों से बरबाद हुआ और ईरान के ख़ज़ाने मुसलमानों के क़ब्ज़ा में आये । जो माल इस ईरानी हकूमत का फ़ौजों के क़ब्ज़ा में आया उसमें वह कड़े भी थे जो किसरा ईरान परम्परानुसार तख़्त पर बैठते समय पहना करता था । सुराक़ा मुसलमान होने के बाद इस घटना को जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिजरत के समय उसके साथ घटी थी, बड़े गर्व से मुसलमानों को सुनाया करता था । मुसलमान भी जानते थे कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे सम्बोधित करते हुए कहा था कि सुराक़ा उस समय तेरा क्या हाल होगा । जब तेरे हाथ में किसरा के कंगन होंगे । हज़रत उमर(र) के सामने जब ग़नीमत का माल (जंग के बाद हाथ आया हुआ माल) लाकर रखा गया और उनमें उन्होंने किसरा के कंगन भी देखे तो पूरा नक्शा आपकी आखों के सामने घूम गया । वह कमज़ोरी और निर्बलता का समय जब ख़ुदा के रसूल को अपना देश छोड़ कर मदीना आना पड़ा । वह सुराक़ा और दूसरे लोगों का आपके पीछे घोड़े दौड़ाना कि आप(स) को मार कर या ज़िन्दा किसी भी हालत में मक्का वालों के पास पहुँचावें तो वह सौ ऊँठों के मालिक हो जायेंगे और उस समय आपका सुराका से कहना सुराका उस समय तेरी क्या अवस्था होगी जब तेरे हाथों में किसरा के कंगन होंगे । कितनी बड़ी पेशगोई एवं भविष्यवाणी थी । कितना साफ़ सुथरा ग़ैब (परोक्ष) की बात थी। हज़रत उमर(र) ने अपने सामने किसरा के कंगन देखे तो ख़ुदा की क़ुदरत उनकी आखों के सामने फिर गई । उन्होंने कहा कि सुराक़ा को बुलाओ । सुराक़ा को बुलाया गया तो हज़रत उमर(र) ने उन्हें आदेश दिया कि वह किसरा के कंगन अपने हाथों में पहनें । सुराक़ा ने कहा हे ख़ुदा के रसूल के ख़लीफ़ा ! सोना पहनना तो मुसलमानों के लिये मना हैं । हज़रत उमर(र) ने फ़र्माया हां मना हैं, परन्तु ऐसे अवसरों के लिये नहीं । अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तुम्हारे हाथ में सोने के कंगन दिखाए थे । अत: या तो तुम यह कंगन पहनोगे या मैं तुम्हें सज़ा दूँगा । सुराक़ा का आपत्ति जताना केवल शरीअत के कारण था अपितु वह स्वंय भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी को पूरा होता हुआ देखना चाहते थे । सुराक़ा ने वह कंगन अंपने हाथ में पहन लिये और

मुसलमानों ने इस महत्वपूर्ण भविष्यवाणी को पूरा होते अपनी आँखों से देखा । मक्का से भाग कर निकलने वाला रसूल अब दुनिया का बादशाह था वह स्वंय इस दुनिया में मौजूद नहीं था, परन्तु इस्लाम के ग़ुलाम (सेवक) उसकी भविष्यवाणियों को पूरा होते हुए देख रहे थे।

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मदीना में आगमन

सुराक़ा को विदा करने के पश्चात कुछ किलोमीटर चल कर रसूले करीम सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम मदीना पहुँच गए । मदीना के लोग अधीर हो कर आप(स) की प्रतीक्षा कर रहे थे । इससे अधिक उनकी सौभाग्य क्या हो सकता था कि जो सूर्य मक्का से निकला था मदीना के लोगों पर जा चढ़ा।

जब उन्हें यह समाचार मिला कि रसूले करीम सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम मक्का से निकल चुके हैं तो वह उसी दिन से आप की प्रतीक्षा कर रहे थे । प्रत्येक दिन मदीना वालों के प्रतिनिधि मण्डल मीलों बाहर तक आप(स) की तलाश के लिये निकलते थे और शाम को निराश होकर लौट आते थे । जब आप मदीना के पास पहुँचे तो आपने फैसला किया कि आप(स) पहले क़बा (मदीना के पास एक गांव) में ठहरें। एक यहूदी ने आप(स) की ऊँठनियों को आते देखा तो पहचान लिया कि यह क़ाफ़िला (यात्री गण) मुहम्मद सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम का है । वह एक टीला पर चढ़ गया और उसने आवाज़ दी । ऐ क़ैला की औलाद ! (क़ैला मदीना की एक घाटी थी) तुम जिसकी प्रतीक्षा में थे वह आ गया है । इस आवाज़ के सुनते ही मदीना का प्रत्येक व्यक्ति क़बा की ओर दौड़ पड़ा । क़बा के रहने वाले इस विचार से कि ख़ुदा का नबी उनमें ठहरने आया है ख़ुशी से फूले न समाते थे ।

इस अवसर पर एक ऐसी बात हुई जो रसूले करीम सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम की सादगी के उच्च मापदण्ड को प्रदर्शित करती है । मदीना के अधिकतर लोग आप(स) की शकल (आकृति) से परिचित न थे। जब क़बा से बाहर आप एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए थे और लोग भागते हुए मदीना से आप(स) की तरफ आ रहे थे तो चूँकि रसूले करीम सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम बहुत ही सादगी से बैठे हुए थे । उन में से अनजान लोग हज़रत

अबू-बकर(र) को देख कर जो आयु में आप से छोटे थे परन्तु उनकी दाढ़ी में कुछ सफ़ेद बाल आऐ हुए थे इसी प्रकार उनका वस्त्र भी रसूले करीम(स) से कुछ अच्छा था, यही समझते थे कि अबू-बकर(र) ही रसूलुल्लाह सल्लल्लल्लहो अलैहि वसल्लम हैं । और बड़े अदब से आप की ओर मूँह करके बैठ जाते थे । हज़रत अबू-बकर(र) ने जब यह देखा तो समझ गए कि लोगों को ग़लती लग रही है । वह उसी समय चादर फैला कर सूर्य के सामने खड़े हो गए और कहा, हे अल्लाह के रसूल आप पर धूप पड़ रही है । मैं आप(स) पर छाया करता हूँ । (बुख़ारी बाब हिजरतुन् नबी सल्लल्लल्लहो अलैहि वसल्लम व अस्हाबुहू इलल् मदीनते) और इस प्रकार बड़े सूक्षम ढंग से लोगों पर उनकी ग़लती प्रकट कर दी। क़बा में दस दिन रहने के बाद मदीना के लोग रसूले करीम सल्लल्लल्लहो अलैहि वसल्लम को मदीना ले गए । जब आप(स) मदीना में दाखिल हुए, मदीना के सभी मुसलमान पुरुष एवं स्त्रियाँ तथा बच्चे सभी गलियों में निकले हुए आप को ख़ुश आमदीद (स्वागतम) कह रहे थे। बच्चे और औरतें यह गीत गा रहे थे:-

طلع البدر علينا من ثنيات الوداع
وجب الشكر علينا ما دعالله داع
ايها المبعوث فينا جئت بالامر المطاع

उच्चारण –

तलअल बदरो अलयना मिन सनिय्याति ल्वदाअ
वजबश् शुकरो अलैना मा दआ लिल्लाहे दाई
अय्योहल मब्अूसो फीना जेता बिल् अमरिल मुताई

(ज़र्क़ानी जिल्द अव्वल (प्रथम) पृ. 35)

अर्थात् चौदवीं रात का चाँद हम पर वदा के मोड़ से चढ़ा है और जब तक ख़ुदा की ओर बुलाने वाला दुनिया में कोई मौजूद रहे हम पर इस एहसान (उपकार) का शुक्रिया अदा करना आवश्यक है । और ऐ वह जिस को ख़ुदा ने हम में नबी बना कर भेजा है तेरे आदेशों का पालन होगा ।

रसूले करीम सल्लल्लल्लहो अलैहि वसल्लम जिस दिशा से मदीना में

दाख़िल हुए, वह पूर्वी दिशा नहीं थी परन्तु चौदवीं रात का चांद तो पूर्व से चढ़ा करता है । अत: मदीना के लोगों का इशारा इस तरफ़ था कि असल चांद तो रूहानी चांद हैं । हम इस समय तक अन्धेरे में थे हमारे लिये अब चाँद चढ़ा है और चाँद भी उधर से चढ़ा है कि जिधर से चाँद चढ़ा नहीं करता है । यह पीर (सोमवार) का दिन था जब रसूले करीम सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में प्रवेश हुए, और पीर (सोमवार) के दिन ही आप ग़ारे सौर (गुफ़ा) से निकले थे अत: यह अद्भुत घटना है कि पीर (सोमवार) के दिन ही आप(स) के हाथों मक्का पर आपने विजय प्राप्त की ।

जब आप(स) मदीना में दाखिल हुए तो प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा थी कि आप उस के घर में ठहरें जिस जिस गली में से आप की ऊँठनी गुज़रती थी उस गली के भिन्न-भिन्न ख़ान्दान अपने घरों के आगे खड़े हो कर रसूले करीम सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम का स्वागत करते थे । और कहते थे हे अल्लाह के रसूल ! यह हमारा घर है और यह हमारा माल है और यह हमारी जानें हैं । जो आप की सेवा के लिये हाज़िर हैं । हे अल्लाह के रसूल ! हम आप(स) की हिफ़ाज़त करने के योग्य हैं । आप(स) हमारे ही पास ठहरें । कुछ लोग जोश में आगे बढ़ते और आप(स) की ऊँठनी की बाग (लगाम) पकड़ लेते ताकि आप को अपने घर में उतरवा लें परन्तु आप(स) प्रत्येक को यही जवाब देते कि मेरी ऊँठनी को छोड़ दो । यह आज खुदा की तरफ से मामूर (आदिष्ट अथवा जिसे हुकम दिया गया हुआ हो) है । यह उसी स्थान पर खड़ी होगी जहां अल्लाह तआला का इरादा (इच्छा) होगा ।

मदीना के एक सिरे में बनु नज्जार के अनाथों की ज़मीन के पास जाकर ऊँठनी ठहर गई । आपने फ़र्माया ख़ुदा तआला की यही इच्छा मालूम होती है कि हम यहां ठहरें । फिर फ़र्माया यह ज़मीन किस की है ? ज़मीन कुछ अनाथों की थी । उनका वली (देख रेख करने वाला) आगे बढ़ा और उसने कहा, हे अल्लाह के रसूल ! यह उस अनाथ की ज़मीन है और आपकी सेवा के लिये प्रस्तुत है । आप ने फ़र्माया हम किसी का माल मुफ़्त नहीं ले सकते । अन्तत: उसकी क़ीमत निर्धारित की गई और उस स्थान पर आपने मस्जिद और अपने मकान बनाने का फैसला किया ।

## हज़रत अबू अय्यूब(र) अंसारी के मकान पर ठहरना

इसके बाद आप(स) ने फ़र्माया सबसे नज़दीक घर किस का है ? अबू-अय्यूब अन्सारी आगे बढ़े और कहा, हे अल्लाह के रसूल ! मेरा घर सब से निकट है । आप(स) ने फ़र्माया घर जाओ और हमारे लिये कोई कमरा तैयार करो । अबू अय्यूब(र) का मकान दो मंज़िला था उन्होंने आपके लिये उपर की मन्ज़िल तैयार की किन्तु आपने यह सोच कर कि मिलने वालों को कष्ट होगा निचली मन्ज़िल पसंद फ़र्माई ।

अंसार (मदीना वालों) को रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बहुत अधिक मुहब्बत हो गई थी । इस अवसर पर भी यह देखने को मिला । रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम के बहुत कहने पर हज़रत अबू-अय्यूब(र) मान तो गए कि आप(स) निचली मंज़िल में ठहरें परन्तु सारी रात पति-पत्नी यह सोच कर जागते रहे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम नीचे सो रहे हैं । फिर वह किस तरह इतनी बे अदबी कर सकते हैं कि वे छत के उपर सोऐं । रात को एक बर्तन पानी का गिर गया तो यह सोच कर कि पानी नीचे न टपक पड़े दौड़ कर हज़रत अबू अय्यूब अंसारी(र) ने अपनी रज़ाई उस पानी पर डाल कर पानी को शुष्क किया प्रात: काल वह फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और सारी घटना वर्णन की । जिस पर रसूले करीम सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने ऊपर जाना स्वीकार कर लिया । फिर हज़रत अबू अय्यूब रोज़ाना खाना तैयार करते और आप के पास भिजवाते । फिर जो आप(स) का बचा हुआ खाना आता वह सारा घर खाता । कुछ दिनों के बाद बाक़ी अन्सार ने भी ज़ोर दे कर मेहमान नवाज़ी में अपना हिस्सा डालना चाहा । इस प्रकार जब तक रसूलल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम के अपने घर का प्रबन्ध नहीं हो गया मदीना के मुसलमान बारी बारी आप के घर में खाना पहुँचाते रहे । (बुखारी बाब हिज्रतुन्नवी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम व ज़रकानी भाग प्रथम हिजरत की घटना)

## आंहज़रत सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम के ख़ादिम हज़रत अनस(र) की गवाही

मदीना की एक विधवा का एक ही लड़का अनस नाम का था उस की

आयु आठ नौ वर्ष की थी । वह उसे रसूले करीम(स) की सेवा में लाई और कहा हे अल्लाह के रसूल ! मेरे इस लड़के को अपनी सेवा के लिए स्वीकार फ़रमाएं । वह औरत अपनी मुहब्बत के कारण अपने लड़के को क़ुर्बानी के लिए पेश कर रही थी । परन्तु वह नहीं जानती थी कि उस का बेटा क़ुर्बानी के लिए नहीं बल्कि हमेश की ज़िंदगी के लिए क़बूल किया गया है ।

अनस रसूलुल्लाह(स) की संगत में इस्लाम के बहुत बड़े विद्वान हुए, और धीरे-धीरे बड़े मालदार हो गए । उन्होंने एक सौ साल से अधिक आयु पाई, और इस्लामी बादशाहत में बड़ी इज़्ज़त की दृष्टि से देखे जाते थे । अनस(र) का ब्यान है कि मैंने छोटी आयु में रसूलुल्लाह(स) की सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया, और आप के जीवन तक आपके साथ रहा । कभी आप ने मुझ से सख़्ती के साथ बात नहीं की । कभी झिड़की नहीं दी । कभी किसी ऐसे काम के लिए नहीं कहा जो मेरी ताकत से बाहर हो ।

(मुस्लिम भाग दो किताबुल फ़ज़ाएल)

रसूलुल्लाह(स) को मदीना में रहते हुए केवल हज़रत अनस(र) से सेवा लेने का अवसर प्राप्त हुआ अत: अनस(र) की शहादत (गवाही) इस संबन्ध में आप के आचरण पर बड़ी तेज़ रोशनी डालने वाली है ।

## मक्का से अपने परिवार को बुलवाना, मस्जिद नबवी की बुनियाद रखना

कुछ समय पश्चात् आपने अपने आज़ाद किये हुए ग़ुलाम ज़ैद को मक्का भेजा कि वह आप(स) के परिवार को ले आए । चूँकि मक्का वाले इस अचानक हिजरत से कुछ घबरा से गए थे । इस लिये कुछ समय तक अत्याचार करना बन्द रहा। इसी घबराहट के कारण वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर(र) के खानदान के मक्का छोड़ने पर रोक नहीं बने और यह लोग सकुशल मदीना पहुँच गए । इस बीच जो ज़मीन आप(स) ने ख़रीदी थी सबसे पहले आपने वहां मस्जिद की बुनियाद रखी और उसके बाद अपने लिये अपने साथियों के लिये मकान बनवाए, जिसे सात महीने लगे ।

(बुखारी बाब हिजरतुन् नबी स.अ.व., व ज़रक़ानी भाग प्रथम, पृ. 369)

## मदीना के मुश्रिक क़बीलों का इस्लाम में दाखिल होना

आपके मदीना में दाखिल होने के कुछ दिनों पश्चात् ही मदीना के मुश्रिक क़बीलों में से अधिकतर लोग मुसलमान हो गए जो दिल से मुसलमान न हुए थे वह दिखावे के लिए मुसलमानों में शामिल हो गए और इस प्रकार पहली बार मुसलमानों में मुनाफ़िकों (सामने कुछ अन्दर से कुछ) का एक समुदाय स्थापित हुआ जो बाद में कुछ तो वास्तविक रूप में ईमान ले आया और कुछ हमेशा मुसलमानों के विरुद्ध षड्यन्त्र रचता रहा। कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने इस्लाम को नहीं माना, परन्तु वे लोग मदीना में इस्लाम की प्रतिष्ठा को सहन न कर सके और मदीना से हिजरत करके मक्का चले गए। इस प्रकार मदीना दुनिया का पहला शहर था जिसमें विशेषकर खुदाए वाहिद (एकेश्वर) की इबादत की स्थापना की गई। यह विश्वसनीय है कि उस समय संसार में इस नगर के अतिरिक्त और कोई नगर अथवा गांव केवल खुदाए वाहिद (एकेश्वर) की इबादत (पूजा) करने वाला नहीं था। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिये यह कितनी बड़ी प्रसन्नता और उनके साथियों की दृष्टि में कितनी महत्वपूर्ण सफलता थी कि मक्का से हिजरत करने के कुछ दिनों पश्चात् ही उनके द्वारा एक पूरे शहर को ख़ुदाए क़ादिर (सर्वशक्तिमान) का पुजारी बना दिया। जिसमें और किसी बुत की पूजा नहीं की जाती थी। न ज़ाहिरी और न बातनी (प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में) किन्तु इस तबदीली से यह नहीं समझना चाहिये कि मुसलमानों के लिये अब अमन आ गया था। अरब में से मुनाफ़कों का एक समुदाय मदीना में मौजूद था जो आपकी जान का शत्रु था और यहूद भी षडयन्त्र एवं साज़िशें करते रहते थे। अतः इस ख़तरा का अनुभव करते हुए आप स्वंय भी चौकस रहते थे और अपने साथियों को भी चौकस रहने का आदेश देते रहते थे। आरम्भ में कुछ दिन ऐसे भी आये कि आप को सारी सारी रात जागना पड़ा। एक बार ऐसी ही परिस्थिति में जब आपको जागते रहने से थकान महसूस हुई तो आप(स) ने फ़र्माया इस समय कोई मुख़लिस (सद्भाविक अर्थात् सेवक) व्यक्ति पहरा देता तो मैं सो जाता। थोड़ी देर में हथियारों की झंकार सुनाई दी आपने पूछा कौन है ? तो आवाज़ आई हे अल्लाह के रसूल ! मैं साद् बिन वक़ास हूँ जो

आपका पेहरा देने के लिये आया हूँ । उस पर आपने आराम किया । अन्सार स्वंय भी यह महसूस (प्रतीत) कर रहे थे । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मदीना में रहना हम पर बहुत बड़ी ज़िम्मदारी डालता है और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में भी दुश्मनों के हमलों से सुरक्षित नहीं हैं । अत: उन्होंने आपस में फैसला करके भिन्न-भिन्न क़बीलों को क्रम लगा दिया । प्रत्येक क़बीला के लोग बारी बारी आपके घर का पहरा देते थे ।

अत: मक्का के जीवन और मदीना के जीवन काल में कोई अन्तर था तो केवल यह कि अब मुसलमान खुदा के नाम पर स्थापित की हुई मस्जिद में किसी दूसरे की रोक टोक के बिना पांचों समय नमाज़ पढ़ सकते थे ।

## मक्का वालों की मुसलमानों को दोबारा दुख देने की योजानाएँ

दो तीन महीने गुज़रने के बाद मक्का के लोगों की परेशानी दूर हुई और उन्होंने फिर से मुसलमानों को दुख देने की योजानाऐं सोचनी शुरू कीं, किन्तु परामर्श के बाद उन्होंने महसूस किया कि मक्का के आप पास रहने वाले मुसलमानों को दुख दे देकर वह अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकते, वह इस्लाम को उसी समय मिटा सकते हैं जब मदीना से मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को निकलवा दें । अत: यह परामर्श करके मक्का के लोगों ने अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के नाम जिस के संबन्ध में पहले बताया जा चुका है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने से पहले मदीना वालों ने उसे अपना बादशाह बनाने का फैसला किया था । अत: उसे ध्यान दिलाया कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मदीना जाने के कारण मक्का के लोगों को बहुत दुख हुआ है । मदीना के लोगों को आपको और आपके साथियों को पनाह नहीं देनी चाहिये थी । इसके अन्तिम शब्द यह थे ।

اِنَّكُمْ اٰوَيْتُمْ صَاحِبَنَا وَاِنَّا نُقْسِمُ بِاللّٰهِ لَتُقَاتِلُنَّهٗ اَوْ تُخْرِجُنَّهٗ اَوْ لَنَسِيْرَنَّ اِلَيْكُمْ بِاَجْمَعِنَا حَتّٰى نَقْتُلَ مُقَاتِلَتَكُمْ وَنَسْتَبِيْحَ نِسَاءَ كُمْ.

उच्चारण :– इन्नाकुम आवयतुम् साहिबना व इन्ना नुक्सिमो बिल्लाहे लतुकातेलुन्नहू अव् तुख़रेजुन्नहू अव् लनसीरन्ना इलैयकुम बेअज्मअना हत्ता नक्तुला मुकातेलतकुम वनस्तबीहा निसाअकुम ।

अर्थात् अब जबकि तुम लोगों ने हमारे आदमी (मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को अपने घरों में पनाह दी है । हम ख़ुदा तआला की क़सम खाकर यह घोषणा करते हैं कि या तो तुम मदीना के लोगों के साथ लड़ाई करो या उसे अपने शहर से निकाल दो नहीं तो हम सबके सब मिलकर मदीना पर हमला करेंगे और मदीना के सभी जंग करने योग्य आदमियों को क़त्ल कर देंगे और औरतों को लौंडियां (ग़ुलाम) बना लेंगे । इस पत्र के मिलने पर अब्दुल्ला बिन उबई बिन सलूल की नीय्यत कुछ खराब हुई और उसने दूसरे मुनाफ़कों से परामर्श किया कि यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यहां रहने दिया तो हमारे लिये मुसीबतों का दरवाज़ा खुल जायेगा । अत: आपसे लड़ाई करनी चाहिये और मक्का वालों को खुश करना चाहिये रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस बात का पता चल गया । आप अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के पास गए और उसे समझाया कि तुम्हारा ऐसा कार्य करना स्वंय, तुम्हारे लिये घाटा है क्योंकि तुम जानते हो कि मदीना के बहुत से लोग मुसलमान हो चुके हैं और इस्लाम के लिये अपनी जानें कुर्बान करने के लिये तैयार हैं । यदि तुम ऐसा करोगे तो वे लोग मुहाजरीन के साथ होंगे और तुम लोग इस लड़ाई को आरम्भ करके बिल्कुल तबाह व बर्बाद हो जाओगे। अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल पर अपनी ग़लती स्पष्ट हो गई और वह ऐसा करने से रुक गया ।

## अन्सार और मुहाजिरीन में भाईचारा*

उन्हीं दिनों में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की मज़बूती के लिये एक और उपाय किया । वह यह कि आप ने सभी मुसलमानों को इकट्ठा किया और दो दो व्यक्तियों को आपस में भाई भाई बना दिया इस मुआख़ात अर्थात् भाईचारे का अन्सार ने ऐसा हार्दिक स्वागत किया

---

* *इब्ने हश्शाम भाग 1, पृ. 179*

कि प्रत्येक अन्सारी अपने भाई को अपने घर ले गया और अपनी जायदाद उसके सामने प्रस्तुत कर दी कि उसे आधा आधा बांट दिया जाये एक अन्सारी (मदीने के रहने वाले मुसलमान अन्सार कहलाते थे) ने तो यहां तक बढ़ कर कह दिया कि मैं अपनी दो बीवियों में से एक को तलाक दे देता हूँ (छोड़ देता हूँ) तुम उससे शादी कर लो परन्तु मुहाजिरीन ने उनके इस इख़्लास (नि:स्वार्थ मैत्री) का शुक्रिया अदा किया उनकी जायदादों में से हिस्सा लेने से मना कर दिया परन्तु अन्सार फिर भी उस पर अड़े रहे । अत: उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आग्रह किया कि हे अल्लाह के रसूल ! जब यह मुहाजिर हमारे भाई हो गए तो यह किस प्रकार हो सकता है कि यह हमारे माल में हिस्सेदार न हों । यद्यपि यह जमींदारी (खेती बाड़ी) नहीं जानते और व्यापारी लोग हैं । यदि यह हमारी ज़मीनों से हिस्सा नहीं लेते तो फिर हमारी ज़मीनों से होने वाले लाभ में भागीदार बना दिये जाए । मुहाजिरीन ने इस पर भी भागीदार बनना स्वीकार नहीं किया । और अपने पुराने व्यापारिक व्यवसाय में लग गये । अत: थोड़े ही दिनों में कुछ एक मालदार हो गए । परन्तु अन्सार इस भागीदारी पर इतना आग्रही थे कि कुछ अन्सार जिनकी मृत्यु हो गई उनकी औलादों ने अरब दस्तूर (प्रणाली) के अनुसार अपने मुहाजिर भाइयों को मरने वाले की जायदाद से हिस्सा दिया और कई साल तक यह चलता रहा । यहां तक कि क़ुर्आन करीम ने इस रीति की समाप्ति का आदेश दे दिया ।

## मुहाजिरीन, अन्सार और यहूदियों के बीच समझौता

मुसलमानों को भाई-भाई बनाने के अतिरिक्त रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सभी मदीना निवासियों के बीच एक समझौता करवाया । आपने यहूदियों और अरब के सरदारों को जमा किया और फ़र्माया कि पहले यहां केवल दो दल थे परन्तु अब तीन हो गए हैं अर्थात् पहले केवल यहूद और मदीना के अरब यहां रहते थे परन्तु अब यहूद मदीना के अरब और मक्का के मुहाजिर तीन दल हो गए हैं । इस लिये चाहिये कि आपस में सन्धि हो जाय । अत: आपसी परामर्श के साथ एक समझौता लिखा गया । इस समझौता के शब्द यह हैं :-

*''समझौता बीच मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, मोमिनों और उन सभी लोगों के जो खुशी के साथ उन से मिल जायें यदि मुहाजरीन से कोई क़त्ल हो जाये तो वह उसके खून के ज़िम्मेदार स्वयं होंगे और अपने क़ैदियों को स्वंय छुड़ायेंगे और मदीना के भिन्न-भिन्न क़बीले भी इस प्रकार ऐसी दशा में अपने-अपने क़बीले के ज़िम्मेदार होंगे जो व्यक्ति बग़ावत फैलाए या दुश्मनी पैदा करे और निज़ाम (व्यस्था) में फूट डाले, सभी समझौता करने वाले उसके विरुद्ध खड़े हो जायेंगे यद्यपि वह उनका बेटा ही क्यों न हो। यदि कोई काफ़िर मुसलमान के हाथ से मारा जाये तो उसके मुसलमान रिश्तेदार मुसलमान से बदला नहीं लेंगे और न किसी मुसलमान के मुक़ाबला में ऐसे काफ़िर (जिसने इस्लाम का इन्कार किया हो) की सहायता करेंगे, जो कोई यहूदी हमारे साथ मिल जाये तो उसकी हम सब मदद करेंगे । यहूदियों को इस प्रकार का कष्ट नहीं दिया जायेगा न किसी दुश्मन की उनके विरुद्ध सहायता की जायेगी । कोई ग़ैर मोमिन (जो मुसलमान नहीं) मक्का के लोगों को अपने घर में पनाह नहीं देगा उनकी जायदाद अपने पास अमानत रखेगा और न काफ़िरों और मोमिनों की लड़ाई में किसी प्रकार की दखल अंदाज़ी करेगा यदि कोई व्यक्ति किसी मुसलमान को नाजायज़ (अवैध) रूप से मार दे तो सभी मुसलमान एकत्रित हो कर उसके विरुद्ध कोशिश करेंगे। यदि एक मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) दुश्मन मदीना पर आक्रमण करे तो यहूदी मुसलमानों का साथ देंगे । और अनुपात अनुसार खर्च भी उठायेंगे । यहूदी क़बीले जो मदीना के विभिन्न क़बीलों से समझौता कर चुके हैं उनके अधिकार भी मुसलमानों के अधिकार के समान होंगे । यहूदी अपने धर्म पर रहेंगे और मुसलमान अपने धर्म पर बने रहेंगे । जो अधिकार यहूदियों का मिलेंगे वही उनके अनुयायी को भी मिलेंगे । मदीना के लोगों में से कोई व्यक्ति मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञा के बिना कोई लड़ाई आरम्भ नहीं करेगा परन्तु इस शर्त के*

*अर्न्तगत कोई व्यक्ति उसके उचित इन्तिक़ाम (बदला लेने) से वंचित नहीं किया जायेगा । यहूदी अपने संघठन में अपना खर्च स्वंय उठायेंगे और मुसलमान अपना खर्च स्वंय उठाऐंगे किन्तु लड़ाई की स्थिति में वह दोनों मिल कर काम करेंगे । मदीना उन सभी लोगों के लिये जो इस समझौता में सम्मिलित होते हैं एक सम्मान जनक स्थान होगा । जो अजनबी (अपरिचित व्यक्ति) नगर (मदीना) के लोगों की हिमायत (देख रेख) में आजायें उसके साथ भी वही व्यवहार होगा जो स्थानीय नागरिकों के साथ होता है । परन्तु मदीना के लोगों को यह आज्ञा न होगी कि किसी औरत को उसके रिश्तेदारों की इजाज़त के बिना अपने घरों में रखे । झगड़े और फ़साद ख़ुदा और उसके रसूल के पास फैसला करने के लिये प्रस्तुत किये जायेंगे । मक्का वालों और उनके साथी क़बीलों के साथ इस समझौता में सम्मिलित होने वाला कोई समझौता नहीं करेगा । क्योंकि इस समझौता में शामिल होने वाले मदीना के दुश्मनों के ख़िलाफ़ इस समझौता के द्वारा इत्तिफ़ाक़ (सहमति) कर चुके हैं । जिस प्रकार जंग पृथक (अलग होकर) नहीं की जा सकेगी इसी प्रकार समझौता भी अगल हो कर नहीं किया जा सकेगा । परन्तु किसी को मजबूर (विवश) नहीं किया जाएगा कि वह लड़ाई में शामिल हो । हां यदि कोई व्यक्ति ज़ुल्म (अत्याचार) का कोई कार्य करेगा तो वह सज़ा (दण्ड) का भागीदार होगा । (नि:संदेह ख़ुदा नेकों और दीनदारों का मुहाफ़िज (रक्षक) है और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ख़ुदा के रसूल हैं ।''*

(इब्ने हश्शाम जिल्द 1, पृ. 178)

यह समझौते का सारांश है । इस समझौते में बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया गया था कि दयानतदारी (सत्यता) और सफ़ाई को हाथ से नहीं छोड़ा जायेगा । और अत्याचारी अपने अत्याचार का स्वंय ज़िम्मेदार होगा । इस समझौता से पता चलता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से यह फैसला हो चुका था कि यहूदियों के साथ और मदीना के उन नागरिकों के साथ जो इस्लाम में शामिल न हों मुहब्बत प्यार और हमदर्दी का

व्यवहार किया जायेगा और उन्हें भाइयों की तरह रखा जायेगा । अत: बाद में यहूद के साथ जितने झगड़े हुए उनकी ज़िम्मदारी विशेषकर यहूदियों पर थी ।

## मक्का वालों की ओर से पुन: से शरारतों का आरम्भ

जैसा कि वर्णन हो चुका है कि दो तीन महीनों बाद जब मक्का वालों की परेशानी दूर हो गई तो उन्होंने फिर से इस्लाम के खिलाफ़ नया महाज़ (केन्द्र) स्थापित किया । अत: उन्हीं दिनों में मदीना का एक रईस साद् बिन मआज़[र] जो औस क़बीले के सरदार थे, बैतुल्लाह का तवाफ़ करने के लिये मक्का गए । उन्हें देखकर अबु-जहल ने बड़े क्रोध में कहा क्या तुम लोग समझते हो कि इस मुर्तद (मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को पनाह देकर तुम शान्ति के साथ मक्का का तवाफ़ कर सकोगे और तुम्हें यह भ्रम है कि तुम उसकी रक्षा करने की ताकत रखते हो । खुदा की क़सम यदि इस समय तुम्हारे साथ अबू सफ़वान न होता तो तू अपने घर वालों के पास बच कर वापस न जा सकता । साद बिद मआज़[र] ने कहा वल्लाह (ख़ुदा की क़सम) यदि तुमने हमें काबा से रोका तो याद रखो फिर तुम्हें भी तुम्हारे शामी (सीरिया) के रास्ता पर अमन नहीं मिल सकेगा । उन्हीं दिनों मक्का का एक बहुत बड़ा रईस वलीद बिन मुगैरह बीमार हुआ और उसे प्रतीत हुआ कि उसकी मौत करीब है । एक दिन मक्का के बड़े बड़े रईस उसके पास बैठे थे कि वह लिए रोने लग गया । मक्का के सरदार हैरान होकर उससे पूछा कि आप किस कारण रोते हैं ? वलीद ने कहा कि क्या तुम समझते हो कि मैं मौत के डर से रोता हूँ ? ख़ुदा की क़सम ऐसा कुछ भी नहीं, मुझे तो यह दु:ख है कि कहीं ऐसा न हो कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का धर्म फैल जाए और मक्का भी उसके क़ब्ज़ा में चला जाय । अबू सुफ़यान ने जवाब में कहा इस बात का दु:ख न करो । जब तक हम ज़िन्दा हैं ऐसा नहीं होगा, हम इस बात की ज़मानत देते हैं । इन सभी घटनाओं से प्रमाणित होता है कि मक्का के लोगों में जो रोक पैदा हुई थी वह अस्थाई थी । क़ौम को दोबारा भड़काया जा रहा था । मरने वाले रईस मौत के बिस्तर पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुख़ालिफ़त की सौगन्ध ले रहे थे । मदीना के लोगों को मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम के खिलाफ़ लड़ाई पर आमादा (तत्पर) किया जा रहा था और उनके इन्कार पर धमकियां दी जा रहीं थीं कि मक्का वाले और उनके हलीफ़ (दोस्त) कबीले फ़ौज लेकर मदीना पर आक्रमण करेंगे और मदीना के मर्दों को मार देंगे और औरतों को दासी बना लेंगे ।

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से बचाव के उपाय

अत: यदि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन परिस्थितियों में चुप बैठे रहते और मदीना की रक्षा के लिये कोई उपाय न करते तो अवश्य ही आप(स) को एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी उठानी पड़ती । अत: आपने सहाबा(र) के छोटे छोटे क़ाफ़िले (टोलीयां) मक्का के चारों ओर भिजवाने शुरू कर दिये ताकि उनकी गतिविधियों का आपको ज्ञान होता रहे । कभी कभी उनकी मक्का के क़ाफ़िलों या मक्का की छोटी छोटी जमाअतों से मुठभेड़ भी हो जाती और एक दूसरे को देख लेने के बाद लड़ाई भी हो जाती । इसाई लेखक लिखते हैं कि यह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से छेड़ छाड़ थी । क्या मक्का में 13 साल तक जो मुसलमानों पर अत्याचार किया गया और मदीना के लोगों को मुसलमानों के खिलाफ़ खड़े करने का प्रयत्न किया गया और फिर मदीना पर हमला करने की धमकी दी गईं । इन घटनाओं के होते हुए आपका सतर्क रहने के लिये टोलीयां भिजवाना क्या छेड़ छाड़ कहला सकता है ? कौन सा दुनिया का क़ानून है जो मक्का के 13 साल के ज़ुल्मों के बाद भी मुसलमानों और मक्का वालों में लड़ाई छेड़ने के लिये इनके अतिरिक्त कारणों की आवश्यकता समझता हो । आज पश्चिमी देश अपने आप को बहुत ही सभ्य समझते हैं । जो कुछ मक्का में हुआ क्या यदि उसकी आधी घटनाओं पर भी कोई क़ौम (जाति) लड़े तो कोई व्यक्ति उसे दोषी ठहरा सकता है ? क्या यदि कोई हुकूमत किसी दूसरे देश के लोगों को एक जमाअत (संस्था) के क़त्ल करने या अपने देश से निकाल देने पर मज़बूर करे तो उस जमाअत को हक़ हासिल नहीं होता कि वह उससे लड़ाई का ऐलान करे ? अत: मदीना में इस्लामी हुकूमत स्थापित होने के बाद किसी नए कारण के पैदा होने की आवश्यकता ही नहीं थी । मक्की युग की घटनाऐं

मुसलमानों को पूरा अधिकार देती थीं कि वह मक्का वालों से जंग की घोषणा कर दें । परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसा नहीं किया । उन्होंने धैर्य और केवल दुश्मनों की शरारतों का पता लगाते रहने तक ही अपनी कोशिश को सीमित रखा । परन्तु जब मक्का वालों ने स्वंय मदीना के अरबों को मुसलमानों के खिलाफ़ भड़काया मुसलमानों को हज करने से रोक दिया और उनके काफ़िलों ने जो शाम (सीरिया) में व्यापार के लिये जाते थे अपने असल रास्ते को छोड़ कर मदीना के इर्द गिर्द के क़बीलों में से हो कर गुज़रना और उनको मदीना वालों के खिलाफ़ भड़काना आरम्भ किया तो मदीना की हिफ़ाज़त के लिये मुसलमानों का भी फ़र्ज़ था कि वे इस लड़ाई के चैलैंज को जो मक्का वाले निरन्तर चौदह साल से दे रहे थे स्वीकार कर लेते तो दुनिया के किसी व्यक्ति को यह अधिकार प्राप्त नहीं कि वह चैलैंज क़ुबूल करने पर आपत्ति व्यक्त करे ।

## मदीना में इस्लामी हुकूमत की बुनियाद

रसूलुल्लाह सल्लल्ललहो अलैहि वसल्लम जहां बाहरी हालात की देख रेख कर रहे थे वहां आप मदीना की इस्लाह (सुधार) से भी असावधान नहीं थे । यह बताया जा चुका है कि मदीना के मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) अधिकतर इख़लास और सच्चे मन से तथा कुछ मुनाफ़िक़त (मन् में बैर लिये हुए) के साथ मुसलमान हो चुके थे । इस लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनमें इस्लामी हुकूमत का तरीका उनमें रिवाज देना शुरू किया अरब लोग पहले लड़भिड़ कर अपने अधिकारों का फैसला कर लिया करते थे परन्तु अब विधिवत् रूप में काज़ी (जज) नियुक्त किये गए । जिनके फैसले के बिना कोई व्यक्ति अपना हक़ दूसरे से नहीं ले सकता था । पहले मदीना के लोगों को ज्ञान प्राप्त करने की ओर कोई ध्यान नहीं था । अब इस बात की व्यवस्था की गई कि पढ़े लिखे लोग अनपढ़ों को पढ़ाऐं । जुल्म, अत्याचार और अन्याय को रोक दिया गया । औरतों के अधिकार स्थापित किये गए शरीअत के अनुसार सभी मालदारों पर टैक्स लगाए गए, जो ग़रीबों पर खर्च किये जाते थे और शहर के सुधार और उन्नति पर खर्च किये जाते थे । मज़दूरों के अधिकारों की रक्षा की गई, अनाथों के लिये शिक्षा का प्रबन्ध किया गया ।

लेन देन में सन्धि (समझौता) की पाबंदी लगाई गई । ग़ुलामों पर सख़्ती को ज़ोर से रोका जाने लगा । सफाई और स्वास्थ्य के नियमों पर ज़ोर दिया जाने लगा । जन-गणना की शुरूआत की गई । गलियों और सड़कों के चौड़ा करने के आदेश दिये गये । सड़कों की सफ़ाई के संबन्ध में आदेश जारी किये गए। भाव यह कि पारिवारिक तथा नागरिक जीवन के सभी नियमों को लिखकर उनको संवैधानिक रूप से प्रचलित करने के उपाय किये गए । अरब लोग पहली बार मुनज़्ज़म (व्यवस्थित) तथा मुहज़्ज़ब (सभ्य) सोसाइटी के नियमों से परिचित हुए । इधर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अरब में एक ऐसा क़ानून प्रस्तुत कर रहे थे । जो न केवल इस ज़माना के लिये बल्कि हमेशा के लिये और न केवल उनके लिये बल्कि दुनिया की सारी क़ौमों के लिये भी सम्मान और प्रतिष्ठा अमन-शान्ति, और उन्नति का कारण था । इधर मक्का के लोग इस्लाम के विरुद्ध पूरी तरह जंग की तैयारियां में लगे हुए थे । जिस का परिणाम बदर की जंग के रूप में स्पष्ट है ।

## क़ुरैश के व्यापारिक जत्था का आगमन और बदर[1] की जंग

हिजरत के 13 वें महीने में शाम (सीरिया) से एक व्यापारिक जत्था अबू सुफयान के नेतृत्व में आ रहा था । उसकी रक्षा के बहाने से मक्का वालों ने एक ज़बरदस्त फ़ौज मदीने की तरफ़ ले जाने का फैसला किया। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी इसकी सूचना मिल गई और ख़ुदा की तरफ़ से भी आप(स) को वही (ईश्वाणी) हुई कि अब समय आ गया है कि शत्रु के अत्याचार का उसके अपने हथियार से उत्तर दिया जाये । अतः आप(स) मदीना से कुछ साथियों को लेकर निकले। जिस समय आप मदीना से निकले उस समय तक यह पता नहीं था कि मुकाबला व्यापारिक जत्था से होगा या वास्तविक फ़ौज से। इस लिये तीन सौ आदमी आप(स) के साथ मदीना से निकले।

यहाँ नहीं समझना चाहिये कि व्यापारिक काफ़िला से अभिप्राय सिर्फ

---

[1]*विस्तार के लिये देखें इब्ने हश्शाम भाग 2, पृ. 9 तथा अस् सीरतुल हल्बीया, तारीखे कामिल तिब्री ।*

माल दौलत से लदे हुए ऊँठ थे अपितु मक्का वाले इन काफ़लों के साथ एक मज़बूत फ़ौजी जत्था भी भिजवाया करते थे क्योंकि वे इन काफ़िलों के द्वारा मुसलमानों को भयभीत भी करना चाहते थे । अतः इस क़ाफ़िला से पहले दो और क़ाफ़िलों का वर्णन इतिहास में हुआ है । उन में से एक की सुरक्षा पर दौ सौ सिपाही नियुक्त थे तथा दूसरे की सुरक्षा पर तीन सौ सिपाही रखे गए थे । अतः इस स्थिति में इसाई लेखकों का यह लिखना कि तीन सौ सिपाही लेकर आप(स) मक्का के एक निहत्थे क़ाफ़िला को लूटने के लिये निकले थे केवल धोखा देने वाली बात है । चूँकि यह काफ़िला बहुत बड़ा था । इसलिये पहले क़ाफ़िलों के हिफ़ाज़ती जत्थों की गिनती को देखते हुए यह समझना चाहिए कि उसके साथ चार पांच सौ सवार (सिपाही) अवश्य ही मौजूद थे । इतने बड़े हिफ़ाज़ती जत्था के साथ मुक़ाबला करने के लिए यदि इस्लामी फ़ौज जो केवल तीन सौ व्यक्तियों पर आधारित थी और जिन के पास पूरे शस्त्र भी न थे, लूट के लिये निकलने का नाम देना केवल पक्षपात और ईर्ष्या-द्वेष ही कहा जा सकता है । यदि केवल इस काफ़िला का ही प्रश्न होता तब भी इससे लड़ाई जंग ही कहलाती और जंग भी आत्म रक्षा के लिये । क्योंकि मदीने का लश्कर कमज़ोर था और केवल उस फ़ितना (उपद्रव) को दूर करने के लिये निकला था जिस की बुनियाद मक्का वाले आस पास के क़बीलों को भड़का कर शरारत के रूप में रख रहे थे परन्तु जैसा कि क़ुर्आन करीम से भी ज्ञात होता है, अल्लाह की इच्छा भी यही थी कि वास्तव में मक्का की फ़ौज से ही मुक़ाबला हो और केवल मुसलमानों की श्रद्धा तथा ईमान को प्रकट करने के लिये पहले से इस बात को नहीं बताया गया । जब मुसलमान पूरी तैयारी के बिना ही मदीना से निकल खड़े हुए तो कुछ दूर जाकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा(र) को बताया कि अल्लाह तआला की इच्छा यही है कि मक्का के वास्तविक लश्कर से मुकाबला हो लश्कर से संबन्धित जो खबरें मक्का से आ चुकी थीं उनसे मालूम होता था कि सेना की गिनती एक हज़ार से अधिक है और फिर यह कि वे सभी अनुभवी सिपाही थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ आने वाले लोग केवल 313 थे । उनमें से भी बहुत से

लड़ाई की कला नहीं जानते थे, फिर जंग का सामान भी उनके पास पूरा न था । अधिकतर पैदल थे या फिर ऊँठों पर सवार थे । घोड़ा केवल एक था । इस छोटी सी फ़ौज के साथ जिनके पास पूरा सामान भी नहीं था एक अनुभवी दुश्मन का मुक़ाबला जो संख्या में तिगुने से भी अधिक था । यह बहुत ही खत्रनाक बात थी । इस लिये आपने न चाहा कि कोई व्यक्ति भी अपनी इच्छा के बिना जंग पर मजबूर किया जाये । अतः आपने अपने साथियों के सामने यह प्रश्न रखा कि अब क़ाफिला का कोई प्रश्न नहीं केवल फ़ौज का ही मुक़ाबला किया जा सकता है । अतः यह कि इस संबन्ध में वह मश्वरा (परामर्श) दें । एक के बाद दूसरा मुहाजिर खड़ा हुआ और उसने कहा कि हे अल्लाह के रसूल !यदि दुश्मन हमारे घरों पर चढ़ आया है तो हम उससे डरते नहीं हैं । हम उसका मुक़ाबला करने के लिये तैयार हैं । प्रत्येक का जवाब सुन कर आप यही फ़र्माते चले जाते कि और परामर्श दो और परामर्श दो । मदीना के लोग उस समय तक खामोश थे इस लिये कि हमलावर फ़ौज मुहाजिरीन (अर्थात् मक्का से मदीना हिजरत करके आने वालों की) रिश्तेदार थी । वो डरते थे कि ऐसा न हो कि उनकी बात से मुहाजिरीन का दिल दुःखे । जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बार-बार फ़र्माया कि मुझे परामर्श दो, तो एक अन्सारी खड़े हुए और कहा कि हे अल्लाह के रसूल ! परामर्श तो आप का मिल रहा है किन्तु फिर भी आप बार बार मश्वरा मांग रहे हैं तो मालूम होता है इस से आपका अभिप्राय (मक़सद) हम मदीना वालों से है। आप ने फ़र्माया हां ! उस सरदार ने जवाब में कहा कि हे अल्लाह के रसूल ! आप हम से इस लिये परामर्श मांग रहे हैं कि आप के मदीना आने से पहले हमारे और आप के बीच एक समझौता हुआ था और वह यह था कि यदि मदीना में आप(स) पर या मुहाजिरीन पर किसी ने हमला किया तो हम आप की रक्षा करेंगे लेकिन अब इस समय मदीना से बाहर आए हैं और शायद इस अवस्था में वह समझौत नहीं रहता है । हे अल्लाह के रसूल ! जिस समय वह समझौता हुआ था उस समय तक हम पर आपकी हक़ीकत (वास्तविक्ता) प्रकट नहीं हुई थी । किन्तु अब जबकि हम पर आप(स) की प्रतिष्ठा और प्रताप, पूर्ण रूप से प्रकट हो चुका है, हे अल्लाह

के रसूल ! अब उस समझौता का कोई सवाल नहीं हम मूसा अलैहिस्सलाम के साथियों की तरह आप से यह नहीं कहेंगे :

اِذْ هَبْ اَنْتَ وَرَبُّکَ فَقَاتِلَا اِنَّا هٰهُنَا قَاعِدُوْنَ

उच्चारण :– इज़हब अन्ता व रब्बुका फ़कातिला इन्ना हाहुना क़ाऐदून ।

तू और तेरा रब्ब जाओ और दुश्मन से जंग करते फिरो, हम तो यहीं बैठे हैं । बल्कि हम आप(स) के दायें भी लड़ेंगे और बायें भी लड़ेंगे और आगे भी लड़ेंगे और पीछे भी लड़ेंगे और हे अल्लाह के रसूल ! दुश्मन जो आपको नुकसान पहुँचाने आया है वह आप तक नहीं पहुँच सकता जब तक वह हमारी लाशों पर से गुज़रता हुआ न जाये, हे अल्लाह के रसूल! जंग तो एक छोटी सी बात है । यहां से थोड़ी दूरी पर समुद्र है आप(स) हमें आदेश दें कि समुद्र में अपने घोड़े डाल दो तो हम बिना संकोच अपने घोड़े डाल देंगे ।

(इब्ने हश्शाम भाग-2, पृ.-12)

यह अपने आपको न्योछावर करने और नि:स्वार्थता (इख़्लास) का नमूना था। जिसका उदाहरण आपसे पहले का कोई नबी भी प्रस्तुत नहीं कर सकता । मूसा(अ) के साथियों का हवाला उन्होंने स्वयं ही दे दिया था । हज़रत मसीह (ईसा) अलैहिस्सलाम के हवारियों ने दुश्मन के मुक़ाबला में जो नमूना दिखाया इंजील उस पर गवाह है । एक ने तो कुछ रुपयों के बदले अपने उस्ताद को बेच दिया । दूसरे ने उस पर लानत की तथा अन्य सब उस को छोड़कर इधर उधर भाग गए परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी केवल डेढ़ साल आपकी संगति में रहने के बाद ईमान में इतने पक्के हो गए कि वे उनके कहने पर समुद्र में छलांग लगाने के लिये भी तैयार थे ।

यह परामर्श इस उद्देश्य से भी था ताकि जो लोग ईमान के कमज़ोर हैं उनको वापस जाने के आज्ञा दी जाये किन्तु जब मुहाजिरीन और अन्सार ने एक दूसरे से बढ़ कर इख़्लास और ईमान का नमूना दिखाया और दोनों दलों ने इस बात पर आमादगी (तत्परता) प्रकट की कि वह ख़ुदा के वादों के अनुसार दुश्मन से संख्या में एक तिहाई ($^1/_3$) कम होने और बावजूद दुश्मन के मुक़ाबला में कई गुना सामान कम होने के, निर्लज्जता दिखाते हुए जंग में

पीठ नहीं दिखाएंगे अपितु ख़ुदा के दीन के लिये आत्मसम्मान प्रकट करते हुए जंग के मैदान में ख़ुशी से जान दे देंगे, तो आप(स) आगे बढ़े । जब बदर नामी जगह पर पहुँचे तो एक सहाबी के मश्वरा से दुश्मन के निकट जाकर बदर के चश्मा (पानी के स्रोत) पर इस्लामी फौज ने डेरा डाल दिया । यद्यपि इस प्रकार पानी पर तो कब्ज़ा हो गया परन्तु वह मैदान जो मुसलमानों के भाग में आया रेतीला होने के कारण युद्ध की दृष्टि से बहुत नुकसान दायक साबित हुआ और सहाबा घबरा गए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारी रात दुआ करते रहे और बार बार ख़ुदा तआला से प्रार्थना करते थे हे मेरे रब्ब ! संसार में केवल यही लोग तेरी इबादत करने वाले हैं । हे मेरे रब्ब ! यदि यह लोग आज इस लड़ाई में मारे गए तो तेरा नाम लेने वाला संसार में कौन बाकी रहेगा ।

(ज़र्कानी भाग-1, पृ. 419, इब्ने हश्शाम भाग-2, पृ. 17)

अल्लाह तआला ने आपकी दुआएँ सुनीं और रात को वर्षा हो गई । जिस का परिणाम यह हुआ कि जिस मैदान में मुसलमान थे रेतीला होने के कारण वर्षा से जम गया और वह मैदान जो कुफ़्फ़ार के कब्ज़ा में था चिकनी मिट्टी होने के कारण वर्षा से बहुत फिलसने वाला हो गया । मानो कुफ़्फ़ार-ए-मक्का ने बावजूद इस मैदान में मुसलमानों से पहले पहुँचने के इसी लिये इस मैदान को चुना था कि पक्की मिट्टी के कारण उस में जंगी चालें आसानी के साथ हो सकती थी और सामने का रेतीला मैदान इस लिये छोड़ दिया कि मुसलमान वहां डेरा लगा लेंगे और जंगी चाल चलते समय उनके पांव रेत में धंस जायेंगे परन्तु ख़ुदा तआला ने रातो रात पासा पलट दिया रेतीला मैदान एक जमा हुआ पक्का मैदान बन गया और पक्का मैदान फिसलने वाली ज़मीन बन गया । रात को ख़ुदा तआला ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बशारत (ख़ुशख़बरी) दी कि तुम्हारे यह शत्रु मारे जायेंगे और इस-इस जगह पर मारे जायेंगे । अतः जंग में ऐसा ही हुआ और वह शत्रु उन्हीं जगहों पर जो आपने बताई थी मारे गए । जब फ़ौज एक दूसरे के मुक़ाबला में आमने सामने हुई उस समय जो इख़्लास (निःस्वार्थता) का नमूना सहाबा ने दिखाया उस पर निम्नलिखित उदाहरण ख़ूब रोशनी पड़ती है।

इस्लामी फौज में कुछ अनुभवी जरनैल भी थे । उनमें से एक हज़रत

अब्दुर्रहमान बिन औफ़ भी थे । जो मक्का के सरदारों में से थे । वह रिवायत करते हैं कि मेरा विचार था आज मुझ पर बहुत सी ज़िम्मेदारियां आती हैं । इस विचार के आते ही मैंने अपने दायें बायें देखा तो मुझे मालूम हुआ कि मेरे दायें बायें मदीना के दो नौजवान लड़के हैं । तब मेरा दिल सीना में बैठ गया और मैंने कहा बहादुर जरनैल लड़ने के लिये इस बात का मोहताज (इच्छुक) होता है कि उसका दायां और बायां पक्ष मज़बूत हो ताकि वह दुश्मन के बीच दिलेरी से घुस सके परन्तु मेरे साथ तो मदीना के दो अनुभवहीन लड़के हैं । मैं आज अपनी कला का प्रदर्शन किस प्रकार कर सकूँगा । अभी यह विचार मेरे मन आया ही था कि मेरे एक पक्ष खड़े हुए लड़के ने मेरी पसली में कोहनी मारी । जब मैंने उसकी ओर ध्यान दिया तो उसने मेरे कान में कहा, चचा हमने सुना है कि अबू जहल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बहुत दुःख दिया करता था । चचा मेरा दिल करता है कि मैं आज उसके साथ मुकाबला करूँ आप मुझे बतायें वह कौन है ? वह कहते हैं कि अभी मैं जवाब नहीं दे पाया था कि मेरे दूसरे पक्ष के दूसरे साथी ने कोहनी मारी और जब मैं उसकी ओर धूमा उसने भी धीरे से वही प्रश्न मुझ से किया । वह कहते हैं कि मैं उनकी इस दिलेरी से चकित रह गया । क्योंकि बावजूद तजुर्बाकार सिपाही होने के मैं भी विचार नहीं कर सकता था कि फ़ौज के कमान्डर पर अकेला जा कर हमला कर सकता हूँ । वह कहते हैं कि मैंने उनके प्रश्न पर उँगली उठाई और कहा वह व्यक्ति जो सिर से पैर तक हथियार बन्द है और दुश्मन की कतारों के पीछे खड़ा है और जिस के आगे दो तजुर्बा कार जरनैल नंगी तलवारें लिये खड़े हैं वही अबू जहल है । वह कहते हैं अभी मेरी उँगुली नीचे नहीं गिरी थी कि वह दोनों लड़के जिस प्रकार बाज़ चिड़िया पर हमला करता है इस तरह चीखते हुए कुफ़्फ़ार की सफों (कतारों) में घुस गए । उनका यह हमला ऐसा अचानक और तेज था कि किसी व्यक्ति की तलवार उनके विरोध में न उठ सकी । अतः वह तीर की सी तेज़ी के साथ अबू जहल तक जा पहुँचे । उसके पहरेदारों ने उन पर वार किये एक का वार खाली गया तथा दूसरे के वार से एक नौजवान का हाथ कट गया परन्तु दोनों में से किसी ने कोई चिन्ता न की और केवल अबू जहल की ओर ही बढ़ते गए और उस पर इतनी तीव्रता से हमला किया कि वह ज़मीन पर गिर

गया और फिर उन्होंने उसे बुरी तरह ज़ख्मी (घायल) कर दिया परन्तु तलवार चलाने की कला न जानने के कारण वह उसे कत्ल न करे सके ।

इस घटना से ज्ञात हो सकता है कि वह अत्याचार जो मक्का के लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर करते रहे थे निकट से देखने वालों को वह कितने भयानक दिखाई देते थे । आज भी इन अत्याचारों को इतिहास में पढ़ कर एक शरीफ़ आदमी का दिल धड़कने लगता है और रोंगटे खड़े हो जाते हैं परन्तु मदीना के लोग तो उन लोगों के मुँह से इन अत्याचारों की कहानियां सुनते थे जिन्होंने अपनी आँखों से वे अत्याचार देखे थे। एक ओर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुक़द्दस (पवित्र) और सुलह जूयाना (परस्पर मेल जोल से रहने स्वाभाविक वाले) जीवन को देखते थे और दूसरी ओर मक्का वालों की मानवता का हनन करने वाले अत्यचारों की घटनाऐं सुनते थे तो उनके मन इस हसरत से भर जाते थे कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी सुलह जूई (मेल जोल पसन्द) और शान्ति-मय स्वभाव के कारण उन लोगों को उत्तर नहीं दिया । काश ! वह हमारे सामने आ जाऐं तो हम उन्हें बताऐं कि यदि उन के अत्यचारों का उत्तर नहीं दिया गया तो इस का कारण यह नहीं था कि मुसलमान कमज़ोर थे बल्कि उस का कारण यह था कि मुसलमानों को ख़ुदा तआला की तरफ़ से जवाबी कार्यवाहियों की आज्ञा नहीं थी । मुसलमानों की इस मानसिकता से यह अनुमान भी लगाया जा सकता है कि जंग शुरू होने से पहले अबू जहल ने एक बदवी सरदार (गांव के सरदार) को इस बात के लिये भेजा कि वह अनुमान लगाए कि मुसलमानों की संख्या कितनी है । जब वह वापस आया तो उस ने बताया कि मुसलमान तीन सवा तीन सौ के लगभग हैं । इस पर अबूजहल और उस के साथियों ने ख़ुशी प्रकट की और कहा कि अब मुसलमान हम से बच कर कहां जाते हैं परन्तु उस व्यक्ति ने कहा हे मक्का वालो ! मेरी नसीहत तुम को यही है कि तुम उन लोगों से न लड़ो क्योंकि मैंने जितने मुसलमान के आदमी देखे हैं उन को देखकर मुझे ऐसा लगा कि ऊटों पर आदमी नहीं, मौतें सवार हैं अर्थात् उन में से प्रत्येक व्यक्ति ज़िन्दा मरने के लिये ही मैदान में आया है

ज़िन्दा वापस जाने के लिये नहीं, जो व्यक्ति मौत को अपने लिये आसान (सरल) कर लेता है और मौत से मिलने के लिये तैयार हो जाता है उस का मुकाबला करना कोई साधारण बात नहीं ।

## एक महान भविष्यवाणी का पूरा होना

जब जंग शुरू होने का समय आया तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस जगह से जहां आप बैठ कर दुआ कर रहे थे, बाहर आए और फ़र्माया:-

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرْ.

उच्चारण :– सयुहज़मुल् जम्ओ व यूवल्लूनल् द्दुबुर

*अर्थात् दुश्मन की फ़ौज पराजित होगी और पीठ फेर कर मैदान छोड़ जायेगी । यह शब्द जो आपने कहे यह क़ुर्आन करीम की एक भविष्यवाणी थी । जो मक्का में ही इस जंग के विषय में क़ुर्आन मजीद में अवतरित हुई थी । मक्का में जिस समय मुसलमान अत्याचारों का तख़्त-ए-मश्क़ बने हुए थे अर्थात् उन पर अत्यचार किये जा रहे थे और वे इधर उधर हिजरत करके जा रहे थे ख़ुदा तआला ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुर्आन करीम की यह आयतें उतारी :-*

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ o كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ o
اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِى الزُّبُرِ o اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ
مُّنْتَصِرٌ o سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ o بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ
اَدْهٰى وَاَمَرُّ o اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِى ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ o يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِى النَّارِ عَلٰى
وُجُوْهِهِمْ ، ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ o (سورہ القمر ۴۲-۴۹)

*अर्थात् हे मक्का वालो फ़िर्औन की तरफ़ भी अंज़ार की (डराने वाली) बातें आई थीं, परन्तु उन्होंने हमारी सभी आयतों*

*(निशानों) का इन्कार किया । अतः हमने उनको इस तरह पकड़ लिया जैसे एक बलवान तथा विजयी अस्तित्व वाला पकड़ा करता है । (अतः हे मक्का वालो) बताओ क्या तुम्हारे कुफ़्फ़ार (लोग) उन कुफ़्फ़ार से अच्छे हैं या तुम्हारे लिये पहली (धार्मिक) पुस्तकों में हिफ़ाज़त तथा रक्षा का कोई वादा आ चुका है । वह कहते हैं कि हम तो एक बड़ी ताकत हैं जो दुश्मनों से हारती नहीं बल्कि दुश्मों से बदला लिया करती हैं । (वह बातें करते रहें) उनके जत्थे बहुत जल्दी इकट्ठे होंगे और फिर उन्हें पराजय का मुँह देखना पड़ेगा और वह पीठ फेर कर भाग जायेंगे बल्कि उनकी तबाही की घड़ी का ख़ुदा तआला का वादा है और यह तबाही बरबादी बड़ी हलाकत (मौत) वाली और बड़ी कड़वी होगी । उस दिन मुजरिम (अपराधी) परेशानी और अज़ाब (कष्ट) में पड़ेंगे और अपने मुँहों के बल घसीट कर उनको आग के गढ़ों में डाल दिया जाएगा और कहा जायेगा अब बड़े अज़ाब को चखो ।*

यह सूरः क़मर की आयतें हैं और सूरः क़मर सभी इस्लामी रिवायतों के अनुसार मक्का में उतरी थी । मुसलमान विद्वान भी इस सूरः के अवतरण को नबुव्वत के दावा के बाद पांचवें से दसवें साल में मानते हैं अर्थात् हिजरत से कम से कम तीन साल पहले यह उतरी थी बल्कि लगभग 8 साल पहले । यूरोप के गवेषक (मुहक़्क़िक़) भी इस को प्रमाणित करते हैं । अतः नोलडके इस सूरः को दावा के पांच साल बाद की मानता है । रेवरन्ड वेरी लिखते हैं कि मेरे नज़दीक नोल्डके ने इस सूरः के अवतरण का समय कुछ पहले माना है। वह अपना अनुमान बताते हैं कि यह छठे या सातवें साल हिजरत से पहले उतरी जिसके अर्थ यह हैं कि उनके नज़दीक यह सूरः दावा नबुव्वत के छटे या सातवें साल की बात है । यद्यपि मुसलमानों के दुश्मनों ने भी इसे हिजरत से कई साल पहले की माना है । उस समय कितनी सफ़ाई से इस युद्ध की सूचना दी गई थी और कुफ़्फ़ार का अन्जाम बता दिया गया था और फिर किस प्रकार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर की जंग शुरू होने से पूर्व इन आयतों को पढ़कर मुसलमानों को ध्यान आकर्षित किया कि ख़ुदा के वादों के पूरा होने का समय आ गया है ।

अतः वह समय आ गया था जिस की सूचना यसइयाः नबी ने समय से पूर्व दी थी (यसइयाः 21/17-13) और जिसकी सूचना क़ुर्आन करीम ने दूसरी बार जंग आरम्भ होने से छः अथवा आठ वर्ष पूर्व दी थी, इस लिए बावजूद इसके कि मुसलमान जंग के लिये तैयार न थे और बावजूद इस के कि कुफ़्फ़ार को भी उनके कुछ साथियों ने यह जंग न लड़ने का मश्वरा दिया था, लड़ाई हो गई, और 313 आदमी जिनमें से अधिकतर अनुभवहीन और सभी निहत्थे थे, कुफ़्फ़ार की अनुभव प्राप्त फौज के सामने जिनकी गिनती एक हज़ार से अधिक थी मुक़ाबला के लिये डट गए । जंग शुरू हुई और कुछ ही घंटों में कुफ़्फ़ार के बड़े-बड़े सरदार मारे गए । यसइयाह नबी की पेशगोई के अनुसार केदार की प्रतिष्ठा जाती रही । मक्का की फ़ौज कुछ लाशें और कुछ क़ैदी पीछे छोड़ कर सिर पर पांव रख कर मक्का की ओर भाग गई । जो क़ैदी पकड़े गए उनमें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा अब्बास(र) भी थे, जो हमेशा आपका साथ दिया करते थे । उन्हें मजबूर करके मक्का वाले अपने साथ लड़ाई के लिये ले आए थे । इसी प्रकार क़ैदियों में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बड़ी बेटी के पति अबुल् आस भी थे । मारे जाने वालों में मक्का की फ़ौज का कमांडर और इस्लाम का सबसे बड़ा दुश्मन अबू जहल भी सम्मिलित था ।

## बदर के कैदी*

इस विजय पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रसन्न भी थे कि पेशगोइयां (भविष्यवाणियां) जो आप के द्वारा निरन्तर 14 सालों से घोषित हो रही थीं और वे पेशगोइयां जो पहले नबी इस दिन के संबन्ध में कर चुके थे पूरी हो गईं । परन्तु मक्का के विरोधियों का अन्त भी आप की नज़रों के सामने था । आपके स्थान पर कोई और होता तो खुशी से उछलता कूदता किन्तु जब आपकी नज़रों के सामने से मक्का के क़ैदी रस्सियों में बन्धें हुए गुज़रे तो आप(स) और आपके वफ़ादार साथी अबु बकर(र) की आंखों से आंसू

---

* *विस्तार के लिए देखें अल्-सीरतुल् हल्बियाः भाग 2, पृ. 219 व ज़र्क़ानी भाग 1, पृ. 440-441*

बह पड़े । उस समय हज़रत उमर(र) जो बाद में आप के दूसरे खलीफ़ा हुए सामने से आए तो वह चकित रह गए कि इस विजय और खुशी के अवसर पर आप क्यों रो रहे हैं । उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! मुझे बताईए कि इस समय (आपके) रोने का क्या कारण है, यदि वह बात मेरे रोने का कारण भी बन सकती है तो मैं भी रो लूँगा नहीं तो कम से कम रोने वाला मुखड़ा ही बना लूँगा । आपने फ़र्माया कि देखते नहीं कि खुदा तआला के विरोध करने के कारण आज मक्का वालों की क्या अवस्था हो रही है ।

आप के इन्साफ़ और आपकी अदालत जिसकी सूचना यस्इया: नबी ने बार बार अपनी भविष्यवाणियों में दी थी इस अवसर पर एक बुहत ही पवित्र प्रमाण मिला । मदीना की ओर वापस आते हुए रात को जब आप सोने के लिये लेटे तो सहाबा ने देखा कि आपको नींद नहीं आ रही आखिर उन्होंने विचार करके यह नतीजा निकाला कि आप के चाचा अब्बास(रज़) चूँकि रस्सियों में जकड़े होने के कारण सो नहीं सकते और उनके कराहने की आवाज़ें आती हैं इस लिये उनकी तकलीफ़ को देखते हुए आप को नींद नहीं आती उन्होंने आपस में परामर्श करके हज़रत अब्बास(र) के बन्धनों को ढीला कर दिया । हज़रत अब्बास(र) सो गए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी नींद आ गई । थोड़ी देर के बाद यकायक (अचानक) घबराकर आप की आँख खुली और आपने पूछा अब्बास(र) खामोश क्यूँ हैं उनके कराहने की आवाज़ क्यूँ नहीं आती ? आप(स) के दिल में यह भ्रम पैदा हुआ कि कहीं अब्बास(र) तकलीफ के कारण बेहोश तो नहीं हो गए ? सहाबा ने कहा या रसूलुल्लाह हम ने आप के कष्ट को देख कर उसके बन्धन ढीले कर दिये हैं । आप ने फ़र्माया नहीं नहीं, यह बेइन्साफी नहीं होनी चाहिए जिस तरह अब्बास(र) मेरा रिश्तेदार है उस तरह दूसरे कैदी भी दूसरों के रिश्तेदार हैं या तो सब कैदियों के बन्धन ढीले कर दो ताकि वे आराम से सो जाऐं या अब्बास(रज़) के बन्धन भी कस दो । सहाबा ने आप की बात सुन कर सब कैदियों के बन्धन ढीले कर दिये और सुरक्षा की सारी ज़िम्मादारी अपने उपर ले ली । जो लोग कैद हुए थे उन में से जो पढ़ना जानते थे आप(स) ने उन का केवल यही फ़िदया (बदला) निश्चित किया कि वे मदीना के दस दस लड़कों को पढ़ना सिखा दें । कुछ जिनका फ़िदया देने वाला कोई नहीं था उन

को वैसे ही आज़ाद कर दिया । वे धनी जो फिदया दे सकते थे उनसे फ़िदिया ले कर उनको छोड़ दिया । इस प्रकार आप ने उस पुराने रिवाज को कि कैदियों को गुलाम बना कर रखा जाता था समाप्त कर दिया ।

## जंग उहद

कुफ़्फ़ार (इस्लाम का इन्कार करने वाले) ने मैदान से भागते हुए यह घोषणा की कि अगले वर्ष हम मदीना पर दोबारा हमला करेंगे और अपनी पराजय का मुसलमानों से बदला लेंगे । अत: एक साल बाद उन्होंने फिर पूरी तैयारी के साथ मदीना पर हमला किया । मक्का वालों के क्रोध की यह हालत थी कि बदर की जंग के बाद उन्होंने यह घोषणा कर दी थी कि किसी व्यक्ति को अपने मुर्दों पर रोने की आज्ञा नहीं, और जो व्यापारिक काफिले आयेंगे उनकी आय आगामी जंग के लिए सुरक्षित रखी जायेगी । अत: बड़ी तैयारी के पश्चात् तीन हज़ार सिपाहियों से अधिक की फ़ौज अबु सुफ़यान के नेतृत्व में मदीना पर हमलावर हुई । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा (साथियों) से परामर्श लिया कि हमें शहर में रह कर मुक़ाबला करना चाहिये या बाहर निकलकर ? आपका विचार यही था कि दुश्मन को आक्रमण करने देना चाहिए ताकि जंग की पहल का भी वही ज़िम्मेदार हो और मुसलमान अपने घरों में बैठ कर आसानी से मुकाबला कर सकें किन्तु वह नौजवान मुसलमान जिन को बदर की जंग में शामिल होने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था और जिनके मन में लालसा थी कि काश हमको भी ख़ुदा के मार्ग में शहीद होने का अवसर प्राप्त होता, उन्होंने आग्रह किया कि हमें शहीदी प्राप्त करने से क्यों वंचित रखा जाता है । अत: आप(स) ने उनकी बात मान ली ।

परामर्श करते समय आप(स) ने अपना एक सपना भी सुनाया, फ़र्माया मैंने कुछ गाऐं देखी हैं । मैंने देखा कि मेरी तलवार का सिरा टूट गया है और मैंने यह भी देखा कि गाऐं ज़बह की जा रही हैं और फिर यह कि मैंने अपना हाथ एक मज़बूत और महफ़ूज़ ज़िराह (कवच) के अन्दर डाला है (इब्ने हश्शाम भाग 2, पृ.-77) और मैंने यह भी देखा कि मैं एक मैंढे की पीठ पर सवार हूँ । (तब्क़ात इब्ने साअ्द किस्म अव्वल जुज़ दो पृ. 26) सहाबा ने

कहा हे अल्लाह के रसूल ! आपने इन सपनों की क्या ताबीर फ़र्माई । आप(स) ने फ़र्माया गाय के ज़बह होने की ताबीर यह है कि मेरे कुछ सहाबी(र) शहीद होंगे, और तलवार का सिरा टूटने से अभिप्राय यह है वि मेरे अज़ीज़ों (रिश्तेदारों) में से कोई विशेष व्यक्ति शहीद होगा या हो सकता है कि इस जंग में मुझे कोई नुकसान पहुँचे, और ज़िराह (कव्च) के अन्दर हाथ डालने की ताबीर के संबन्ध में मैं समझता हूँ कि हमारा मदीना में ठहरना अधिक उचित है और मेंढे पर सवार होने वाले सपने की ताबीर यह मालूम होती है कि कुफ़्फ़ार की फ़ौज के सरदार पर हम विजयी रहेंगे अर्थात् वह मुसलमानों के हाथों मारा जायगा। यद्यपि इस सपने में मुसलमानों पर स्पष्ट कर दिया गया था कि उनका मदीना में रहना उचित है परन्तु चूँकि सपने की ताबीर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपनी थी, इल्हामी (अल्लाह की ओर से) नहीं थी, आप(स) ने बहुमत को स्वीकार कर लिया और लड़ाई के लिये बाहर जाने का फैसला कर दिया । जब आप(स) बाहर निकले तो, नौजवानों को अपने मन में पश्चाताप हुआ और उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! जो आप का मश्वरा है वही उचित है । हमें मदीना में ठहर कर दुश्मन का मुक़ाबला करना चाहिये। आप(स) ने फ़र्माया जब ख़ुदा का नबी ज़िराह (कव्च) पहन लेता है तो उतारा नहीं करता । अब जो चाहे हो, हम आगे ही जायेंगे । यदि तुमने धैर्य एवं संयम से काम लिया तो ख़ुदा की सहायता तुम को मिल जायेगी, यह कहकर आप एक हज़ार की फ़ौज लेकर मदीना से निकले और थोड़ी दूरी पर जाकर रात गुज़ारने के लिये डेरा लगा दिया। आप सदैव ऐसे करते थे कि दुश्मन के पास पहुँच कर अपनी फ़ौज को कुछ समय तक विश्राम करने का अवसर दिया करते थे ताकि वह अपना सामान आदि तैयार कर लें । प्रातः की नमाज़ के समय जब आप निकले तो आप को ज्ञात हुआ कि कुछ यहूदी भी जिन क़बीलों से उनकी संधि थी उनकी सहायता के बहाना से आये हैं । चूँकि यहूदियों की शरारतों का आपको पता लग चुका था, आपने फ़र्माया कि इन को वापिस भेज दो, उस पर अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल जो मुनाफ़िक़ों का सरदार था वह भी अपने तीन सौ साथियों को लेकर यह कहते हुए कि अब यह लड़ाई नहीं रही, यह तो अपने आप को मौत के मूँह में धकेलना है क्योंकि स्वंय अपने सहायकों को लड़ाई से रोका

जाता है। इस का परिणाम यह हुआ कि मुसलमान केवल सात सौ रह गए जो क़ुफ़्फ़ार की गिनती के हिसाब से चौथे भाग से भी कम थे तथा (लड़ाई के) सामान के अनुसार और भी कमज़ोर, क्योंकि कुफ़्फ़ार के पास सात सौ कवचधारी थे और मुसलमानों के पास केवल एक सौ कवचधारी फौजी थे कुफ़्फ़ार के पास 200 घुड़सवार और मुसलमानों के पास केवल दो घुड़ सवार थे । अन्ततः आप उहद नामक स्थान पर पहुँचे वहां पहुँच कर आप(स) ने एक पहाड़ी दर्रा की सुरक्षा के लिये पचास सिपाही नियुक्त किए, और सिपाहियों के अफ़सर को आदेश दिया कि यह दर्रा इतना अवश्यक है कि यद्यपि हम मारे जायें या जीत जायें फिर भी तुम यह स्थान न छोड़ना (इब्ने हश्शाम भाग-2, पृ. 78) इसके पश्चात् आप(स) 650 फ़ौजियों को लेकर दुश्मन के मुक़ाबला के लिये निकल पड़े । जो अब दुश्मन की संख्या के अनुसार लगभग पाँचवां भाग थे । लड़ाई हुई और अल्लाह की सहायता से थोड़ी देर में ही साढ़े छः सौ मुसलमानों के मुक़बला में मक्का की तीन हज़ार तजुर्बाकार फ़ौज सिर पर पांव रख़ कर भाग गई ।

## विजय का पराजय में परिवर्तित होना

मुसलमानों ने (भागते दुश्मन का) पीछा आरम्भ किया उन लोगों ने जो पीठ पीछे की घाटी की सुरक्षा के लिये खड़े थे अपने अफ़सर (कमांडर) से कहा कि अब तो दुश्मन को पराजय हो चुकी है अब हमें भी जिहाद का सवाब लेने दिया जाये, अफ़सर ने उनको इस बात से रोका ओर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश याद दिलाया परन्तु उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो कुछ फ़र्माया था इससे यह अभिप्राय तो न था कि दुश्मन भाग भी जाये फिर भी यहां खड़े रहो । यह कह कर उन्होंने दर्रा (घाटी) छोड़ दिया और जंग के मैदान में कूद पड़े । भागती हुई फ़ौज में से ख़ालिद बिन् वलीद जो बाद में इस्लाम के बड़े भारी जनरल हुए, की नज़र ख़ाली दर्रा (घाटी) पर पड़ी जहां केवल कुछ ही आदमी अपने अफ़सर के साथ खड़े थे। ख़ालिद(र) ने क़ुफ़्फ़ार के दूसरे जनरल अमर बिन आस को आवाज़ दी कि ठहरो पीछे पहाड़ी दर्रा पर दृष्टि डालो । अमर बिन् आस ने दर्रा पर दृष्टि डाली तो समझा की आयु का अत्यधिक कीमती अवसर मुझे

प्राप्त हो रहा है । दोनों भागते हुए जरनैलों ने अपनी भागती हुई फ़ौजी टुकड़ियों को संभाला और इस्लामी फ़ौज का बाज़ू (साईड) काटते हुए पहाड़ी पर चढ़ गए । कुछ ही मुसलमान वहां दर्रा की सुरक्षा के लिये रह गए थे उनको टुकड़े टुकड़े करते हुए पीछे से इस्लामी फ़ौज पर आ चढ़े । उनकी विजय की जयकारों को सुन कर भागती हुई बाकी फ़ौज भी जंग के मैदान की ओर टूट पड़ी। यह हमला इतना अचानक हुआ और काफ़िरों का पीछा करने के कारण मुसलमान इतने फैल चुके थे कि सामान्य रूप से कोई भी इस्लामी फ़ौज उनके मुक़ाबला पर नहीं थी ।

अकेला अकेला सिपाही मैदान में नज़र आ रहा था जिन में से कुछ को उन लोगों ने मार दिया । शेष इस बात पर चकित थे कि क्या हो गया है वे पीछे की ओर दौड़े । कुछ सहाबा(र) दौड़ कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चारों ओर एकत्रित हो गए जिनकी संख्या अधिक से अधिक तीस थी । (ज़र्कानी भाग 2 पृ. 25) कुफ़्फ़ार ने पूरे दल बल के साथ उस स्थान पर आक्रमण किया जहां रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े थे । एक के बाद एक सहाबा(र) आप(स) की सुरक्षा करते हुए मारे जाने लगे । तलवार चलाने वालों के अतिरिक्त तीर अन्दाज़ ऊंचे टीले पर खड़े होकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर निरन्तर तीर बरसा रहे थे, उस समय तल्हा(र) ने जो क़ुरैश में से थे और मक्का के मुहाजिरीन में शामिल थे, यह देखते हुए कि दुश्मन सब के सब तीर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मूँह की तरफ फैंक रहा रहा है, अपना हाथ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह के आगे खड़ा कर दिया, तीर के बाद तीर जो निशाना पर गिरता था वह तल्हा(र) के हाथ पर गिरता था परन्तु बहादुर और वफ़ादार सहाबी अपने हाथ को एक पल भी इधर उधर नहीं करते थे । इस प्रकार तीर पड़ते गए और तल्हा(र) का हाथ घावों के कारण बिल्कुल बेकार हो गया और केवल एक ही हाथ बाकी रह गया । कई वर्षों के पश्चात् जब इस्लाम में चौथी ख़िलाफ़त के समय मुसलमानों में गृह युद्ध छिड़ा तो किसी दुश्मन ने ताना देते हुए तल्हा(र) को टुण्डा कहा । इस पर एक दूसरे सहाबी(र) ने कहा, हां टुण्डा ही है किन्तु कितना मुबारक टुण्डा है, तुम्हें मालूम है कि तल्हा का यह हाथ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के

मुँह की रक्षा में टुण्डा हुआ था । उहद की जंग के बाद किसी व्यक्ति ने तल्हा(र) से पूछा कि जब तीर आप के हाथ पर गिरते थे, तो क्या आपको दर्द नहीं होता था और क्या आप के मुँह से उफ़ (हाय) नहीं निकलती थी । तल्हा(र) ने कहा दर्द भी होता था और उफ़ भी निकलना चाहती थी लेकिन मैं उफ़ नहीं करता था, कहीं ऐसा न हो कि उफ़ करते समय मेरा हाथ हिल जाये और तीर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह पर आ गिरे ।

परन्तु यह थोड़े से लोग कब तक इतने बड़ी फ़ौज का मुक़ाबला कर सकते थे । कुफ़्फ़ार की फ़ौज का एक जत्था आगे बढ़ा और उसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट के सिपाहियों को धकेल कर पीछे कर दिया, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले पहाड़ की तरह वहां खड़े थे कि एक पत्थर ज़ोर से आकर आपकी ख़ोद (फ़ौलादी टोपी) पर लगा और ख़ोद की कील आप(स) के सिर में घुस गई और आप(स) बेहोश हो कर उन सहाबा(र) की लाशों पर गिर पड़े जो आप(स) के इर्द गिर्द लड़ते हुए शहीद हो गए थे। (इब्ने हश्शाम भाग-2, पृ. 84) इसके पश्चात्, कुछ और सहाबा(र) आप(स) के शरीर की सुरक्षा करते हुए शहीद हुए और उनकी लाशें आप के शरीर पर जा गिरीं । कुफ़्फ़ार ने आप के शरीर को लाशों के नीचे दबा हुआ देख कर समझा कि आप मारे जा चुके हैं। अतः मक्का की फ़ौज अपनी जत्थे बंदी के लिये पीछे हट गई जो सहाबा(र) आप(स) के गिर्द खड़े थे और जिनको कुफ़्फ़ार का रैला धकेल कर पीछे ले गया था उन में हज़रत उमर(र) भी थे जब आप ने देखा कि मैदान सब लड़ने वालों से खाली हो गया है तो आप ने समझा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं और वह व्यक्ति जिस ने बाद में बड़ी दिलेरी से क़ैसर (रूम) और किसरा (ईरान) का मुक़ाबला किया और उसका दिल न कभी घबराया और न कभी ड़रा, वह एक पत्थर पर बैठ कर बच्चों की तरह रोने लग गया इतने में मालिक नामी सहाबी जो इस्लामी फ़ौज की विजय के समय पीछे हट गया था, क्योंकि वह भूखे थे और रात से उसने कुछ नहीं खाया था जब फ़तह (विजय) हो गई तो कुछ खजूरें लेकर पीछे की तरफ़ चले गए ताकि उन्हें खाकर अपनी भूख का इलाज कर सके, वह फ़तह की खुशी में टहल रहे थे कि टहलते-टहलते हज़रत उमर(र) के पास पहुँच गए और उमर(र) को रोते देखकर बड़े हैरान हुए

और पूछा उमर(र) आप को क्या हो गया, इस्लाम की फ़तह पर आप को खुश होना चाहिये या रोना चाहिये ? उमर(र) ने उत्तर में कहा कि मालिक हो सकता है कि तुम फ़तह के बाद ही पीछे हट आये थे तुम्हें मालूम नहीं कि कुफ़्फ़ार के लश्कर ने पहाड़ी की ओर से चक्कर काटकर, इस्लामी फ़ौज पर आक्रमण किया और चूँकि मुसलमान फैल चुके थे उनका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता था। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ सहाबा के साथ उनके मुक़ाबला के लिये खड़े हुए और मुक़ाबला करते करते शहीद हो गए । मालिक(र) ने कहा उमर ! यदि यह घटना सही है तो आप यहां बैठे क्यों रो रहे हैं । जिस दुनिया में हमारा महबूब गया है हमें भी तो वहीं जाना चाहिये यह कहा और वह अन्तिम खजूर जो उन के हाथ में थी और जिसे मूँह में डालने वाले थे उसे यह कहते हुए ज़मीन पर फ़ेंक दिया और कहा कि हे खजूर ! मालिक और जन्नत के बीच तेरे अतिरिक्त कौन सी चीज़ रोक है । यह कहा और कुफ़्फ़ार की फौज में घुस गए तीन हज़ार आदमियों के मुक़ाबला में एक आदमी कर ही क्या सकता था परन्तु ख़ुदा-ए- वाहिद (एक ख़ुदा) का एक ही उपासक पर भारी होती है । मालिक इतना निर्भय लड़े कि दुश्मन हैरान हो गया परन्तु आख़िर ज़ख़्मी हुए फिर गिरे और गिर कर भी दुश्मन के सिपाहियों पर हमला करते रहे, कि जिसके परिणाम स्वरूप जंग के बाद आप की लाश के सत्तर टुकड़े मिले यहां तक कि आप की लाश पहचानी नहीं जाती थी । अन्ततः आप की बहन ने आप की एक उंगली से आपको पहचान कर बताया कि यह मेरे भाई की लाश है ।

वे सहाबी(र) जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गिर्द थे और जो कुफ़्फ़ार के रैले के कारण पीछे धकेल दिये गए थे कुफ़्फ़ार के पीछे हटते ही वे फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गिर्द जमा हो गए । आप(स) के पवित्र शरीर को उन्होंने उठाया और एक सहाबी उबैदा बिन् जरहि(र) ने अपने दांतों से आप(स) के सर में घुसी हुई कील को ज़ोर से निकाला, जिससे उनके दो दांत टूट गए । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को थोड़ी देर बाद होश आ गया और सहाबा(र) ने मैदान में चारों ओर आदमी दौड़ा दिये ताकि सभी मुसलमान् इकट्ठे हो जायें । भागी हुई फ़ौज फिर जमा होनी शुरू हुई तथा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम उन्हें लेकर पहाड़ी की ओट में चले गए । जब पहाड़ी के नीचे बची खुची फ़ौज खड़ी थी तो अबू सुफ़यान ने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी और कहा हमने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मार दिया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू-सुफ़यान की बात का जवाब नहीं दिया ताकि ऐसा न हो कि दुश्मन को आपकी मौजूदगी का पता चल जाये और फिर आक्रमण कर दे तथा ज़ख़्मी मुसलमान फिर दोबारा दुश्मन के हमला का शिकार हो जायें । जब इस्लामी फौज से इस बात का कोई जवाब नहीं मिला तो अबू-सुफ़यान को इस बात का विश्वास हो गया कि उसका विचार उचित है उसने बड़े जोर से आवाज़ देकर कहा कि हमने अबु-बकर(र) को भी मार दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबु बकर(र) को आदेश दिया कि वह भी उत्तर न दें, फिर अबू सुफ़यान ने आवाज़ दी कि हमने उमर को भी मार दिया तब उमर(र) जो बहुत जोशीले व्यक्ति थे, उन्होंने उसके जवाब में यह कहना चाहा कि हम लोग ख़ुदा के फ़ज़ल (कृपा) से जीवित हैं और तुम्हारे मुक़ाबला के लिये तैयार हैं परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोक दिया कि मुसलमानों को कष्ट में न डालो और ख़ामोश रहो । अब कुफ़्फ़ार को विश्वास हो गया कि इस्लाम के संस्थापक को भी और उनके दायें बायें को भी हमने मार दिया है इस पर अबू-सुफ़यान और उसके साथियों ने खुशी से जयकार लगाया اعلُ هُبَل اُعلُ هُبَل ''ओलो हुबल् ओलो हुबल्'' अर्थात् हमारे श्रेष्ठ हुबल देवता की जय हो कि उसने आज इस्लाम का ख़ात्मा कर दिया, वही रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो अपनी मौत की घोषणा पर, अबु बकर(र) की मौत की घोषणा पर और उमर(र) की मौत की घोषणा पर चुप रहने की नसीहत कर रहे थे, ऐसा न हो कि घायल मुसलमानों पर फिर कुफ़्फ़ार की फ़ौज टूट पड़े और मुट्ठी भर मुसलमान उनके हाथों शहीद हो जायें । अब जबकि ख़ुदा-ए-वाहिद (एकेश्वरवाद) का प्रश्न पैदा हुआ और शिर्क (अनेकेश्वरवाद) का नारा मैदान में मारा गया तो आपकी रूह (आत्मा) बेचैन हो गई और आप ने बड़े जोश से सहाबा को देखते हुए फ़र्माया तुम लोग उत्तर क्यों नहीं देते, सहाबा(र) ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! हम क्या जवाब दें ? फ़र्माया कहो :-

اَللّٰہُ اَعلٰی وَاَجَلُّ

अल्लाहु आअ्ला व अजल्लु - अल्लाहु आअ्ला व अजल्लु

(अस्सीरतुल-हल्बिय्यः भाग 2, पृ. 270)

(अर्थात्) तुम झूठ बोलते हो कि हुबुल की शान बढ़ी है अल्लाहु वहदहू ला शरीक् (अल्लाह एक है (और) उसका कोई सांझी नहीं है) ही श्रेष्ठ है और उसकी शान ही सर्व श्रेष्ठ एवं उच्चतम् है और इस प्रकार आपने अपने जीवित होने की ख़बर दुश्मनों तक पहुँचा दी । इस दिलेराना और बहादुराना जवाब का कुफ़्फ़ार की फ़ौज पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि बावजूद इसके कि उनकी उम्मीदें इस उत्तर से मिट्टी में मिल गईं । यद्यपि उनके सामने मुठ्ठीभर घायल मुसलमान खड़े थे जिन पर हमला कर के उनको मार देना, प्रकृतिक रूप से यथा सम्भव था परन्तु वह दोबारा हमला करने का साहस न जुटा सके और जितनी भी विजय उन्हें प्राप्त हुई उसी की खुशीयां मनाते हुए मक्का को वापस चले गए ।

उहद की जंग में यद्यपि फ़तह (विजय) के पश्चात् पराज्य का एक रूप उत्पन्न हुआ किन्तु यह जंग वास्तव में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई का एक बहुत बड़ा निशान था । इस जंग में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार मुसलमानों को कामयाबी प्राप्त हुई फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार आपके चाचा सम्मानीय हम्ज़ा(र) मारे गए, फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक भविष्यवाणी के अनुसार आक्रमण शुरू होते ही कुफ़्फ़ार का झण्डा उठाने वाला मारा गया, फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार आप स्वयं भी घायल हुए और बहुत से सहाबा(र) शहीद हुए । इसके अतिरिक्त मुसलमानों को ऐसे इख़्लास (निस्वार्थता एवं श्रद्धा) और ईमान प्रकट करने का अवसर प्राप्त हुआ जिसका उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता है । इख़्लास और ईमान की कुछ घटनाऐं पहले वर्णन हो चुकी हैं, एक और घटना भी बताने योग्य है । जिससे मालूम होगा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुसंगति ने सहाबा के दिलों में कितना पक्का ईमान पैदा कर दिया था, जब रसूले

करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहाबा(र) के साथ पहाड़ के दामन में चले गए और दुश्मन पीछे हट गया तो आप ने कुछ सहाबा की यह ड्यूटी लगाई कि वह मैदान में जायें और घायलों का पता चलायें । एक सहाबी मैदान में तलाश करते करते एक घायल अंसारी के पास पहुँचे देखा उनकी अवस्था ख़तरनाक थी और वह जान तोड़ रहे थे, यह सहाबी उनके पास गए और उन्हें अस्सलामो अलैकुम कहा, उन्होंने कांपता हुआ हाथ मुसाफह (हाथ मिलाने) के लिये उठाया और उनका हाथ पकड़ कर कहा मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि कोई भाई मिल जाये, उन्होंने उस सहाबी से कहा आप की अवस्था तो ख़तरनाक मालूम होती है । क्या कोई संदेश है जो आप अपने रिश्तेदारों को देना चाहते हैं । उस मरने वाले सहाबी ने कहा कि हां हां मेरी तरफ़ से मेरे रिश्तेदारों को सलाम कहना कि मैं तो मर रहा हूँ परन्तु अपने पीछे ख़ुदा तआला की एक पवित्र अमानत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वजूद तुम में छोड़े जा रहा हूँ । हे मेरे भाइयो और रिश्तेदारो ! वह ख़ुदा का सच्चा रसूल है । मैं आशा करता हूँ कि तुम उसकी सुरक्षा में अपनी जानें देने से कभी पीछे नहीं हटोगे और मेरी वसीयत को याद रखोगे । (किताब मौता और ज़रक़ानी) मरने वाले के मन में अपने रिश्तेदारों को पहुँचाने के लिये हज़ारों संदेश पैदा होते हैं, परन्तु यह लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत (सुसंगति) में लीन चुके थे कि न उन्हें अपने बेटे याद थे, न पत्नियां याद थीं, न माल याद था, न जायदादें याद थीं, उन्हें केवल मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वजूद ही याद रहता था। वह जानते थे कि दुनिया की निजात (मोक्ष) इस व्यक्ति के साथ है । हमारे मरने के बाद यदि हमारी औलादें जीवित रहीं तो वह कोई बड़ा काम नहीं कर सकतीं परन्तु यदि इस निजात दहिन्दा (दुनिया को पापों से बचाने वाला) की सुरक्षा में उन्होंने अपनी जानें दे दीं तो यद्यपि हमारे अपने परिवार मिट जायेंगे परन्तु दुनिया ज़िन्दा हो जायगी । शैतान के पंजा में जकड़ा हुआ इन्सान फिर नजात (मुक्ति) पा जायेगा और हमारे परिवारों के जीवन से हज़ारों गुना अधिक क़ीमती मानव जाति का जीवन और उसकी मुक्ति है।

इस प्रकार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने घायलों और शहीदों को एकत्रित किया । घायलों की मरहम पट्टी की गई और

शहीदों को दफनाने का प्रबन्ध किया गया । उस समय आप को मालूम हुआ कि ज़ालिम मक्का के कुफ्फार ने कुछ मुसलमान शहीदों के नाक, कान भी काट दिये हैं । अतः यह लोग जिनके नाक, कान काटे गये थे, उनमें स्वंय आप(स) के चाचा हज़रत हम्ज़ा(र) भी थे, आपको यह दृष्य देखकर दुःख हुआ और आप(स) ने फ़र्माया कुफ्फार ने स्वंय अपने अमल और कर्म से अपने लिये इस बदला को जायज़ बना दिया है । जिसको हम नाजायज़ समझते थे, परन्तु ख़ुदा तआला की तरफ़ से आप(स) को वही (आकाशवाणी) हुई कि कुफ्फार जो कुछ करते हैं करने दो, तुम रहम (दया) और इन्साफ़ का दामन हमेशा पकड़े रखो।

## जंग उहद से वापसी और मदीना वालों का आप पर न्योछावर होना

जब इस्लामी फ़ौज मदीना की ओर वापस लौटी तो उस समय तक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत और इस्लामी फ़ौज के उखड़ जाने की सूचना मदीना पहुँच चुकी थी । मदीना की औरतें और बच्चे दीवानों की तरह आगे बढ़ते हुए उहद की तरफ़ दौड़े जा रहे थे । अधिकतर को तो रास्ते में ही सूचना मिल गई और वे रूक गए परन्तु बनु दीनार क़बीला की एक औरत दीवानों की तरह आगे बढ़ते हुए उहद तक जा पहुँची । जब वह दीवानों की तरह उहद के मैदान की तरफ जा रही थी, उस औरत का पति, भाई और पिता उहद में मारे गए थे और कुछ रिवायतों में है कि एक बेटा भी मारा गया था । जब उसे उसके पिता के मारे जाने की खबर दी गई तो उसने कहा मुझे यह बताओ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है ? चूँकि खबर देने वाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से संतुष्ट थे । वह उसे बारी बारी उसके पति, भाई और बेटे की मौत की सूचना देते चले गए, परन्तु वह केवल यही कहती रही कि अरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह क्या किया । देखने में यह वाक्य अशुद्ध मालूम होता है और इसी कारण इतिहासकारों ने लिखा है कि उस का मतलब यह था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क्या हुआ ? किन्तु वास्तविक्ता यह है कि यह वाक्य अशुद्ध नहीं बल्कि औरतों के मुहावरा के अनुसार यह

बिल्कुल ठीक है । औरत की मनोवृत्ति (जज़बात) बहुत तेज़ होती है । और कभी कभी वह मुर्दों को ज़िन्दा समझ कर बातें करती हैं या जिस प्रकार कुछ औरतों के पति या बेटे मर जाते हैं तो उनकी मौत पर उन से सम्बोधित हो कर वह इस प्रकार की बातें करती रहती हैं कि मुझे किस पर छोड़ चले हो ? बेटा इस बुढ़ापे में मुझ से क्यों मुँह मोड़ लिया ? दुःख की प्रचुरता में, यह मानव स्वभाव काएकअतिसूक्ष्म प्रदर्शनहै। इसी प्रकार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौत का समाचार सुनकर उस औरत का (यह) हाल हुआ कि वह आप(स) को मरा हुआ मानने के लिये तैयार नहीं थी, दूसरी ओर इस समाचार को वह इन्कार भी नहीं कर सकती थी, इसलिये दुःखी अवस्था में यह कहती जाती थी, अरे रसूलुल्लाह ने यह क्या किया ? अर्थात् ऐसा वफ़ादार मनुष्य हम को यह दुःख देने के लिये कैसे स्वीकार हो गया ।

जब लोगों ने देखा कि उसे अपने पिता भाई और पति की कोई चिन्ता नहीं तो वह उसके सच्चे जज़्बात को समझ गए और उन्होंने कहा उस की माँ ! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो जिस प्रकार तू चाहती हैं ख़ुदा के फ़ज़ल से कुशल मंगल हैं । इस पर उसने कहा मुझे दिखाओ वह कहां हैं । लोगों ने कहा आगे चली जाओ, वह आगे खड़े हैं वह औरत दौड़ कर आप तक पहुँची और आप(स) के दामन को पकड़ कर बोली हे अल्लाह के रसूल ! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान (न्योछावर) हों, आप सलामत (सुरक्षित) हैं तो कोई मरे मुझे परवाह (चिन्ता) नहीं ।

(بابی انت وامی یا رسول الله لا اُبالی اذسلمت من عطب

उच्चारण :– बे अबी अन्त व उम्मी या रसूलुल्लाह ला अयाली इज़ा सल्लम्त मन अतब ।

पुरुषों ने जंग में ईमान का वह उदाहरण दिखाया और औरतों ने यह निष्काम भाव का (मुख्लिसाना) उदाहरण दिखाया जिसकी उपमा मैंने अभी वर्णन की । इसाई दुनिया मर्यम मग्दलेनी और उसकी साथी औरतों की उस बाहदुरी पर खुश हैं कि वह मसीह की क़बर पर सुबह के समय दुश्मनों से छुपकर पहुँचती थीं । मैं उन से कहता हूँ कि आओ कुछ मेरे महबूब के मुख्लिसों और फिदाइयों को देखो कि कैसी अवस्थाओं में उन्होंने, आप का

साथ दिया और कैसी हालतों में उन्होंने तौहीद के झण्डे को ऊंचा किया।

इस प्रकार की वफ़ादारी का एक और उदाहरण इतिहास में मिलता है। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीदों को दफ़न करके मदीना वापस आ गए तो फिर औरतें और बच्चे स्वागत के लिये नगर से बाहर आ गए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊँटनी की लगाम साअ्द बिन मआज़ मदीना के रईस ने पकड़ी हुई थी और गर्व से आगे आगे भागे जाते थे मानों दुनिया को यह कह रहे हों कि देखो हम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुरक्षित अपने घर वापस ले आए। शहर के पास उन्हें अपनी बुढिया मां जिस की नज़र कमज़ोर हो चुकी थी, आती हुई मिली, उहद में उसका एक बेटा अमर बिन् मआज़ भी मारा गया था, उसे देख कर साअ्द बिन् मआज़ ने कहा हे अल्लाह के रसूल, हे अल्लाह के रसूल ! मेरी मां आ रही है, आप ने फ़र्माया, ख़ुदा की बर्कतों के साथ आए, बुढ़िया आगे बढ़ी और अपनी कमज़ोर फटी आखों से इधर उधर देखा के कहीं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शक़्ल (चेहरा) दिखाई दे जाए। अन्ततः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा पहचान लिया और ख़ुश हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया माई मुझे तुम्हारे बेटे की शहादत पर तुमसे हमदर्दी है। उस पर नेक औरत ने कहा हुज़ूर जब मैंने आप(स) को देख लिया तो समझें कि मैंने मुसीबतों को भून कर खा लिया, मुसीबत को भून कर खा लिया, क्या अद्भुत मुहावरा है। मुहब्बत के कितने गहरे जज़बात को दर्शाते हैं। दुःख इन्सान को खा जाता है। वह औरत जिसके बुढ़ापे में उसके बुढ़ापे का सहारा टूट गया कितनी बहादूरी से कहती है मेरे बेटे के दुःख ने मुझे क्या खाना है। जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जीवित हैं तो मैं इस दुःख को खा जाऊँगी। मेरे बेटे की मौत मुझे मारने का कारण नहीं बन सकती, अपितु यह विचार कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए उस ने जान दे दी मेरी शक्ति को बढ़ाने का कारण होगी। हे अन्सार ! मेरी जान तुम पर क़ुर्बान हो, तुम कितना सवाब (पुण्य) ले गए।

इस प्रकार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ैरिय्यत से मदीना पहुँच गए। यद्यपि इस लड़ाई में बहुत से मुसलमान मारे भी गए

और बहुत से घायल भी हुए फिर भी उहद की जंग को पराजय (हार) नहीं कहा जा सकता है । जो घटनाऐं मैं उपर वर्णन कर चुका हूँ उनको देखते हुए यह एक बहुत बड़ी फ़तह (विजय) थी, एसी विजय कि क़यामत तक मुसलमान इसे याद करके अपने ईमान को बढ़ा सकते हैं और बढ़ाते रहेंगे । मदीना पहुँचकर आपने फिर तरबीयत व तालीम (शिक्षा तथा शिक्षण) तथा इस्लाहे नफ़्स (आत्म-उद्धार) का वास्तविक कार्य शुरू कर दिया परन्तु आप(स) यह काम आसानी और सरलता से नहीं कर सके । उहद की घटना के बाद यहूद में और भी उत्साह उत्पन्न हो गया तथा मुनाफ़िकों ने और भी सिर उठाना शुरू कर दिया और वह समझे कि शायद इस्लाम को मिटाना मानवीय शक्ति के अनुकूल है । अत: यहूदियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से आप को कष्ट देने आरम्भ कर दिया तथा गन्दे पद्य लिखकर उन में आप(स) की और आप(स) के परिवार की निन्दा की जाती थी । एक बार किसी झगड़े के फैसला के लिये आप(स) को यहूदियों के किला में जाना पड़ा तो उन्होंने योजना बनाई कि जहां आप(स) बैठे थे उसके ऊपर से एक बड़ी पत्थर की सिल गिरा कर आप को शहीद कर दिया जाए, परन्तु ख़ुदा तआला ने आप को समय पर सूचित कर दिया और आप वहां से बिना कुछ कहे वापस चले आए बाद में यहूदियों ने अपना अपराध मान लिया । मुसलमान औरतों से बाज़ारों में निर्लज्ज व्यवहार किया जाता एक बार एसे ही झगड़े में एक मुसलमान मारा गया । एक बार एक मुसलमान लड़की का सिर यहूदियों ने पत्थर से मार-मार कर कुचल दिया और वह तड़प तड़प कर मर गई । इन जैसे कारणों से मुसलमानों को यहूदियों से जंग करनी पड़ी परन्तु अरब दस्तूर (व्यवस्था) के अनुसार मुसलमानों ने उन्हें मारा नहीं, बल्कि केवल मदीना से चले जाने की शर्त पर उन्हें छोड़ दिय । अत: इन दोनों क़बीलों में से एक तो शाम (सीरिया) की ओर चला गया तथा दूसरे का कुछ भाग शाम (सीरिया) चला गया और कुछ मदीना से उत्तर की ओर ख़ैबर नामी एक शहर की ओर । यह शहर अरब में यहूद का केन्द्र था जो बड़े मज़बूत किलों पर आधारित था ।

# मदिरा पान निषेध का आदेश और उसका प्रभाव

जंगे उहद और उस के बाद की जंग के बीच दुनिया ने इस्लाम के उस प्रभाव को जो उसका उसके अनुयाइयों पर था एक स्पष्ट उदाहरण देखा । हमारा अभिप्राय शराब की मनाही से है । इस्लाम से पहले अरब वासियों की हालत का वर्णन करते हुए हमने बताया था कि अरब वासियों को शराब पीने की लत पड़ी हुई थी । प्रत्येक सभ्य व प्रतिष्ठित खानदान में दिन में पांच बार शराब पी जाती थी और शराब के नशे में मद्होश हो जाना उनके लिये साधारण बात थी और वे इसमें कुछ भी लज्जा प्रतीत नहीं करते थे। अपितु वे इसे एक अच्छा कार्य समझते थे । जब कोई मेहमान आता तो घर की मालकिन के लिये अनिवार्य था कि वह शराब का दौर चलाए । इस प्रकार के लोगों से ऐसी तबाह करने वाली आदत को छुड़ाना कोई आसान काम नहीं था, परन्तु हिजरत के चौथे साल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह हुक्म (आदेश) मिला कि शराब हराम की जाती है । इस आदेश का एलान होते ही मुसलमानों ने शराब पीना बिल्कुल छोड़ दिया । अतः हदीस में आता है कि जब शराब के हराम किये जाने का इल्हाम (ईश्वरीय आदेश) नाज़िल (उतरा) हुआ तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी को बुलाया और हुक्म दिया कि इस नए हुक्म का एलान मदीना की गलियों में कर दो । एक अंसारी के घर में जो मदीना का मुसलमान था उस समय शराब की महफ़िल लगी हुई थी । बहुत से लोग इसमें बुलाए गए थे और शराब का दौर चल रहा था एक बड़ा मटका खाली हो चुका था और एक दूसरा मटका शुरू होने वाला था लोग मद्होश हो चुके थे और बहुत से मद्होश होने के कगार पर थे । ऐसी अवस्था में उन्होंने सुना कि कोई व्यक्ति एलान कर रहा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के हुक्म से शराब पीना मना कर दिया है । उनमें से एक व्यक्ति उठा और बोला कि यह तो शराब के मना करने का हुक्म लगता है, ठहरो पता कर लें, उसी समय एक व्यक्ति और उठा और उसने मटके को जो शराब से भरा हुआ था अपनी लाठी मार कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और कहा पहले आदेश का पालन करो और फिर खोज करो । यह काफी है कि हमने एलान सुन लिया और यह

उचित नहीं कि हम शराब पीते जायें और खोज करें बल्कि हमारा फ़र्ज़ यह है कि शराब को गलियों में बह जाने दें और फिर एलान के संबन्ध में खोज करें।

*(बुखारी किताबुल् अश्रिब:)*

उस मुसलमान का सोचना उचित था, क्योंकि यदि शराब का पीना मना किया जा चुका था तो यदि उसके बाद भी शराब पीते रहते तो एक जुर्म करते और यदि शराब का पीना मना नहीं किया गया था तो शराब का बहा देना इतना बड़ा नुकसान नहीं था कि उसे बर्दाश्त न किया जा सके । इस घोषणा के पश्चात् मुसलमान शराब पीने से बहुत दूर हो गए । इस महान परिवर्तन के पैदा करने के लिये किसी विशेष बल की आवश्यकता नहीं पड़ी । वह मुसलमान जिन्होंने इस आदेश को सुना और जो उसकी तुरन्त पालना हुई उसको देखा, वे सत्तर-अस्सी वर्ष तक जीवित रहे परन्तु उसके पश्चात् एक मुसलमान भी ऐसा नहीं जिसने इस आदेश के बाद उसकी उलंघना की हो, यदि कोई ऐसी घटना हुई है तो वह ऐसे व्यक्ति से संबन्धित है जिसने सीधे तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लाभ नहीं उठाया था । जब हम उसका मुक़ाबला अमेरिका की शराब की मनाही के आंदोलन से करते हैं और उन प्रयत्नों को देखते हैं जो इस आदेश को लागू करने के लिये किये गए या जो वर्षों तक यूरोप में किये गए तो साफ दिखाई देता है कि एक ओर तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का केवल एक एलान काफ़ी था कि इस सभ्याचारिक बुराई को अरब लोगों से समाप्त कर दे परन्तु दूसरी ओर शराब की मनाही के लिये क़ानून बनाए गए, पुलिस, फ़ौज और टैक्स विभाग के वर्करों ने मिलकर शराब पीने की लत को दूर करने के लिये संयुक्त रूप से प्रयत्न किया किन्तु वह असफल रहे और उन्हें अपनी असफलता भी माननी पड़ी । मदिरा पान की जीत हुई और मदिरापान दूर न की जा सकी । हमारे इस युग को उन्नति का ज़माना कहते हैं परन्तु जब इस का मुक़ाबला इस्लाम के प्रथम युग से करते हैं तो हम हैरान हो जाते हैं कि इन दोनों में से उन्नति का कौन सा युग है, हमारा यह युग या इस्लाम का वह युग जिसने इतना बड़ा सभ्याचारिक इन्क़िलाब पैदा कर दिया ।

## जंगे उहद के बाद कुफ़्फ़ार (विधर्मियों) के षड्यंत्र

उहद की घटना ऐसी बात न थी कि आसानी से भूला जा सके । मक्का वालों का विचार था कि ये उनकी इस्लाम के विरुद्ध पहली फ़तह (विजय) है। उन्होंने इसकी सूचना सारे अरब में प्रकाशित की और अरब के क़बीलों को इस्लाम के ख़िलाफ भड़काने और यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया कि मुसलमान ऐसे नहीं कि उन को पराजित नहीं किया जा सकता और यदि वह उन्नति करते रहे हैं तो इसका कारण उन का मनोबल नहीं था, अपितु अरब कबीलों का इस ओर ध्यान न देना था । संयुक्त अरब प्रयत्न करें तो मुसलमानों पर विजयी होना कोई मुश्किल बात नहीं इस दुष्प्रचार का परिणाम यह हुआ कि मुसलमानों के खिलाफ विरोध ज़ोर पकड़ता गया और मुसलमानों को कष्ट देने में दूसरे कबीलों ने मक्का वालों से भी बढ़ चढ़ कर भाग लेना शुरू किया । कुछ ने तो खुल कर हमले शुरू कर दिये और कुछ एक ने आंतरिक रूप से उनको नुकसान पहुँचान शुरू कर दिया ।

हिजरत के चौथे साल अरब के दो कबीले अज़ल और क़ारा* ने अपने प्रतिनिधि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास भेज कर कहा कि हमारे क़बीले में बहुत से लोग इस्लाम की ओर आकर्षित हैं । और प्रार्थना की कि कुछ आदमी जो इस्लाम की शिक्षा का पूरी तरह ज्ञान रखते हों भेज दिये जाएँ । ताकि वे उन के बीच में रह कर उनको इस नए धर्म की शिक्षा दे सकें। वास्तव में यह एक साज़िश (षड्यंत्र) थी जो इस्लाम के पक्के दुश्मन कबीला बनुलेहयान ने की थी । उनका उद्देश्य यह था कि जब यह मुसलमान प्रतिनिधियों को ले कर आएँ तो वह उन को क़त्ल कर के अपने सरदार सुफ़्यान बिन ख़ालिद का बदला लेंगे । अतः उन्होंने अज़ल् और कारा प्रतिनिधियों को इस उद्देश्य से कि वह कुछ मुसलमानों को अपने साथ ले आऐं, इनाम (पुरस्कार) के बड़े-बड़े वादे दे कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास भेजा था । जब अज़ल और कारत के लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुँच कर प्रार्थना की तो आप ने उन की बात पर विश्वास करके दस मुसलमानों को उनके साथ कर दिया कि उन

---

* *बुख़ारी भाग 2, किताबुल मग़ाज़ी व ज़रकानी भाग 2 पृ. 65-66*

लोगों को इस्लाम के अक़ायद (नियम) और उसूलों की शिक्षा दें । जब यह जमाअत बनु लेहयान के इलाक़ा (प्रदेश) में पहुँची तो अज़ल् और कारा के लोगों ने बनु लेहयान को सूचना भिजवा दी और उनको कहला भेजा कि मुसलमानों को या तो गिरफ़्तार कर लें या मौत के घाट उतार दें । इस षड्यंत्र के अन्तरग बनु लेहयान के दो सौ हथियार बन्द आदमी मुसलमानों का पीछा करने के लिये निकल पड़े और अन्ततः रजीह के स्थान पर उनको घेर लिया । दस मुसलमानों और दो सौ दुश्मनों के बीच लड़ाई हुई । मुसलमानों के दिल तो ईमान से भरे हुए थे परन्तु दुश्मन इससे ख़ाली था । दस मुसलमान एक टीले पर चढ़ गए और दो सौ आदमियों को लड़ाई के लिये पुकारा । दुश्मन ने उनको इस धोखे से गिरफ़्तार करना चाहा कि यदि तुम नीचे उतर आओ तो तुम से कुछ न कहा जायगा, परन्तु मुसलमानों के अमीर ने कहा कि हम काफिरों के वादों को भलि भांति देख चुके हैं । इस के बाद उन्होंने आसमान की तरफ मुँह उठा कर कहा कि हे ख़ुदा तू हमारी हालत देख रहा है । अपने रसूल को हमारी इस हालत से सूचित कर दे । जब कुफ़्फ़ार ने देखा कि उनकी बातों का मुसलमानों की इस छोटी सी जमाअत पर कोई प्रभाव नहीं होता तो उन्होंने उन पर हमला कर दिया और मुसलमान अपनी हार के डर से मुक्त हो कर लड़ते रहे यहां तक कि दस में से सात शहीद हो गए । शेष तीन जो बच गए थे उन को कुफ़्फ़ार ने फिर वादा दिया कि हम तुम्हारी जानें बचा लेंगे । इस शर्त पर कि तुम टीले से नीचे उतर आओ परन्तु जब वह कुफ़्फ़ार के वादा पर विश्वास करके नीचे आ गए तो कुफ़्फ़ार ने उन्हें अपनी कमानों की तांतों से जकड़ कर बांध लिया । उस पर उन में से एक ने कहा कि यह पहली ख़िलाफ़ वर्ज़ी है जो तुम अपने वादा की कर रहे हो, अल्लाह ही जानता है कि तुम इसके बाद क्या करोगे यह कह कर उसने उनके साथ जाने से इन्कार कर दिया । कुफ़्फ़ार ने उनको मारना और घसीटना आरम्भ कर दिया परन्तु अन्त में उसके मुक़ाबला और डट जाने से वह इतने निराश हो गए कि उन्होंने उसको वहीं क़त्ल कर दिया । शेष दोनों को साथ ले गए और ग़ुलाम (दास) के रूप में मक्का के कुरैश के पास बेच दिया । उनमें से एक का नाम ख़ुबैब(र) था और दूसरे का ज़ैद(र) । ख़ुबैब का ख़रीदार अपने बाप का बदला लेने के लिये जिसे ख़ुबैब(र) ने जंगे बदर में क़त्ल किया था, वह ख़ुबैब(र)

को क़त्ल करना चाहता था । एक दिन ख़ुबैब ने अपनी आवश्यकता के लिये उस्तुरा मांगा । उस्तुरा ख़ुबैब(र) के हाथों में था कि घर वालों का एक बच्चा खेलता हुआ उसके पास चला गया । ख़ुबैब(र) ने उसको उठा कर अपनी रान पर बैठा लिया । बच्चे की मां ने जब यह देखा तो वह भयभीत हो गई और उसे विश्वास हो गया कि ख़ुबैब(र) बच्चे को मार डालेगा क्योंकि वह कुछ ही दिनों में ख़ुबैब(र) का क़त्ल करने वाले थे । उस समय उस्तरा उसके हाथ में था और बच्चा उसके इतने क़रीब था कि वह उसे हानि पहुँचा सकता था ख़ुबैब(र) ने उस बच्चे की मां के चेहरे से उस की चिंता को भांप लिया और कहा कि तुम समझती हो कि मैं तुम्हारे बच्चे को क़त्ल कर दूँगा यह विचार कभी मन में न लाना । मैं यह दुष्कर्म कदापि नहीं कर सकता । मुसलमान धोखा बाज़ नहीं होते । वह औरत ख़ुबैब(र) की इस ईमानदारी और सही तरीके अमल (उचित कर्म) से बहुत प्रभावित हुई । इस बात को उसने हमेशा याद रखा और हमेशा कहा करती थी कि हमने ख़ुबैब(र) जैसा क़ैदी नहीं देखा ।

अन्ततः मक्का वाले ख़ुबैब(र) को एक खुले मैदान में ले गए ताकि उसे क़त्ल करके जश्न (ख़ुशी) मनाएँ। जब उनके क़त्ल का समय आ पहुँचा तो ख़ुबैब(र) ने कहा मुझे दो रक्अत नमाज़ पढ़ लेने दो । क़ुरैश ने यह बात मान ली और ख़ुबैब(र) ने सब लोगों के सामने इस दुनिया में आखरी बार अपने अल्लाह की इबादत की । जब वह नमाज़ समाप्त कर चुके तो उन्होंने कहा मैं अपनी नमाज़ लम्बी करना चाहता था परन्तु यह विचार आते ही ख़त्म कर दी कि कहीं तुम यह न समझ लो कि मैं मरने से डरता हूँ फिर आराम से अपना सिर क़ातिल के सामने रख दिया और ऐसा करते हुए यह अश्आर (पद्य) पढ़े :-

ولستُ ابالی حین اُقتل مسلماً علٰی ای جنبٍ کان لِلّٰہِ مصرعی
وذالک فی ذات الاله و ان یشاء یبارک علٰی اوصال شلوٍ ممزعٍ

वलस्तू उबाली हीना उक्तलो मुस्लेमन् ।
अला अय्ये जन्बिन काना मुसरअी ॥

व ज़ालेका फ़ी ज़ात इल्ला लहो वइन यशाअ ।
युबारको अला अवसाला शलविन मुमरईन ॥

अर्थात् जबकि मैं मुसलमान होने की हालत में क़त्ल किया जा रहा हूँ तो मुझे परवाह नहीं कि मैं क़त्ल हो कर किस पहलु (पक्ष) पर गिरूँ यह सब कुछ ख़ुदा के लिये है। और यदि मेरा ख़ुदा चाहेगा तो मेरे शरीर के पारा पारा टुकड़ों पर बरकत नाज़िल फ़र्माएगा (उतारेगा)।

ख़ुबैब(र) ने अभी यह पद्य समाप्त न किये थे कि जल्लाद की तलवार उनकी गर्दन पर पड़ी और उनका सिर ज़मीन पर आ गिरा जो लोग यह जश्न (खुशी) मनाने के लिये एकत्रित हुए थे उन में एक व्यक्ति सईद बिन् आमिर भी था, जो बाद में मुसलमान हो गया । कहते हैं कि जब कभी ख़ुबैब(र) के क़त्ल का वर्णन सईद के सामने होता तो वह बेहोश हो जाया करते थे ।

दूसरा कैदी ज़ैद(र) भी क़त्ल करने के लिये बाहर ले जाया गया । इस तमाशा को देखने वालों में मक्का का सरदार अबु सुफ़्यान भी था । वह ज़ैद(र) की ओर मुड़ा और पूछा कि क्या तुम पसन्द नहीं करते कि मुहम्मद(स) तुम्हारी जगह पर हों और तुम आराम से घर बैठे हो । ज़ैद(र) ने बड़े क्रोध से जवाब दिया कि अबु सुफ़यान तुम क्या कहते हो, ख़ुदा की क़सम मेरे लिये मरना इस से अच्छा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैरों में मदीना की गलियों में कोई कांटा चुभ जाए।

(इब्ने हश्शाम भाग 2, पृ. 122)

क़ुर्बानी की इस भावना से अबु सुफ़यान भी प्रभावित हो उठा तत्काल ही उसने दबी ज़ुबान से कहा कि ख़ुदा गवाह है जिस तरह मुहम्मद(स) के साथी मुहम्मद(स) के साथ मुहब्बत करते हैं, मैंने नहीं देखा कि कोई व्यक्ति किसी से (ऐसी) मुहब्बत करता हो ।

## कुर्आन शरीफ़ के सत्तर हाफ़िज़ों की हत्या*

उसी समय के लगभग नजद के कुछ लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि

---

* *इब्ने हश्शाम भाग 2, पृ. 126-130, ज़रकानी भाग 2, पृ. 74 तथा बुख़ारी किताबुल जिहाद बाबुल औन बिल मददे*

वसल्लम के पास आए ताकि उनके साथ कुछ मुसलमान भेज दिये जायें जो उन्हें इस्लाम सिखलाएँ । आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका विश्वास नहीं किया परन्तु अबुबरा ने जो उस समय मदीना में थे उन्होंने कहा कि मैं इस क़बीला को अच्छी तरह जानता हूँ और आप(स) को विश्वास दिलाता हूँ कि वह कोई शरारत नहीं करेंगे । इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सत्तर मुसलमानों को जो क़ुर्आन के हाफ़िज़ थे (अर्थात् पूरा क़ुर्आन कंठस्त किया हुआ था) इस कार्य के लिये चुना । जब यह जमाअत (लोग) बेरे मऊना पर पहूँची तो उनमें से एक व्यक्ति हराम बिन मल्हान(र) क़बीला आमिर के रईस (सरदार) के पास गया जो कि अबुबरा का भतीजा था ताकि उसको इस्लाम का पैग़ाम दे । यद्यपि क़बीला वालों ने हराम की बड़ी आवभगत की परन्तु जिस समय वह रईस के सामने भाषण दे रहे थे तो एक आदमी छुपकर पीछे से आया और उन पर नेज़ा से हमला कर दिया। हराम(र) वहीं मारे गए, नेज़ा उनके गले से पार हो गया तो वह यह कहते सुने गए اللہ اکبر فُزْتُ وربِّ الکعبۃ अल्लाहु अक्बर फ़ुज़्तो व रब्बिल् कअ्बते ।

अर्थात् अल्लाह बहुत बड़ा है, काबा के रब्ब की क़सम मैंने अपने उद्देश्य को पा लिया ।

इस धोखा धड़ी से हराम के क़त्ल करने के बाद क़बीला के सरदारों ने क़बीला वालों को जोश दिलाया कि मुअल्लमीन की बाक़ी जमाअत पर भी हमला कर दो परन्तु क़बीला वालों ने कहा कि हमारे रईस अबुबरा ने ज़ामन होना स्वीकार किया है । हम इस जमाअत पर हमला नहीं कर सकते इस क़बीला के दो सरदारों ने उन दो कबीलों की सहायता से जो मुसलमान मुअल्लमीन (शिक्षकों) को लाने गए थे इस जमाअत पर हमला बोल दिया । उनका यह कहना कि हम इस्लाम की शिक्षा देने आये हैं लड़ने नहीं आए, कुछ भी लाभदायक न हुआ और कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को क़त्ल करना शुरू कर दिया । अन्ततः तीन व्यक्तियों के अतिरिक्त शेष शहीद हो गए । इस जमाअत में एक व्यक्ति लंगड़ा था और लड़ाई होने से पहले पहाड़ी पर चढ़ गया था और दो ऊँठों को चराने जंगल में गए हुए थे । वापस आकर उन्होंने देखा कि

उनके 66 साथी मैदान में मरे पड़े हैं। दोनों ने आपस में परामर्श किया एक ने कहा कि हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हो कर इस घटना की जानकारी देनी चाहिये । दूसरे ने कहा जहां हमारी जमाअत का सरदार जिसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारा अमीर बनाया था क़त्ल किया गया है मैं उस जगह को नहीं छोड़ सकता । यह कहते हुए वह अकेला ही दुश्मन पर टूट पड़ा और लड़ता हुआ मारा गया और दूसरे को गिरफ़तार कर लिया गया परन्तु बाद में एक क़सम के कारण जो क़बीले के एक सरदार ने खाई थी छोड़ दिया गया क़त्ल होने वालों में आमिर बिन फ़हीरा भी थे जो हज़रत अबुबकर(र) के आज़ाद किये हुए ग़ुलाम थे उन का कातिल एक व्यक्ति जब्बार बिन सलमा नामी था जो बाद में मुसलमान हो गया । जब्बार कहते हैं कि आमिर का क़त्ल ही मेरे मुसलमान होने का कारण हुआ था । जब्बार कहता है कि जब मैं आमिर को क़त्ल करने लगा तो मैंने आमिर को यह कहते हुए सुना फ़ुज़्तो वल्लाहे ख़ुदा की क़सम मैंने अपने उद्देश्य को पा लिया। उसके बाद मैंने एक व्यक्ति से पूछा । जब मुसलमान को मौत का सामना होता है तो वह ऐसी बातें क्यों करता है ? उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि मुसलमान अल्लाह के रास्ते में मौत को उपहार और कामयाबी समझता है । जब्बार पर इस उत्तर का ऐसा प्रभाव हुआ कि उसने इस्लाम का अध्य्यन आरम्भ कर दिया और अन्ततः मुसलमान हो गया (असदुल् ग़ाबः व सीरत इब्ने हश्शाम पृ.-127) इन दोनों दुःखद घटनाओं की सूचना जिस में लगभग अस्सी मुसलमान एक षड़यन्त्र रूपी शरारत के कारण शहीद हो गए थे मदीना पहुँच गई । मक़तूलीन कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे अपितु वह क़ुर्आन के हाफ़िज़ थे । उन्होंने कोई जुर्म नहीं किया था न उन्होंने किसी को दुःख दिया था वह किसी जंग में भी सम्मिलित नहीं हुए थे बल्कि वे अल्लाह और धर्म (इस्लाम लाने) का झूठा दिलासा देकर धोखा से दुश्मन के हाथों में दे दिये गए थे । इन घटनाओं से बिना शंका के प्रमाणित होता है कि क़ुफ़्फ़ार को इस्लाम से अथाह दुश्मनी थी इसके मुक़ाबला में मुसलमानों का इस्लाम के प्रति जोश भी बहुत गहरा और मज़बूत था ।

# बनू मुस्तलिक के साथ युद्ध

जंगे उहद के बाद मक्का में गंभीर रूप से भुखमरी पड़ी । मक्का वालों को जो दुश्मनी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से थी और आपके ख़िलाफ़ लोगों को भड़काने और नफ़रत पैदा करने का प्रयास किया जा रहा था उन सब बातों को भुला कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का के ग़रीबों की सहायता के लिये प्रयाप्त रुपया जमा किया परन्तु इस उपकार का भी मक्का वालों पर कोई प्रभाव नहीं हुआ और उनकी दुश्मनी में कोई कमी नहीं आई अपितु वे दुश्मनी में और भी बढ़ गए। ऐसे क़बीले भी जो मुसलमानों के साथ सहानुभूति रखते थे दुश्मन बन गए । उन क़बीलों में एक क़बीला बनी मुस्तलिक़ का था । इनके मुसलमानों के साथ अच्छे संबन्ध थे परन्तु अब उन्होंने मदीना पर चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी । जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनकी तैयारी के बारे में मालूम हुआ तो आपने वास्तविक्ता जानने के लिये आदमी भेजे । जिन्होंने वापस आकर ऐसी सूचनाओं की पुष्टि की । इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ैसला किया कि स्वयं जाकर इस हमला का मुक़ाबला करें । अतः आपने एक फ़ौज तैयार की और उसे लेकर बनी मुस्तलिक की ओर गए । जब मुसलमानों की फ़ौज का दुश्मन से मुक़ाबला हुआ तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह प्रयास रहा कि दुश्मन लड़ाई किए बिना ही पीछे हट जाने पर राज़ी हो जाए परन्तु उन्होंने मना कर दिया । इस पर जंग हुई और कुछ ही घंटों में दुश्मन परास्त हो गया ।

यद्यपि मक्का के कुफ़्फ़ार मुसलमानों को नुकसान पहुँचाने पर तुले हुए थे और जो कबीले दोस्त थे वह भी दुश्मन बन रहे थे इस लिये उन मुनाफ़कों ने भी जो मुसलमानों के बीच में थे इस अवसर पर यह साहस दिखाया कि वे मुसलमानों की ओर से होकर जंग में भाग लें । उनका विचार लगभग यह था कि इस प्रकार उन्हें मुसलमानों को नुकसान पहुँचाने का अवसर मिल जायगा, परन्तु बनी मुसतलिक के साथ हुई जंग कुछ ही घंटों में समाप्त हो गई । इस प्रकार मुनाफ़क़ीन को लड़ाई के बीच कोई शरारत करने का अवसर प्राप्त न हो सका । इस अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ैसला

फ़र्माया कि आप कुछ दिन बनी मुसतलिक़ के गांव में ठहरें ।

आप(स) के वहां रहते हुए एक मक्का के रहने वाले मुसलमान का एक मदीना के मुसलमान से कूऐं से पानी निकालने में झगड़ा हो गया । संयोग वश यह मक्का वाला व्यक्ति आज़ाद किया हुआ ग़ुलाम था । उसने मदीना वाले व्यक्ति को मारा । इस पर उसने मदीना वालों को जिन्हें अंसार कहते थे पुकारा और मक्का वाले ने मक्का वालों का पुकारा इस प्रकार जोश फैल गया । किसी ने यह जानने की कोशिश ही नहीं की कि वास्तव में घटना क्या है । दोनों ओर से जवानों ने तलवारें निकाल लीं अब्दुल्ला बिन उबई बिन सलूल ने समझा कि ख़ुदा ने उसे यह अवसर दिया है अत: उसने आग पर तेल डालना चाहा और मदीना वालों को संबोधित करते हुए कहा कि इन मुहाजरीन पर तुम्हारी मेहरबानी (सहानुभूति) बहुत बढ़ गई है और तुम्हारे नेक सलूक (उपकारों) से इस के सिर फिर गए है और यह दिन प्रतिदिन तुम्हारे सिर चढ़ते जाते हैं । उसके इस भाषण का लगभग वही प्रभाव होता जो वह चाहता था परन्तु ऐसा नहीं हुआ । अब्दुल्ला ने अपने कटू भाषण का अनुमान लगाने में ग़लती की और यह समझते हुए कि अंसार पर इसका प्रभाव हो गया है उसने यहां तक कह दिया कि हम मदीना पहुँच लें फिर जो मुअज़्ज़ तरीन (प्रतिष्ठित व्यक्ति) है वह ज़लील तरीन (अप्रतिष्ठित व्यक्ति) को बाहर निकाल देगा । प्रतिष्ठित व्यक्ति से भाव वह स्वयं था और अप्रतिष्ठित से भाव आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम (नऊज़ु बिल्लाहि मिन् ज़ालिक । अर्थात ऐसी ग़लत बात कहने से हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं ।) जैसे ही उसके मुँह से यह बात निकली मोमिनों (मुसलमानों) पर उसकी वास्तविक्ता प्रकट हो गई और उन्होंने कहा यह साधारण बात नहीं बल्कि शैतान का कथन है जो हमें गुमराह करने (भड़काने) आया था । एक जवान आदमी उठा और उसने अपने चाचा द्वारा इसकी सूचना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुँचा दी । आप(स) ने अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल और उसके साथियों को बुलाया और पूछा क्या बात हुई है अब्दुल्लाह और उसके साथियों ने बिल्कुल इन्कार कर दिया और कह दिया कि यह घटना जो हम पर थोपी जा रही है वास्तव में ऐसी कोई घटना घटी ही नहीं है । आप(स) ने कुछ नहीं कहा परन्तु सच्ची बात फैलनी शुरू हो गई । कुछ समय पश्चात् अब्दुल्लाह

बिन उबई बिन सलूल के बेटे अब्दुल्लाह ने भी यह बात सुनी । वह उसी समय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और कहा हे अल्लाह के नबी ! मेरे बाप ने आप(स) का अपमान किया है उसकी सज़ा मौत है यदि आप(स) यही फैसला करें तो मैं पसंद करता हूँ कि आप(स) मुझे आदेश दें कि मैं अपने बाप को क़त्ल करूँ यदि आप किसी और को आदेश देंगे और मेरा बाप उसके हाथों मारा जायेगा तो हो सकता है कि मैं उसको क़त्ल करके अपने बाप का बदला लूँ और इस प्रकार ख़ुदा तआला की नाराज़गी मोल ले लूँ परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया कि मेरा कदापि ऐसा कोई इरादा नहीं है । मैं तुम्हारे बाप के साथ नर्मी और मेहरबानी का सलूक करूँगा । (इब्ने हश्शाम जिल्द-2, पृ. 169)

जब अब्दुल्ला ने आप बाप की बेवफ़ाई और कटु शब्दों का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नर्मी और मेहरबानी से मुक़ाबला किया तो उसका ईमान और बढ़ गया और इस संबन्ध से अपने बाप के विरुद्ध क्रोध भी बढ़ गया । जब फौज मदीना के पास पहुँच गई तो उसने आगे बढ़कर अपने बाप का रास्ता रोक लिया और कहा मैं तुमको मदीना के अन्दर प्रवेश नहीं करने दूँगा जब तक तुम अपने शब्द वापस न ले लो जो तुमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ कहे थे । जिस मुँह से यह बात निकली है कि ख़ुदा का नबी ज़लील है और तुम मुअज़्ज़ हो, उसी मुँह से तुम को यह बात कहनी होगी कि ख़ुदा का नबी मुअज़्ज़ है और तुम ज़लील हो, जब तक तुम यह न कहोगे मैं तुम्हें कभी भी आगे जाने नहीं दूँगा अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सुलूल हैरान और डर गया, और कहने लगा, हे मेरे बेटे ! मैं तुम्हारे साथ सहमत हूँ मुहम्मद(स) मुअज़्ज़ (प्रतिष्ठावान) है और मैं ज़लील हूँ नौजवान अब्दुल्ला ने इस पर अपने बाप को छोड़ दिया ।

(तब्क़ाते कबीर लिइब्ने सअ्द किस्म अव्वल जुज़् सानी पृ.-46)

## मदीना पर सारे अरब की चढ़ाई, और खन्दक की लड़ाई

यहूदियों के दो क़बीलों का उल्लेख किया जा चुका है जिनको लड़ाई झगड़ा तथा उपद्रव मचाने के कारण मदीना से निकाल दिया गया था । इन में से क़बीला 'बनू-नज़ीर' का कुछ भाग तो शाम की ओर चला गया था और

कुछ भाग मदीना के उत्तर की ओर ख़ैबर नामी एक गांव में जा कर बस गया था । ख़ैबर अरब में यहूदियों का एक बहुत बड़ा केन्द्र था ऐसे किलाबन्द शहर में पहुँचकर 'बनू-नज़ीर' ने मुसलमानों के विरुद्ध अरब लोगों को भड़काना शुरू कर दिया । मक्का वाले तो पहले ही घोर विरोधी थे । किसी अधिक उत्तेजना की ज़रूरत नहीं थी । इस प्रकार 'ग़त्फ़ान' नामक नज़द का एक क़बीला जो अरब के क़बीलों में शक्तिशाली गिना जाता था वह भी मक्का वालों की मित्रता के कारण मुसलमानों के विरोध में सदा तैयार रहता था । अब यहूदियों ने क़ुरैश और ग़त्फान को उत्तेजित करने के अतिरिक्त 'बनू सलीम' तथा 'बनू-असद' दो और शक्तिशाली क़बीलों को भी मुसलमानों के विरुद्ध भड़काना आरम्भ कर दिया और इसी प्रकार 'बनू-साअद' नामी क़बीले को भी जो यहूदियों का मित्र था मक्का के मूर्ति-पूजकों का साथ देने के लिए तैयार किया गया । एक लम्बी और व्यवस्थित तैयारी के बाद अरब के सारे शक्तिशाली क़बीलों के एक पूर्ण सहमति की नींव रख दी गई । जिसमें मक्का और उसके आस-पास के लोग एवं क़बीले, नज़द तथा मदीना के उत्तरी प्रान्तों के क़बीले और यहूदी भी सम्मिलित थे ।

इन सब क़बीलों ने संगठित हो कर मदीना पर आक्रमण करने के लिए एक विशाल सेना तैयार की । यह हिजरत के पांचवें वर्ष और फ़रवरी मास 627 ई. की बात है ।* अनेक इतिहासकारों ने इस सेना का 10000 से 24000 तक अनुमान लगाया है, परन्तु स्पष्ट है कि सारे अरब जातियों के संगठित हो जाने के परिणामस्वरूप केवल 10000 ही सैनिक नहीं हो सकते। नि:सन्देह 24000 वाला अनुमान ही ठीक है और यदि और कुछ नहीं तो यह सेना 18-20 हज़ार की तो अवश्य होगी ।

मदीना एक साधारण कस्बा था । इस क़स्बे के ख़िलाफ़ सारे अरब कबीलों की चढ़ाई कोई साधारण बात न थी । मदीना की जन संख्या, जिसमें बच्चे वृद्ध और युवक भी थे, अधिक से अधिक तीन हज़ार हो सकती थी । इसके विपरीत शत्रु की सेना 20-24 हज़ार के लगभग थी और फिर वे सब अनुभवी नवयुवक योद्धा थे औरलड़ने में कुशल थे । जब नगर के अन्दर ठहर

---

**इब्बने हश्शाम भाग 2, पृ. 38 लाईफ़ आफ़ मुहम्मद रचयिता म्यूर ।*

कर उसकी रक्षा करने का प्रश्न होता है तो उसमें बाल तथा वृद्ध भी सम्मिलित हो जाते हैं, परन्तु जब सेना दूर देशों पर आक्रमण करने जाती है तो उसमें केवल युवक तथा अनुभवी योद्धा ही होते हैं, अतः यह निश्चित बात है, कि विधर्मियों की सेना में 20-25 हज़ार से कम सिपाही न थे और वे सब रणकुशल तथा अनुभवी युवक थे, परन्तु मदीना की जन संख्या बालकों तथा लूलों-लंगड़ों को मिलाकर तीन हज़ार के लगभग थी । जब इस सेना के एकत्रित और आक्रमण करने की सूचना हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मिली तो आपने अपने सहचारियों को बुलाया और उनसे सम्मति ली कि अब क्या करना चाहिए ? सहचारियों में से सल्मान-फ़ारसी से, जो फ़ारस के सर्वप्रथम मुसलमान थे, हज़रत मुहम्मद साहिब ने पूछा कि ऐसे अवसरों पर तुम्हारे देश में क्या किया जाता है ? उन्होंने उत्तर दिया, हे अल्लाह के रसूल जब शहर सुरक्षित न हो और लड़ने वाले कम हों तो ऐसे समय हमारे देश के लोग खाई खोद कर उसके भीतर सुरक्षित हो जाया करते हैं । हज़रत पैग़म्बरे इस्लाम ने उनके इस परामर्श को पसन्द किया । मदीना के एक ओर पहाड़ियां थीं, दूसरी और ऐसे मुहल्ले थे जिनके घर परस्पर मिले हुए थे और शत्रु कुछेक गलियों में से होकर आ सकते थे । तीसरी ओर कुछ घर और बाग थे । इससे आगे 'बनू-क़ुरैज़ह' नामी एक यहूदी क़बीले के घर थे । यह क़बीला मुसलमानों के साथ मैत्री की प्रतिज्ञा कर चुका था, अतः इस पक्ष को भी सुरक्षित समझ लिया गया । चौथी ओर खुला मैदान था और उसी ओर से शत्रु के आने की सम्भावना हो सकती थी । हज़रत रसूले करीम ने कहा कि उस मैदान की ओर खंदक खोदी जाए ताकि शत्रु अचानक नगर में दाखिल न हो सके । अतएव आपने दस-दस गज का माप दस-दस व्यक्तियों में खाई खोदने के लिए बांट दिया और लगभग एक मील लम्बी खंदक खुदवाई ।

जब खंदक खोदी जा रही थी तो ज़मीन में एक ऐसा पत्थर निकला जो किसी तरह भी लोगों से नहीं टूटता था, सहचारियों ने हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसकी सूचना दी तो आप वहाँ पहुँचे और हाथ में कुदाल पकड़कर ज़ोर से उस पत्थर पर मारा । जिससे एक चिंगारी निकली तो आपने अल्ला हो अकबर (परमेश्वर सब से बड़ा है) कहा आपने पुनः उस पत्थर पर कुदाल मारी, तो एक चिंगारी निकली फिर आग निकली

और आपने पुनः पहले की तरह कहा । तीसरी बार फिर कुदाल मारी इस बार भी चिंगारियाँ निकलीं और पत्थर टूट गया । इस बार भी आपने अल्लाहो अकबर कहा । सहचारियों ने इसका कारण पूछा, तो आपने बताया कि पत्थर पर कुदाल के प्रहार से जो तीन बार चिंगारियाँ निकलीं उससे अल्लाह ने मुझे भविष्य में इस्लाम की तरक्कियों का नक्शा दिखाया है । पहली चिंगारी में मुझे रोमी राज्य शाम (सीरिया) के राजभवन दिखाये गए और उनकी कुंजियाँ मुझे दी गयीं द्वितीय बार मदायन के जगमगाते महल दिखाये गये और फ़ारिस-राज्य की कुंजियाँ मुझे दी गयीं । तृतीयावस्था में 'सनआ' के फाटक मुझे दिखाए गए और यमन राज्य की कुंजियाँ मुझे दी गईं । अतः तुम अल्लाह पर विश्वास रखो, शत्रु तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता । (ज़ुरकानी, भाग 2) ये थोड़े से व्यक्ति इतनी लम्बी खंदक सैन्य सिद्धान्तानुसार तो नहीं खोद सकते थे । इसका इतना ही लाभ था कि शत्रु अचानक नगर के अन्दर न घुस आए क्योंकि इस खंदक को पार कर लेना शत्रु के लिए असम्भव न था । शत्रु ने भी मदीना की इसी अवस्था को सम्मुख रख कर इसी ओर से आक्रमण करने की ठानी । शत्रु की सेना इसी ओर से मदीना में प्रवेश करने के लिए आगे बढ़ी । हज़रत रसूले करीम को इसकी सूचना मिली तो आपने भी कुछ लोगों को नगर के दूसरी ओर की रक्षा हेतु नियुक्त कर दिया शेष को जिनकी संख्या 1200 थी अपने साथ लेकर खंदक की रक्षा के लिए आ गए ।

## ख़ंदक के युद्ध के समय इस्लामी सेना की वास्तविक संख्या क्या थी ?

इस अवसर पर मुसलमानों की सेना की संख्या के विषय में मत-भेद है। किसी ने इसकी संख्या तीन हज़ार लिखी है तो किसी ने बारह-तेरह सौ और किसी ने सात सौ । यह ऐसा मतभेद है कि इसका स्पष्टीकरण अति कठिन प्रतीत होता है । इसकासमाधान इतिहासकार भी नहीं कर पाये, परन्तु वास्तविक बात यह है कि तीनों अनुमान ठीक हैं ।

यह बतलाया जा चुका है कि 'उहद' के युद्ध से मुनाफ़िकों के वापिस लौट आने के बात मुसलमानों की सेनामें केवल सात सौ व्यक्ति थे । 'खंदक' का युद्ध इस के दो वर्ष उपरान्त हुआ और इसके अन्तराल में कोई शक्तिशाली

क़बीला इस्लाम धर्म स्वीकार करके मदीना में आ कर नहीं बसा था । अत: सात सौ व्यक्तियों का तीन हज़ार में परिवर्तित होना नामुमकिन सी बात प्रतीत होती है । यह बात भी अविश्वसनीय है कि 'उहद' के दो वर्ष बाद तक इस्लाम की उन्नति हो जाने के बावजूद भी मुसलमान ही उतने ही थे जितने 'उहद' के युद्ध के समय में थे । इन दो बातों पर आलोचनात्मक दृष्टि डालने से यही मत ठीक प्रतीत होता है कि युद्ध के योग्य मुसलमान खंदक के युद्ध के समय लगभग 1200 व्यक्ति थे । अब रहा यह प्रश्न कि फिर किसी ने तीन हज़ार और किसी ने सात सौ क्यों लिखा है ? तो इसका उत्तर यह है कि यह दो मत भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के अनुसार हैं । खंदक के युद्ध के तीन भाग कहे जा सकते हैं ।

एक समय वह है जब अभी शत्रु मदीना के समीप नहीं आया था और खंदक खोदी जा रही थी । इस समय मिट्टी ढोने और उठाने का कार्य छोटे-छोटे बालक और स्त्रियाँ भी कर सकती थीं, अत: इस समय मुसलमान सेना की संख्या तीन हज़ार थी । यह केवल मेरा ही विचार नहीं अपितु इतिहासकार इस विचार की पुष्टि करते हैं । खंदक खोदते समय बच्चों ने मिट्टी आदि उठाकर अत्यन्त वीरता एवं साहस से कार्य किया, परन्तु जब युद्ध प्रारम्भ हो गया तबहज़रत रसूले करीम ने उन बच्चों को जिनकी आयु 15 वर्ष से कम थी वापिस लौट जाने के लिए कह दिया, परन्तु जो 15 वर्ष की आयु के थे उनको अपनी स्वेच्छा पर छोड़ दिया गया ।

(सीरत-हल्बिया, भाग 2 पृ. 244)

इस स्पष्टीकरण से सिद्ध होता है कि खंदक खोदने के समय मुसलमानों की सेना की संख्या अधिक थी और युद्ध के समय थोड़ी हो गई थी क्योंकि छोटे बालकों को वापिस लौट जाने का आदेश दे दिया गया था । अत: जिन रिवायतों में 3000 का वर्णन आया है वह खन्दक खोदते समय की गिनती है। जिस में छोटे बच्चे भी शामिल थे और जैसा कि मैने अनुमान करके नतीजा निकाला है कि कुछ औरतें भी दूसरी जंगों में थीं । अत: 12 सौ की संख्या उस समय की है जब युद्ध आरम्भ हो गया और केवल युवक-वर्ग ही रह गया था । अब रहा यह कि तीसरी रिवायत जिसके अनुसार योद्धाओं की संख्या सात सौ बताई गयी है क्या उनका मत भी ठीक है ?

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि यह बात 'इब्ने-इसहाक़' जैसे सुप्रसिद्ध इतिहासकार ने लिखी है और 'इब्ने-हज़म' जैसे सुप्रसिद्ध तथा महा विद्वान ने इसकी पुष्टि की है, अत:इस विषय में शंका नहीं की जा सकती । इस बात की पुष्टि इस प्रकार भी होती है कि इतिहास का गम्भीरता से विचार करने पर यह सिद्ध होता है कि युद्ध आरम्भ हो जाने पर मदीनावासी यहूदी क़बीला 'बनू-क़ुरैज़ह' के लोग विधर्मियों की सेना में जा सम्मिलित हुए और उन्होंने मदीना पर धावा बोल देने का निश्चय कर लिया । रहस्य प्रकट होने पर हज़रत रसूले खुदा ने उस ओर की भी रक्षा करना उचित समझा जिसमें बनू-क़ुरैज़ह शामिल थे । जिस ओर को सुरक्षित समझ कर छोड़ दिया था अब 'बनू-क़ुरैज़ह' की कूटनीति के ज़ाहिर होते ही हज़रत पैग़म्बरे इस्लाम ने उधर ठहरी स्त्रियों और बच्चों की रक्षा हेतु सेना में से पांच सौ सैनिकों का जत्था भेज दिया । परिणामस्वरूप 1200 के स्थान पर 700 सैनिक रह गये, अत: खंदक के युद्ध के सिपाहियों की संख्या के विषय में जो मत-भेद इतिहासकारों में पाया जाता है उसका समाधान हो गया ।

निष्कर्ष यह कि संकट के समय खंदक की रक्षार्थ हज़रत मुहम्मद साहिब के पास केवल सात सौ सैनिक थे । इसमें कोई संदेह नहीं कि आपने खाई खोटी थी, परन्तु इतनी विशाल सेना को खन्दक (खाई) के रोकना भी इतने थोड़े आदमियों से असम्भव था परन्तु इस अल्पसंख्यक सेना ने खुदा की मदद पर दृढ़ विश्वास रख कर शत्रु के प्रबल बहुसंख्यक सेना की प्रतीक्षा करनी प्रारम्भ कर दी । स्त्रियाँ और बच्चे दो पृथ्क्-पृथ्क् स्थानों पर एकत्र कर दिये गए । शत्रु खाईं के समीप पहुँचा तो उन के लिए यह एक सर्वथा नवीन बात थी और इस प्रकार के युद्ध के लिए बिल्कुल तैयार न थे, अत: उन्होंने खाईं के सामने अपने डेरे लगा दिए और मदीना में दाख़िल होने के विषय में विचार करने लगे ।

## बनु कुरैज़ा (क़बीला) की ग़द्दारी

चूँकि मदीना का एक बहुत सा भाग ख़न्दक़ के कारण सुरक्षित था तथा दूसरी ओर कुछ पहाड़ी टीले और कुछ पक्के मकान और कुछ बाग़ आदि थे । इसलिये फ़ौज यकायक आक्रमण नहीं कर सकती थी । अत: उन्होंने परामर्श करके यह उपाय किया किं किसी प्रकार यहूद का तीसरा

क़बीला जो अभी मदीना में था किसी प्रकार उसे अपने साथ मिला लिया जाय। जिस का नाम बनु क़ुरैज़ा था। इस प्रकार मदीना तक पहुँचने का रास्ता खोला जाय। अतः परामर्श के बाद बनु नज़ीर (यहूदी क़बीला) जिसे (मदीना से) देश बद्र कर दिया गया था और जिसके षड्यन्त्रों के कारण सारा अरब एकत्रित होकर मदीना पर हमलावर हुआ था उसके सरदार हुय्यी बिन् अख़्तब को कुफ़्फ़ार की फ़ौज के कमान्डर अबु-सुफ़यान ने उसे इस कार्य के लिये नियुक्त किया कि जिस प्रकार भी हो बनु कुरैज़ा को अपने साथ मिला लो। अतः हुय्यी बिन अख़्तब यहूदियों के किलों की तरफ गया और उसने बनु क़ुरैज़ा के सरदारों से मिलने का प्रयत्न किया। पहले तो उन्होंने मिलने से मना कर दिया परन्तु जब उसने उन्हें समझाया कि यहां सारा अरब मुसलमानों को तबाह करने के लिये आंया हुआ है और यह नगरी किसी प्रकार भी पूरे अरब का मुक़ाबला नहीं कर सकती। इस समय जो फ़ौज मुसलमानों के मुक़ाबला पर खड़ी है उस को फौज नहीं अपितु समुद्र की ठाठें मारती लहरें कहना चाहिये। इस प्रकार उसने अन्ततः बनु क़ुरैज़ा को गद्दारी और संधि तोड़ने पर सहमति कर लिया। अतः यह फैसला हुआ कि कुफ़्फ़ार की फ़ौज सामने से खन्दक़ पार करने की कोशिश करे और जब वह ख़न्दक़ पार करने में सफल हो जायेंगे तो बनु क़ुरैज़ा मदीना की दूसरी ओर से मदीने के उस भाग पर हमला कर देंगे जहां औरतें और बच्चें हैं। इस प्रकार एक ही हमला में मुसलमान पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे सब मार दिये जायेंगे जो बनु क़ुरैज़ा के विश्वास पर असुरक्षित छोड़ दिये गए थे। इस प्रकार मुसलमानों की मुक़ाबला करने की शक्ति कुचल दी जायेगी। विश्वसनीय है कि यदि कुफ़्फ़ार को इस में थोड़ी बहुत भी कामयाबी मिल जाती तो मुसलमानों के लिये कोई स्थान भी सुरक्षा योग्य नहीं बचता था। बनु क़ुरैज़ा मुसलमानों के हलीफ़ (संधित) थे और यदि वे स्पष्ट रूप से जंग में शामिल न भी होते तो फिर भी मुसलमान यह आशा रखते थे कि उन की तरफ़ से आकर कोई मदीना पर हमला नहीं कर सकेगा। इसी कारणवश उनकी तरफ का क्षेत्र असुरक्षित छोड़ दिया गया था। अतः बनु क़ुरैज़ा और क़ुफ़्फ़ार ने भी इस अवस्था को देखते हुए यह फ़ैसला कर दिया था कि जब बनु क़ुरैज़ा कुफ़्फ़ार के साथ मिल गए हैं तो

वह ख़ुले तौर पर क़ुफ़्फ़ार का समर्थन न करें जिसके कारण ऐसा न हो कि मुसलमान सचेत होकर मदीना के इस क्षेत्र की सुरक्षा का कोई प्रबन्ध कर लें जो बनु क़ुरैज़ा के क्षेत्र के साथ लगता है । यह षडयंत्र बहुत ही ख़तरनाक था । मुसलमानों को बेख़बर रखते हुए किसी ऐसे समय में बनु क़ुरैज़ा का शत्रु के साथ जा मिलना जबकि इस्लामी फौज पर कुफ़्फ़ार की फ़ौज का ज़बरदस्त हमला हो रहा हो, मदीना की उस तरफ़ की सुरक्षा को जिस ओर बनु क़ुरैज़ा के किले थे बिल्कुल असम्भव बना देता था । दोनों ओर से मुसलमानों पर हमला की योजना बन जाने के पश्चात् मक्का की फ़ौज ने खाईं पर आक्रमण आरम्भ कर दिया । पहले कुछ दिनों तक तो उन्हें यह समझ ही नहीं आया कि वह खाईं को किस प्रकार पार करें परन्तु दो चार दिनों के बाद उन्होंने यह युक्ति निकाली कि तीर चलाने वाले (धनुर्धर) ऊँची जगह पर खड़े होकर उन मुसलमान टुकड़ियों पर तीर चलाना शुरू कर देते थे जो खाईं की सुरक्षा के लिये थोड़ी-थोड़ी दूरी पर तैनात की गई थीं । जब तीरों की बौछाड़ के कारण मुसलमान पीछे हटने पर मजबूर हो जाते तो उच्चकोटि के घुड़सवार खन्दक को फांदने का प्रयत्न करते । उन्होंने विचार किया कि इस प्रकार लगातार हमले करने के परिणाम में कोई न कोई ऐसा स्थान निकल आएगा जहां से पैदल फौज अधिक संख्या में पार हो सकेगी । यह हमले लगातार इतने अधिक किये जाते थे कि कभी-कभी मुसलमानों को सांस लेने का अवसर भी नहीं मिलता था । अतः एक दिन आक्रमण इतना ख़तरनाक हो गया कि मुसलमानों की कुछ नमाज़ें समय पर अदा न हो सकीं, जिस का रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इतना दुःख हुआ कि आपने फ़र्माया ख़ुदा कुफ़्फ़ार को सज़ा दे, इन्होंने हमारी नमाज़ें नष्ट की हैं ।

(बुख़ारी भाग 2, किताबुल् मग़ाज़ी बाब ग़ज़्वातुल् ख़न्दक)

यद्यपि मैंने यह घटना दुश्मनों के हमलों की तेज़ी ज़ाहिर करने के लिये वर्णन की है परन्तु इससे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चरित्र पर एक बड़ी रोशनी पड़ती है और पता चलता है कि आप के लिये दुनिया में सबसे प्यारी चीज़ ख़ुदा तआला की इबादत (पूजा) थी । जबकि दुश्मन मदीना को चारों ओर से घेरे हुआ था ऐसे समय में कि मदीना के

पुरुषों को छोड़ औरतों और बच्चों की जानें भी ख़तरे में थीं। जब हर समय मदीना के लोगों का दिल धड़क रहा था कि शत्रु कहीं से मदीना में दाखिल न हो जायें, उस समय भी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इच्छा यही थी कि ख़ुदा तआला की इबादत अपने समय पर अच्छे ढंग से अदा हो जायें । मुसलमानों की इबादत यहूदियों और इसाइयों और हिन्दुओं की तरह सप्ताह में किसी एक दिन नहीं हुआ करती बल्कि एक दिन रात में पाँच बार होती है । ऐसे ख़तरनाक समय में एक बार भी नमाज़ अदा करना एक व्यक्ति के लिये कठिन है, फिर पाँच बार और वह भी अच्छे ढंग से जमाअत के साथ (सब लोग मिल कर) नमाज़ अदा करें, परन्तु मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह पाँचों नमाज़ें अपने समय पर अदा करते थे और यदि एक दिन दुश्मन के भयंकर हमला के कारण आप(स) अपने रब्ब (पालनहार) का नाम शांति और विनम्रता से अपने समय पर नहीं ले सके तो आप(स) को इसका अथाह कष्ट हुआ । उस समय सामने से दुश्मन आक्रमण कर रहा था और पीछे से बनु क़ुरैज़ा ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में थे कि कोई ऐसा अवसर प्राप्त हो जाय कि मुसलमानों में शंका उत्पन्न हुए बिना वह मदीना में घुस जायें और औरतों, बच्चों को क़त्ल कर दें । अतः एक दिन बनु क़ुरैज़ा ने एक जासूस भेजा ताकि वह मालूम करे कि औरतें और बच्चे अकेले ही हैं या उनकीं सुरक्षा के लिये काफ़ी सिपाहियों का प्रबन्ध है । जिस विशेष स्थान में वह मुख्य परिवार जिन को दुश्मन से अधिक भय था एकत्रित किया गया था उसके पास उस जासूस ने चक्कर लगाना और चारों तरफ़ देखना शुरू किया कि कहीं आसपास मुसलमान सिपाही छुपे हुए तो नहीं । वह अभी इसी टोह में था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फूफी हज़रत सफिया(र) ने उसे देख लिया । सहसा, उस समय वहां केवल एक ही मुसलमान पुरुष मौजूद था और वह भी बीमार था । हज़रत सफ़िया(र) ने उसे कहा कि यह आदमी देर से औरतों के क्षेत्र में फिर रहा है और जाने का नाम नहीं लेता है और चारों तरफ़ देखता फिरता है। अतः यह जासूस है । तुम इसका मुक़ाबला करो, ऐसा न हो कि दुश्मन पूरे हालात ज्ञात करके इधर आक्रमण कर दे । उस बीमार सहाबी ने ऐसा करने से मना कर दिया । उस पर हज़रत

सफिया(र) ने स्वयं एक बड़ा बांस लेकर उस व्यक्ति का मुक़ाबला किया तथा दूसरी औरतों की सहायता से उस को मारने में सफल हो गईं । अन्ततः छानबीन करने पर पता चला कि वह यहूदी बनु क़ुरैज़ा का जासूस था। इस पर मुसलमान और भी घबराए और समझे कि मदीना का यह भाग भी सुरक्षित नहीं है । परन्तु सामने से हमला इतना तेज़ था कि वह इस क्षेत्र की सुरक्षा का कोई प्रबन्ध भी नहीं कर सकते थे, फिर भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने औरतों की सुरक्षा को प्राथमिकता प्रदान की । जैसा कि उपर वर्णन हो चुका है कि बारह सौ सिप़ाहियों में से पाँच सौ सिपाहियों को शहर में औरतों की सुरक्षा पर नियुक्त कर दिया । खाईं की सुरक्षा और 18-20 हज़ार की फ़ौज के मुक़ाबला के लिये केवल सात सौ सिपाही रह गंए। ऐसी अवस्था में कुछ मुसलमान घबरा कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और प्रार्थना की, हे अल्लाह के रसूल ! हालात बहुत ही ख़तरनाक हो गए हैं। अब देखा जाये तो मदीना के बचने की कोई आशा दिखाई नहीं देती । आप(स) इस समय अल्लाह तआला से विशेष रूप से दुआ करें और हमें भी कोई दुआ सिखाएँ, जिस के पढ़ने से अल्लाह तआला का फ़ज़ल (दया) हम पर उतरे । आप(स) ने फ़र्माया तुम लोग घबराओ नहीं । तुम अल्लाह से यह दुआ किया करो कि तुम्हारी कमज़ोरियों पर पर्दा डाले और तुम्हारे दिलों को दृढ़ करे और घबराहट को दूर करे । अतः फिर आप(स) ने स्वयं भी इस प्रकार दुआ फ़र्माई :-

اللّٰهم منزل الكتاب سريع الحساب اهزم الاحزاب اللهم اهزمهم وزلزلهم

हे अल्लाह ! जिस ने मुझ पर क़ुर्आन करीम उतारा है । जो शीघ्र अपने बन्दों से हिसाब ले सकता है यह दल जो इकट्ठे हो कर आया है, इसको पराजित कर दे । हे अल्लाह मैं फिर निवेदन करता हूँ कि तू इन्हें पराजित कर और हमें इन पर विजय प्रदान कर और इन के इरादों व उद्देश्यों को हिला दे ।

(बुख़ारी भाग-2, किताबुल मग़ाज़ी बाब ग़ज़्वतुल् ख़न्दक)

इसी प्रकार यह दुआ भी की :-

یا صریخ المکروبین یا مجیب المضطرین اکشف همی وغمی و کربی.

فانک تری مانزل بی وباصحابی

हे दर्दमन्दों की दुआ सुनने वाले, हे घबराहट से पीड़ित लोगों की पुकार का जवाब देने वाले ! मेरे ग़म और मेरी फ़िक्र और मेरी घबराहट को दूर कर, क्योंकि तू उन मुसीबतों को जानता है जो मुझे और मेरे साथियों को पहुँच रही हैं। (अल् सीरतुल् हल्बिय:, भाग 2, पृ. 353)

## मुनाफ़िकों और मोमिनों की अवस्था का वर्णन

इस अवसर पर मुनाफ़िक़ (वे लोग जो दिल से मुसलमान न हों पर अपने आप को मुसलमान बताते) तो इतने घबरा गए कि क़ौमी हमीयत (जातीय ग़ैरत) और अपने शहर और अपनी औरतों और बच्चों की सुरक्षा का विचार भी उनके मन से निकल गया परन्तु चूँकि वे अपनी क़ौम एवं जाति के सामने निर्लज नहीं होना चाहते थे, इस लिये उन्होंने बहाने बहाने से फ़ौज से भागने की तरकीब सोची । क़ुर्आन करीम में आता है कि :-

وَيَسْتَاذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ. اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا.

(सूरत अल अह्ज़ाब : 14)

अर्थात् उन में से एक दल रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और आप(स) से आज्ञा चाही कि उन्हें जंग के मैदान से पीछे हट जाने की आज्ञा दी जाय। क्योंकि उन्होंने कहा (अब यहूदी भी विरोधी हो गए हैं और इस ओर मदीना के बचाव की कोई अवस्था नहीं) और हमारे घर उस क्षेत्र में असुरक्षित हैं । (अत: हमें आज्ञा दें कि हम जाकर अपने घरों की सुरक्षा कर सकें) किन्तु उनका यह कहना कि उनके घर असुरक्षित खड़े हैं बिल्कुल ग़लत है । वह असुरक्षित नहीं हैं (क्योंकि ख़ुदा तआला मदीना की सुरक्षा के लिये ख़ड़ा है) वह तो केवल डर के मारे मैदाने जंगे से भागना चाहते हैं । उस समय मुसलमानों की जो अवस्था थी उसका नक्शा क़ुर्आन करीम ने इस प्रकार ख़ींचा है।

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ۝ وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنَافِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اِلَّا غُرُوْرًا ۝ وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا. (سورۃ احزاب:۱۱-۱۴)

(सूर: अल् अह्ज़ाब, आयत 11 से 14)

अर्थात् याद तो कर जब तुम पर फ़ौज चढ़ आई तुम्हारे ऊपर की तरफ़ से भी और नीचे की तरफ़ से भी अर्थात् नीचे की तरफ़ से कुफ़्फ़ार (मक्का वाले) और ऊपर की तरफ़ से यहूदी । जबकि नज़रें टेढ़ी होने लगीं और दिल उछल-उछल कर गले तक आने लगे और तुम में से कई ख़ुदा के प्रति ग़लत बातें सोचने लग गए । उस समय मोमिनों के ईमान की परीक्षा ली गई और मोमिनों को सिर से पैर तक हिला दिया गया और याद करो जबकि मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी थी उन्होंने यह कहना शुरू किया कि अल्लाह और उसके रसूल ने हम से झूठे वादे किये थे और याद करें जब उनमें से एक समूह उस सीमा तक पहुँच गया कि उन्होंने मोमिनों से भी जा-जा कर यह कहना शुरू कर दिया कि अब कोई चौकी या किला तुम्हें नहीं बचा सकता । अत: यहां से भाग जाओ । इसी प्रकार मोमिनों के सम्बन्ध में फ़र्माता है :-

وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ۝ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ۝
(سورۃ احزاب:۲۳-۲۴)

(सूर: अल्-अहज़ाब आयत 23-24)

अर्थात् मुनाफ़िकों और कमज़ोर दिल मोमिनों (ईमान वालों) के

मुक़ाबला में मोमिनों की यह अवस्था थी जब उन्होंने दुशमनों की विशाल सेना को देखा तो उन्होंने कहा कि इस विशाल सेना के बारे में तो अल्लाह और उसके रसूल ने पहले ही सूचित कर दिया था । इस सेना का हमला तो अल्लाह और उसके रसूल की सच्चाई का प्रमाण है और यह विशाल सेना उनके ईमान को हिला न सकी बल्कि ईमान और इताअत (आज्ञापालन) में मुसलमान और भी बढ़ गए । मोमिनों की यह अवस्था है कि उन्होंने अल्लाह से जो वादा (प्रण) किया था उसे वे पूरी तरह निभा रहें हैं ।

अत: कुछ तो एसे हैं जिन्होंने अपनी जानें देकर अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लिया और कुछ ऐसे हैं जिन्हें जानें देने का अवसर तो प्राप्त नहीं हुआ किन्तु वह प्रत्येक समय इस बात की प्रतीक्षा में रहते हैं कि उन्हें जान देने का अवसर प्राप्त हो तो वह जान दे दें । अत: पहले दिन से जो उन्होंने वादा (प्रण) किया था उसको पूरा कर रहे हैं ।

## इस्लाम में मुर्दा शवों का सम्मान

दुश्मन जो खाई पर आक्रमण कर रहा था कभी कभी वह उसके फांदने में सफल भी हो जाता था । इस प्रकार एक दिन कुफ़्फ़ार के बड़े-बड़े जरनेल खाई पार करने में सफल हो गए परन्तु मुसलमनों ने एसा भीषण हमला किया कि उन्हें केवल वापस जाने का ही रास्ता लेना पड़ा । अत: उस समय खाई फांदते हुए कुफ़्फ़ार का एक बड़ा सरदार नौफ़ल नामी मारा गया। यह इतना बड़ा सरदार था कि क़ुफ़्फ़ार ने यह विचार किया कि यदि उसकी लाश (शव) का अपमान किया गया तो अरब में मुँह दिखाने के लिये कोई जगह न रहेगी । अत: उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास संदेश भेजा कि यदि आप उस का शव वापस कर दें तो वह दस हज़ार दिर्हम (रुपया) आप को देने के लिये तैयार हैं ।

उन लोगों का विचार था कि कदाचित जिस प्रकार हमने मुसलमान सरदारों अपितु स्वयं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा के नाक, कान उहद की जंग में काट दिये थे । इस प्रकार कदाचित आज मुसलमान हमारे सरदार के नाक और कान काट कर हमारी जाति का अपमान करेंगे परन्तु इस्लाम के आदेश बिल्कुल और ढंग के हैं। इस्लाम लाशों का

अपमान करने की आज्ञा नहीं देता । अतः कुफ़्फ़ार का संदेश रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुँचा तो आप(स) ने फ़र्माया इस लाश का हमने क्या करना है । यह लाश हमारे किस काम की है कि इस के बदला में हम तुम से रुपया लें। अपनी लाश को आदर सहित उठा कर ले जाओ । हमें इस से कोई लेना देना नहीं है । (अल् सीरतुल् हल्बीयः भाग 2, पृ. 345)

## संयुक्त फ़ौजों के मुसलमानों पर आक्रमण

उन दिनों कुफ़्फ़ार जिस जोश के साथ हमला करते थे म्योर (इतिहासकार) उस का वर्णन इन शब्दों में करता है ।

*''दूसरे दिन मुहम्मद (स.अ.व.) ने देखा कि संयुक्त फ़ौजें इकट्ठे होकर उन पर हमला करने के लिये खड़ी हैं । उनके हमलों को रोकने के लिये बहुत ही होशियार और हर समय चौकस रहना अवश्यक था । कभी वह संयुक्त हमला करते, कभी समूहों में विभाजित हो कर अलग-अलग चौकियों पर हमला करते और जब किसी चौकी को कमज़ोर पाते तो अपनी सारी सेना उस चौकी पर जमा कर लेते और अत्याधिक तीर अन्दाज़ी की आड़ में वह खाई पर हमला करने की कोशिश करते थे । एक के बाद एक ख़ालिद और अमर जैसे प्रसिद्ध लीडरों के अन्तरगत फ़ौज पूरी बहादुरी के साथ शहर में दाखिल होने के लिये हमला करती । एक समय तो स्वयं मुहम्मद (स.अ.व.) का ख़ैमा (टैंट) दुश्मन की आड़ में आ गया लेकिन मुसलमानों की क़ुर्बानी एवं मर मिटने की इच्छा और तीरों की बोछाड़ ने आक्रमणकारियों को पीछे धकेल दिया । यह हमला सारा दिन चलता रहा और चूँकि मुसलमानों की सारी फ़ौज मिल कर भी बड़ी कठिनता से खाई की सुरक्षा करती थी । मुसलमानों को आराम का कोई समय न मिला । रात पड़ गई परन्तु ख़ालिद के अन्तरगत दस्तों ने लड़ाई को चालू रखा और मुसलमानों को मजबूर कर दिया कि वह रात को भी अपनी चौकियों की सम्पूर्ण रूप से हिफ़ाज़त करें,*

*परन्तु दुश्मन की यह सारी चालें व्यर्थ गईं । खाई को कभी भी दुश्मन के बहुत अधिक सिपाही पार नहीं कर सके ।''*

(द लाईफ़ ऑफ़ मुहम्मद(स) पृ. 33 लेखक म्योर)

यद्यपि जंग दो दिन से लगातार हो रही थी । सिपाही एक दूसरे से भिड़ जाने का अवसर नहीं पाते थे । इस लिये 24 घण्टे की जंग में संयुक्त फ़ौज के केवल तीन आदमी और मुसलमानों के पाँच आदमी मारे गए । इस हमला में सअ्द बिन मआज़(र) औस क़बीला के सरदार और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़िदाई सहाबी बुरी तरह घायल हुए । इन हमलों का परिणाम यह हुआ कि एक स्थान पर खाई के किनारे टूट गए और उधर से हमला करना बहुत विश्वसनीय हो गया । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि की बहादुरी और मुसलमानों से सहानुभूति की यह अवस्था थी कि आप सर्दी की रात को उठ-उठ कर उस स्थान पर जाते और उसका पहरा देते । हज़रत आयशा(र) फ़र्माती हैं कि आप(स) पहरा देते हुए थक जाते और ठण्ड से निढाल हो जाते तो वापस आकर थोड़ी देर के लिये मेरे साथ लिहाफ़ में लेट जाते परन्तु शरीर गर्म होते ही फिर उस दरार वाले स्थान की सुरक्षा के लिये चले जाते इस प्रकार लगातार जागने से आप एक दिन बिल्कुल निढाल हो गए और रात के समय फ़र्माया यद्यपि इस समय कोई मुख़्लिस (निस्वार्थ) मुसलमान होता तो मैं आराम से सौ जाता । इतने में बाहर में साअ्द बिन वक़ास(र) की आवाज़ आई । आप(स) ने पूछा कि क्यों आए हो ? उन्होंने उत्तर दिया आप(स) का पहरा देने के लिये । आप(स) ने फ़र्माया मुझे पहरा की अवश्यकता नहीं तुम उस जगह जाओ जहां खाई का किनारा टूट गया है, और उसका पहरा दो ताकि मुसलमान सुरक्षित रहें। अतः साअ्द उस स्थान का पहरा देने के लिये चले गए । इन्हीं दिनों में आप ने एक दिन कुछ लोगों के हथियारों की आवाज़ सुनी और पूछा कौन है ? तो अबादा बिन् बशीर ने कहा मैं हूँ। आप(स) ने फ़र्माया तुम्हारे साथ कोई और भी है ? उन्होंने कहा सहाबा की एक जमाअत है जो आप(स) के ख़ैमा का पहरा देने के लिये आए हैं । आप(स) ने फ़र्माया इस समय मुश्रिक़ीन (क़ुफ़्फ़ारे मक्का) खाई पार करने का प्रयत्न कर रहे हैं वहां जाओ और उनका मुक़ाबला करो मेरे ख़ैमा को रहने दो ।

## बनु क़ुरैज़ा की मुश्रिकों (मक्का वालों) से मिल कर हमला की तैयारी और उसमें असफलता

जैसा कि ऊपर वर्णन हो चुका है कि यहूद ने चोरी छिपे मदीना में प्रवेश करने की कोशिश की और उसमें उनका जासूस मारा गया । जब यहूद को यह पता चला कि उनका षडयन्त्र ज़ाहिर हो गया है तो उन्होंने और अधिक दिलेरी से अरबों की सहायता शुरू कर दी । यद्यपि मदीना के पिछवाड़े से संयुक्त हमला नहीं किया क्योंकि उधर मैदान छोटा था और मुसलमानों की मौजूदगी में उधर से बड़ा हमला नहीं हो सकता था परन्तु कुछ दिनों के बाद दोनों समूहों ने यह फैसला किया कि एक निर्दिष्ट समय पर यहूदियों और मुश्रिकों की सेना अचानक मुसलमानों पर हमला कर दे । परन्तु उस समय अल्लाह की सहायता व समर्थन एक अद्भुत ढंग से प्रकट हुई जिसकी व्याख्या इस प्रकार है -

क़बीला ग़तफ़ान का एक व्यक्ति नईम दिल से मुसलमान था । यह व्यक्ति भी कुफ़्फ़ार के साथ आया हुआ था । परन्तु इस प्रतीक्षा में था कि यदि मुझे कोई अवसर मिले तो मैं मुसलमानों की सहायता करूँ । अकेला व्यक्ति कर भी क्या सकता था परन्तु जब उसने देखा कि यहूद भी कुफ़्फ़ार के साथ मिल गए हैं । अब मुसलमानों की हिफ़ाज़त की कोई व्यवस्था दिखाई नहीं देती थी । ऐसी अवस्था में वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने फ़ैसला कर लिया कि अवश्य ही मुझे इस षड़यन्त्र को दूर करने के लिये कुछ न कुछ उपाय करना चाहिये । अतः जब यह फ़ैसला हुआ कि दोनों समूह मिल कर एक दिन हमला करें, तो वह बनु क़ुरैज़ा के पास गया और उनके सरदारों से कहा कि यदि अरबों की सेना भाग जाये तो बताओ मुसलमान तुम्हारे साथ क्या करेंगे तुमने मुसलमानों से समझौता किया हुआ है । अतः इस समझौता को तोड़ने के परिणास्वरूप तुम्हें जो सज़ा (दण्ड) मिलेगी उसका अनुमान कर लो । उनके दिल कुछ डर गए । इस पर उन्होंने पूछा फिर हम क्या करें ? नईम ने कहा कि जब अरब तुम से संयुक्त आक्रमण के लिये इच्छा व्यक्त करें तो तुम मुश्रेकीन (मक्का वालों) से यह माँग करो कि तुम अपने सत्तर आदमी ज़मानत के रूप में हमारे पास भेज दो । वे हमारे किलों की रक्षा करेंगे और

हम मदीना के पिछवाड़े से उन पर हमला कर देंगे । इस प्रकार वह वहां से हट कर मुश्रेक़ीन के सरदारों के पास गया और उनसे कहा कि यहूद तो मदीना के रहने वाले हैं यदि अवसर पड़ने पर वह तुम से गद्दारी करें तो फिर क्या करोगे ? यदि वह मुसलमानों को ख़ुश करने के लिये और अपने जुर्म को माफ़ करवाने के लिये तुम से तुम्हारे आदमी ज़मानत के रूप में मांगे और उनको मुसलमानों को सौंप दें तो फिर तुम क्या करोगे ? तुम्हें चाहिये कि उनकी परीक्षा ले लो कि क्या वह पक्के भी रहते हैं या नहीं । अतः शीघ्र ही उन को अपने साथ मिल कर हमला करने की दावत दो । कुफ़्फ़ार के सरदारों ने इस परामर्श को सही समझते हुए दूसरे दिन ही यहूद को संदेश भेजा कि हम एक संयुक्त आक्रमण करना चाहते हैं तुम भी अपनी फ़ौजों के साथ हमला कर दो। बनु क़ुरैज़ा ने कहा सर्वप्रथम यह कि कल हमारा सब्त (पूजा) का दिन है इस लिये हम उस दिन लड़ाई नहीं कर सकते। दूसरे हम मदीना के रहने वाले हैं और तुम बाहर के, यदि तुम लोग लड़ाई छोड़ कर चले जाओ तो हमारा क्या हाल होगा । इसलिये यदि आप लोग हमें सत्तर आदमी ज़मानत के रूप में देंगे तो हम लड़ाई में शामिल हो जायेंगे । क़ुफ़्फ़ार के मन में चूँकि पहले से ही शंका पैदा हो गई थी । उन्होंने इस माँग को मानने और पूरा करने से इन्कार कर दिया और कहा कि यदि हमारा तुम्हारा समझौता सच्चा था तो इस प्रकार की माँग करने का क्या अर्थ है ? इस घटना से यहूद के दिलों में शंका उत्पन्न होने लगी । अतः यह उसूल है कि जब आशंकाएँ पैदा होने लगती हैं तो बहादुरी की भावनाएँ भी समाप्त हो जाती हैं । इन्हीं आशंकाओं और संदेहों को साथ लिये हुए कुफ़्फ़ार की सेनाएँ रात को आराम करने के लिये अपने शिवरों में गईं तो ख़ुदा तआला ने आसमानी समर्थन का एक ओर रास्ता खोल दिया । रात को एक तेज़ आंधी चली जिसने क़नातों (टेन्टों) के पर्दे फाड़ दिये चूल्हों पर से हाँडियां गिरा दीं और कुछ क़बीलों की आगें बुझ गईं । मुश्रेक़ीने अरब में एक रिवाज था कि वह सारी रात आग जला कर रखते थे और उसको वह नेक शगुन मानते थे । जिसकी आग बुझ जाती थी वह मानता था कि आज का दिन मेरे लिये अपशगुन है । वह अपने शिवर (ख़ैमें) उठा कर लड़ाई के मैदान से पीछे हट जाता था । जिन क़बीला की आग बुझ गई उन्होंने इस रिवाज के अनुसार अपने डेरे उठाए और वापस चल

पड़े ताकि एक दिन पीछे प्रतीक्षा करके फिर सेना में सम्मिलित हो जाये । चूँकि दिन के झगड़ों के कारण फ़ौज के सरदारों के मन में संदेह पैदा हो रहे थे जो क़बीले पीछे हटे उनके आस पास के क़बीले वालों ने विचार किया कि मानों यहूदियों ने मुसलमानों के साथ मिल कर रात के समय छापा मार दिया है और हमारे आसपास के क़बीले भागे जा रहे हैं । अत: उन्होंने भी जल्दी-जल्दी अपने डेरे उठाकर मैदाने जंग से भागना शुरू कर दिया । अबु सुफ़यान आराम से अपने डेरे में लेटा हुआ था कि इस घटना की सूचना उसे भी पहुँची वह घबराकर अपने बन्धे हुए ऊँट पर जा चढ़ा और उसको एड़ियाँ मारनी शुरू कर दीं । अन्तत: उसके मित्रों ने उसको ध्यान दिलाया कि वह यह क्या मूर्खता कर रहा है । इस पर उसके ऊँट की रस्सियाँ खोली गईं और वह भी अपने साथियों सहित मैदान से भाग गया ।

रात के तीसरे भाग में वह मैदान जिस में 20-25 हज़ार के लगभग कुफ़्फ़ार की फ़ौज डेरा डाले हुए थी । वह एक जंगल की भांति वीरान हो गया रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उस समय अल्लाह तआला ने इल्हाम द्वारा अवगत कराया कि हमने तुम्हारे दुश्मन को भगा दिया है । आप(स) ने इसकी वास्तविक्ता जानने के लिये किसी को भेजना चाहा और आप(स) ने अपने आस पास बैठे हुए सहाबा(र) को आवाज़ दी । सर्दी के दिन थे और मुसलमानों के पास कपड़े भी अधिक मात्रा में न थे । सर्दी के कारण ज़ुबानें भी बन्द हो रही थीं । कुछ सहाबा(र) कहते हैं कि हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ सुनी और हम जवाब भी देना चाहते थे परन्तु हम से बोला नहीं गया । केवल एक हुज़ैफ़ा(र) थे जिन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल क्या काम है ? आप(स) ने फ़र्माया तुम नहीं मुझे कोई और आदमी चाहिये । फिर आप(स) ने फ़र्माया कोई है परन्तु फिर भी सर्दी की तेज़ी के कारण जो जाग भी रहे थे वह जवाब न दे सके । हुज़ैफ़ा(र) ने फिर कहा हे अल्लाह के रसूल मैं मौजूद हूँ (उपस्थित हूँ) । अन्तत: आप(स) ने हुज़ैफ़ा(र) को यह कहते हुए भिजवाया कि अल्लाह तआला ने मुझे खबर दी है कि तुम्हारे शत्रु को हमने भगा दिया है । जाओ और देखो शत्रु का क्या हाल है ? हुज़ैज़ा(र) खन्दक़ (खाई) के पास गए और देखा कि मैदान शत्रु के सिपाहियों से बिल्कुल खाली था । वापस आए और कलम-ए-शहादत पढ़ते हुए

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिसालत की तसदीक़ की और बताया कि शत्रु मैदान छोड़ कर भाग गया है । प्रातः काल मुसलमान अपने डेरे उठा कर अपने अपने घरों को जाने लगे ।

(अल्-सीरतुल् हल्बिया, भाग-2, पृ. 354)

## बनु क़ुरैज़ा को उनकी ग़द्दारी की सज़ा

बीस दिनों के पश्चात मुसलमानों ने चैन की सांस ली । परन्तु अब बनु क़ुरैज़ा के मामला का फैसला होने वाला था । उनकी ग़द्दारी ऐसी न थी कि उस से अन्देखी की जाती । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वापस आते ही अपने सहाबा(र) से फ़र्माया घरों में आराम न करो बल्कि सांयकाल से पहले पहले बनु क़ुरैज़ा के किलों तक पहुँच जाओ, और आप(स) ने हज़रत अली(र) को बनु क़ुरैज़ा के पास भिजवाया कि वह उनसे यूँ पूछें कि उन्होंने समझौता के ख़िलाफ़ ग़द्दारी क्यों की ? बनु क़ुरैज़ा ने लज्जित होने या माफ़ी मांगने या क्षमा याचना करने के विपरीत उन्होंने हज़रत अली(र) और उनके साथियों को बुरा भला कहना शुरू कर दिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके ख़ानदान की औरतों को गालियाँ देने लगे और कहा कि हम नहीं जानते कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) क्या चीज़ हैं ? हमारा उनके साथ कोई समझौता नहीं । हज़रत अली(र) उनका यह उत्तर लेकर लौटे तो उसी समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा के साथ यहूद के किलों की तरफ़ जा रहे थे । उस समय यहूद गन्दी गालियाँ दे रहे थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बीवियों और बेटियों के संबन्ध में गन्दी गालियाँ दे रहे थे । हज़रत अली(र) ने यह सोच कर कि आप(स) को उनकी गन्दी गालियाँ सुनकर सुनकर कष्ट होगा । निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल ! आप(स) क्यों कष्ट करते हैं । हम लोग इस लड़ाई के लिये काफ़ी हैं । आप वापस तशरीफ़ ले जायें । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया, मैं समझता हूँ वह गालियाँ दे रहे हैं और तुम नहीं चाहते कि मेरे कान में वह गालियाँ पड़ें । हज़रत अली(र) ने निवेदन किया कि हाँ हे अल्लाह के रसूल बात तो यही है । आप(स) ने फ़र्माया फ़िर क्या हुआ यदि वह गालियाँ देते हैं । मूसा नबी तो इन का अपना था उसको इन्होंने इससे भी

अधिक तकलीफ़ें पहुँचाई थीं । यह कहते हुए आप(स) यहूद के किलों की ओर चले गए । परन्तु यहूद दरवाज़े बन्द करके किलाबन्द हो गए और मुसलमानों के साथ लड़ाई शुरू कर दी । यहाँ तक कि उनकी औरतें भी लड़ाई में सम्मिलित हुईं । अत: किला की दीवार के नीचे कुछ मुसलमान बैठे थे कि एक यहूदी औरत ने उपर से पत्थर फेंक कर एक मुसलमान को मार दिया । कुछ दिनों की घेराबन्दी के पश्चात् यहूदियों ने यह समझ लिया कि वह लम्बे समय तक मुक़ाबला नहीं कर सकते । तब उनके सरदारों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इच्छा व्यक्त की कि वह अबु-लबाब:(र) अन्सारी को जो उनके दोस्त और औस क़बीला के सरदार थे उनके पास भिजवाएँ ताकि वह उनसे परामर्श कर सकें। आप(स) ने अबु-लबाब:(र) को भिजवा दिया । उनसे यहूद ने यह परामर्श पूछा कि क्या मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस मुतालबा को कि फैसला मेरे सुपुर्द करते हुए तुम हथियार फेंक दो, हम यह मान लें ? अबु-लबाब: ने मुँह से तो कहा हाँ ! किन्तु अपने गले पर इस प्रकार हाथ फेरा जैसे क़त्ल की निशानी होती है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस समय तक अपना कोई फैसला ज़ाहिर नहीं किया था, परन्तु अबु-लबाब:(र) ने अपने दिल में यह समझते हुए कि उनके इस जुर्म की सज़ा क़त्ल के अतिरिक्त और क्या होगी, बिना सोचे समझे इशारे से उनसे एक बात कह दी जो अन्तत: उनकी बरबादी का कारण बनी । अत: यहूद (बनु क़ुरैज़ा) ने कह दिया कि यदि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़ैसला मान लेते तो अधिक से अधिक यही सज़ा दी जाती कि मदीना से देश निकाला कर दिये जाते परन्तु उनका दुर्भाग्य था कि उन्होंने कहा कि हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फैसला मानने के लिये तैयार नहीं बल्कि हम अपने मित्र (हलीफ़) क़बीला औस के सरदार सअ्द बिन् मआज़(र) का फ़ैसला मानेंगे जो वह फ़ैसला करेंगे हमें स्वीकार होगा । लेकिन उस समय यहूद में फूट पड़ गई । यहूदियों में से कुछ ने कहा कि हमारी क़ौम ने ग़द्दारी की है और मुसलमानों के चाल चलन एवं आचरण से साबित होता है कि उनका धर्म सच्चा है । वह लोग अपना धर्म छोड़ कर इस्लाम में दाख़िल हो गए । एक व्यक्ति अमर बिन सअ्दी ने जो उस क़ौम के सरदारों में से था । अपनी क़ौम की निन्दा की और कहा कि

तुमने ग़द्दारी की है कि समझौता को तोड़ा है, अब या मुसलमान हो जाओ या जिज़्या (जंगी टैक्स) देना स्वीकार लो । यहूदियों ने कहा न मुसलमान होंगे न जिज़्या देंगे । इससे क़त्ल होना अच्छा है । फिर उसने उनसे कहा, मैं तुमसे अलग होता हूँ और यह कह कर किले से बाहर निकल कर चल दिया। जब वह किला से बाहर निकल रहा था, मुसलमानों की एक फ़ौजी टुकड़ी ने जिसके सरदार मुहम्मद बिन् सल्मा(र) थे उसे देख लिया और उस से पूछा कि वह कौन है । उसने बताया कि मैं फलाँ हूँ । उस पर मुहम्मद बिन् सलमा(र) ने फ़र्माया:-

اللهم لا تحرمنی اقالة عثرات الكرام

(अस्सीरतुल् हल्बिय्य:, भाग 2, पृ. 363)

अर्थात आप शाँति से चले जायँ और फिर अल्लाह तआला से दुआ की कि इलाही मुझे शरीफ़ों की ग़लतियों पर पर्दा डालने के नेक अमल (अच्छे कर्म) से कभी वंचित न करना । अर्थात यह व्यक्ति चूँकि अपने कर्म पर और अपनी क़ौम के कर्म पर पछताता है तो हमारा भी इख़्लाक़ी कर्तव्य बनता है कि उसे माफ़ कर दें । इस लिये मैंने उसे गिरफ़्तार नहीं किया और जाने दिया है । ख़ुदा तआला मुझे सदैव ऐसे नेक कामों की शक्ति प्रदान करे । जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस घटना का पता चला तो आप(स) ने मुहम्मद बिन् सलमा(र) से कोई पूछ ताछ नहीं कि क्यों उस यहूदी को छोड़ दिया बल्कि उसकी सराहना की ।

## बनु क़ुरैज़ा के द्वारा नियुक्त किये हकम् (जज) सअ्द(र) का फ़ैसला तौरात के अनुसार था

यह उपर्युक्त घटनाएँ व्यक्तिगत थीं । बनु क़ुरैज़ा क़ौमी रूप से अपनी हठ पर डटे रहे और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हकम् (पंच) मानने से इनकार करते हुए सअ्द(र) के द्वारा फैसले का अनुरोध किया । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी उनकी इस मांग को मान लिया । सअ्द(र) को जो जंग में घायल हो चुके थे, सूचना दी कि बनु क़ुरैज़ा तुम्हारा फैसला मानने के लिये तैयार हैं, आकर फैसला करो । इस निर्णय की घोषणा

होते ही औस क़बीला के लोग जो बनु क़ुरैज़ा के देर से हलीफ़ चले आए थे, सअ्द(र) के पास दौड़ कर पहुँचे और आग्रह करना शुरू किया कि चूँकि खज़्रज् (क़बीला) ने अपने हलीफ़ (मित्र) यहूदियों को हमेशा सज़ा से बचाया है आज तुम भी अपने हलीफ़ क़बीला के पक्ष (हक़) में फैसला देना।

सअ्द(र) घावों के कारण सवारी पर बनु क़ुरैज़ा की तरफ चल पड़े और उनकी क़ौम के लोग उनके दायें बायें दौड़ते जाते थे और सअ्द(र) से अनुरोध करते जाते थे कि देखना बनु क़ुरैज़ा के खिलाफ़ फैसला न देना परन्तु सअ्द(र) ने केवल इतना ही जवाब दिया कि जिस को फैसला सौंपा जाता है वह ईमानदार होता है। उसे ईमानदारी से फैसला करना चाहिये। मैं ईमानदारी से फैसला करूँगा। जब सअ्द(र) यहूद के किला के पास पहुँचे। जहां एक तरफ़ बनु-क़ुरैज़ा किले की दीवार के साथ खड़े सअ्द(र) की प्रतीक्षा कर रहे थे और दूसरी तरफ़ मुसलमान बैठे थे, तो सअ्द(र) ने अपनी क़ौम से पूछा क्या आप लोग वादा करते हैं कि जो मैं फैसला करूँगा वह आप मानेंगे ? उन्होंने कहा हां। फिर सअ्द(र) ने बनु क़ुरैज़ा को संबोधित करते हुए कहा कि क्या आप लोग वादा करते हैं कि जो मैं फैसला करूँगा वह आप लोग मानेंगे ? उन्होंने कहा हाँ। फिर लज्जा से दूसरी ओर देखते हुए नीची नज़रों से उस ओर इशारा किया, जिधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बैठे हुए थे और कहा उधर बैठे हुए लोग भी यह वादा करते हैं ? रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया हाँ। उसके बाद सअ्द ने बाइबल के आदेशानुसार फैसला सुनाया। (सीरत हल्बिय: भाग-2, पृ. 365-366)

बाईबल में लिखा है:-

*"और जब तू किसी नगर के पास उसके लड़ने के लिये आ पहुँचे तो पहले उस से सन्धि का संदेश दे। तब इस प्रकार होगा कि यदि वह तुझे उत्तर दें कि संधि मनज़ूर और तेरे लिये दरवाज़ा खोल दे तो सारे लोग जो उस नगर में पाए जायें तेरी ख़राज गुज़ार और तेरी सेवा करेगी और यदि वह तुझ से संधि न करे बल्कि तुझ से जंग करे तो तू उसका घेराव कर और जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उसे तेरे क़ब्ज़ा में कर दे, तो वहां के प्रत्येक पुरुष को तलवार की धार से क़त्ल कर। परन्तु औरतों और लड़कों और जानवरों को*

*और जो कुछ उस शहर में हो, उस का सारा लूट अपने लिये ले। और तू अपने दुश्मनों की इस लूट को जो ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझे दी खाइयो । इसी तरह से तू उन सब शहरों से जो तुझ से बहुत दूर हैं और इन क़ौमों (जातियों) के शहरों में से नहीं हैं यही हाल (अवस्था) करना । किन्तु उन क़ौमों के शहरों में जिन्हें ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरी मीरास (दाय) कर देता है किसी चीज़ को जो सांस लेती है जीवित न छोड़ना बल्कि तू उनको हरम (अर्थात अपने क़ब्ज़ा में कर लो) कीजियो । हुत्ती और उमूरी और कन्आनी और फ़ज़्ज़री और जव्वी और बयूसी को जैसा कि ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझे आदेश दिया है ताकि वह अपने सारे बुरे कामों के अनुसार जो उन्होंने अपने देवताओं से किये तुम को कर्म करना न सिखायें और कि तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के पापी हो जाओ। (इस्तिस्ना बाब 20, आयत 10 से 18)*

बाइबल के इस फैसला से पता चलता है कि यदि यहूदी जीत जाते और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हार जाते तो बाइबल के इस फैसला के अनुसार सर्वप्रथम तो सारे मुसलमान क़त्ल कर दिये जाते पुरुष भी औरतें भी और बच्चे भी और जैसा कि इतिहांस से प्रमाणित है यहूदियों का इरादा भी यही था कि पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों सबको एक ही बार में क़त्ल कर दिया जाए परन्तु यदि वह उनसे अधिक से अधिक रिआयत (छुट अथवा लिहाज़) करते तो भी किताब इस्तिस्ना के वर्णित फ़ैसला के अनुसार वह उनसे दूर के देशों वाली क़ौम एवं जाति का सा व्यवहार करते और सभी पुरुषों को क़त्ल कर देते और औरतों और लड़कों और सामानों को लूट लेते । सअ्द(र) जो बनु क़ुरैज़ा के संधि किये हुए थे और उनके दोस्तों में से थे । जब देखा कि यहूदियों ने इस्लामी शरीअत् (धार्मिक कानून व्यवस्था) के अनुसार जो कि उनके जीवन की रक्षा करने वाली थी, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैसला को नहीं माना, तो उन्होंने वही फ़ैसला यहूद के बारे में किया जो मूसा ने इस्तिस्ना में पहले से ऐसी घटनाओं के लिये कर छोड़ा था । अत: इस फ़ैसला की ज़िम्मादारी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर या मुसलमानों पर नहीं अपितु मूसा पर और तौरात पर और उन यहूदियों पर है जिन्होंने हज़ारों साल

दूसरी क़ौमों के साथ ऐसा व्यवहार किया था । जिन को मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रहम (कृपा) के लिये बुलाया गया तो उन्होंने मना कर दिया और कहा हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात मानने के लिये तैयार नहीं । हम सअ्द(र) की बात मानेंगे । जब सअ्द(र) ने मूसा के फैसला के अनुसार फैसला दिया तो आज इसाई दुनिया शोर मचाती है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अत्याचार किया । क्या इसाई लेखक इस बात को नहीं देखते कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी दूसरे अवसर पर अत्याचार क्यों नहीं किया ? दुश्मन ने सैंकड़ों बार अपने आप को मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रहम (दया) पर अपने आप को छोड़ा और हर बार मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको क्षमा कर दिया । यह एक ही ऐसी घटना है कि दुश्मन ने आग्रह किया कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फैसला नहीं मानेंगे । अपितु दूसरे व्यक्ति का फ़ैसला मानेंगे और उस व्यक्ति (सअ्द(र)) ने पहले मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वचन लिया कि मैं जो फ़ैसला करूँगा उसे आप मानेंगे । उसके पश्चात उसने फैसला किया, अपितु उसने फैसला नहीं किया, उसने मूसा का फैसला दोहरा दिया, जिसकी उम्मत (क़ौम) में से होने का यहूदी दावा करते थे । अतः यदि किसी ने ज़ुल्म (अत्याचार) किया तो यहूदियों ने अपनी जान पर अत्याचार किया जिन्होंने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फैसला मानने से इन्कार कर दिया । यदि किसी ने अत्याचार किया तो मूसा ने अत्याचार किया जिन्होंने घेराव में आए दुश्मन के सम्बन्ध में ख़ुदा से आदेश पाकर यही शिक्षा दी थी । यदि यह अत्याचार था तो इन इसाई लेखकों को चाहिये था कि मूसा को अत्याचारी ठहराते बल्कि मूसा के ख़ुदा को अत्याचारी ठहराते, जिसने तौरात में यह शिक्षा दी ।

अहज़ाब (खन्दक) की जंग की समाप्ति के पश्चात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसललम ने फ़र्माया आज से मुश्रिक हम पर हमला नहीं करेंगे । अब इस्लाम स्वयं जवाब देगा । उन क़ौमों (जातियों) पर जिन्होंने हम पर हमले किये थे, अब हम चढ़ाई करेंगे ।

(बुख़ारी किताबुल् मुग़ाज़ी बाब ग़ज़्वातुल् ख़न्दक़)

अतः ऐसा ही हुआ । अहज़ाब की जंग में भला कुफ़्फ़ार की हानि ही

क्या हुई थी । कुछ एक आदमी मारे गए थे । वह दूसरे साल फिर तैयारी करके आ सकते थे। बीस हज़ार की जगह वह चालीस पचास हज़ार की फ़ौज भी ला सकते थे । अत: यदि वह और अधिक प्रबन्ध करते तो लाख डेढ़ लाख फ़ौज लाना भी उनके लिये कोई मुश्किल नहीं था । परन्तु इक्कीस वर्षों के लगातार प्रयत्नों के पश्चात् कुफ़्फ़ार के दिलों में यह बात घर कर गई थी कि खुदा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ है । उनके बुत झूठे हैं । अत: दुनिया का पैदा करने वाला एक ही खुदा है । उनके शरीर सही सलामत एवं सुरक्षित थे किन्तु उनके दिल टूट चुके थे । देखने में तो वह अपने बुतों (मूर्तियों) के आगे झुके हुए दिखाई देते थे परन्तु उनके दिलों से لا إله إلا الله ला इलाह इल्लल्लाहु की आवाज़ें उठ रहीं थीं ।

## मुसलमानों के ग़ल्बा (आधिपत्य एवं विजयों) का आरम्भ

इस जंग (खन्दक़) से निपटने के पश्चात् रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया आज से कुफ़्फ़ार हम पर हमला नहीं करेंगे अर्थात् मुसलमानों की परीक्षा अपनी चरमसीमा को पहुँच गई है और अब उनके ग़ल्बा एवं आधिपत्य का युग शुरू होने वाला है । इस समय तक जितनी जंगें हुई थीं वह सारी की सारी ऐसी थीं कि या तो कुफ़्फ़ार मदीना पर चढ़ आए थे अथवा उनके आक्रमण की तैयारियों को रोकने के लिये मुसलमान मदीना से निकले थे परन्तु कभी भी मुसलमानों ने जंग को चालू रखने का प्रयत्न नहीं किया । वास्तव में जंगी उसूलों के अनुसार जब एक जंग आरम्भ हो जाती है तो उसकी समाप्ति दो प्रकार से ही होती है प्रथम यह कि संधि हो जाती है या एक दल हथियार डाल देता है परन्तु अब तक एक भी ऐसा अवसर नहीं आया जबकि संधि हुई हो या किसी दल ने हथियार डाले हों । यद्यपि पुरातन समय के नियमानुसार लड़ाइयाँ कुछ समय के लिये स्थगित हो जाती थीं लेकिन जहाँ तक जंग के चालू रहने का प्रश्न था वह लगातार चलती रहती थी और समाप्त न होती थीं । इस लिये मुसलमानों का अधिकार था कि वह भी जब चाहते दुश्मन पर हमला करके उनको मजबूर करते कि वह हथियार डालें किन्तु मुसलमानों ने ऐसा नहीं किया बल्कि जब स्थगित होगी तो मुसलमान भी खामोश हो जाते थे । इस आशा पर कि सम्भवत: कुफ़्फ़ार इस बीच संधि

की कोशिश करें और लड़ाई बंद हो जाय । जब एक लम्बे समय तक कुफ़्फ़ार की ओर से संधि के लिये किसी प्रकार की कोशिश न हुई और न उन्होंने मुसलमानों के सामने हथियार डाले बल्कि विरोध और जोश में बढ़ते ही चले गए । अतः अब वह समय आ गया था कि लड़ाई का दो टूक फ़ैसला हो जाये। या तो दोनों दलों में संधि हो जाये या दोनों में से एक हथियार डाल दे ताकि देश में शांति स्थापित हो जाय । अतः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अहज़ाब (ख़न्दक़) की जंग के बाद फ़ैसला कर लिया कि अब हम दोनों फ़ैसलों में से एक फ़ैसला करके छोड़ेंगे । या तो हमारी और कुफ़्फ़ार की संधि हो जायेगी या हम में से कोई एक दल हथियार डाल देगा । यह तो निश्चित था कि हथियार डालने की अवस्था में कुफ़्फ़ार ही हथियार डाल सकते थे क्योंकि इस्लाम के ग़ल्बा के सम्बन्ध में तो ख़ुदा तआला की ओर से सूचना मिल चुकी थी और मक्का के जीवन काल में ही रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस्लाम के ग़ल्बा और आधिपत्य की घोषणा कर चुके थे । शेष सुलह रह जाती है तो सुल्ह (संधि) के सम्बन्ध में यह बात समझ लेनी चाहिये कि सुल्ह की बात या तो ग़ालिब (विजयी) की ओर से होती है या मग़लूब (पराजित) की ओर से । पराजित दल जब सुल्ह की प्रार्थना करता है तो उसका अर्थ यह होता है कि वह देश का कुछ भाग या अपनी आमद का कुछ भाग स्थायी रूप में या अस्थायी रूप में विजयी दल को दिया करेगा या कुछ और अवस्थाओं में उसकी लगाई हुई पाबन्दियों को मानेगा । विजयी दल की ओर से जब सुल्ह (संधि) का प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाता है तो उस का मतलब यह होता है कि हम तुम को बिल्कुल कुचलना नहीं चाहते । यदि तुम कुछ अवस्थाओं में हमारी इताअत एवं आज्ञा का पालन या हमारी अधीनता स्वीकार कर लो, तो हम तुम्हारी आज़ादी या अर्द्ध आज़ादी की अवस्था को स्थापित रहने देंगे । कुफ़्फ़ारे मक्का और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जो मुक़ाबला था उस में कुफ़्फ़ार बार बार पराजित हुए थे परन्तु उस पराजय का केवल इतना अर्थ था कि उनके हमले असफल रहे थे । वास्तविक हार उसे कहते हैं जबकि सुरक्षा की ताक़त टूट जाये । हमला असफ़ल होने का अर्थ वास्तविक पराजय नहीं समझा जाता । उस का अर्थ केवल इतना होता है कि यद्यपि आक्रमणकारियों का आक्रमण

असफल रहा परन्तु वह फिर दोबारा आक्रमण करके अपने उद्देश्य को पूरा कर लेगी । अतः जंगी उसूलों के अनुसार मक्का वाले परास्त नहीं हुए थे बल्कि उनकी पोज़ीशन केवल यह थी कि अब तक उनकी आक्रमणकारी नीतियां अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकीं थीं । इस के मुक़ाबला में मुसलमान जंगी उसूल से यद्यपि उनकी सुरक्षा की ताक़त नहीं टूटी थी । मग़लूब (पराजित) कहलाने के अधिक हक़दार थे, इसलिये कि :-

सर्वप्रथम यह कि वह बहुत ही अल्पसंख्यक थे । दूसरे उन्होंने इस समय तक कोई क्षति पहुँचाने वाला आक्रमण नहीं किया था । भाव यह कि किसी हमला में स्वयं शुरूआत नहीं की थी जिससे यह समझा जाए कि अब वह अपने आप को कुफ़्फ़ार के प्रभाव से आज़ाद समझते हैं । ऐसी अवस्था में मुसलमानों की तरफ़ से संधि के प्रस्ताव का केवल यह अर्थ निकलता था कि वे अब सुरक्षा करने से तंग आ गए हैं और कुछ दे दिला कर अपना पीछा छुड़ाना चाहते हैं । प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि ऐसी अवस्था में यदि मुसलमान संधि का प्रस्ताव रखते तो उसका परिणाम बहुत ही खत्रनाक होता और यह बात उनके अस्तित्व को मिटा देने का कारण बन जाती । अरब के क़ुफ़्फ़ार जिनके दिलों में अपनी जारहाना (क्षति पहुँचाने वाली) कारवाइयों में असफलता के कारण जो असंतोष पैदा हो गया था । इस संधि के प्रस्ताव से तुरन्त ही नई उमंगों और नई आशाओं में बदल जाती । अतः यह समझा जाता कि मुसलमान मदीना को तबाही से बचा लेने के बावजूद अन्ततः सफलता से निराश हो चुके थे । अतः सन्धि का प्रस्ताव मुसलमानों की ओर से किसी भी अवस्था में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता था । यदि सन्धि का प्रस्ताव कोई रख सकता था तो वह मक्का वाले रख सकते थे या फिर कोई तीसरी सालिस (मध्यस्थ) क़ौम कर सकती थी, परन्तु अरब में कोई तीसरी मध्यस्थ क़ौम शेष नहीं रही थी । एक तरफ़ मदीना था और एक ओर पूरा अरब था । अतः क़ुफ़्फ़ार ही थे जो व्यवहारिक रूप से यह प्रस्ताव रख सकते थे, परन्तु उनकी ओर से सुल्ह (संधि) का कोई प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं हो रहा था । यद्यपि यह अवस्था सौ साल तक भी चलती तो जंगी उसूलों के अनुसार अरब का यह गृह युद्ध चलता रहता ।

अतः जबकि मक्का के लोगों की तरफ़ से सन्धि का प्रस्ताव ही प्रस्तुत नहीं हुआ था और मदीना वाले अरब की अधीनता किसी भी अवस्था में मानने के लिये तैयार न थे । अतः अब एक ही रास्ता खुला रह जाता था कि जब मदीना ने अरब के संयुक्त आक्रमण को बेकार कर दिया तो स्वयं मदीना के लोग बाहर निकलें और अरब के कुफ़्फ़ार को मजबूर कर दें कि या वह उनकी अधीनता स्वीकार करे लें या उनसे सन्धि कर लें । अतः रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यही रास्ता चुना। यद्यपि यह रास्ता जंग का दिखाई देता है परन्तु वास्तविक्ता यह है कि सन्धि की स्थापना के लिये इस के अतिरिक्त कोई रास्ता खुला ही नहीं था । यदि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसा न करते तो संभव था कि यह जंग सौ साल तक लम्बी चली जाती । जिस प्रकार ऐसे ही हलाात में पुराने ज़माने में जंगे सौ सौ साल तक चलती चली गईं । स्वयं अरब की कई कई जंगे तीस तीस चालीस चालीस साल तक चलती रही हैं। इस जंगों के लम्बे समय तक चलने का कारण भी यही दिखाई पड़ता है कि जंग को समाप्त करने के लिये कोई उचित द्वार नहीं चुना गया था और जैसा कि मैं बता चुका हूँ जंग को समाप्त करने के दो रास्ते हुआ करते हैं। या ऐसी जंग लड़ी जाए जो दो टुक फैसला कर दे और दोनों दलों में से एक को हथियार डालने पर मजबूर कर दे और या आपस में समझौता हो जाये । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यद्यपि ऐसा कर सकते थे कि मदीना में बैठे रहते और स्वयं हमला न करते लेकिन चूँकि अरब के कुफ़्फ़ार जंग की नींव डाल चुके थे । आप(स) के खामोश बैठने का यह अर्थ नहीं था कि जंग समाप्त हो गई है । बल्कि इस का केवल यह अर्थ होता कि जंग का द्वार हमेशा के लिये खुला रखा गया है । अरब के कुफ़्फ़ार जब चाहते बिना किसी कारण के पैदा होने के मदीना पर हमला कर देते और उस समय की प्रथानुसार वह हक़ पर समझे जाते क्योंकि जंग में विलम्ब हो जाना उस ज़माना में, जंग के समाप्त हो जाने का कारण नहीं समझा जाता था बल्कि विलंब, जंग का भाग ही समझा जाता था । इस अवसर पर कुछ लोगों के मन में यह सवाल उत्पन्न हो सकता कि क्या एक सच्चे धर्म के लिये लड़ाई करना उचित है ?

# जंग के सम्बन्ध में यहूदियों और इसाईयों की शिक्षा

मैं इस अवसर पर इस प्रश्न का उत्तर दे देना भी ज़रूरी समझता हूँ, जहाँ तक धर्मों का प्रश्न है । लड़ाई के सम्बन्ध में विभिन्न शिक्षाएँ हैं, लड़ाई के सम्बन्ध में मूसा अलैहिस्सलाम की शिक्षा का ऊपर वर्णन कर आया हूँ । तौरात कहती है कि मूसा अलैहिस्सलाम को आदेश दिया गया कि वह कन्आन में ज़बरदस्ती घुस जायें और उस जगह की क़ौमों को पराजित करके उस क्षेत्र में अपनी जाति के लोगों को आबाद करें ।

(इस्तिसना, बाब-20, आयत 10 से 18)

परन्तु बावजूद इस के कि मूसा(अ) ने यह शिक्षा दी और बावजूद इस के कि यूशा(अ), दाऊद(अ) और दूसरे नबियों ने इस शिक्षा पर कार्य करते रहे । यहूदी तथा ईसाई उनको ख़ुदा का नबी और तौरात को ख़ुदा की किताब समझते हैं। मूसवी संस्था के अन्त में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम प्रकट हुए । उनकी जंग के सम्बन्ध में यह शिक्षा है कि ज़ालिम का मुक़ाबला न करना बल्कि जो तेरे दायें गाल पर थप्पड़ मारे दूसरा भी उसकी ओर फेर दे । (मती, बाब-5, आयत 39)

इस (शिक्षा) से यह सिद्ध करते हुए ईसाई क़ौम यह दावा करती है कि मसीह ने क़ौमों को लड़ाई से मना किया है, परन्तु हम देखते हैं कि इन्जील में इस शिक्षा के विरुद्ध और भी शिक्षायें वर्णित हैं । जैसे इन्जील में लिखा है कि :-

*"यह मत समझो कि मैं ज़मीन पर मैत्री (शांति) करवाने आया हूँ । मैत्री (शांति) करवाने नहीं बल्कि तलवार चलाने आया हूँ।"* *(मती, बाब-10, आयत 34)*

इसी प्रकार लिखा है कि :-

*"उसने उन्हें कहा पर अब जिस के पास बटवा हो, लेवे और उसी प्रकार झोली भी और जिस के पास तलवार नहीं अपने कपड़े बेच कर तलवार खरीदे ।"* *(लूक़ा, बाब-22, आयत 36)*

यह दोनों आखरी शिक्षाएँ पहली शिक्षा के अति विपरीत हैं । यदि मसीह जंग कराने के लिये आया था तो फिर एक गाल पर थप्पड़ खाकर दूसरा गाल

फेर देने का क्या अर्थ था । अतः या तो यह दोनों प्रकार की शिक्षाएँ विपरीतार्थ हैं । अतः इन दोनों शिक्षाओं में से किसी एक को उसके वास्तविक अर्थ से फिरा कर उसकी कोई कल्पना करनी पड़ेगे । मैं इस विवाद में नहीं पड़ता कि एक गाल पर थप्पड़ खाकर दूसरा गाल फेर देने की शिक्षा पर चला जा सकता है या नहीं । मैं इस अवसर पर यह कहना चाहता हूँ कि सर्वप्रथम ईसाई दुनिया ने अपने पूरे इतिहास में कभी भी जंग से मुँह नहीं मोड़ा । जब ईसाइयत शुरू शुरू में रोम में छा गई थी उस समय भी उसने दूसरी जाति के लोगों से जंगें कीं । न केवल रक्षात्मक अपितु आक्रमक भी । अब जबकि ईसाई धर्म दुनिया में छा गया है, अब भी वह जंगें करता है । न केवल रक्षात्मक अपितु, आक्रमक भी। अन्तर केवल यह है कि जंग करने वालों में से जो दल जीत जाता है उसके सम्बन्ध में कह दिया जाता कि वह क्रिर्शचन सिविलाईज़ेशन का पाबन्द था । क्रिर्शचन सिविलाईज़ेशन उस ज़माना में केवल विजयी और विजेता की क्रियाओं का नाम है । अतः अब इस शब्द का कोई वास्तविक अर्थ शेष नहीं रहा । जब दो क़ौमें आपस में लड़तीं हैं तो प्रत्येक क़ौम इस बात का दावा करती हैं कि वह क्रिर्शचन सिविलाइज़ेशन का समर्थन कर रही है और जब कोई क़ौम जीत जाती है तो कहा जाता है कि इस विजयी क़ौम का कार्य करने का ढंग एवं सिद्धांत ही क्रिर्शचन सिविलाईज़ेशन है । फिर भी ईसाई दुनिया मसीह के युग से आज तक जंग करती चली जा रही है । और लक्षण बताते हैं कि जंग करती चली जायेगी । अतः जहां तक मसीही दुनिया का सम्बन्ध है यही ज्ञात होता है कि तुम अपने कपड़े बेच कर तलवार खरीदो ।'' और ''मैं मेल कराने के लिये नहीं बल्कि तलवार चलाने के लिये आया हूँ ।'' यह वास्तविक क़ानून है । अतः तू गाल पर थप्पड़ खाकर दूसरा भी फेर दे, यह कानून या तो ईसाई दुनिया की आरम्भिक कमज़ोरी के समय कूट नीति के रूप में हित के लिये अपनाई गई । या फिर यह कानून ईसाई लोगों के आपस के सम्बन्धों तक स्थगित है । हकूमतों और क़ौमों (जातियों) पर यह कानून लागू नहीं होता । दूसरे, यदि यह भी समझ लिया जाए कि मसीह अलैहिस्सलाम की वास्तविक शिक्षा जंग की नहीं थी बल्कि प्रेम ही की थी । तब भी इस शिक्षा से यह परिणाम नहीं निकलता कि जो व्यक्ति इस शिक्षा के विरुद्ध कार्य करता है वह ख़ुदा का नबी नहीं हो

सकता । क्योंकि इसाई दुनिया आज तक मूसा(अ) और यूशा(अ) और दाऊद(अ) को ख़ुदा का नबी ठहराती आई है बल्कि ख़ुद इसाइयत के ज़माने के कुछ क़ौमी हीरो जिन्होंने अपनी क़ौम के लिये जान को ख़त्रा में डाल कर दुश्मनों से जंगें की हैं । विभिन्न युगों के पोपों के फत्वों (धर्माज्ञा) के अनुसार आज सैंट कहलाते हैं ।''

## जंग के सम्बन्ध में इस्लाम की शिक्षा

इस्लाम इन दोनों प्रकार की शिक्षाओं के बीच की शिक्षा देता है । अर्थात् वह न तो मूसा(अ) की तरह कहता है कि तू आक्रामक रूप से किसी देश में घुस जा और उस कौम को तलवार के घाट उतार दे और न वह उस ज़माना की बिगड़ी हुई मसीहिय्यत की तरह बड़े ज़ोर-ज़ोर से यह कहता है कि , ''यदि कोई तेरे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो तू अपना दूसरा गाल भी उस की तरफ फेर दे । परन्तु अपने साथियों के कान में चुपके से यह कहना चाहता है कि तुम अपने कपड़े बेच कर भी तलवारें खरीद लो। बल्कि इस्लाम ऐसी शिक्षा प्रस्तुत करता है जो स्वभाव के अनुसार है और जो अमन, शांति, समझौते तथा मेल मिलाप की स्थापना के लिए एक ही मार्ग हो सकता है । वह यह है कि तू किसी पर हमला न कर परन्तु यदि कोई व्यक्ति तुझ पर हमला करे और उस का मुकाबला न करना फ़ित्ना अर्थात उपद्रव के बढ़ाने का कारण दिखाई दे और सच्चाई तथा अमन उस से मिटता हो तो उस समय तू उस के हमला का जवाब दे । यही वह शिक्षा है जिस से दुनिया में अमन शान्ति और सद्भावना की स्थापना हो सकती है । इस शिक्षा पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अमल किया । आप मक्का में लगातार तकलीफ़ें उठाते रहे परन्तु आप ने कभी लड़ाई शुरू न की किन्तु जब आप हिजरत कर के मदीना तश्रीफ़ ले गए और वहाँ भी दुश्मनों ने आप का पीछा न छोड़ा तो ख़ुदा तआला ने आप को आदेश दिया कि चूँकि दुश्मन आक्रामक कार्यवाही कर रहा है और इस्लाम को मिटाना चाहता है, इसलिए सच्चाई और सत्यता की स्थापना के लिये आप उसका मुक़ाबला करें । इस संबन्ध में क़ुर्आन करीम में विभिन्न आदेश आए हैं ।

वह निम्नलिखित हैं :-

أُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقَاتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰي نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۝ نِ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ۭ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۭ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝ (سورة حج ۴۰-۴۲)

*अर्थात : उन लोगों को जिन के विरुद्ध युद्ध किया जा रहा है (उन्हें भी युद्ध की) आज्ञा दी जाती है क्योंकि उन पर अत्याचार किये गए । और अवश्य अल्लाह उनकी मदद करने की पूर्ण ताकत रखता है । (अर्थात) वे लोग जिन्हें उनके घरों से बिना किसी उचित कारण के केवल इस लिए निकाल दिया गया कि वह कहते हैं कि अल्लाह हमारा रब्ब है । और अगर अल्लाह की तरफ़ से लोगों की सुरक्षा, उनमें से कुछ को कुछ से भिड़ाकर न की जाती तो, राहिबों के स्थल विध्वंस कर दिये जाते और गिरजे भी और यहूदियों के उपासना स्थल भी और मस्जिदें भी जिनमें अत्यधिक अल्लाह का नाम लिया जाता है। और अवश्य अल्लाह उसकी सहायता करेगा जो उसकी सहायता करता है । नि:सन्देह अल्लाह बड़ा ताकतवर (और) सामर्थ्यवान है । जिन्हें अगर हम ज़मीन में सामर्थ्य प्रदान करें तो वे नमाज़ को कायम करते हैं । और ज़कात अदा करते हैं और नेक बातों का आदेश देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं और प्रत्येक बात का परिणाम अल्लाह ही के अधिकार में है । (अल् हज् आयत 40-42)*

इन आयतों में जो मुसलमानों को जंग की आज्ञा देने के लिये उतरी हैं, बताया गया है कि जंग की आज्ञा इस्लामी शिक्षानुसार उसी समय होती है जब कोई जाति देर तक किसी दूसरी क़ौम के असहनीय अत्याचारों की चक्की में पिसती चली जा रही हो, और ज़ालिम जाति बिना कारण उसके विरुद्ध जंग की

घोषणा करदे, और उसके धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप करे। अत: ऐसी मज़लूम क़ौम का फ़र्ज़ होता है कि जब उसे शक्ति मिले तो वह धार्मिक आज़ादी दे और इस बात को सदैव अपने समक्ष रखे कि ख़ुदा तआला उसको विजय प्रदान करे तो वह सभी धर्मों की रक्षा करे, और उसके पवित्र स्थानों के मान सम्मान की स्थापना का ध्यान रखे और उस आधिपत्य को अपनी शक्ति और वैभव का सूचक न बनाए बल्कि ग़रीबों की देख-रेख, देश की हालत सुधारने तथा फिसाद एवं शरारतों के मिटाने में अपनी शक्तियों का प्रयोग करे । यह कितनी संक्षिप्त तथा ठोस शिक्षा है । इसमें यह भी बता दिया गया है कि मुसलमानों को जंग करने की आज्ञा क्यों दी गई है । अत: यदि अब वे जंग करेंगे तो वह मजबूरी की जंग है अपितु अकारण आक्रमण करना इस्लाम में मना है । फिर किस प्रकार शुरू में ही कह दिया गया था कि मुसलमान अवश्य ही विजयी होंगे परन्तु उन्हें याद रखना चाहिये कि उनको अपनी सत्ता के दिनों में हुकूमत से अपनी जेबों को भरने और अपनी हालत सुधारने की बजाय ग़रीबों की देख रेख करने तथा अमन शान्ति की स्थापना और झगड़ों को दूर करने और क़ौम तथा देश की उन्नति के लिये प्रयत्न करने को अपना उद्देश्य बनाना चाहिये।

फ़िर फ़र्माता है कि :-

وَقَاتِلُوْا فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ. فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ. وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝ (بقر ۱۹۱-۱۹۴)

*और अल्लाह की राह में उन से युद्ध करो जो तुमसे युद्ध करते हैं और अत्याचार न करो । निस्संदेह अल्लाह अत्याचार करने वालों को पसन्द नहीं करता । और (युद्ध में) उन्हें कत्ल करो जहाँ कहीं भी तुम उन्हें पाओ और उन्हें वहाँ से निकाल दो जहाँ से तुम्हें*

*उन्होंने निकाला था । और उपद्रव कत्ल से अधिक घातक होता है । और उनसे मस्जिदे-हराम के समीप युद्ध न करो यहाँ तक कि वह तुमसे वहाँ युद्ध करें । अतः यदिवह तुमसे युद्ध करें तो फिर तुम उनको कत्ल करो । काफिरों का ऐसा ही दण्ड होता है । अतः यदि वे रुक जाएँ तो निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार बार दया करने वाला है । और उनसे युद्ध करते रहो यहाँ तक कि उपद्रव शेष न रहे और धर्म (धारण करना) अल्लाह के लिए हो जाए । अतः अगर वे रुक जाएँ तो (अत्याचार करने वाले) ज़ालिमों के अतिरिक्त किसी पर अत्याचार नहीं करना ।* (अल् बक़रः आयत 191-194)

(क़ुर्आन शरीफ़ की) इन आयतों में बताया गया है कि सर्व प्रथम लड़ाई केवल अल्लाह तआला के लिये होनी चाहिये । अर्थात निजी लालच और निजी स्वार्थ, देश के विजय करने की नीयत अथवा अपने वैभव तथा प्रतिष्ठा को बढ़ाने की नीयत से लड़ाई नहीं करनी चाहिये ।

(ख) लड़ाई केवल उसी के साथ उचित है जो पहले हमला करता है ।

(ग) तुम्हारे लिये जंग करना उन्हीं से उचित है जो तुम से लड़ते हैं । अर्थात जो लोग वास्तव में सिपाही नहीं और लड़ाई में भी भाग नहीं लेते उनको मारना या उनसे लड़ाई करना उचित नहीं।

(घ) दुश्मन के लड़ाई की शुरूआत करने के बावजूद उसे उसी सीमा तक सीमित रखना चाहिये जिस सीमा तक दुश्मन ने उसे सीमित रखा है । उसे न क्षेत्र के रूप में और न ही जंगी साधनों के रूप में विस्तृत करने का प्रयत्न करना चाहिये ।

(च) जंग केवल जंग करने वाली फौज के साथ होनी चाहिये । यह नहीं कि दुश्मन के इक्का दुक्का लोगों के साथ मुक़ाबला किया जाये।

(छ) जंग में इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि धार्मिक इबादतों अर्थात पूजा पाठ और धार्मिक कर्तव्यों के पूरा करने में किसी प्रकार की कठिनाई पैदा न हो । यदि दुश्मन किसी ऐसे स्थान पर जंग न करना चाहे जिस के कारण उसके धार्मिक पूजा पाठ में बाधा हो तो मुसलमानों को भी उस जगह जंग नहीं करनी चाहिये ।

(ज) यदि दुश्मन स्वयं इबादत गाहों (पूजास्थलों) को लड़ाई का साधन

बनाये तो फिर मजबूरी है अपितु तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये । इस आयत में इस तरफ़ इशारा है कि इबादतगाहों के आस-पास भी लड़ाई नहीं होनी चाहिये । कहाँ यह कि इबादतगाहों (पूजास्थलों) पर हमला किया जाये, या उन्हें गिराया जाये, या तोड़ा जाये। यद्यपि दुश्मन स्वयं इबादतगाहों को लड़ाई का किला बना ले तो फिर उसके नुक़सान की ज़िम्मादारी भी उस पर है । इस हानि के उत्तरदायी मुसलमान नहीं होंगे ।

(झ) यदि दुश्मन अपने धार्मिक स्थानों में लड़ाई शुरू करने के पश्चात् उसके हानिकारक परिणामों को समझते हुए धार्मिक स्थान से निकल कर किसी दूसरी जगह को मैदाने जंग बना ले तो मुसलमानों को इस बहाना से उनके धार्मिक स्थानों को नुक़सान नहीं पहुँचाना चाहिये कि दुश्मन ने पहले इस स्थान से लड़ाई आरम्भ की थी बल्कि शीघ्र ही उन स्थानों के सम्मान और मान्यता को मानते हुए अपने आक्रमण की दिशा को भी बदल देना चाहिये ।

(ट) लड़ाई उस समय तक चलती रहनी चाहिये जब तक कि धार्मिक हस्तक्षेप समाप्त न हो जाये और दीन-धर्म के मामला को केवल अन्तरात्मा का मामला स्वीकार कर लिया जाये । सियासी मामलों की तरह इस में हस्तक्षेप न की जाये । यदि दुश्मन इस बात की घोषणा कर दे और उस पर चलना आरम्भ कर दे तो चाहे वह हमला की पहल कर चुका हो, उसके साथ लड़ाई नहीं करनी चाहिये ।

3. फ़र्माता है कि :-

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّاقَدْ سَلَفَ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ○ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ○ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰكُمْ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ○ (انفال ۳۹-۴۱)

(सूर: अल् अन्फ़ाल 39-40)

अर्थात हे मुहम्मद रसूलुल्लाह ! दुश्मन ने जंगें शुरू कीं और तुम्हें ख़ुदा ताला के आदेश से उनका जवाब देना पड़ा । परन्तु तू उनमें घोषणा कर दे कि यदि अब भी वह लड़ाई से रुक जाएँ तो जो कुछ वे पहले कर चुके हैं उन्हें माफ़ कर दिया जायेगा, परन्तु यदि वह लड़ाई से नहीं रुके और बार-बार हमला करें । तो पहले

नबियों के दुश्मनों के परिणाम उनके सामने हैं । इनका भी वही परिणाम होगा । अत: हे मुसलमानों ! तुम उस समय तक लड़ाई करते रहो कि दुनिया में धर्म के लिये दु:ख दिया जाना समाप्त हो जाये। और दीन सम्पूर्ण रूप से ख़ुदा तआला के सुपुर्द कर दिया जाए । इस प्रकार कि लोग दीन के मामला में दखल अन्दाज़ी करना छोड़ दें । फिर यदि यह लोग इन बातों को छोड़ दें । तो केवल इस कारण उनसे जंग न करो कि वह एक ग़लत धर्म के मानने वाले हैं। क्योंकि अल्लाह तआला उनके कर्मों को जानता है । वह स्वयं जिस प्रकार चाहेगा उनसे मामला करेगा । तुम्हें उनके ग़लत धर्म के कारण उनके कामों में हस्तक्षेप करने की आज्ञा नहीं हो सकती। यदि हमारी इस सुलह (मैत्री) की घोषणा के पश्चात् भी जो लोग जंग करना नहीं छोड़ते और लड़ाई को चालू रखते हैं तो यह बात अच्छी तरह जान लो कि यद्यपि तुम थोड़े हो । तुम ही जीतोगे क्योंकि अल्लाह तुम्हारा साथी है । अत: ख़ुदा तआला से बढ़कर साथी और सहायक कौन हो सकता है ?

क़ुर्आन करीम में यह आयतें जंग बदर के वर्णन के पश्चात आई हैं, जो अरब के क़ुफ़्फ़ार और मुसलमानों के बीच सबसे पहली नियमित जंग थी । यद्यपि अरब के क़ुफ़्फ़ार ने बिना किसी कारण ही मुसलमानों पर हमला किया। और मदीना के आस-पास उपद्रव मचाया और बावजूद इसके कि मुसलमान कामयाब हुए और दुश्मन के बड़े-बड़े सरदार मारे गए । क़ुर्आन करीम ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा यह घोषणा करवाई कि यदि अब भी तुम लोग (जंग करने से) रुक जाओ तो हम लड़ाई को जारी नहीं रखगें । हम तो केवल इतना चाहते हैं कि ज़बरदस्ती धर्म परिवर्तन न करवाया जायें और दीन के मामलों में हस्तक्षेप न किया जाये ।

4. फ़र्माता है कि :-

وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنَّهٗ هُوَالسَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۚ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ۚ هُوَ الَّذِىْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝

(अल्-इन्फ़ाल 62-63)

अर्थात यदि क़ुफ़्फ़ार किसी समय भी समझौता के लिये झुकें, तो तू शीघ्र ही उनकी बात मान लेना और सुलह कर लेना और यह विचार मत करना कि

वह धोखा दे रहे हैं। बल्कि अल्लाह ताला पर भरोसा रखना ख़ुदा तआला दुआओं को सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है। अत: यदि तेरा यह विचार उचित हो कि वह धोखा करना चाहते हैं और वास्तव में वे धोखा देने की नीयत भी रखते हों तो भी याद रख कि उनके धोखा देने से क्या होता है । तुझे तो केवल अल्लाह की सहायता से ही सफलता प्राप्त हो रही हैं। उसकी सहायता तेरे लिये काफ़ी है । इस से पूर्व भी वह अपनी साक्षात पर सहायता करके और मोमिनों के द्वारा भी सहायता करके तेरा साथ देता रहा है ।

इस आयत में बताया गया है कि जब दुश्मन सुलह (मैत्री) करने के लिये तत्पर हो तो मुसलमानों को प्रत्येक अवस्था में उससे सुलह कर लेनी चाहिये । यदि वह सुलह के सिद्धांतों को दिखावे के तौर पर भी मानने के लिये तैयार हो तो केवल इस बहाना से कि हो सकता है कि दुश्मन की नीयत बुरी हो मैत्री को ठुकराना नहीं चाहिये कि मानों वह बाद में शक्तिशाली होकर दोबारा हमला करना चाहता है ।

इन आयतों में वास्तव में सुलह हुदैबिया की भविष्यवाणी की गई है और बताया गया है कि एक ऐसा समय आयेगा जब दुश्मन मैत्री करना चाहेगा । उस समय तुम इस कारण कि दुश्मन ने अत्याचार किया है अथवा यह कि वह बाद में समझौता तोड़ देगा, सुलह से इनकार न करना । क्योंकि नेकी और भलाई भी यही चाहती है और तुम्हारा लाभ भी इसी में है कि तुम मैत्री के प्रस्ताव को मान लो ।

يَاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِى سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝ (سورہ نساء ۹۵)

(सूर: अल्-निसा 95)

अर्थात् हे मोमिनो ! जब तुम ख़ुदा के प्रति लड़ाई के लिये बाहर निकलो तो इस बात की विस्तृत छानबीन कर लिया करो कि तुम्हारे दुश्मन पर हुज्जत (तर्क, दलील) पूरी हो चुकी है । और वह प्रत्येक अवस्था में

लड़ाई के लिए तत्पर और तैयार है। अतः यदि कोई व्यक्ति अथवा जमाअत (समुदाय) तुम्हें यह कहे कि मैं सुल्ह (समझौता) करता हूँ तो यह न कहो कि तू धोखा देता है और हमें आशा नहीं कि हम तुझ से अमन में रहेंगे। यदि तुम इस प्रकार करोगे तो फिर तुम ख़ुदा के रास्ता में लड़ने वाले नहीं होगे बल्कि तुम दुनिया के चाहने वाले ठहरोगे। अतः ऐसा मत करो। क्योंकि जिस प्रकार ख़ुदा के पास दीन है उसी प्रकार ख़ुदा के पास दुनिया का भी बहुत सामान है। तुम्हें याद रखना चाहिये कि किसी व्यक्ति को मार देना ही वास्तविक उद्देश्य नहीं। तुम्हें क्या पता है कि कल को वह हिदायत पा जाये। तुम भी तो पहले दीने इस्लाम से बाहर थे। फिर अल्लाह ने एहसान (उपकार) करके तुम्हें इस दीन को मानने की तौफ़ीक़ प्रदान की। अतः मारने में जल्दी न किया करो बल्कि वास्तविकता की जानकारी प्राप्त किया करो। याद रखो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे भली-भांति जानता है।

इस आयत में बताया गया है कि जब लड़ाई शुरू हो जाय, तब भी इस बात की अच्छी तरह खोज करनी चाहिये कि क्या दुश्मन का इरादा घमासान लड़ाई करने का है, क्योंकि सम्भव है कि दुश्मन जारहानः (अकारण) लड़ाई का इरादा न करता हो, बल्कि वह स्वयं किसी भय के कारण फ़ौजी तैयारी कर रहा हो। अतः पहले अच्छी तरह जांच पड़ताल कर लिया करो कि दुश्मन की नीयत जारहानः अथवा क्षति पहुँचाने वाली जंग की थी, तब उस समय उसके मुक़ाबला के लिये सामने आओ। अतः यदि वह यह कहे कि मेरा जंग करने का इरादा नहीं था, मैं तो केवल भय के कारण तैयारी कर रहा था, तो तुम्हें यह नहीं कहना चाहिये कि नहीं तुम्हारी जंग की तैयारी बताती है कि तुम हम पर हमला करना चाहते थे। हमें किस प्रकार विश्वास हो कि हम तुम से महफ़ूज़ और सुरक्षित हैं बल्कि उसकी बात को मान लो और समझो कि यदि पहले उस का इरादा भी था तो मुमकिन है कि बाद में उस में तबदीली पैदा हो गई हो। तुम स्वयं इस बात के मुँह बोलते गवाह हो कि दिलों में तबदीली पैदा हो जाती है। तुम पहले इस्लाम के दुश्मन थे परन्तु अब तुम इस्लाम के सिपाही हो।

(6) फिर दुश्मनों से वचन के सम्बन्ध में फ़र्माता है :-

اِلَّا الَّذِيْنَ عَاهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْئًا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ○

(सूर: अल् तौब: 4)

अर्थात् मुश्रिकों में से वह जिन्होंने तुम से कोई अहद (वचन) किया था। और फिर उन्होंने उस वचन को तोड़ा नहीं। और तुम्हारे ख़िलाफ़ तुम्हारे दुश्मनों की सहायता नहीं की। (अत:) वचन की सीमा तक तुम भी पाबंद हो कि समझौता को कायम रखो। यही तक़्वा (संयम) की निशानी है। अत: अल्लाह संयमियों एवं मुत्तक़ियों को पसंद करता है।

(7) ऐसे दुश्मनों के सम्बंध में जो जंग के लिए तत्पर हों लेकिन उनमें से कोई व्यक्ति इस्लाम की वास्तविकता जानना चाहता है। इस सम्बंध में फ़र्माता है कि :-

وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلَامَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ. (سورہ توبہ ٦)

(सूर: अल् तौब: 4)

अर्थात् यदि जंग करने के लिए तत्पर मुश्रिकों में से कोई व्यक्ति इस कारण पनाह मांगे कि वह तुम्हारे देश में आकर इस्लाम के सम्बंध में जांच पड़ताल करना चाहता है तो उसको अवश्य ही पनाह दो। उस समय तक कि वह अच्छी प्रकार इस्लाम की जांच पड़ताल कर ले और क़ुर्आन करीम के विषयों में जानकारी प्राप्त कर ले। फिर उस को अपनी सुरक्षा में उस स्थान तक पहुँचा दो जहां वह जाना चाहता है और जिसे वह अपने लिये सुरक्षित स्थान समझता है।

(8) जंगी क़ैदियों के संबन्ध में फ़र्माता है कि :-

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ (انفال:٦٨)

(सूर: अल् अन्फ़ाल आयत 68)

अर्थात यह बात किसी नबी की शान के ख़िलाफ़ कि वह अपने दुश्मन

को कैदी बना ले । यहां तक कि नियमित रूप से जंग में क़ैदी पकड़े जायें । अर्थात यह रिवाज और प्रथा जो इस ज़माना तक बल्कि इसके बाद भी सदियों तक दुनिया में चलती रही है कि दुश्मन के लोगों को जंग के बिना ही पकड़ कर क़ैद कर लेना उचित समझा जाता था । उसे इस्लाम पसन्द नहीं करता । जंगी क़ैदी केवल वे लोग कहला सकते हैं जो मैदाने जंग में सम्मिलित हों और लड़ाई के पश्चात् क़ैद किये जायें ।

(9) फिर उन क़ैदियों के सम्बन्ध में फ़र्माता है कि :-

فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَآءً.

(सूर: मुहम्मद आयत 5)

अर्थात जब जंगी कैदी पकड़े जायें तो या तो एहसान करके उन्हें छोड़ दो या उनका बदला लेकर उनको आज़ाद कर दो ।

(10) यदि कुछ कैदी ऐसे हों जिनका बदला देने वाला कोई न हो या उनके रिश्तेदार उनकी धन-सम्पत्ति पर काबिज़ होने के लिये यह चाहते हों कि वह क़ैदी ही रहें तो अच्छा है तो उनके सम्बन्ध में फ़र्माता है कि :-

وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْ هُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا
وَّ اٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتَاكُمْ ؕ (سورہ نور:۳۴)

(सूर: अल् नूर आयत 34)

अर्थात तुम्हारे जंगी क़ैदियों में से ऐसे लोग जिनको न तुम एहसान (उपकार) के रूप में छोड़ सकते हो और न उनकी क़ौम ने उनका फ़िदया (बदला) दे कर उन्हें आज़ाद करवाया है । यदि वह तुम से यह मांग करें कि हमें आज़ाद कर दिया जाये । हम अपने व्यवसाय और कला के द्वारा रुपया कमा कर अपने भाग का जुर्माना अदा कर देंगे । अत: यदि वे इस योग्य हैं कि आज़ाद हो कर कमाई कर सकें तो तुम उसे ज़रूर आज़ाद कर दो । अपितु उनके इस प्रयत्न में स्वयं भी भागीदार बनो । इसी प्रकार जो कुछ ख़ुदा ने तुम्हें दिया है उसमें से कुछ उनके आज़ाद करने में भी खर्च कर दो अर्थात् यह कि उनके भाग में जो जंग का खर्च बनता है, या उसमें से कुछ मालिक छोड़ दे या दूसरे मुसलमान मिल कर उस क़ैदी की सहायता करें और उसे आज़ाद

कराएँ।

यह वह परिस्थितियाँ हैं जिनमें इस्लाम जंग की आज्ञा देता है और यह वह नियम हैं जिनके अर्न्तगत इस्लाम जंग की आज्ञा देता था। अतः क़ुर्आन करीम की इन आयतों की रोशनी में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को इनके अतिरिक्त जो शिक्षा दी हैं, वह निम्नलिखित हैं।

1. मुसलमानों को किसी भी अवस्था में मुस्ला करने अर्थात नाक, कान काटने की आज्ञा नहीं, अर्थात मुसलमानों को जंग में क़त्ल होने वालों का अपमान करने या उनके अंग काटने की आज्ञा नहीं है।

(मुस्लिम मिस्री भाग 2, पृ. 62, किताबुल् जिहाद बाब तामीरुल् इमामिल् उम्राए अलल् बऊसे व वसिय्यतेही इय्याहुम् बिआदबे वग़ैरिहा)

2. मुसलमानों को कभी जंग में धोखा नहीं करना चाहिए। (मुस्लिम)

3. किसी बच्चे को नहीं मरना चाहिये और न किसी औरत को।

(मुस्लिम मिस्री, भाग 2, पृ. 65, किताबुल् जिहादे बाब तहरीमु क़त्लिन्निसाए वस्सिब्याने फ़िल् हर्बि)

4. पादरियों, पंडितों, तथा दूसरे धार्मिक नेताओं को क़त्ल नहीं करना चाहिये। (तहावी)

5. बूढ़े को नहीं मारना चाहिये, औरत को नहीं मारना चाहिये, और हमेशा सुल्ह तथा एहसान व उपकार को समक्ष रखना चाहिये।

(अबु दाऊद, भाग प्रथम, किताबुल् जिहादे बाबो फ़ी दुआइल् मुश्रिक़ीन, पृ. 352, प्रिंटिग प्रैस नामी, कानपुर)

6. जब लड़ाई के लिये मुसलमान जायें तो अपने दुश्मन के देश में डर और भय पैदा न करें और जनता पर सख्ती न करें।

(मुस्लिम मिस्री-भाग 2, पृ. 62, किताबुल जिहादे, बाबो फ़ी अम्रिल् जुयूशे बित्तैसीरे व तरकत् तन्फ़ीरे)

7. जब लड़ाई के लिये निकलें तो एसी जगह पड़ाव न डालें कि लोगों के लिये कठिनाई पैदा हो और कूच के समय इस ढंग से न चलें कि लोगों के लिये रास्ता चलना मुश्किल हो जाए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन बातों का बड़ी सख्ती से आदेश दिया है। आप ने फ़र्माया कि जो व्यक्ति इन आदेशों के खिलाफ़ उलंघन करेगा उस की लड़ाई उसके लिये होगी, ख़ुदा

के लिये न होगी ।

(अबु दाऊद, भाग प्रथम, किताबुल जिहादे बाबो मा योअ्मरो मिन् इन्ज़िमामिल् अस्करे, पृ. 383, प्रैस नामी, कानपुर)

8. लड़ाई में दुश्मन के मुँह पर घाव न लगाएँ । (बुख़ारी व मुस्लिम)

9. लड़ाई के समय कोशिश होनी चाहिए कि दुश्मन का कम से कम नुक़सान हो । (अबु दाऊद)

10. जो क़ैदी पकड़े जायें उन में से जो एक दूसरे के नज़दीको रिश्तेदार हों उन्हें अलग-अलग न किया जाए ।

(अबु दाऊद किताबुल् जिहादे बाबो फ़िन्तफ़रीक़े बैनस्सबिय्ये, प्रैस नामी, कानपुर)

11. क़ैदियों के आराम का अपने आराम से अधिक ध्यान रखा जाये ।

(तिर्मिज़ी अब्वाबुस्सैरि)

12. विदेशी राज दूतों का सम्मान किया जाये यदि वह ग़लती भी करें तो उनसे अनदेखी की जाए । (अबु दाऊद, किताबुल जिहादे)

13. यदि कोई व्यक्ति जंगी क़ैदी के साथ सख़्ती कर बैठे तो उस क़ैदी को कीमत लिये बिना ही आज़ाद कर दिया जाये ।

14. जिस व्यक्ति के पास कोई जंगी कैदी रखा जाये वह उसे वही खिलाए जो वह स्वयं खाए और उसे वही पहनाए जो स्वयं पहने (बुख़ारी) हज़रत अबु बकर(र) ने इन्हीं आदेशों के प्रति एक और आदेश दिया कि इमारतों को न गिराया जाए और फलदार पेड़ों को न काटा जाये ।

(मोता इमाम मालिक मुज्तबाई किताबुल् जिहाद-पृ. 167)

इन आदेशों से पता चलता है कि इस्लाम ने जंग को रोकने के लिये कैसी योजना बनाई है । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कितने प्यारे ढंग से इन आदेशों को वास्तविक्ता का रूप दिया । मुसलमानों को उन पर चलने का उपदेश दिया । प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि इस युग में न मूसा(अ) की शिक्षा न्यायपूर्ण शिक्षा कहला सकती है, न ही इस ज़माना में उस पर चला जा सकता है । और न ही मसीह(अ) की शिक्षा पर इस ज़माना में चला जा सकता है और न कभी भी इसाई दुनिया ने उस पर चलने का काम किया है । इस्लाम ही की शिक्षा है जिस पर चला जा सकता है और जिस पर

चल कर दुनिया में अमन की स्थापना हो सकती है ।

यद्यपि इस ज़माना में श्री गांधी ने दुनिया के सामने यह दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है कि जंग के समय भी जंग नहीं करनी चाहिये, परन्तु जिस शिक्षा को श्री गाँधी प्रस्तुत कर रहे हैं उस पर दुनिया कभी भी कार्यरत नहीं हुई है कि हम उस के अच्छे अथवा बुरे परिणामों का अनुमान लगा सकें । श्री गाँधी के जीवनकाल में ही कांग्रेस को सत्ता प्राप्त हो गई है और कांग्रेसी हकूमत ने फ़ौजों को नहीं हटाया बल्कि वह यह विचार कर रही है कि आई.एन.ए. के वह अफ़सर जो बर्तानवी गवर्नमैंट ने हटा दिये थे उनको फ़ौज में दोबारा सर्विस में रखा जाए । हिन्दुस्तान में कांग्रेसी सरकार के स्थापित होने के सात दिन के अन्दर ही वज़ीरिस्तान के क्षेत्र में निहत्ते लोगों पर हवाई जहाज़ों द्वारा बम गिराए गए हैं । स्वयं गाँधी जी हिंसा करने वालों का समर्थन और उनके छोड़ देने के हक़ में सदैव सरकार पर ज़ोर देते रहे हैं । जिस से प्रमाणित होता है कि न गाँधी जी न उनके अनुयायी इस शिक्षा पर चल सकते हैं, और न ही कोई ऐसी मानने योग्य अवस्था दुनिया के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं, जिससे यह पता चल सके कि क़ौमों और देशों की जंग में इस शिक्षा पर किस प्रकार सफल रूप से कार्य कर सकते हैं । अपितु केवल मुँह से इस शिक्षा का उपदेश देते हुए उसके विरुद्ध व्यवहार करना बताता है कि इस शिक्षा पर चलना असम्भव है । अत: इस समय तक दुनिया का जो अनुभव है और जहां तक बुद्धि, मानव का पथ प्रदर्शन करती है, उससे पता चलता है वह तरीक़ा ही सही और उचित था जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनाया ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

## जंगे ख़ंदक़ के पश्चात कुफ़्फ़ार की ओर से मुसलमानों पर हमले

(जंगे) अहज़ाब से वापस लौटने के बाद यद्यपि कुफ़्फ़ार की हिम्मतें टूट चुकी थीं, और उन के उत्साह भी कम हो चुके थे, लेकिन उनका यह एहसास

शेष था कि हम बहुसंख्यक हैं और मुसलमान थोड़े हैं । और वह यह समझते थे कि जहां जहां भी होगा हम मुसलमानों को इक्का दुक्का पकड़ कर मार सकेंगे और इस प्रकार अपने अपमानित होने का बदला ले सकेंगे । अतः अहज़ाब की पराजय के थोड़े समय पश्चात ही आस-पास के क़बीलों ने मुसलमानों पर छापे मारने आरम्भ कर दिये । अतः फ़ज़ारा जाति के कुछ सवारों ने मदीना के पास छापा मारा और मुसलमानों के ऊँठ जो वहां चर रहे थे उनके चरवाहे को क़त्ल किया । उसकी पत्नी को क़ैद कर लिया और ऊँठों को लेकर भाग गए । क़ैदी औरत तो किसी न किसी प्रकार भाग आई परन्तु ऊँठों का एक भाग लेकर भाग जाने में शत्रु सफल हो गया । उसके एक महीना के बाद उत्तर की ओर ग़तफ़ान क़बीला के लोगों ने मुसलमानों के ऊँठों के रेवड़ को लूटने की कोशिश की । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहम्मद बिन मुसल्लमा(र) को दस सवार देकर स्थिति ज्ञात करने और रेवड़ की सुरक्षा करने के लिये भिजवाया, परन्तु दुश्मन ने अवसर पाकर उन्हें क़त्ल कर दिया । मुहम्मद बिन मुसल्लमा को भी वह अपनी तरफ से मार कर फैंक गए थे । लेकिन वास्तव में वह बेहोश थे । दुश्मन के चले जाने के बाद उन्हें होश आया तो मदीना पहुँचकर इस स्थिति की सूचना दी और बताया कि मेरे सभी साथी मारे जा चुके हैं, केवल मैं बचा हूँ । कुछ दिनों के पश्चात् रसूले करीम सल्लल्लाहो अलहि वसल्लम का एक दूत जो रूमी सरकार की ओर भिजवाया गया था, उस पर जुर्हम क़बीला वालों ने हमला किया और लूट लिया । इसके एक महीना के बाद बनु फ़ज़ारा ने मुसलमानों के एक काफ़िला पर हमला किया और उसे लूट लिया । लगभग यह हमला किसी धार्मिक दुश्मनी के कारण नहीं था क्योंकि बनु फ़ज़ारा एक डाकुओं का कबीला था जो प्रत्येक क़ौम अथवा जाति के लोगों को लूटते और क़त्ल करते रहते थे । उस ज़माना में ख़ैबर के यहूदी भी जो कि जंगे अहज़ाब का कारण हुए थे अपनी पराजय का बदला लेने के लिये इधर-उधर के क़बीलों को भड़काते रहे तथा रूमी हकूमत के सीमावर्ती क्षेत्रों के अफ़सरों और क़बीलों को भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ जोश दिलाते रहे। अभिप्राय यह कि अरब के क़ुफ़्फ़ार को मदीना पर हमला करने का साहस नहीं रहा था । फ़िर भी वह यहूद के साथ मिलकर सारे अरब में मुसलमानों के लिये मुसीबतें और लूट मार के समान पैदा कर रहे

थे । परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अभी तक क़ुफ़्फ़ार के साथ आखरी लड़ाई लड़ने का फ़ैसला नहीं किया था। अत: आप(स) इस प्रतीक्षा में थे कि यदि सुलह के साथ यह गृह युद्ध समाप्त हो जाय तो अच्छा है ।

## पंदरह सौ सहाबा (साथियों) के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मक्का की ओर प्रस्थान

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी बीच एक स्वप्न देखा । जिसका वर्णन क़ुर्आन करीम में इन शब्दों में आता है।

لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ لَا تَخَافُوْنَ فَعَلِمَ مَالَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحاً قَرِيْباً. (سورہ فتح:۲۸)

(सूर: अल् फ़तह् आयत 28)

अर्थात तुम अवश्य ही अल्लाह तआला की इच्छा से मस्जिदे हराम (ख़ाना काबा) में अमन के साथ दाख़िल होगे । तुम में से कुछ लोगों के सर मुँड़े हुए होंगे और कुछ के बाल कटे हुए होंगे । (क्योंकि हज के समय सर के बाल मुंड़वाना और बाल कटवाना आवश्यक होता है) तुम किसी से नहीं डर रहे होंगे । अल्लाह तआला जानता है जो तुम नहीं जानते । इसी कारण उसने इस सपने के पूरा होने से पूर्व एक और फ़तह (विजय) निश्चित कर दी, जो ख़वाब में ज़ाहिर होने वाली फ़तह की, आगामी सूचना के रूप में होगी । इस रोअ्या (स्वप्न) में वास्तव में सुल्ह और अमन के साथ मक्का को फ़तह (विजय) करने की सूचना दी गई थी परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की ताबीर (स्वप्नफल) यह समझी कि मानों हमें अल्लाह तआला की तरफ से ख़ाना काबा का तवाफ़ (हज) करने का आदेश दिया गया है । चूँकि इस ग़लत फ़हमी से एक प्रकार की नींव पड़ने वाली थी । अल्लाह तआला ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस ग़लती से सूचित नहीं किया । अत: आपने अपने सहाबा में इस बात की घोषणा कर दी और उन्हें भी अपने साथ चलने के लिये आग्रह किया, परन्तु फ़र्माया कि हम केवल तवाफ़ की नीयत से जा रहे हैं । अत:

किसी प्रकार का प्रदर्शन या कोई ऐसी बात न की जाय जो दुश्मन की नाराज़गी का कारण बने । इसके बाद आप(स) अपने पंदरह सौ साथियों के साथ फरवरी 628 ई. के अन्त में मक्का की ओर चल पड़े । (एक वर्ष पश्चात् कुल 1500 व्यक्तियों का आप के साथ जाना प्रमाणित करता है कि इससे एक साल पहले जंगे अहज़ाब के समय सिपाहियों की गिनती इससे कम ही होगी क्योंकि एक साल में मुसलमान बढ़े ही थे घटे नहीं थे । अतः जंगे अहज़ाब के समय जिन इतिहासकारों ने सिपाहियों की संख्या तीन हज़ार लिखी है अवश्य ही उन्होंने ग़लती खाई है । उचित यही है कि उस समय सिपाहियों की संख्या बारह सौ ही थी ।) हज के क़ाफ़िला (यात्रीगण) के आगे बीस सवार कुछ दूरी पर इस लिये चलते थे ताकि यदि दुश्मन मुसलमानों को कुछ हानि पहुँचाना चाहता है तो. समय से पूर्व ही उनको सूचना मिल जाय । मक्का वालों को जब आपके इस इरादा की सूचना मिली यद्यपि उनका भी यही धर्म था कि काबा का तवाफ़ करने हेत किसी के लिये रोक नहीं डालनी चाहिये परन्तु फिर भी जबकि मुसलमान इस बात की घोषणा कर चुके थे कि वे केवल काबा का तवाफ़ (हज) करने के लिये जा रहे हैं किसी प्रकार के विरोध अथवा झगड़े के लिये नहीं जा रहे । मक्का वालों ने मक्का को एक किला के रूप में बदल दिया और आस पास के क़बीलों को अपनी सहायता के लिये बुलवा लिया । जब आप मक्का के निकट पहुँचे तो आप(स) को यह सूचना मिली के कुरैश ने चीतों की खालें पहन ली हैं और अपनी पत्नियों और बच्चों को साथ ले लिया है, और यह क़समें (प्रण) खायी हैं कि वह आप को गुज़रने नहीं देंगे । अरब में यह रिवाज था कि जब कोई जाति अथवा क़ौम मरने का फ़ैसला कर लेती तो उसके सरदार चीते की खालें पहन लेते थे । जिसका यह अर्थ होता था कि अब बुद्धि का काम नहीं रहा, अब हम बहादुरी, वीरता और साहस के साथ अपनी जान दे देंगे । इस सूचना के मिलने के थोड़ी देर बाद ही मक्का की फ़ौज की अग्रिम (आगे चलने वाली) टुकड़ी मुसलमानों के सामने आकर खड़ी हो गई । अब यहां से केवल इसी दशा में आगे बढ़ा जा सकता था कि पहले दुश्मन को तलवार के ज़ोर से परास्त किया जाता ।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चूँकि फैसला करके आये थे यद्यपि हम किसी भी हालत में लड़ेंगे नहीं । अतः आप(स) ने एक होशियार पथ

प्रदर्शक को जो जंगल के रास्तों को भलिभांति जानता था इस बात पर नियुक्त किया कि वह मुसलमान तीर्थ यात्रियों को जंगल के अन्दर से मक्का तक पहुँचा दे । यह मार्गदर्शक आप(स) को और आप के साथियों को लेकर हुदैबिया नामक स्थान पर जो मक्का के निकट था, जा पहुँचा । यहां आप(स) की ऊँठनी खड़ी हो गई, और उसने आगे चलने से मना कर दिया । सहाबा(र) ने कहा हे अल्लाह के रसूल आप की ऊँटनी थक गई है आप इस की जगह दूसरी ऊँटनी पर बैठ जायें परन्तु आप(स) ने फ़र्माया नहीं नहीं यह थकी नहीं है अपितु ख़ुदा तआला की यही इच्छा लगती है कि हम यहां ठहर जायें । और मैं यहीं ठहर कर मक्का वालों से हर प्रकार से निवेदन करूँगा कि वह हमें हज करने की आज्ञा दे दें । चाहे वह कोई भी शर्त रखें मैं उसे स्वीकार कर लूँगा । उस समय तक मक्का की फ़ौज मक्का से काफ़ी दूरी पर खड़ी थी और मुसलमानों की प्रतीक्षा कर रही थी । यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चाहते तो मुक़ाबला के बिना ही मक्का में दाख़िल हो सकते थे परन्तु चूँकि आप(स) फैसला कर चुके थे कि पहले आप यही कोशिश करेंगे कि मक्का वालों की इजाज़त के साथ तवाफ़ करें। और उसी अवस्था में मुकाबला करेंगे कि मक्का वाले स्वयं लड़ाई शुरू करके लड़ने पर मजबूर करें । अतः इसी कारणवश मक्का की सड़क खुली होने पर भी आप(स) ने हुदैबिया में डेरा डाल दिया । थोड़ी ही देर में यह खबर कि आप(स) हुदैबिया नामी स्थान पर डेरा डाले हुए हैं मक्का की फौज को भी पहुँच गई । उसने जल्दी से पीछे हट कर तथा मक्का के निकट पहुँच कर युद्ध के लिये पंक्तियाँ बना लीं । सबसे पहले बदील नामक सरदार को आप से बात करने के लिये भेजा गया। जब वह आप(स) की सेवा में उपस्थित हुआ तो आप(स) ने फ़र्माया कि मैं तो केवल तवाफ़ करने के लिये आया हूँ। हाँ यदि मक्का वाले हमें मजबूर करेंगे तो हमें लड़ना पड़ेगा । उस के पश्चात् मक्का की फ़ौज के कमांडर अबु सुफ़्यान का दामाद उरवाह आप(स) की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने आकर बड़े ही कटु शब्दों में निर्लज्जता पूर्वक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि यह दुराचारियों का दल आप(स) अपने साथ लाए हैं। मक्का वाले कभी भी उन्हें अपने शहर में दाखिल नहीं होने देंगे । इसी प्रकार एक के बाद एक संदेशवाहक आते रहे । अन्ततः मक्का वालों ने कहला भेजा कि चाहे कुछ भी हो जाय इस वर्ष हम आप(स) को तवाफ़ नहीं करने देंगे ।

क्योंकि इसमें हमारी बेइज़्ज़ती एवं अपमान है । हां यदि आप अगले वर्ष आयें तो हम आपको आज्ञा दे देंगे। मक्का के आस पास के लोगों ने बार-बार उनसे कहा कि यह लोग केवल तवाफ़ करने के लिये आए हैं आप इनको क्यों रोकते हैं । परन्तु मक्का के लोग अपनी हठ पर अड़े रहे । इस पर मक्का के बाहर से आये हुए क़बीले के लोगों ने कहा कि आप लोगों के इस प्रकार के व्यवहार से पता चलता है कि आप शरारत चाहते हैं समझौता नहीं करना चाहते । अतः हम लोग आपका साथ देने के लिये तैयार नहीं । इस पर मक्का के लोग डर गए और वह इस बात के लिये तैयार हो गए कि वह समझौता के लिये प्रयत्न करेंगे । जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस सम्बन्ध में सूचना मिली तो आप(स) ने हज़रत उस्मान(र) को जो आप के पश्चात आप(स) के तीसरे ख़लीफ़ा एवं उत्तराधिकारी बने मक्का वालों से बात-चीत करने के लिये भेजा । जब हज़रत उसमान(र) मक्का पहुँचे तो चूँकि वहां आप के सगे सम्बन्धी और रिश्तेदार बहुत थे वे आप के पास इकट्ठा हो गए और उनसे कहा कि आप तवाफ़ कर लें परन्तु मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगले साल आकर तवाफ़ करें परन्तु उस्मान(र) ने कहा कि मैं अपने आक़ा (मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के बिना तवाफ़ नहीं कर सकता । चूँकि मक्का के सरदारों से आप की बातचीत बहुत लम्बी हो गई । अतः मक्का के कुछ लोगों ने शरारत से यह ख़बर फैला दी कि उस्मान(र) को क़त्ल कर दिया गया है । इस प्रकार यह ख़बर फैलते फैलते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक भी पहुँच गई । इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा(र) को एकत्रित किया और फ़र्माया कि राजदूत की जान प्रत्येक क़ौम में सुरक्षित होती है । तुमने सुना है कि मक्का वालों ने उस्मान(र) को मार दिया है । यदि यह सूचना ठीक निकली तो हम बल पूर्वक मक्का में प्रवेश करेंगे (अर्थात हमारा पहला इरादा कि हम समझौता करके मक्का में दाखिल होंगे जिन परिस्थितियों के अन्तर्गत था चूँकि वह बदल जायेंगी। अतः हम उस इरादा के पाबन्द नहीं रहेंगे) जो लोग यह प्रतिज्ञा करने के लिये तैयार हों कि यदि हमें आगे बढ़ना पड़ा तो या हम विजय प्राप्त करके लौटेंगे या एक एक करके मैदान में मारे जायेंगे वह इस वचनबद्धता पर मेरी बैत करें । आप का यह घोषणा करना था कि पंदरह सौ तीर्थ यात्री जो आप के साथ आए थे । यकायक पंदरह सौ सिपाहियों

के रूप में बदल गया और दीवानों के समान एक दूसरे के ऊपर से फांदते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर दूसरों से पहले बैत करने की कोशिश करने लगा । यह बैत (दीक्षा) पूरे इस्लामी इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है । और वृक्ष की वचनबद्धता एवं अहद नामा कहलाती है । क्योंकि जिस समय यह बैत (दीक्षा) ली गई, उस समय रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए थे । इस बैत में शामिल होने वाला वह अन्तिम व्यक्ति भी जब तक दुनिया में जीवित रहा वह बड़े गर्व से इस बैत का वर्णन किया करता था । क्योंकि पंदरह सौ में से एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं था जो इस वचन लेने से पीछे हट गया हो कि यदि दुश्मन ने इस्लामी दूत को मार दिया है तो आज दो हालतों में से एक अवश्य पैदा करके छोड़ेंगे या वह सांय काल से पूर्व मक्का को विजय करके छोड़ेंगे या सांय काल से पहले पहले जंग के मैदान में मारे जायेंगे परन्तु मुसलमान अभी बैत करके हटे ही थे कि हज़रत उस्मान(र) वापस आ गए। और उन्होंने बताया कि मक्का वाले इस वर्ष तो उमरा की आज्ञा नहीं दे सकते परन्तु अगले वर्ष आज्ञा देने के लिये तैयार हैं । अतः इस सम्बन्ध में उन्होंने समझौता करने के लिये अपने प्रतिनिधि नियुक्त कर दिये हैं । हज़रत उस्मान(र) के आने के थोड़ी देर बाद ही मक्का का एक सरदार सुहैल नामक समझौता करने के लिये आप(स) की सेवा में उपस्थित हुआ और यह समझौता लिखा गया ।

## सुलह हुदैबिया की शर्तें

"...ख़ुदा के नाम पर सुलह एवं समझौता की यह शर्तें इब्ने अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और सुहैल इब्ने अमर (प्रतिनिधि सरकार मक्का) के बीच निश्चित (तय) हुई हैं । जंग दस साल के लिये बन्द की जाती है। जो व्यक्ति मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ मिलना चाहे या उनके साथ समझौता करना चाहे वह ऐसा कर सकता है । इसी प्रकार जो व्यक्ति क़ुरैश के साथ मिलना चाहे या समझौता करना चाहे वह भी ऐसा कर सकता है। यदि कोई लड़का जिसका पिता जीवित हो या अभी छोटी आयु का हो वह अपने पिता या मुतवल्ली (संरक्षक) की इच्छा के विरुद्ध मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के पास जाए तो उसको उसके पिता या

मुतवल्ली को वापस कर दिया जायेगा । परन्तु यदि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथियों में से कोई क़ुरैश की तरफ़ जाए तो उसे वापस नहीं किया जायेगा । मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) इस वर्ष मक्का में प्रवेश किये बिना वापस चलें जायेंगे । किन्तु अगले वर्ष मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और उनके साथी मक्का में आ सकते हैं । और तीन दिन ठहर कर काबा का तवाफ़ (अर्थात हज) कर सकते हैं । इस बीच क़ुरैश शहर से बाहर पहाड़ी पर चले जायेंगे । परन्तु यह शर्त होगी कि जब मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और उनके साथी मक्का में प्रवेश करें तो उनके पास कोई हथियार न हो सिवाए वह जो प्रत्येक यात्री अपने पास रखता है, अर्थात म्यान में डाली हुई तलवार।''

(इब्ने हश्शाम, भाग 2, पृ. 180, बुखारी किताबुश्शरुत)

इस समझौता के समय दो बड़ी अद्भुत बातें हुईं । जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शर्तें निर्धारित करने के बाद समझौता लिखवाना आरम्भ किया तो आपने फ़र्माया ''ख़ुदा के नाम से जो अनन्त कृपा करने वाला और बार बार दया करने वाला है ।'' सुहैल ने इस पर आपत्ति व्यक्त की और कहा कि ख़ुदा को तो हम जानते हैं परन्तु यह ''अनन्त कृपा करने वाला और बार बार दया करने वाला'' कौन है हम नहीं जानते । यह समझौता हमारे आप के बीच है और इसमें दोनों के धर्मों का सम्मान आवश्यक है । इस पर आपने उस की बात मान ली और केवल इतना लिखवाया कि ''ख़ुदा के नाम पर हम यह समझौता करते हैं ।'' फिर आपने यह लिखवाया कि यह समझौता की शर्तें मक्का वालों और मुहम्मद रसूलुल्लाह के बीच हैं । इस पर सुहैल ने फिर आपत्ति की और कहा कि यदि हम आप को ख़ुदा का रसूल (अवतार) मानते तो आप से लड़ते क्यों ? आप(स) ने उसकी इस आपत्ति को भी स्वीकार कर लिया और मुहम्मद रसूलुल्लाह के स्थान पर ''मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह'' लिखवाया । चूँकि आप मक्का वालों की हर बात मानते चले जाते थे । सहाबा(र) के मन में बहुत दुःख और अफसोस उत्पन्न हुआ और क्रोध से उनका ख़ून खौलने लगा । यहां तक कि हज़रत उमर(र) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास उपस्थित हुए और उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! क्या हम सच्चे नहीं ? आप ने फ़र्माया

हां ! फिर उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! क्या ख़ुदा ने आप को यह नहीं बताया था कि हम ख़ाना काबा का तवाफ़ करेंगे ? आप ने फ़र्माया हां ! इस पर हज़रत उमर(र) ने कहा कि फिर आप ने यह समझौता आज क्यों किया है ? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया उमर ख़ुदा तआला ने मुझे यह तो फ़र्माया था कि हम बैतुल्लाह का तवाफ़ अमन से करेंगे परन्तु यह तो नहीं फ़र्माया था कि हम इसी वर्ष करेंगे । यह तो मेरा अपना इज्तिहाद (जहां, कोई आदेश साफ न हो वहाँ अपनी राय से उचित रास्ता निकालना) था । इसी प्रकार कुछ दूसरे सहाबा(र) ने यह एतिराज़ (आपत्ति) किया कि यह क्यों स्वीकार कर लिया गया है कि यदि मक्का के लोगों में से कोई नौजवान मुसलमान हुआ तो उसके पिता या वली (वारिस) संरक्षक को वापस लौटा दिया जायेगा । परन्तु जो मुसलमान मक्का वालों की तरफ़ जायेगा उसे मक्का वाले वापस करने पर मजबूर नहीं होंगे । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया इस में कौन सी आपत्ति की बात है । प्रत्येक व्यक्ति जो मुसलमान होता है । वह इस्लाम को सच्चा समझ कर मुसलमान होता है वह रीति और रिवाज के रूप में मुसलमान नहीं होता, ऐसा व्यक्ति जहां भी रहेगा । इस्लाम का प्रचार करेगा और इस्लाम के प्रसार का कारण बनेगा । परन्तु जो व्यक्ति इस्लाम से मुर्तद (फिर जाता) हो जाता है । हमने उसे अपने अन्दर रखकर क्या करना है । जो व्यक्ति हमारे मज़हब (धर्म) को झूठा समझता है । वह हमारे लिये कैसे लाभदायक सिद्ध हो सकता है । आप(स) का यह जवाब उन मुसलमानों के लिये भी उत्तर है जो ग़लती से यह कहते हैं कि मुर्तद की सज़ा क़त्ल है । यदि इस्लाम धर्म में मुर्तद की सज़ा क़त्ल होती तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अवश्य ही इस संबन्ध अपने विचार पूरी दृढ़ता से रखते कि प्रत्येक मुर्तद को वापस किया जाये ताकि उसको उसके जुर्म की सज़ा दी जा सके । जिस समय यह समझौता लिख कर समाप्त हुआ और उस पर हस्ताक्षर कर दिये गए । अल्लाह तआला ने उसी समय समझौते की पड़ताल का सामान पैदा कर दिया । सुहैल जो मक्का वालों की ओर से समझौता कर रहा था । उसका अपना बेटा रस्सियों से जकड़ा हुआ और घावों से चूर रसूलुल्लाह सल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने आकर गिरा । और कहा हे अल्लाह के रसूल ! मैं दिल से मुसलमान हूँ और इस्लाम

के कारण मेरा बाप मुझे यातनाएँ दे रहा है । मेरा बाप यहां आया तो में अवसर पाकर आपके पास पहुँचा हूँ । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अभी जवाब नहीं दिया था कि उसके बाप ने कहा कि समझौता हो चुका है और इस नौजवान को मेरे साथ वापस जाना होगा । अबु जन्दल की हालत उस समय मुसलमानों के सामने थी । वह अपने भाई को जो अपने पिता के हाथों इतने कष्ट उठा रहा था, वापस जाता नहीं देख सकते थे । उन्होंने तलवारें म्यान से निकाल लीं और इस बात का फैसला कर लिया कि मर जायेंगे परन्तु अपने भाई को उस कष्टदायक क्षेत्र में वापस नहीं ज़ाने देंगे । स्वयं अबु जंदल ने भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रार्थना की कि हे अल्लाह के रसूल ! आप मेरी हालत को देखते हैं । क्या आप इस बात को सहन कर सकेंगे कि फिर मुझे इन अत्याचारियों के हाथों सौंप दें ताकि वह पहले से भी अधिक मुझ पर अत्याचार करें । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया ख़ुदा के रसूल समझौता नहीं तोड़ा करते । अबु जन्दल ! हम समझौता कर चुके हैं । तुम अब सब्र (धैर्य) से काम लो । और ख़ुदा पर तवक्कुल (भरोसा) करो । वह तुम्हारे लिये और तुम्हारे जैसे और नौजवानों के लिये स्वयं ही बचने का कोई रास्ता निकाल देगा । इस समझौता के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना वापस तशरीफ़ ले गये । जब आप मदीना पहुँचे तो मक्का का एक और नौजवान अबु बशीर आप के पीछे पीछे दौड़ता हुआ मदीना पहुँच गया परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे समझौता के अनुसार वापस जाने पर मजबूर किया । परन्तु रास्ते में उसकी अपने पकड़ने वालों से लड़ाई हो गई और वह अपने पकड़ने वालों में से एक को क़त्ल करके भाग गया । मक्का वालों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर शिकायत की तो आप ने फ़र्माया हमने तुम्हारा आदमी तुम्हारे हवाले कर दिया था । हम इस बात के ज़िम्मेदार नहीं कि वह जहां कहीं भी हो हम उसे पकड़ कर दोबारा तुम्हारे हवाले करें । उस के थोड़े दिनों के बाद एक औरत भाग कर मदीना पहुँची । उसके रिश्तेदारों ने मदीना पहुँच कर उसे वापस भिजवाने का मुतालबा किया परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया समझौता में पुरुषों की शर्त है औरतों की शर्त नहीं है । अतः हम औरत को वापस नहीं करेंगे ।

## बादशाहों के नाम पत्र

मदीना आने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह इरादा किया कि आप अपनी तबलीग़ (प्रचार) को दुनिया के किनारों तक पहुँचाएँ । जब आप(स) ने अपने इस संकल्प का सहाबा(र) से वर्णन किया तो कुछ सहाबा(र) ने जो बादशाही दरबारों के जानकार थे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रार्थना की कि हे अल्लाह के रसूल ! बादशाह मोहर (सटैंप) के बिना पत्र नहीं लेते । इस पर आप ने एक मोहर बनवाई, जिस पर ''मुहम्मद रसूलुल्लाह'' के शब्द खुदवाए, और शिष्टाचार के रूप में आप ने सबसे ऊपर 'अल्लाह' शब्द लिखवा दिया नीचे 'रसूल' का, तथा उसके नीचे 'मुहम्मद' का ।

मुहर्रम (महीना) 628 ई. में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पत्र लेकर कई सहाबा(र) विभिन्न देशों की ओर गए। उन में से एक पत्र क़ैसर रोम (रूम के बादशाह) के नाम था और एक पत्र ईरान के बादशाह के नाम था । एक पत्र मिस्र के बादशाह की ओर था, जो क़ैसर के अधीन था, एक नजाशी की ओर जो हब्शा का बादशाह था । इसी प्रकार कुछ और बादशाहों के नाम भी पत्र भिजवाए ।

## रोम के सम्राट हरक़ल के नाम पत्र

क़ैसर (सम्राट) रोम का पत्र दिह्यः कल्बी(र) सहाबी के हाथ भेजा गया था । और आप(स) ने उसे आदेश दिया कि वह पहले बसरा के गवर्नर के पास जाये । जो अरब वशंज था । उसके द्वारा क़ैसर को पत्र पहुँचाए । जब दिह्यः कल्बी(र) गवर्नर बसरा के पास पत्र लेकर पहुँचे तो संयोग वश । उन्हीं दिनों क़ैसर शाम (सीरिया) के दौरे पर आया हुआ था । अतः गवर्नर बसरा ने दिह्यः को उसके पास भिजवा दिया । जब दिह्यः गवर्नर बसरा के द्वारा क़ैसर के पास पहुँचे तो दरबार के अफ़सरों ने उनसे कहा कि क़ैसर की सेवा में हाज़िर होने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये अनिवार्य है कि वह क़ैसर को सिज्दा करे । दिह्यः ने मना कर दिया और कहा कि हम मुसलमान किसी मानव को सिज्दा नहीं करते। अतः सिज्दा करने के बिना

ही आप उसके सामने गए और पत्र प्रस्तुत किया । बादशाह ने अनुवादक से पत्र पढ़वाया और फिर आदेश दिया कि अरब से कोई क़ाफ़िला (यात्रियों की टोली) आया हुआ हो तो उन लोगों को प्रस्तुत किया जाए, ताकि मैं उस व्यक्ति के हालात के सम्बन्ध में उनसे पूछ ताछ कर सकूँ । संयोग वश अबु सुफ़्यान एक व्यापारी क़ाफ़िला के साथ वहां आया हुआ था । दरबार के अफ़सर अबु सुफ़्यान को बादशाह की सेवा में ले गए । बादशाह ने आदेश दिया कि अबु-सुफ़्यान को सबसे आगे खड़ा किया जाय तथा उसके साथियों को उसके पीछे खड़ा किया जाए । और कहा कि यदि अबु सुफ़्यान किसी बात में झूठ बोले तो उसके साथी उसी समय उसका खंडन करें फिर उसने अबु-सुफ़्यान से प्रश्न किया कि :-

प्रश्न – यह व्यक्ति जो नबुव्वत (अवतार होने का) का दावा करता है और जिस का पत्र मेरे पास आया है क्या तुम जानते हो उसका ख़ानदान कैसा है ?

उत्तर – अबु-सुफ़्यान ने कहा वह अच्छे ख़ानदान का है और मेरे रिश्तेदारों में से है ।

प्रश्न – फिर उसने पूछा, क्या ऐसा दावा अरब में पहले भी किसी ने किया है ?

उत्तर – इस पर अबु-सुफ़्यान ने जवाब दिया, नहीं ।

प्रश्न – फिर उसने पूछा क्या तुम दावा से पूर्व उस पर झूठ का आरोप लगाया करते थे ?

उत्तर – अबु-सुफ़्यान ने कहा, नहीं ।

प्रश्न – फिर उसने पूछा क्या उसके बाप-दादों में से कोई बादशाह भी हुआ है ?

उत्तर – अबु-सुफ़्यान ने कहा, नहीं ।

प्रश्न – फिर उस ने पूछा उसकी बुद्धि और उसकी राय कैसी होती है ?

उत्तर – अबु-सुफ़्यान ने जवाब दिया हमने उसकी बुद्धि और राय में कभी कोई खोट नहीं देखा ।

प्रश्न – फिर क़ैसर ने पूछा क्या बड़े-बड़े अत्याचारी और शक्तिशाली व्यक्ति उसकी जमाअत (समुदाय) में दाख़िल होते हैं या ग़रीब और मिस्कीन,

लाचार लोग ?

उत्तर – अबु-सुफ़यान ने उत्तर दिया ग़रीब और मिस्कीन तथा नौजवान लोग ।

प्रश्न – फिर उसने पूछा वे घटते हैं या बढ़ते हैं ?

उत्तर – अबु-सुफ़यान ने जवाब दिया बढ़ते चले जाते हैं ।

प्रश्न – फिर क़ैसर ने पूछा क्या उन में से कुछ लोग ऐसे हैं जो उसके दीन (धर्म) को बुरा समझ कर मुर्तद (फिर जाना) हुए हैं ?

उत्तर – अबु-सुफ़यान ने कहा, नहीं ।

प्रश्न – फिर उसने पूछा क्या उसने कभी अपने अहद (प्रण) को भी तोड़ा है ?

उत्तर – अबु-सुफ़यान ने उत्तर दिया आज तक तो नहीं, परन्तु अब हमने एक नया समझौता किया है देखें अब वह उसके संबन्ध में क्या करता है ?

प्रश्न – फिर उसने पूछा क्या तुम्हारे और उसके बीच कभी जंग भी हुई है ?

उत्तर – अबु-सुफ़यान ने जवाब दिया, हां ।

प्रश्न – इस पर बादशाह ने पूछा फिर उन लड़ाइयों का परिणाम क्या निकलता है ?

उत्तर – अबु-सुफ़यान ने जवाब दिया कि घाट के डोलों वाला हाल है । कभी हमारे हाथ में डोल होता है कभी उसके हाथ में डोल होता है ।

अत: एक बार बदर की लड़ाई हुई और मैं उसमें शामिल नहीं था । इस लिये वह विजयी रहा और दूसरी बार उहद में लड़ाई हुई उस समय मैं कमांडर था । हमने उनके पेट काटे और उनके कान काटे और उनके नाक काटे ।

प्रश्न – वह तुम्हें क्या आदेश देता है ?

उत्तर – अबु-सुफ़यान ने कहा वह हमें कहता है कि अल्लाह की पूजा (इबादत) करो और उसके साथ किसी को शरीक (उपास्य) न बनाओ और हमारे बाप-दादा जिन बुतों (मूर्तियों) की पूजा करते थे वह उनकी पूजा से रोकता है । इसी प्रकार हमें कहता है कि हम ख़ुदा की इबादत (पूजा) करें। और सच बोला करें तथा गन्दे और बुरे कामों से बचा करें । इसी

प्रकार हमें कहता है हम शालीनता से काम लें तथा अपने वादों को पूरा किया करें और अमानतों (धरोहरों) को अदा किया करें । (बुख़ारी मतबूअः मुज्तबाई भाग अव्वल पृ. 4, बाब क़ैफ़ कान बदउल् वह्यो)

## क़ैसर रोम का निष्कर्ष कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चे नबी हैं ।

इस पर क़ैसर (बादशाह रोम) ने कहा सुनो ! मैंने तुम से यह प्रश्न किया था कि उसका ख़ानदान कैसा है, तो तुमने कहा कि उसका ख़ानदान अच्छा है और नबी सदैव ऐसे ही हुआ करते हैं । फिर मैंने तुम से पूछा कि क्या उस से पहले किसी ने दावा किया है, तो तुम ने कहा नहीं । यह प्रश्न मैंने इस लिये किया था कि यदि किसी ने उस से पहले निकट समय में दावा किया होता तो मैं यह विचार करता कि यह भी उसकी नक़ल कर रहा है । इसी प्रकार मैंने तुम से पूछा कि क्या इस दावा से पहले उस पर कभी झूठ बोलने का दोष भी लगा है, परन्तु तुमने कहा कि नहीं । तो मैंने समझ लिया कि जो व्यक्ति मानव जाति के सम्बन्धों में भी झूठ नहीं बोलता, वह ख़ुदा तआला के सम्बन्ध में भी झूठ नहीं बोल सकता । फिर मैंने तुम से पूछा कि उसके बाप दादों में से कोई बादशाह भी था, तो तुमने कहा नहीं, तो मैंने समझ लिया उसके दावा का यह कारण भी नहीं है कि इस बहाना से अपने बाप दादा का देश एवं सत्ता वापस लेना चाहता है । फिर मैंने तुम से पूछा कि क्या अत्याचारी और ज़बरदस्त व्यक्ति उसकी जमाअत में दाख़ल होते हैं या कमज़ोर और असहाय लोग, तो तुमने जवाब दिया कि कमज़ोर और असहाय व्यक्ति, तो मैंने सोचा कि सभी नबियों की जमाअत में अधिकतर असहाय और ग़रीब ही दाख़िल होते हैं न कि अत्याचारी और अहंकारी लोग । फिर मैंने तुमसे पूछा कि क्या वह घटते हैं या बढ़ते हैं। तो तुमने उत्तर दिया कि वह बढ़ते हैं । अतः नबियों की जमाअत ऐसे ही हुआ करती है । जब तक वह कमाल (ऊँचाइयों एवं पराकष्ठा) को नहीं पहुँच जाते उस समय तक वह बढ़ते जाते हैं । फिर मैंने तुम से पूछा कि उसके दीन अथवा धर्म को नापसंद करके कोई व्यक्ति मुर्तद (मान कर

फिर जाना) भी होता है तो तुमने उत्तर दिया कि नहीं । ऐसा ही नबियों की जमाअत (संस्था) का हाल होता है । किसी अन्य कारण से कोई निकले तो निकले दीन को बुरा समझकर नहीं निकलता । फिर मैंने तुम से पूछा क्या तुम्हारे बीच कभी लड़ाई भी हुई है और उसका परिणाम क्या होता है ? तो तुमने कहा कि हमारी लड़ाई घाट के डोल की तरह है, और नबियों का यह हाल है कि आरम्भ में उनकी जमाअतों पर मुसीबतें आती हैं परन्तु अन्ततः जीत उन्हीं की होती है । फिर मैंने तुम से पूछा कि वह तुम्हें क्या उपदेश देता है, तो तुम ने उत्तर दिया कि वह नमाज़ का और सच्चाई का तथा पवित्रता का और प्रतिज्ञा का पालन करने तथा अमानतदारी एवं सत्यनिष्ठ अथवा धरोहरों के रक्षक बनने का उपदेश देता है । इसी प्रकार मैंने तुम से पूछा कि क्या वह धोखाधड़ी भी करता है ? तो तुमने कहा कि नहीं। यह तो सदैव नेक अथवा पवित्र लोगों का ही आचरण होता है । अतः मैं समझता हूँ कि वह अपने नबुव्वत के दावा में सच्चा है । मेरा अपना विचार था कि वह इस युग में वह नबी आने वाला है परन्तु मैं यह विचार नहीं रखता था कि वह अरबों में पैदा होने वाला है । अतः जो उत्तर तुमने मुझे दिये हैं यदि वह सच्चे हैं तो फिर मैं समझता हूँ कि वह इन देशों पर अवश्य ही विजयी हो जायेगा । (बुख़ारी)

उसकी इन बातों पर उसके दरबारियों में जोश पैदा हो गया और उन्होंने कहा कि आप मसीही (इसाई) होते हुए एक अन्य जाति के आदमी की सच्चाई की मान्यता की घोषणा कर रहे हैं इस पर दरबार में एहतिजाज (बगावत्) की आवाज़ें उठनें लगीं । इस पर दरबार के अफ़सरों ने जल्दी से अबु-सुफ़यान और उसके साथियों को दरबार से बाहर निकाल दिया ।

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़त् (पत्र) बनाम हरक़ल का विषय

वह पत्र जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने (बादशाह) क़ैसर के नाम लिखा उसका लेख इस प्रकार था :-

بسم الله الرحمن الرحيم. من محمد عبد الله ورسوله الى هرقل عظيم الروم. سلام على من اتبع الهدى اما بعد فانى ادعوك بدعاية الاسلام اسلم تسلم يوتك الله اجرك مرتين فان توليت فان عليك اثم اليريسين يا اهل الكتاب تعالوا الى كلمة سواء بيننا و بينكم الا نعبد الا الله ولا نشرك به شيئا ولا يتخد بعضنا بعضا اربابا من دون الله فان تولوا فقولوا اشهدوا بانا مسلمون.

(बुख़ारी बाब कैफ़ कान बदउल् वह्यो, व ज़र्क़ानी भाग 3, पृ. 336)

अर्थात् यह पत्र मुहम्मद, अल्लाह के बन्दे (दास) और उसके रसूल (अवतार) की ओर से रोम के बादशाह हरकल की ओर लिखा जाता है। जो व्यक्ति हिदायत का अनुसरण करें चले उस पर ख़ुदा की सलामतियां (शांति व सुरक्षा) उतरें। इसके पश्चात हे बादशाह ! मैं तुझे इस्लाम की दावत देता हूँ। (अर्थात् एकेश्वरवाद और उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की) हे बादशाह तू मुसलमान हो जा, तो ख़ुदा तुझे सभी फ़ितनों (आपत्तियों) से बचा लेगा और तुझे दोहरा बदला देगा (अर्थात् ईसा पर ईमान लाने का भी तथा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का भी) परन्तु यदि तूने इस बात के मानने से इन्कार कर दिया तो केवल तेरी जान का पाप ही तुझ पर नहीं होगा अपितु तेरी प्रजा के ईमान न लाने का पाप भी तुझ पर होगा। अन्त में क़ुर्आन शरीफ़ की आयत लिखी। जिसके अर्थ यह हैं कि हे किताब वालो ! आओ इस बात पर इकत्रित हो जायें जो तुम्हारे और हमारे बीच समान है अर्थात हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत न करें (उसका शरीक न बनाएँ) और अल्लाह के अतिरिक्त किसी बन्दे को भी हम इतनी इज़्ज़त न दें कि वह ख़ुदाई सिफ़ात (गुणों) से मुत्तसिफ़ (गुणवान-गुणी) किया जाने लगे। यदि किताब वाले (इसाई) इस एक हो जाने वाली दावत को क़ुबूल (स्वीकार) न करें, तो हे मुहम्मद रसूलुल्लाह और उनके साथियो ! उनसे कह दो कि हम ख़ुदा तआला के फ़र्माबरदार और आज्ञाकारी हैं।

कुछ इतिहासिक पुस्तकों में वर्णन है कि जब यह पत्र बादशाह के सामने

प्रस्तुत हुआ तो कुछ दरबारियों ने कहा कि इस पत्र को फ़ाड़ कर फ़ेंक देना चाहिये, क्योंकि इस में बादशाह की अवहेलना की गई है । क्योंकि पत्र के उपर रोम का बादशाह नहीं लिखा गया है बल्कि साहिबुर्रूम अर्थात रूम का वाली (शासक) लिखा है, परन्तु बादशाह ने कहा कि यह बुद्धिमता नहीं कि पत्र पढ़ने से पूर्व ही फाड़ दिया जाय । अतः उसने मुझे जो रोम का वाली (शासक) लिखा है, उचित है । अन्ततः मालिक या स्वामी तो ख़ुदा ही है मैं वाली (शासक) ही हूँ । जब रसूलुल्लाह सल्लल्ललहो अलैहि वसल्लम को इस घटना की सूचना मिली तो आप ने फ़रमाया, रोम के बादशाह ने जो ढंग अपनाया है उसके कारण उसकी हुकूमत बचा ली जायेगी और उसकी संतान देर तक शासन करती रहेगी । अतः ऐसा ही हुआ । यद्यपि आपकी एक दूसरी पेशगोई (भविष्यवाणी) के अनुसार बाद की जंगों में रोम के बादशाह के हाथों से देश का बहुत सा भाग छीना गया परन्तु इस घटना के छः सौ साल बाद तक इस ख़ानदान का शासन कुस्तुनतुनिया में स्थापित रहा । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पत्र रोम की हुकूमत में बहुत देर तक सुरक्षित रहा । अतः बादशाह मनसूर क़लादून के कुछ सफ़ीर (प्रतिनिधि) एक बार रोम के बादशाह के पास गए तो बादशाह ने उनको दिखाने के लिये एक संदूकचा मंगवाया और कहा कि मेरे एक दादा के नाम तुम्हारे रसूल का एक पत्र आया था जो आज तक हमारे पास सुरक्षित है।

## फ़ारस (ईरान) के बादशाह के नाम पत्र

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ारस (ईरान) के बादशाह की ओर जो पत्र लिखा वह अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ः के द्वारा भिजवाया गया था। उसके शब्द इस प्रकार थे :-

بسم الله الرحمن الرحيم. من محمد رسول الله الى كسرى عظيم الفارس. سلام على من اتبع الهدى وامن بالله ورسوله. وشهدان لا اله الا الله وحده لاشريک له. وان محمدا عبده ورسوله. ادعوک بدعاية الله عزوجل فانى انارسول الله الى الناس كافة لانذر من كان حيا ويحق القول على الكافرين. اسلم تسلم فان ابيت فعليک اثم المجوس.

(ज़र्क़ानी जिल्द 3, पृ. 340, व तारीख़ुल् ख़मीस भाग 2, पृ. 38)

अर्थात अल्लाह का नाम लेकर जो अत्यन्त कृपालु और दयालु है । यह पत्र मुहम्मद रसूलुल्लाह ने किसरा फ़ारस (ईरान के बादशाह) की ओर लिखा है। जो व्यक्ति कामिल हिदायत (सम्पूर्ण आदेशों) की पैरवी (पालना) करे और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए और गवाही दे कि अल्लाह एक है और उसका कोई शरीक (साथी) नहीं और मुहम्मद(स) उसके बन्दे (दास) तथा उसके रसूल हैं । उस पर ख़ुदा की सलामती (कृपा) हो । हे बादशाह ! मैं तुझे ख़ुदा के आदेशानुसार इस्लाम की ओर बुलाता हूँ, क्योंकि मैं समस्त मानव जाति की ओर ख़ुदा का रसूल बना कर भेजा गया हूँ ताकि प्रत्येक जीवित व्यक्ति को मैं होशियार कर दूँ और काफ़िरों (ख़ुदा को न मानने वालों) पर दलील पूरी कर दूँ । तू इस्लाम क़ुबूल कर । ताकि तू प्रत्येक फ़ितन: (आजमाईश) से बचा रहे । यदि तू इस दावत से इनकार करेगा तो सभी मजूसियों का पाप भी तेरे ही सर पर होगा ।

अब्दुल्लाह बिन् हुज़ाफ़:(र) कहते हैं कि जब मैं किसरा के दरबार में पहुँचा तो मैंने अन्दर आने की इजाज़त मांगी जो दी गई । जब मैंने आगे बढ़कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पत्र किसरा के हाथों में दिया तो उसने अनुवादक को पढ़कर सुनाने का आदेश दिया । जब अनुवादक ने उस पत्र को पढ़कर सुनाया तो किसरा ने क्रोधित होकर पत्र को फाड़ दिया। जब अब्दुल्लाह बिन् हुज़ाफ़: ने यह सूचना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दी तो आप(स) ने फ़रमाया, किसरा ने जो कुछ हमारे पत्र के साथ किया, ख़ुदा तआला उसकी बादशाहत के साथ भी ऐसा ही करेगा । किसरा के ऐसा करने का कारण यह था कि अरब के यहूदियों ने उन यहूदियों के द्वारा जो रोम की हुकूमत से भागकर ईरान की हुकूमत में चले गए थे । और रूमी हुकूमत के ख़िलाफ़ षड्यन्त्रों में किसरा का साथ देने के कारण बहुत मुँह चढ़े हुए थे, किसरा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ बहुत भड़का रखा था । जो शिकायतें वह कर रहे थे । उस पत्र ने किसरा के विचार में उनकी पुष्टि कर दी । और उसने सोचा कि यह व्यक्ति मेरी हुकूमत पर नज़र रखता है। अत: उसने उस पत्र के बाद शीघ्र ही अपने यमन के गवर्नर को एक पत्र लिखा जिसमें ये लिखा था कि क़ुरैश में से एक व्यक्ति नबुव्वत (अवतार होने) का दावा कर रहा है और अपने दावों में बहुत बढ़ता चला जाता है तू शीघ्र ही

उसकी ओर दो आदमी भेज, जो उसको पकड़ कर मेरी सेवा में उपस्थित करें । इस पर बाज़ान ने जो उस समय किसरा की ओर से यमन का गर्वनर था, एक फ़ौजी अफसर और एक सिपाही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ भिजवाया और एक पत्र भी आप(स) को लिखा कि आप इस पत्र के मिलते ही शीघ्र इन लोगों के साथ किसरा के दरबार में उपस्थित हो जायें । वह अफ़सर पहले मक्का की तरफ़ गया । ताइफ़ के निकट पहुँच कर उसे पता चला कि आप मदीना में रहते हैं । अतः वह वहां से मदीना गया । मदीना पहुँचकर उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि किसरा ने यमन के गवर्नर बाज़ान को आदेश दिया है कि वह आप(स) को पकड़ कर उसकी सेवा में प्रस्तुत करें । यदि आप उसके आदेश का पालन नहीं करेंगे तो वह आप को भी कत्ल कर देगा और आप की क़ौम को भी मिटा देगा । और आपके देश को बरबाद कर देगा । इसलिये आप अवश्य ही हमारे साथ चलें । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी बात सुनकर फ़रमाया, अच्छा कल फिर तुम मुझसे मिलना । रात को आपने अल्लाह तआला से दुआ की, और ख़ुदा-ए-ज़ुल् जलाल (तेजस्वी, प्रतापी) ने आप को ख़बर दी कि किसरा की गुस्ताख़ी की सज़ा के रूप में हमने उसके बेटे को उस पर अधिपत्य कर दिया है । अतः वह इस वर्ष जमादिय्युल् ऊला की दसवीं तिथि सोमवार के दिन उसको क़त्ल कर देगा । और कुछ रिवायतों में है कि आप ने फ़रमाया कि आज की रात उसने उसे क़त्ल कर दिया है । हो सकता है कि वह रात ही जमादिय्युल् ऊला की रात् हो । जब सुबह हुई, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन दोनों को बुलाया और उनको इस पेशगोई (भविष्यवाणी) की ख़बर दी । फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बाज़ान को पत्र लिखा कि मुझे ख़ुदा ने बताया है कि किसरा इस तिथि को इस महीने क़त्ल कर दिया जायेगा । जब यह पत्र यमन के गवर्नर के पास पहुँचा तो उसने कहा कि यदि यह सच्चा नबी है तो ऐसा ही हो जायेगा । अपितु उसकी और उसके देश की ख़ैर नहीं । कुछ ही दिनों के बाद ईरान का एक जहाज़ यमन के बन्दरगाह पर आकर ठहरा । और गवर्नर को ईरान के बादशाह का एक पत्र दिया । जिसकी मोहर देखते ही यमन के गवर्नर ने कहा, मदीना के नबी ने सच कहा था । ईरान की बादशाहत बदल गई । और इस पत्र पर दूसरे बादशाह की मोहर है ।

जब उसने पत्र खोला, तो उसमें यह लिखा हुआ था कि यमन के गवर्नर बाज़ान को ईरान के किसरा शेरदया की ओर से यह पत्र लिखा जाता है कि मैंने अपने बाप अर्थात पूर्व किसरा (ईरान का बादशाह) को क़त्ल कर दिया है। क्योंकि उसने देश में ख़ून बहाने का दरवाज़ा खोल दिया था और देश के नेक लोगों को क़त्ल करता था । और प्रजा पर अत्याचार करता था। जब मेरा यह पत्र तुम तक पहुँचे तो उसी समय सभी अफसरों से मेरी आज्ञा के पालन करने का वचन लो । और इससे पहले मेरे बाप ने जो अरब के एक नबी की गिरफ़्तारी का आदेश तुमको भिजवाया था उसको मन्सूख (रद्द) समझो ।

(तिब्री जिल्द 3, पृ. 1572-1574, व सीरतुन्नबी लि इब्ने हश्शाम)

यह पत्र पढ़कर बाज़ान इतना प्रभावित हुआ कि उसी समय वह और उसके कई साथी मुसलमान हो गए और उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने इस्लाम कुबूल करने की सूचना दे दी ।

## हब्शा (एबीसीनिया-अफ़्रीका) के बादशाह नज्जाशी के नाम पत्र

तीसरा पत्र आप(स) ने नज्जाशी के नाम लिखा जो अमर बिन् उमय्य: ज़मरी(र) के हाथ भिजवाया गया । उसका लेख इस प्रकार था :-

بسم الله الرحمن الرحيم. من محمد رسول الله الى النجاشى ملك الحبشة سلمٌ انت. اما بعد فانى احمد اليك الله الذى لا اله الا هو الملك القدوس السلام المؤمن المهيمن. واشهد ان عيسىٰ ابن مريم روح الله وكلمته القاها الىٰ مريم البتول وانى ادعوك الى الله وحده لا شريك له والموالاة على طاعته. وان تتبعنى وتومن بالذى جاء نى فانى رسول الله وانى ادعوك وجنودك الى الله عز وجل وقد بلغت ونصحت فاقبلوا نصيحتى والسلام علىٰ من التبع الهدى.

(ज़रकानी जिल्द 3, पृ. 342, व अल्-सीरतुल् हल्बिय: जिल्द 3, पृ. 273)

अर्थात् अल्लाह का नाम लेकर जो बड़ा ही कृपालु और दयालु है । मुहम्मद रसूलुल्लाह(स) नज्जाशी हब्शा के बादशाह की ओर यह पत्र लिखते हैं। हे बादशाह ! तुझ पर ख़ुदा की सलामती (शांति एवं कृपा) उतर रही है। (चूँकि इस बादशाह ने मुसलमानों को पनाह दी थी । इसलिए आपने उसे सूचित किया कि तेरा यह कार्य ख़ुदा के नज़दीक स्वीकृत हुआ और तू ख़ुदा की हिफ़ाज़त में है।) मैं उस ख़ुदा की हम्द (प्रशंसा) तेरे सामने बयान करता हूँ जिसके अतिरिक्त कोई पूजा योग्य नहीं है । जो वास्तव में बादशाह है । जिसमें हर प्रकार की पवित्रता पायी जाती है। जो प्रत्येक दोष से मुक्त है । अवगुणों से पाक करने वाला है । जो अपने बन्दों के लिये अमन-शांति का सामान पैदा करता है और अपनी मख़लूक़ (प्राणी वर्ग) की सुरक्षा करता है । मैं गवाही देता हूँ कि ईसा इब्ने मर्यम अल्लाह तआला के कलाम (वाणी) को दुनिया में फैलाने वाले थे तथा ख़ुदा तआला के उन वादों को पूरा करने वाले थे जो ख़ुदा ताला ने मर्यम(अ) से पहले से किये हुए थे जिसने अपना जीवन ख़ुदा तआला के लिये अर्पित कर दिया था । अतः मैं तुझे ख़ुदा-ए-वहदहू लाशरीक (एकेश्वर) से सम्बन्ध जोड़ने और उसकी आज्ञा का पालन करने पर, आपस में समझौता करने की दावत देता हूँ। और मैं तुझे इस बात की दावत देता कि तू मेरी पैरवी करे और उस ख़ुदा पर ईमान लाए जिसने मुझे प्रकट किया है क्योंकि मैं उसका रसूल (अवतार) हूँ । और मैं तुझे दावत देता हूँ और तेरी फ़ौजों को भी ख़ुदा-ए-अज़्ज़ व जल्ल (अर्थात् इज़्ज़त वाले और प्रतिष्ठा वाले ख़ुदा) के दीन में शामिल होने की दावत देता हूँ । मैंने अपनी ज़िम्मेदारी को अदा कर दिया है और ख़ुदा का संदेश तुझ तक पहुँचा दिया है। अतः इख़लास एवं निःस्वार्थता से तुम पर वास्तविक्ता खोल दी है । इसलिये मेरे इख़लास की क़द्र करो और प्रत्येक व्यक्ति जो ख़ुदा तआला की हिदायत एवं आदेशों की पैरवी करता है उस पर ख़ुदा तआला की ओर से सलामती (शांति) उतरती है।

जब यह पत्र नंज्जाशी को पहुँचा तो उसने बड़े आदर से इस षत्र को अपनी आँखों से लगाया । और तख़्त से नीचे उतरकर खड़ा हो गया । और कहा कि हाथीदांत का एक डिब्बा लाओ । अतः एक डिब्बा लाया गया, उसने वह पत्र आदर सहित उस डिब्बा में रख दिया और कहा जब तक यह पत्र सुरक्षित रहेगा,

हब्शा की हुकूमत सुरक्षित रहेगी । अतः नज्जाशी का यह विचार सही साबित हुआ । एक हज़ार साल तक इस्लाम सारी दुनिया में समुद्र की ठाठें मारती लहरों की तरह फैलता चला गया । परन्तु हब्शा के दायें से भी इस्लामी फ़ौजें निकल गयीं और हब्शा के बायें से भी इस्लामी फ़ौज निकल गईं । परन्तु उस एहसान के कारण जो हब्शा के बादशाह ने आरम्भिक इस्लामी मुहाजिरीन के साथ किया था और उस सम्मान के कारण जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पत्र से नज्जाशी ने किया था, उन्होंने हब्शा की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा । क़ैसर जैसे बादशाह की हुकूमत के टुकड़े-टुकड़े हो गए किसरा जैसे बादशाह की सरकार का नाम व निशान मिट गया । चीन और हिन्दुस्तान की बादशाहतों को उठा-पटक कर दिया गया । परन्तु हब्शा की एक छोटी सी हुकूमत सुरक्षित रखी गई । इसलिये कि उसने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आरम्भिक साथियों के साथ एक एहसान (दया) और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पत्र का आदर व सम्मान किया था । यह तो वह सुलूक था जो एक छोटे से एहसान के बदले में मुसलमानों ने हब्शा वालों से किया । जबकि इसाई क़ौमों ने जो कि एक गाल पर थप्पड़ खाकर दूसरा भी फेर देने का दावा करते हैं अपने ही धर्म-कर्म करने वाले हब्शा के बादशाह और उसकी क़ौम (जाति) के साथ जो व्यवहार उन दिनों किया, वह दुनिया के सामने है किस प्रकार हब्शा के शहरों को बमबारी करके उड़ा दिया गया और बादशाह तथा उसकी मोहतरम मलिका और उसके बच्चों को अपना देश छोड़ कर दूसरे देशों में वर्षों तक पनाह लेनी पड़ी । क्या हब्शा से यह दो प्रकार का व्यवहार एक, मुसलमानों का और एक इसाइयों का उस पवित्र शक्ति (कुव्वते कुद्दूसिय्या) को प्रमाणित नहीं करता जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में पाई जाती थी और जो आज तक भी जबकि मुसलमान दीन से बहुत कुछ दूर जा चुके हैं, उनके विचारों को नेकी और एहसान मन्दी की ओर झुकाए रखती है।

## मिस्र (इजिप्ट) के बादशाह मक़ोक़स के नाम पत्र

चौथा पत्र आपने मिस्र (इजिप्ट) के बादशाह मक़ोक़स की ओर लिखा । यह पत्र आपने हातिब् बिन् अबी बल्तअः[र] के द्वारा भिजवाया । इस पत्र का लेख इस प्रकार थाः-

بسم اللہ الرحمن الرحیم. من محمد رسول اللہ الی المقوقس عظیم القبط سلام علی من التبع الھدی اما بعد فانی ادعوک بدعایۃ الاسلام اسلم تسلم یوتک اللہ اجرک مرتین فانما تولیت فانما علیک اثم القبط ویااھل الکتاب تعالوا الی کلمۃ سواءٍ بیننا وبینکم الا نعبد الا اللہ ولا نشرک بہ شیاً ولا یتخذ بعضنا بعضا اربابا من دون اللہ فان تولوا فقولوا اشھدوا بانا مسلمون.

(ज़र्क़ानी जिल्द 3, पृ. 347, व सीरते हल्बिय: जिल्द 3, पृ. 275)

यह पत्र भी तथाकथित वैसा ही था जो रोम के बादशाह को लिखा गया था, अन्तर केवल यह है कि उसमें लिखा था कि यदि तुम न माने तो रोम की प्रजा के गुनाहों का बोझ भी तुम पर होगा, इसी प्रकार उसमें यह भी लिखा था कि क़ब्तियों (एक कबीले का नाम है) के पापों का बोझ भी तुम पर होगा । जब हातिब(र) मिस्र पहुँचे तो उस समय मक़ोक़स अपनी राजधानी में नहीं था, बल्कि स्कंदरिया में था । हातिब(र) स्कंदरिया गए । जहाँ बादशाह ने समुद्र के किनारे एक सभा आयोजित की थी । हातिब(र) एक नाव में सवार होकर उस स्थान तक पहँच गए । चूंकि उसके आस-पास कड़ा पहरा था । उन्होंने पत्र को बन्द करके दूर से ही आवाज़ें देनी शुरू कीं । बादशाह ने आदेश दिया कि इस व्यक्ति को उसके पास लाया जाये और उसकी सेवा में प्रस्तुत किया जाये । बादशाह ने पत्र पढ़ा और हातिब(र) से कहा यदि यह सच्चा नबी है तो अपने दुश्मनों के ख़िलाफ़ दुआ क्यों नहीं करता ? हातिब(र) ने कहा तुम ईसा इब्नेमर्यम पर ईमान लाते हो, यह क्या बात है कि ईसा को उनकी क़ौम ने दु:ख दिया, परन्तु ईसा(अ) ने यह दुआ न की कि वे हिलाक़ अथवा तबाह हो जायें । बादशाह ने यह सुनकर कहा कि तुम एक बुद्धिमान की ओर से एक बुद्धिमान दूत हो । और तुमने बड़ा उचित जवाब दिया है । इस पर हातिब(र) ने कहा, हे बादशाह तुझ से पहले एक बादशाह था, अर्थात फिरऔन जो कहा करता था कि मैं बड़ा रब्ब (पालनहार, परमेश्वर) हूँ ।

अन्ततः ख़ुदा ने उस पर अज़ाब (कष्ट) नाज़िल किया । अतः तू अहँकार न कर और ख़ुदा के इस नबी पर ईमान ले आ (अर्थात् उसे स्वीकार कर ले क्योंकि) ख़ुदा की क़स्म मूसा(अ) ने ईसा(अ) के सम्बन्ध में ऐसी सूचनाएँ नहीं दीं। जैसी ईसा(अ) ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्बन्ध में दी हैं। अतः हम तुम्हें उसी प्रकार मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर बुलाते हैं जिस प्रकार तुम यहूदियों को ईसा(अ) की ओर बुलाते हो । प्रत्येक नबी (अवतार) की एक उम्मत (संस्था) होती है और उसका कर्तव्य होता है कि उसकी आज्ञा का पालन करे । अतः अब जबकि तुमने उस नबी का युग पाया है तो तुम्हारा कर्तव्य बनता है कि उसको मानो और हमारा दीन तुमको मसीह(अ) के अनुसरण से रोकता नहीं, अपितु हम तो दूसरों को भी कहते हैं कि मसीह पर ईमान लाओ । इस पर मक़ोक़स ने कहा मैंने उस नबी के हालात सुने हैं और मैं यह महसूस करता हूँ कि वह किसी बुरी बात का आदेश नहीं देता और न किसी अच्छी बात से रोकता है । मैंने मालूम किया है कि वह व्यक्ति जादूगरों तथा काहनों (शकुन विचारने वाले) की तरह नहीं है। मैंने उस की कुछ पेशगोइयां (भविष्यवाणियों) सुनी हैं जो पूरी हुई हैं । फिर उसने हाथी दांत की एक डिबियाँ मंगवाई और उसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पत्र रख दिया । और उस पर मोहर लगा दी । और अपनी एक दासी के सुपुर्द कर दिया । और फिर उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम यह पत्र लिखा :-

मुहम्मद बिन् अब्दुल्लाह की ओर मक़ोक़स, क़ब्त का बादशाह पत्र लिखता है कि आप पर सलामती (कृपा) हो । इसके पश्चात् मैं यह कहता हूँ कि मैंने आप का पत्र पढ़ा है और जो कुछ आपने उसमें वर्णन किया है और जिन बातों की ओर बुलाया है उन पर विचार किया है। मुझे मालूम हुआ है कि इस्राइली भविष्यवाणियों के अनुसार एक नबी का आना अभी शेष है परन्तु मेरा विचार था कि वह शाम (सीरिया) से प्रकट होगा । मैंने आपके दूत को सम्मानपूर्वक ठहराया है और एक हज़ार पौंड और पांच जोड़े ख़िलअत् (वह वस्त्र जो राजा की ओर से सम्मानार्थ दिये जाते हैं ।) के रूप में उसे दिये हैं । और दो मिस्री लड़कियाँ उपहार के रूप में आपके लिये भिजवा रहा हूँ । क़ब्ती जाति के नज़दीक इन लड़कियों का बड़ा सम्मान है । उनमें से एक का नाम

मारिया तथा दूसरी का नाम सीरीन है । इसी तरह मिस्री कपड़ों के उच्च श्रेणी के बीस ज़ोड़े भी आपकी सेवा में भिजवा रहा हूँ । तथा इसी प्रकार एक ख़च्चर आपकी सवारी के लिये भिजवा रहा हूँ । और अन्त में दुआ करता हूँ कि ख़ुदा की आप पर सलामती (दया) हो।

(ज़रकानी जिल्द 2, पृ. 349, 350, तिब्री जिल्द 3, पृ. 1559)

इस पत्र से पता चलता है कि यद्यापि मक़ोकस ने आप के पत्र को सम्मान दिया परन्तु इस्लाम स्वीकार नहीं किया ।

## बहरैन के सरदार के नाम पत्र

पाँचवां पत्र आप(स) ने मन्ज़र तैमी को जो बहरैन का सरदार था भिजवाया । यह पत्र अला बिन् हज़्रमी(र) के हाथ भिजवाया गया था । इस पत्र का लेख सुरक्षित नहीं है । यह पत्र जब उसके पास पहुँचा तो वह ईमान ले आया । और उसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को लिखा कि मैं और मेरे बहुत से साथी आप पर ईमान ले आये हैं । और कुछ ऐसे हैं जो इस्लाम में दाख़िल नहीं हुए हैं । और मेरे राज्य में कुछ यहूदी और मजूसी भी रहते हैं । आप उनके सम्बन्ध में मुझे आदेश दें कि मैं उनके साथ कैसा व्यवहार करूँ । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसको पत्र लिखा । जिसका लेख इस प्रकार था कि हमें ख़ुशी हुई है कि तुमने इस्लाम क़ुबूल कर लिया है । अत: मेरी ओर से जो प्रतिनिधि आएँ तुम उनके आदेशों का अनुसरण करो, क्योंकि जो उनका अनुसरण करेगा वह मेरा अनुसरण करेगा । मेरा जो दूत तुम्हारी ओर गया था उसने तुम्हारी बड़ी प्रशंसा की और बताया कि तुमने इस्लाम स्वीकार कर लिया है । और मैंने ख़ुदा तआला से तुम्हारी क़ौम के सम्बन्ध में दुआ की है । अत: मुसलमानों में इस्लामी आचरण व चाल चलन का तरीक़ा प्रचलित करों, और उनके मालों की रक्षा करो तथा चार पत्नियों से अधिक (औरतों) को अपने घर में रखने की आज्ञा न दो । और मुसलमान होने से पूर्व उनसे जो पाप हो चुके हैं, वह उन्हें माफ़ कर दिये जायें । अत: जब तक नेकी (अच्छे आचरण) पर चलते रहोगे तुम अपनी हुकूमत से पदच्युत (हटाना) नहीं किये जाओगे । इसी प्रकार जो यहूदी अथवा मजूसी हैं उन पर केवल एक टैक्स लगाया जाता है । उनसे और कोई

मुतालबा नहीं करना । (ज़रकानी जिल्द 3, पृ. 352, व 353 सीरतुल् हल्बिया, जिल्द 3, पृ. 278)

इसके अतिरिक्त आपने अम्मान के बादशाह और यमामा के सरदार और ग़स्सान के बादशाह और यमन के क़बीला बनी नहद के सरदार तथा यमन के क़बीला हमदान के सरदार इसी प्रकार बनी अलीम के सरदार तथा हज़रमी क़बीला के सरदार की ओर भी पत्र लिखे। जिनमें से अधिकतर लोग मुसलमान हो गए । इन पत्रों का लिखना बताता है कि आप ख़ुदा तआला पर कैसा कामिल यक़ीन अर्थात पूर्ण विश्वास रखते थे। और किस प्रकार आपको शुरू से ही पूर्ण विश्वास था कि आप किसी एक जाति के लिये नबी बनाकर नहीं भेजे गए अपितु समस्त क़ौमों की ओर नबी बनाकर भेजे गए हैं । इसमें कोई सन्देह नहीं कि जिन बादशाहों और सरदारों को पत्र लिखे गए थे, उनमें से कुछ ने इस्लाम स्वीकार कर लिया, कुछ ने सम्मान सहित आप के पत्रों को स्वीकार कर लिया परन्तु इस्लाम क़ुबूल नहीं किया। कुछ ने थोड़ी सी सभ्यता दिखाई तथा कुछ ने अभिमान और अहंकार का नमूना दिखाया । परन्तु इस में भी कोई सन्देह नहीं और संसार का इतिहास इस पर गवाह है कि उन में से प्रत्येक बादशाह और क़ौम के साथ वैसा ही व्यवहार हुआ जैसा उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पत्र के साथ व्यवहार किया ।

## ख़ैबर के किले पर विजय प्राप्ति

जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है कि यहूदी और अरब के कुफ़्फ़ार मुसलमानों के ख़िलाफ़ आस-पास के क़बीलों को भड़का रहे थे। और यह देख कर कि अब अरबों में उतनी शक्ति नहीं रही कि मुसलमानों को तबाह कर सकें या मदीना पर जाकर चढ़ाई कर सकें । यहूदियों ने एक ओर रोमी हुकूमत की दक्षिणी सीमा पर रहने वाले अरब क़बीलों को, जो इसाई थे उकसाना शुरू किया तथा दूसरी ओर अपने धर्म के लोगों को जो इराक़ में रहते थे रसूलुल्लाहो सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ पत्र लिखने आरम्भ कर दिए ताकि वे किसरा (ईरान के बादशाह) को मुसलमानों के विरुद्ध भड़काएँ । मैं ऊपर यह भी लिख चुका हूँ कि इस षड्यन्त्र के परिणामस्वरूप किसरा मुसलमानों के विरुद्ध अत्यधिक भड़क गया था तथा उसने रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गिरफ़्तारी के लिये यमन के गर्वनर को आदेश भी दे दिया था । परन्तु अल्लाह तआला की विशेष कृपा ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उससे बचाये रखा । और किसरा और यहूदियों के षड्यन्त्र को असफल कर दिया । अब स्पष्ट है कि यदि अल्लाह तआला की विशेष कृपा न होती तो जहां तक सांसारिक तथ्यों का सम्बन्ध है, मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ओर किसरा तथा दूसरी ओर क़ैसर की फ़ौजों का कैसे मुक़ाबला कर सकते थे । ख़ुदा ही था जिसने किसरा को मार दिया और उसके बेटे से यह आदेश जारी करवा दिया कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्बन्ध में कोई कार्यवाही न की जाये । अतः इस निशान को देखकर यमन के शासक ईमान ले आए । तथा यमन का प्रांत भी बिना किसी फ़ौजी कार्यवाही के इस्लामी हुकूमत में सम्मिलित हो गया । यह दशा जो यहूदियों ने पैदा की थी, जिसके कारण यह आवश्यक हो गया था कि यहूदियों को मदीना से और भी दूर धकेल दिया जाये । क्योंकि यदि वह मदीना के निकट रहते तो अवश्य ही वह और अधिक षड्यन्त्र रचते, शरारतें करते और रक्तपात का कारण बनते । अतः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुलह हुदैबिया से वापस आने के लगभग पांच महीने बाद ही यह फैसला किया कि यहूदियों को ख़ैबर से जो कि मदीना से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित है । और जहाँ से मदीना के ख़िलाफ़ आसानी से साज़िश की जा सकती है, निकाल दिये जाएँ । इस लिये आप(स) ने सोलाह सौ सहाबा(र) के साथ अगस्त 628 ई. में ख़ैबर की ओर कूच किया । ख़ैबर एक किलाबन्द शहर था और उसके चारों ओर चट्टानों के उपर किले बने हुए थे । ऐसे मज़बूत शहर को इतने थोड़े से सिपाहियों के साथ विजय कर लेना कोई साधारण बात न थी । लेकिन आस-पास की छोटी-छोटी चौकियाँ तो छोटी-छोटी झड़पों के बाद विजयी हो गईं परन्तु जब यहूदी पीछे हटते हटते नगर के केन्द्रीय किले में आ गए तो उसके विजय करने की सारी योजनायें विफल होने लगीं । एक दिन अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बताया कि इस शहर की विजय हज़रत अली(र) के हाथों से होगी । आप ने प्रातः काल यह घोषणा की कि मैं आज इस्लाम का काला (रंग का) झण्डा उसके हाथ में दूँगा, जिसको ख़ुदा और उसका रसूल और मुसलमान प्यार करते

हैं । ख़ुदा तआला ने इस किले की विजय उसके हाथों में लिख दी है । इसके बाद दूसरी सुबह आप(स) ने हज़रत अली(र) को बुलाया और झण्डा उनके सुपुर्द कर दिया । जिन्होंने सहाबा(र) की फ़ौज को साथ लेकर किले पर हमला किया। यद्यपि यहूदी किलाबन्द थे । लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत अली(र) और दूसरे सहाबा(र) को उस दिन ऐसी शक्ति प्रदान की कि सायंकाल होने से पहले किला फ़त्ह (विजय) हो गया । और इस बात पर समझौता हो गया कि सभी यहूदी अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ ख़ैबर छोड़कर मदीना से दूर चले जायेंगे । और उनकी सारी संपत्ति पर मुसलमानों का नियंत्रण होगा। परन्तु जो व्यक्ति झूठ से काम लेगा और कोई माल या वस्तु छुपा कर रखेगा वह इस समझौता की सुरक्षा के अर्न्तगत नहीं होगी वह विश्वासघात का अपराधी होगा।

## तीन अद्भुत घटनाएँ

इस जंग में तीन अद्भुत घटनाएँ हुईं । उनमें से एक तो ख़ुदा तआला के निशान को दर्शाती है और दो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चरित्र की श्रेष्ठता को प्रकट करती है । निशान यह है कि इस जंग के पश्चात् जब ख़ैबर के सरदार कनाना की पत्नि का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से विवाह हो गया तो आपने देखा कि उनके चेहरे (मुख) पर लम्बे-लम्बे निशान हैं । आप(स) ने फ़र्माया सफ़िया ! तुम्हारे ये निशान कैसे हैं ? उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! एक दिन मैंने एक सपना देखा कि चाँद गिरकर मेरी झोली में आ पड़ा है । दूसरे दिन मैंने यह सपना अपने पति को सुनाया । मेरे पति ने कहा यह अद्भुत सपना है । तुम्हारा पिता ज्ञानी व्यक्ति है चलकर उसे यह सपना सुनाना चाहिए। अत: मैंने अपने पिता से उसका वर्णन किया तो सपना के सुनते ही उसने ज़ोर से मेरे मुँह पर थप्पड़ मारा और कहा मूर्ख क्या तू अरब के बादशाह से शादी करना चाहती है ।

(अल्-सीरतुल् हल्बिया जिल्द 3, पृ. 50)

यह उसने इस लिये कहा कि अरब का राष्ट्रीय चिन्ह चाँद था । यदि कोई सपने में यह देखता कि चाँद उसकी झोली में आ पड़ा है तो उसका स्वप्नफल यह निकाला जाता था कि अरब के बदशाह के साथ उसका सम्बन्ध

हो गया है और यदि कोई देखता कि चाँद फट गया है या गिर गया है तो उसकी ताबीर (स्वप्नफल) यह की जाती थी कि अरब की हुकूमत में फूट पड़ गई है या वह बर्बाद हो गई है ।

. यह सपना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई का एक निशान है और इस बात का भी निशान है कि ख़ुदा तआला अपने बन्दों को ग़ैब अर्थात परोक्ष का ज्ञान देता रहता है, यद्यपि मोमिनों को अधिक और ग़ैर मोमिनों को कम । हज़रत सफ़िया अभी यहूदी ही थीं कि ख़ुदा तआला ने उन्हें यह पवित्र ग़ैब (परोक्ष) की सूचना प्रदान की, जिसके अनुसार उनका पति समझौते का उल्लंघन करने के कारण मारा गया । यद्यपि वह किसी और सहाबी की क़ैद में चली गई थीं परन्तु कुछ लोगों के बार-बार कहने पर बाद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकाह में आ गईं । इस प्रकार वह स्वप्न भी पूरा हुआ जो ख़ुदा तआला ने उन्हें बताया था ।

दूसरी वर्णन योग्य घटना यह है कि ख़ैबर के घेराव के दिनों में एक यहूदी सरदार का चरवाहा जो उसकी बकरियाँ चराया करता था मुसलमान हो गया । मुसलमान होने के बाद उसने कहा, हे अल्लाह के रसूल ! मैं अब उन लोगों में तो जा नहीं सकता और यह बकरियाँ उस यहूदी की मेरे पास अमानत हैं । अब मैं इनका क्या करूँ ? आप(स) ने फ़र्माया बकरियों का मुँह किला की ओर कर दो और उनको धकेल दो । ख़ुदा तआला उनको उनके मालिक के पास पहुँचा देगा । अतः उसने इसी प्रकार किया और बकरियाँ किले के पास चली गईं । जहां से किले वालों ने उनको अन्दर दाखिल कर लिया । (अल्-सीरतुल् हल्बिया, जिल्द 3, पृ. 44)

इस घटना से पता चलता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कितनी दृढ़ता से अमानत के उसूलों पर अमल करते थे और करवाते थे । लड़ने वालों के माल आज भी जंग में जायज़ (हलाल) समझे जाते हैं । क्या ऐसी घटना, आज के युग में जो सभ्यता का युग कहलाता है, कभी घटी है कि दुश्मन फौज के जानवर हाथ आ गए हों तो उनको दुश्मन फौज को वापस कर दिया गया हो ? यद्यपि वह बकरियाँ एक लड़ने वाले दुश्मन का माल थीं, और सम्भवता उनके किला में जाने से उनके लिये महीनों का खाने का सामान पर्याप्त मात्रा में हो जाना था

जिसके कारणवश वह लोग एक लम्बे समय तक किला बन्द रह सकते थे । आप ने उन बकरियों को किला में वापस करवा दिया ताकि ऐसा न हो कि जिस मुसलमान के पास बकरियाँ थी उसकी अमानत में कोई फ़र्क़ आये ।

**तीसरी घटना** यह हुई कि एक यहूदी औरत ने सहाबा(र) से पूछा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जानवर के किस भाग का गोश्त अधिक पसन्द है ? सहाबा(र) ने बताया कि आप को (बकरी की) दस्ती का गोश्त अधिक पसंद है । इस पर उसने बकरा ज़िबह (हलाल) किया और पत्थरों पर उसके कबाब बनाए और फिर उस गोश्त में विष मिला दिया । विशेषकर भुजाओं में जिसके बारे में उसे बताया गया था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यहां का गोश्त अधिक पसन्द है ।

सूर्य डूबने के बाद जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सायं काल की नमाज़ पढ़कर अपने डेरे की ओर वापस आ रहे थे तो आपने देखा कि आप(स) के ख़ैमा के पास एक औरत बैठी है । आप(स) ने उससे पूछा बीबी तुम्हारा क्या काम है ? उसने कहा हे अबुल् कासिम मैं आप के लिये एक तोहफ़ा लाई हूँ । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी सहाबी से फ़रमाया, जो चीज़ यह देती है इससे ले लो । इसके पश्चात् आप खाने पर बैठ गए तो भोजन में वह भूना हुआ गोश्त भी रखा गया । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसमें से एक निवाला खाया और आप(स) के एक सहाबी बशीर बिन् अल्बरा बिन् अल्-मारूर ने भी एक निवाला खाया । इतने में बाक़ी सहाबा(र) ने भी गोश्त खाने के लिये हाथ बढ़ाया तो आपने फ़रमाया न खाओ क्योंकि इस हाथ ने मुझे ख़बर दी है कि इसमें विष मिला हुआ है । (इस का यह अर्थ नहीं है कि आपको इस बारे में कोई इल्हाम हुआ था, बल्कि यह अरबी का मुहावरा है और इसका अर्थ यह है कि इस गोश्त को चखकर मुझे प्रतीत हुआ कि उसमें ज़हर मिला हुआ है । अतः क़ुर्आन करीम में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के युग की घटना का वर्णन करते हुए एक दीवार के सम्बन्ध में आता है कि वह गिरना चाहती थी । जिसका केवल इतना अर्थ है कि उसमें गिरने के आसार

पैदा हो चुके हैं । अतः यहां भी यह अभिप्राय नहीं कि आपने फ़रमाया वह दस्त (अर्थात भूनी हुई दस्ती) बोला, बल्कि स्पष्ट है कि उसका गोश्त चखने पर मुझे मालूम हुआ है । अतः अगला वाक्य इस अर्थ को स्पष्ट कर देता है) इस पर बशीर(र) ने कहा कि जिस ख़ुदा ने आपको इज़्ज़त दी है, उसकी क़सम ख़ाकर कहता हूँ कि मुझे भी इस निवाला में विष मालूम हुआ है । मेरा दिल चाहता था कि मैं उसको फेंक दूँ । परन्तु मैंने समझा कि यदि मैंने ऐसा किया तो हो सकता है कि आप के स्वभाव पर इसका बुरा प्रभाव पड़े और आप का खाना खराब न हो जाये। इस लिये जब आप ने निवाला निगला तो मैंने भी आप(स) का अनुसरण करते हुए वह निवाला निगल लिया। यद्यपि मेरा दिल कह रहा था कि चूँकि मुझे शंका है कि इस में विष है । इसलिए शायद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह निवाला न खाएँ । इसके थोड़ी देर बाद ही बशीर(र) की तबियत ख़राब हो गयी । और कुछ रवायतों में है कि वह वहीं 'ख़ैबर में ही वफ़ात पा गए । और फिर कुछ (रवायतों) में है कि कुछ समय तक अस्वस्थ रहे और फिर देहान्त हो गया । इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसका थोड़ सा गोश्त एक कुत्ते के आगे डलवाया जिस के खाने से वह मर गया । तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस औरत को बुलवाया और पूछा कि क्या तुमने इस बकरी के गोश्त में विष मिलाया है । उसने कहा आप(स) को यह किसने बताया है । आप के हाथ में उस समय बकरी की दस्ती थी । आपने फ़र्माया मुझे इस हाथ ने बताया है । इस पर वह औरत समझ गई कि आप पर यह भेद (राज़) खुल गया है और उसने इक़रार कर लिया कि उसने ज़हर मिलाया है । इस पर आप(स) ने उससे पूछा कि तुम्हें इस बुरे कर्म पर किस बात ने प्रेरित किया । उसने उत्तर दिया कि मेरी जाति के साथ आपकी लड़ाई हुई थी और मेरे रिश्तेदार उस लड़ाई में मारे गए थे । मेरे मन में यह विचार आया कि मैं उनको विष दे दूँ । यदि उनका कारोबार इन्सानी कारोबार होगा तो हमें उनसे छूट मिल जायेगी । और यदि ये वास्तव में नबी होंगे तो ख़ुदा तआला उनको बचा लेगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी यह बात सुनकर उसे माफ़ कर दिया । (अल्-सीरतुल् हल्बियः जिल्द-3, पृ. 61)

और उसकी सज़ा जो कि वास्तव में क़त्ल बनती थी न दी । यह घटना बताती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किस प्रकार अपने मारने वालों और अपने दोस्तों के मारने वालों को माफ़ कर दिया करते थे । आप वास्तविक रूप में उसी समय सज़ा या दण्ड दिया करते थे, जब किसी व्यक्ति का जीवित रहना भविष्य में बहुत से झगड़ों एवं दंगों का कारण हो सकता हो ।

## काबः का तवाफ़

हिजरत के सातवें साल फ़रवरी 629 ई. में समझौता के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तवाफ़ के लिये जाना था । अतः जब वह समय आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दो हज़ार साथियों के साथ काबा के तवाफ़ लिये चल पड़े । जब आप(स) मर्रूज़्ज़ुहरान तक पहुँचे जो मक्का से एक पड़ाव पर है, तो समझौता के अनुसार आपने सारे भारी-भरकम हथियार और कवच आदि वहां जमा कर दीं और आपने स्वयं सहाबा(र) के साथ समझौता के अनुसार म्यानबन्द तलवारों के साथ हरम (खानः काबः के परिसर) में प्रवेश किया । अपना देश छोड़े सात वर्षों के बाद मुहाजरीन का मक्का में दाखिल होना कोई साधारण बात नहीं थी । उनके दिल एक ओर लम्बी यातनाओं को याद करके ख़ून बहा रहे थे, जो मक्का में उन पर किये गए थे । दूसरी ओर उनके दिल ख़ुदा तआला की इस कृपा को देखकर कि एक बार फिर ख़ुदा तआला ने उन्हें ख़ानः काबः के तवाफ़ का अवसर दिया है वह ख़ुश भी हो रहे थे । मक्का के लोग मक्का से निकल कर पहाड़ की चोटियों पर खड़े मुसलमानों को देख रहे थे । मुसलमानों का दिल चाहता था कि वे उन पर प्रकट कर दें कि ख़ुदा तआला ने उन्हें फिर मक्का में प्रवेश करने का अवसर प्रदान किया या नहीं । अतः अब्दुल्लाह् बिन् रवाहा ने इस अवसर पर जंगी गीत गाने शुरू कर दिये, परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें मना कर दिया और फ़रमाया ऐसे गीत न गाओ । अपितु इस प्रकार कहो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं है, वह ख़ुदा ही है जिसने अपने रसूल की सहायता की और मोमिनों को ज़िल्लत (तिरस्कार) के गढ़े से निकाल कर

ऊँचा किया । केवल ख़ुदा ही है जिसने दुश्मनों को उनके सामने से भगा दिया । काबः के तवाफ़ और सफ़ा व मरवा (पहाड़ियों) के बीच दौड़ना अर्थात उसके सात चक्कर लगाने के पश्चात् आप सहाबा के साथ तीन दिन तक मक्का में ठहरे । हज़रत अब्बास(र) की साली मैमूना जो कि लम्बे समय से बेवा हो चुकी थीं, मक्का में ही थीं । हज़रत अब्बास(र) ने इच्छा प्रकट की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उससे विवाह कर लें । अतः आप(स) ने उसे मन्ज़ूर कर लिया । चौथे दिन मक्का वालों ने मुतालबा किया कि आप वादानुसार मक्का से चले जायें । इस पर आप(स) ने सहाबा(र) को आदेश दिया कि वह शीघ्र ही मक्का छोड़कर मदीना की ओर रवाना हो जायें । मक्का वालों की मानसिकता को समझते हुए आपने नव-विवाहिता मैमूना को भी पीछे छोड़ दिया कि वह बाद में सामान ढोने वाली सवारियों के साथ आ जाएँ । और स्वयं अपनी सवारी दौड़ाकर हरम की सीमा से बाहर निकल गए । और आप(स) की पत्नी मैमूना को सायंकाल वहीं पहुँचा दिया गया । इस प्रकार मैमूना पहली रात इसी जंगल में आप(स) की सेवा में प्रस्तुत हुईं ।

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक से अधिक शादियां करने पर एतराज़ (अपत्ति) और उसका जवाब

यह घटना (अर्थात हज़रत मैमूना से शादी) ऐसी नहीं है कि जिसको इस प्रकार की संक्षिप्त जीवनी में बयान किया जाता जेसी जीवनी मैं लिख रहा हूँ । लेकिन इस घटना में एक ऐसा पहलू है जो मुझे मजबूर करता है कि इस छोटी सी घटना को इस इस जगह लिख दूँ और वह यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यह ऐतराज़ किया जाता है कि उनकी कई पत्नियां थीं, मानों आप का ऐसा करना نَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنْ ذٰلِکَ (हम ऐसा कहने से अल्लाह की पनाह चाहते हैं ।) भोग विलास पर आधारित था ।

परन्तु जब हम इस संबन्ध को जो आप की पत्नियों को आप के साथ था, देखते हैं तो हमें मानना पड़ता है कि आप का सम्बन्ध इतना पवित्र, सच्चा और इतना आध्यात्मिक था कि किसी एक पत्नि वाले व्यक्ति का

सम्बन्ध भी अपनी पत्नि से ऐसा नहीं होता । यदि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपनी पत्नियों से भोग विलास (अय्याशी) वाला सम्बन्ध होता तो अवश्य ही उसका परिणाम यह निकलना चाहिये था कि आप की पत्नियों के दिल किसी रूहानी जज़्बा अर्थात आध्यात्मिक सोच से प्रभावित न होते परन्तु आप की पत्नियों के दिल में आप की जो मुहब्बत थी और जो नेक असर (आपसे) उन्होंने लिया था, वह ऐसी बहुत सी घटनाओं से प्रकट होता है कि आप के देहान्त के पश्चात् आपकी पत्नियों के सम्बन्ध में, इतिहास से साबित है । उदाहरणतया यही एक कितनी छोटी सी घटना थी कि मैमूना(र) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहली बार हरम से बाहर एक ख़ैमा में मिलीं । यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उनसे सम्बन्ध कोई शारीरिक सम्बन्ध होता । और यदि आप कुछ पत्नियों को दूसरी पत्नियों पर बढ़ावा देने वाले होते तो मैमूना इस घटना को अपने जीवन की कोई अच्छी घटना न मानती अपितु वह कोशिश करतीं कि यह घटना उनकी याद से भूल जाए, परन्तु मैमूना(र) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद पचास साल तक जीवित रहीं । और अस्सी वर्ष की होकर फ़ौत हुईं । परन्तु वह इस बरकत वाले सम्बन्ध को सारी उम्र न भुला सकीं । अस्सी वर्ष की आयु में जब जवानी के जज़्बात और मनोकामनाएँ ठण्डी पड़ चुकी होती हैं । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के पचास साल बाद का समय जो कि एक लम्बी आयु कही जा सकती है मैमूना(र) की मृत्यु हुई । उस समय उन्होंने अपने आस-पास के लोगों से निवेदन किया कि जब मैं मर जाऊँ तो मक्का के बाहर एक मंज़िल (कोस) की दूरी पर उस स्थान पर जिस स्थान पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़ैमा था और जिस स्थान पर मैं पहली बार आप की सेवा में प्रस्तुत की गई थी, मेरी क़ब्र बनाई जाए और उसमें मुझे दफ़न किया जाये । (अल् सीरतुल् हल्बिया जिल्द 3, पृ. 73)

दुनिया में ऐसी सच्ची विचित्र व अद्भुत घटनाएँ भी होती हैं और किस्से कहानियाँ भी, परन्तु सच्ची अद्भुत घटनओं में से भी और किस्से कहानियों में से भी क्या कोई ऐसी घटना इतनी गहरी मुहब्बत से अधिक प्रभावित करने वाली प्रस्तुत की जा सकती है ?

## ख़ालिद बिन् वलीद और अमर बिन् आस का इस्लाम क़बूल करना

क़ाबा की ज़ियारत (तीर्थयात्रा) से वापसी के बाद शीघ्र ही इस्लाम में दो ऐसे व्यक्ति दाख़िल हुए जो इस्लामी जंगों के आरम्भ से लेकर अब तक कुफ़्फ़ार के ज़बरदस्त जरनैलों में सम्मिलित थे और जो इस्लाम में दाख़िल होने के बाद ऐसे प्रसिद्ध जरनैल साबित हुए कि इस्लामी इतिहास में से इन लोगों क़ा नाम मिटाया नहीं जा सकता अर्थात ख़ालिद बिन् वलीद जिसने बाद में रोम की नींव हिलाकर रख दी और राज्य के राज्य विजय करके इस्लामी हुकूमत में सम्मिलित किये और अमर बिन् आस जिन्होंने मिस्र (Egypt) को विजय करके इस्लामी शासन में शामिल किया।

## जंगे मौता

जब आप क़ाबा की ज़ियारत (तीर्थयात्रा) से वापस आये तो आप को सूचनाएँ मिलने लगीं कि शाम (सीरिया) की सीमा पर इसाई अरब क़बीले यहूदियों और कुफ़्फ़ार के भड़काने से मदीना पर हमला की तैयारियां कर रहे हैं। अतः आप ने इसकी जानकारी के लिये पंदरह व्यक्तियों की एक पार्टी शाम की सरहद पर भिजवाई ताकि वह पता लगाएँ कि यह अफ़वाहें कहां तक उचित हैं। जब यह लोग शाम की सीमा पर पहुँचे तो वहां देखा कि एक फ़ौज जमा हो रही है। इन लोगों ने वापस आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचित करना था परन्तु उसके स्थान पर उनमें तब्लीग़ का जोश उमड़ पड़ा क्योंकि उन दिनों यह एक सच्चे मोमिन (मुसलमान) की निशानी हुआ करती थी। इस प्रकार उन्होंने दलेरी से आगे बढ़कर उन्हें इस्लाम की दावत देनी शुरू कर दी। जो लोग दुश्मन के भड़काए हुए और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देश पर हमला करके उसे विजय करना चाहते थे, वह इन लोगों की तौहीद की शिक्षा से कैसे प्रभावित हो सकते थे। जैसे ही इन लोगों ने उनको इस्लाम की शिक्षा सुनानी आरम्भ की चारों ओर से सिपाहियों ने घेर लिया और उन पर तीरों की वर्षा कर दी। जब मुसलमानों ने देखा कि हमारी तब्लीग़ (प्रचार) का जवाब दलील व तर्क

के स्थान पर यह लोग तीर फ़ेंक रहे हैं तो वह भागे नहीं और इस सैंकड़ों और हज़ारों की भीड़ से उन्होंने अपनी जानें नहीं बचाईं बल्कि सच्चे मुसलमान के रूप में वह पंदरह आदमी उन सैंकड़ों हज़ारों व्यक्तियों के मुक़ाबला पर डट गए और सारे के सारे वहीं मर कर ढेर हो गए । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चाहा कि एक और फ़ौज भेज कर उन लोगों को दण्ड दिया जाये, जिन्होंने ने ऐसी अत्याचारी कार्यवाही की थी । इसी बीच आप को सूचना मिली कि वह फ़ौज जो वहां इकत्रित हुई थी तित्तर-बित्तर हो गई है । इस पर आपने इस इरादा को कुछ समय के लिये टाल दिया ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी बीच ग़स्सान क़बीला के सरदार को जो रोमी हुकूमत की ओर से बसरा का शासक था या स्वयं क़ैसर रोम को पत्र लिखा । लगभग इस पत्र में ऊपर वर्णित घटना की शिकायत होगी कि कुछ शामी कबीले इस्लामी क्षेत्र पर हमला की तैयारी कर रहे हैं और यह कि उन्होंने बिना किसी कारण के पंदरह मुसलमानों को क़त्ल कर दिया है । यह पत्र अल्-हरस नामक एक सहाबी के हाथ भिजवाया गया था । वह शाम को जाते हुए मौता नामक एक स्थान पर ठहरे, जहां ग़स्सान क़बीला का एक सरदार शरजील नामक जो कि क़ैसर के नियुक्त किये हुए शासकों में से था । उन्हें मिला, अत: उसने उनसे पूछा कि तुम कहां जा रहे हो । शायद तुम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूत हो ? उन्होंने कहा हाँ । इस पर उसने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और रस्सियों से बांध कर मार-मार कर उन्हें मार डाला । यद्यपि इतिहास में इसका व्याख्यान नहीं आया है परन्तु यह घटना बताती है कि जिस फ़ौज ने पहले पंदरह सहाबियों को मारा था । यह व्यक्ति उसके लीडरों में से होगा । अत: उसका यह प्रश्न करना कि तुम शायद मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूतों में से हो । ये स्पष्ट करता है कि उसको डर था कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ैसर के पास शिकायत करेंगे कि तुम्हारे क्षेत्र के लोग हमारे क्षेत्र के लोगों पर हमला करते हैं । इसलिये वह डरता होगा कि शायद बादशाह इस कारण उससे पूछ-ताछ न करे । अत: उसने अपनी भलाई इसी में समझी कि दूत को ही मार दे ताकि न संदेश पहुँचे और न कोई जाँच हो, परन्तु अल्लाह तआला ने उनके उन बुरे इरादों को पूरा नहीं होने दिया । और

हरसः के मारे जाने की सूचना किसी न किसी प्रकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुँच गई । आपने इस पहली घटना और इस घटना का दण्ड देने के लिये तीन हज़ार की फ़ौज तैयार करके ज़ैद बिन् हारसः (जो आपके आज़ाद किये हुए ग़ुलाम थे तथा जिन का आप की मक्की जीवन में वृतांत आ चुका है ।) के नेतृत्व में शाम की ओर भिजवाया और आदेश दिया कि ज़ैद बिन् हारसः फ़ौज के कमांडर होंगे । यदि वह मारे गये तो जाफ़र बिन् अबी तालिब कमांडर होंगे, यदि वह भी मारे जाएँ तो अब्दुल्लाह बिन् रवाहा कमांडर होंगे और अगर वह भी मारे जायें तो मुसलमान अपने में से किसी को चुनकर अपना अफसर बना लें । उस समय एक यहूदी आप की सभा में बैठा हुआ था । उसने कहा हे अबुल् क़ासिम ! यदि आप सच्चे हैं तो यह तीनों आदमी अवश्य मारे जायेंगे, क्योंकि अल्लाह तआला अपने नबियों के मुँह से निकली हुई बातों को पूरा कर दिया करता है । फिर वह ज़ैद की ओर सम्बोधित हुआ और कहा मैं तुम से सच-सच कहता हूँ यदि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा के सच्चे नबी हैं तो तुम कभी जीवित वापस नहीं आओगे । ज़ैद ने जवाब में कहा, मैं वापस आऊँ या न आऊँ परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा के सच्चे नबी हैं । दूसरे दिन प्रातः काल यह फ़ौज चल पड़ी और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा(र) इसको छोड़ने के लिये गए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन काल में आपके नेतृत्व के बिना इतनी बड़ी फ़ौज कभी भी किसी मुसलमान जरनैल के नेतृत्व में किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिये नहीं गई थी । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस फ़ौज के साथ-साथ चलते जाते थे और उन्हें नसीहतें करते जाते थे । अन्ततः आप(स) मदीना के बाहर उस स्थान पर जाकर जहां से आप मदीना में दाखिल हुए थे और जिस जगह से मदीना वाले साधारणतया अपने यात्रियों को विदा किया करते थे, ठहर गए, और कहा, 'मैं तुम को अल्लाह के तक़्वा (संयम) का उपदेश देता हूँ तथा तुम्हारे साथ जितने मुसलमान हैं उनसे नेक (अच्छे) व्यवहार करने की नसीहत करता हूँ । अतः तुम अल्लाह का नाम लेकर जंग पर जाओ और सीरिया में जो तुम्हारे और ख़ुदा के दुश्मन हैं उनसे जाकर जंग करो । जब तुम शाम (सीरिया) में पहुँचोगे तो वहां तुम्हें कुछ ऐसे लोग मिलेंगे जो

इबादतगाहों (पूजा स्थलों) में बैठकर ख़ुदा का नाम लेते हैं, तुम उनसे किसी प्रकार का हस्तंक्षेप न करना तथा न उन्हें कष्ट देना, न दुश्मन के देश में किसी औरत को मारना और न किसी अन्धे को मारना और न किसी बूढ़े को मारना न कोई पेड़ काटना न इमारत (भवन) गिराना । यह नसीहत करके रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां से वापस लौटे और इस्लामी फ़ौज शाम की ओर चल पड़ी । यह पहला सैनिक दल था जो ईसाईयों के मुक़ाबला पर इस्लाम की तरफ़ से निकला । जब यह सैनिक दल शाम की सीमा पर पहुँचा तो उसे पता चला कि क़ैसर भी इस ओर आया हुआ है । तथा एक लाख रोमी फ़ौज भी उसके साथ है इसी प्रकार एक लाख के लगभग अरब के ईसाई क़बीलों के सिपाही भी उसके साथ हैं । इस पर मुसलमानों ने सोचा कि वे रास्ता में डेरा डाल दें और इसकी सूचना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दें । अत: यदि आपने कुछ और सहायता भेजनी हो तो वह भेज दें और यदि कोई आदेश देना हो तो उससे सूचित कर दें । जब यह परामर्श हो रहा था, अब्दुल्लाह बिन् रवाहा(र) जोश से खड़े हो गए और कहा, हे क़ौम (लोगों) ! तुम अपने घरों से ख़ुदा के रास्ता में शहीद होने के लिये निकले थे और जिस चीज़ के लिये तुम निकले थे अब उससे घबरा रहे हो । हम लोगों से अपनी संख्या और अपनी शक्ति और अपनी अधिकता के कारण नहीं लड़ते रहे । हम तो केवल उस दीन के लिये दुश्मनों से लड़ते रहे हैं जो ख़ुदा तआला ने अपनी कृपा से हमें प्रदान किया है । यदि दुश्मन अधिक है तो हुआ करे, अन्तत: दो नेकियों में से एक तो हम को अवश्य मिलेगी या हम विजयी होंगे या ख़ुदा के रास्ता में शहीद हो जायेंगे । लोगों ने उनकी ये बात सुनकर कहा, इब्ने रवाहा(र) सच कहते हैं । अत: शीघ्र कूच का आदेश दे दिया गया । जब वे आगे बढ़े तो रोमी सेना उन्हें अपनी ओर बढ़ती दिखाई दी। इस पर मुसलमानों ने मौता नामी स्थान पर अपनी सेना को पंक्तिबद्ध कर लिया और लड़ाई आरम्भ हो गई । थोड़ी ही देर में मुसलमानों के कमांडर ज़ैद बिन् हारस:(र) मारे गए । तब इस्लामी फौज का झण्डा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचेरे भाई जाफ़र बिन् अबी तालिब ने अपनें हाथ में ले लिया और फ़ौज की कमान संभाल ली । जब उन्होंने देखा कि दुश्मन की फ़ौज का रेला बढ़ता चला जाता है और मुसलमान अपनी थोड़ी

संख्या के कारण उनके दबाव को सहन नहीं कर सकते । तो आप जोश से घोड़े से कूद पड़े और अपने घोड़े की टांगे काट दीं । जिसका अर्थ यह था कि कम से कम मैं तो इस मैदाम से भागने वाला नहीं । मैं मर जाने को पसंद करता हूँ परन्तु भागने को पसंद नहीं करूँगा। यह एक अरब का रिवाज था । वह घोड़े की टांगे इस लिये काट देते थे ताकि वह सवारी के बिना इधर-उधर भाग कर फ़ौज में भगदड़ न मचाए । थोड़ी देर की लड़ाई में आपका दायां हाथ कट गया। तब आपने बाएँ हाथ से झण्डा पकड़ लिया फिर आपका बायां हाथ भी काटा गया तो आपने दोनों हाथों के टुंडों से झण्डे को अपने सीना से लगा लिया और मैदान में खड़े रहे, यहां तक कि आप शहीद हो गए । तब अब्दुल्लाह बिन् रवाहा ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार झण्डे को पकड़ लिया और वह भी दुश्मन से लड़ते-लड़ते मारे गए। उस समय मुसलमानों के लिये कोई अवसर नहीं था कि वह चुनाव करके किसी को अपना सरदार नियुक्त करते । और सम्भव था कि मुसलमान शत्रु की फ़ौज की अधिकता के कारण मैदान छोड़ जाते कि ख़ालिद बिन् वलीद ने एक दोस्त के कहने पर झण्डा पकड़ लिया और शाम तक दुश्मन का मुक़ाबला करते रहे ।

दूसरे दिन फिर ख़ालिद अपनी थकी हुई तथा घायल सेना को लेकर दुश्मन के मुक़ाबला के लिये निकले। इस बार उन्होंने यह होशियारी की कि सेना के आगे वाले भाग को पीछे कर दिया और पीछे वाले भाग को आगे कर दिया । इसी प्रकार दायें को बाएँ तथा बाएँ को दाएँ और इस प्रकार नारे (जयकार) लगाए कि दुश्मन समझा कि मुसलमानों को और सहायता पहुँच गई है । इस पर दुश्मन पीछे हट गया और ख़ालिद इस्लामी सेना को बचाकर वापस ले आए। (अल्-सीरतुल् हल्बिया, भाग 3, पृ. 75)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने इस घटना की सूचना उसी दिन वही (ईशवाणी) के द्वारा दे दी । आपने घोषणा करके सब मुसलमानों को मस्जिद में इकट्ठा किया । जब आप मिम्बर (स्टेज) पर चढ़े तो आपकी आँखों से आँसू बह रहे थे । आपने फ़र्माया हे लोगो ! मैं तुमको जंग में जाने वाली फ़ौज के सम्बन्ध में सूचना देता हूँ सेना ने यहां से जाकर दुश्मन से जंग की, और लड़ाई आरम्भ होते ही पहले ज़ैद

शहीद हो गए । अतः तुम लोग ज़ैद(र) के लिये दुआ करो । फिर झण्डा जाफ़र(र) ने ले लिया और दुश्मन पर हमला किया। यहां तक कि वह भी शहीद हो गए । अतः तुम उनके लिये भी दुआ करो । फिर झण्डा अब्दुल्लाह बिन् रवाहा(र) ने लिया और बड़ी दिलेरी से सेना को लड़ाया परन्तु अन्ततः वह भी शहीद हो गए । इसलिये तुम उनके लिये भी दुआ करो । फिर झण्डा खालिद बिन् वलीद ने ले लिया । उसको मैंने कमान्डर नियुक्त नहीं किया था परन्तु उसने स्वयं ही अपने आपको कमांडर बना लिया परन्तु वह ख़ुदा की तलवारों में से एक तलवार है । अतः वह ख़ुदा तआला की सहायता से इस्लामी सेना को सुरक्षित ले आया । आपके इस भाषण से ख़ालिद(र) का नाम मुसलमानों में सैफ़ुल्लाह अर्थात ख़ुदा की तलवार प्रसिद्ध हो गया । चूँकि ख़ालिद(र) अन्त में ईमान लाए थे । कुछ सहाबा(र) उनको मज़ाक़ (परिहास) से या किसी झगड़े के अवसर पर ताना दे दिया करते थे । एक बार किसी ऐसी ही बात पर हज़रत अब्दुर रहमान बिन् औफ़(र) से उनकी तू-तू मैं-मैं हो गई । उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ख़ालिद(र) की शिकायत की । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया, ख़ालिद(र) ! तुम उस व्यक्ति को जो कि 'बदर' के समय से इस्लाम की सेवा कर रहा है । किस लिये दुःख देते हो । यदि तुम उहद (पहाड़) के बराबर भी सोना ख़र्च करो तो उसके बराबर ख़ुदा तआला से इनाम प्राप्त नहीं कर सकते इस पर ख़ालिद ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! ये मुझे ताना देते हैं तो फिर मैं भी जवाब दे देता हूँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम लोग ख़ालिद(र) को दुःख न दिया करो । ये अल्लाह तआला की तलवारों में से एक तलवार है जो ख़ुदा तआला ने कुफ़्फ़ार की तबाही के लिये खींची है।

(अल्-सीरतुल् हल्बिया, भाग 2, पृ. 77)

इस भविष्यवाणी का एक एक शब्द कुछ ही वर्षों बाद पूरा हो गया। जब ख़ालिद अपनी फ़ौज को सीरिया से वापस लाऐ तो मदीना के वह सहाबी(र) जो साथ नहीं गए थे । उन्होंने उस फौज के सिपाहियों को भगोड़े कहना शुरू किया । भाव यह था कि तुम्हें वहीं लड़ कर मर जाना चाहिये था, वापस नहीं आना चाहिये था, परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया यह भगोड़े नहीं, अपितु बार-बार लौट कर दुश्मन पर

हमला करने वाले सिपाही हैं । इस प्रकार आपने उन जंगों की जो मुसलमानों की शाम के साथ होने वाली थीं भविष्यवाणी फरमाई ।

## फ़तह् मक्का

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस आख़िरी जंग अर्थात फ़त्ह मक्का के लिये सन् 8 हिजरी रमज़ान के महीने में अर्थात दिसम्बर 629 ई. में निकले । जिस जंग ने अरब में इस्लाम को स्थापित कर दिया । इस घटना का वर्णन इस प्रकार है कि सुलह हुदैबिया के अवसर पर यह फैसला हुआ था कि अरब के क़बीलों में से जो चाहें मक्का वालों के साथ मिल जायें और जो चाहें मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ मिल जाएँ । और यह कि दोनों दलों में से किसी को भी दस साल तक एक दूसरे के ख़िलाफ़ जंग करने की इजाज़त नहीं होगी । अपितु यह कि एक, दूसरे पर हमला करके इस समझौते को तोड़ दे । इस समझौते के अन्तर्गत अरब का क़बीला बनु बकर मक्का वालों के साथ मिल गया था और ख़ुज़ाआ कबीला मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ । अरब के कुफ़्फ़ार समझौता की पाबन्दी का कम ही ध्यान रखते थे । विशेषकर मुसलमानों के मुक़ाबला में । अतः बनु बकर क़बीला की ख़ुज़ाअः क़बीला के साथ पुरानी दुश्मनी थी । सुलह हुदैबिया पर कुछ समय गुज़रने के पश्चात् उन्होंने मक्का वालों से विचार विमर्श किया कि समझौता के कारण ख़ुज़ाअः तो बिल्कुल निश्चिन्त हैं । अब अवसर है कि हम उनसे बदला लें । इस प्रकार मक्का के क़ुरैश और बनु-बकर ने मिलकर बनु ख़ुज़ाअः पर रात को छापा मारा और उनके बहुत से आदमी मार दिये । ख़ुज़ाआ को जब पता चला कि क़ुरैश ने कबीला बनू बकर के साथ मिलकर यह हमला किया है तो उन्होंने इस समझौता तोड़ने की सूचना देने के लिये शीघ्र ही चालीस आदमी तेज़ ऊँटों पर मदीना की ओर रवाना किये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुतालबा किया कि परस्पर समझौता के अनुसार आप का फ़र्ज़ बनता है कि हमारा बदला लें और मक्का पर चढ़ाई करें । जब यह प्रतिनिध मण्डल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुँचा तो आपने फ़रमाया तुम्हारा दुःख मेरा दुःख है । मैं अपने समझौता पर अटल हूँ । यह बादल जो सामने बरस रहा है । (उस

समय वर्षा हो रही थी) जिस प्रकार इसमें से वर्षा हो रही है उसी प्रकार शीघ्र ही तुम्हारी सहायता के लिये इस्लामी फ़ौजें पहुँच जायेंगी । जब मक्का वालों को इस प्रतिनिधि मण्डल का पता चला तो वह बहुत घबराये । अतः उन्होंने अबु सुफ़ियान को मदीना भेजा ताकि वह किसी प्रकार मुसलमानों को हमला करने से रोक ले । अबु सुफ़ियान ने मदीना पहुँचकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ज़ोर डालना आरम्भ किया कि चूँकि सुलह हुदैबिया के समय मैं उपस्थित न था इस लिये दोबारा समझौता किया जाए । परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी किसी बात का उत्तर न दिया। क्योंकि उत्तर देने से भेद प्रकट हो सकता था । अबु सुफ़ियान ने हताश होकर मस्जिद में खड़े होकर घोषणा की कि हे लोगो ! मैं मक्का वालों की ओर से आप लोगों के लिये दोबारा से अमन की घोषणा करता हूँ । यह बात सुनकर मुसलमान उसकी मूर्खता पर हँस पड़े । और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अबु सुफ़ियान ! यह बात तुम एक पक्षीय कह रहे हो, हमने तुमसे ऐसा कोई समझौता नहीं किया है ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी बीच चारों ओर मुसलमान क़बीलों की तरफ़ दूत भिजवा दिए और जब यह सूचनाएँ प्राप्त हो चुकीं कि मुसलमान क़बीले एकत्रित हो चुके हैं, तथा मक्का की ओर कूंच करते हुए रास्ते में मिलते जायेंगे तो आपने मदीना के लोगों को सशस्त्र होने का आदेश दिया । जनवरी सन् 630 ई. की पहली तारीख़ को यह सेना मदीना से चल पड़ी और रास्ते में चारों ओर से मुसलमान क़बीले इस में आ आकर मिलते चले गए । कुछ ही मील चलने के बाद जब यह सेना फ़ारान के जंगल में दाख़िल हुई तो इसकी संख्या सुलैमान(अ) नबी की पेशगोई के अनुसार दस हज़ार तक पहुँच चुकी थी । इधर यह फ़ौज मक्का की ओर बढ़ रही थी और उधर मक्का वाले इस ख़ामोशी से जो वातावरण पर छाई हुई थी अत्यधिक भयभीत हो रहे थे । अन्ततः उन्होंने परामर्श करके अबु सुफ़ियान को फिर इस बात पर प्रेरित किया कि वह मक्का से बाहर निकलकर पता लगाए कि मुसलमान क्या करना चाहते हैं । मक्का से एक मील बाहर निकलने पर ही अबु सुफ़ियान ने रात के समय जंगल को आग से रोशन पाया । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आदेश दे दिया था कि सभी ख़ैमों के आगे आग

जलाई जाए । दस हज़ार व्यक्तियों के ख़ैमों (डेरों) के आगे भड़कती आग ने जंगल को और भी भयावाह कर दिया था । अबु सुफ़ियान ने अपने साथियों से पूछा यह क्या है । क्या आकाश से कोई सेना उतरी है । क्योंकि अरब की किसी क़ौम की इतनी बड़ी फ़ौज नहीं है । उसके साथियों ने कई क़बीलों के नाम लिये परन्तु उसने कहा कि नहीं नहीं अरब के क़बीलों में से किसी की भी इतनी बड़ी फ़ौज कहां से हो सकती है ? वह यह बात कर ही रहा था कि अन्धेरे में से आवाज़ आई । अबु हंज़ला ! (यह अबु सुफ़यान की कुनयत (उपाधि) थी) । अबु सुफ़ियान ने कहा अब्बास तुम यहां कहां ? उन्होंने उत्तर दिया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेना सामने डेरा डाले हुए है और यदि तुम लोगों ने शीघ्र ही कोई युक्ति न की तो पराजय और अपमानता तुम्हारे निकट खड़ी है । चूँकि अब्बास अबु सुफ़ियान के पुराने दोस्त थे इसलिये ये बात करने के बाद उन्होंने अबु सुफ़ियान से अनुरोध किया कि वह उनके साथ सवारी पर बैठ जाए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में प्रस्तुत हो । अत: उन्होंने उसका हाथ पकड़कर उसे अपने साथ बिठा लिया और ऊँट को ऐड़ लगाकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सभा में पहुँच गए । हज़रत अब्बास(र) डरते थे कि हज़रत उमर(र) जो उनके साथ पहरा पर नियुक्त थे कहीं उसको क़त्ल न कर दें, परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पहले ही यह आदेश दे चुके थे कि यदि अबु सुफ़ियान तुम में से किसी को मिल जाये तो उसे क़त्ल न करना । यह सारा अवलोकन (दृश्य, नज़्ज़ारा) अबु सुफ़ियान के मन में एक महान तबदीली पैदा कर चुका था । अबु सुफ़ियान ने देखा कि कुछ वर्ष ही पूर्व हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को केवल एक साथी के साथ मक्का से निकलने पर मजबूर कर दिया था । लेकिन अभी सात वर्ष ही बीते हैं कि वह दस हज़ार कुद्दूसियों (पवित्र लोगों) के साथ जायज़ तौर पर बिना अत्याचार और बिना हिंसा के मक्का पर आक्रमणकारी हुआ है और मक्का वालों को ताक़त नहीं कि उसे रोक सकें । अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सभा में पहुँचते पहुँचते कुछ इस प्रकार के विचारों के कारण और कुछ भय और आतंक के कारण अबु सुफ़ियान चकित व स्तब्ध सा होकर रह गया । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी यह हालत

देखी तो हज़रत अब्बास(र) से कहा कि अबु सुफ़ियान को अपने साथ ले जाओ और रात को अपने पास रखो, इसे प्रातः मेरे पास लाना । अतः अबु सुफ़ियान रात को हज़रत अब्बास(र) के साथ रहा । जब प्रातः उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लाए तो फ़जर (प्रातः) की नमाज़ का समय था । मक्का के लोग प्रातः उठकर नमाज़ पढ़ने को क्या जानते थे ? उसने मुसलमानों को इधर-उधर पानी के भरे लोटे लेकर आते जाते देखा । उसने देखा कि कोई वज़ू कर रहा है कोई सफ़ बन्दी (लाईन बनाना) कर रहा है तो अबु सुफ़ियान ने समझा कि मानो मेरे लिये कोई नये प्रकार के दण्ड का विचार किया गया है । अतः उसने घबरा कर हज़रत अब्बास(र) से पूछा कि यह लोग सुबह-सुबह क्या कर रहे हैं ? हज़रत अब्बास(र) ने कहा कि तुम्हारे लिये डरने की कोई बात नहीं है । यह लोग नमाज़ पढ़ने लगे हैं । इसके पश्चात् अबु सुफ़ियान ने देखा कि हज़ारों हज़ार मुसलमान रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे खड़े हो गए हैं और जब आप रुकू करते हैं तो सब रुकू करते हैं और जब आप सज्दा करते हैं तो सब के सब सज्दा करते हैं । यद्यपि हज़रत अब्बास(र) पहरे पर होने के कारण नमाज़ में सम्मिलित नहीं हुए थे । अबु सुफ़ियान ने उनसे पूछा कि अब यह क्या कर रहे हैं ? मैं देखता हूँ कि जो कुछ मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) करते हैं यह लोग भी उसी प्रकार करने लग जाते हैं । अब्बास(र) ने कहा तुम किन विचारों में पड़े हो, यह तो नमाज़ पढ़ रहे हैं परन्तु यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इनको आदेश दें कि तुम खाना-पीना छोड़ दो तो यह लोग खाना पीना भी छोड़ देंगे । अबु सुफ़ियान ने कहा मैंने किसरा (ईरान के बादशाह) का दरबार देखा है और क़ैसर (रोम के बादशाह) का दरबार भी देखा है परन्तु उनकी क़ौमों को इतना फिदाई (मोहित) नहीं देखा जितना मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की जमात उसकी फ़िदाई है । फिर अब्बास से कहा, क्या यह नहीं हो सकता कि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से स्वयं यह प्रार्थना करो कि आप(अ) अपनी क़ौम (जाति) से अफ़व् (दया) का व्यवहार करें । जब नमाज़ समाप्त हो गई तो हज़रत अब्बास(र) अबु सुफ़ियान को लेकर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में प्रस्तुत हुए । आपने

फ़रमाया अबु सुफ़ियान क्या अभी समय नहीं आया कि तुम पर यह वास्तविकता खुल जाय कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं है ? अबु सुफ़ियान ने कहा मेरे माता-पिता आप पर न्योछावर हों, आप बहुत ही दयावान और बहुत शरीफ़ एवं सभ्य पुरुष तथा रिश्तेदारों का बड़ा ध्यान रखने वाले (सिला रहमी करने वाले) व्यक्ति हैं। मैं अब तो यह बात समझ चुका हूँ कि यदि अल्लाह के अतिरिक्त कोई दूसरा माबूद (पूजित) होता तो कुछ तो हमारी सहायता करता। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हे अबु सुफ़ियान ! क्या अभी समय नहीं आया कि तुम यह समझ लो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ ? अबु सुफ़ियान ने कहा मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान (नियोछावर) हों। इस सम्बन्ध में अभी मेरे मन में कुछ शंकाएँ हैं। मगर अबु सुफ़ियान के असमंजस के बावजूद उसके दोनों साथी जो उसके साथ ही मक्का से बाहर मुसलमानों की ख़बर लेने के लिये आए हुए थे और उनमें से एक हकीम बिन हज़ाम थे वह मुसलमान हो गए। उसके बाद अबु सुफ़यान भी इस्लाम ले आया परन्तु उसका दिल पूरी तरह फ़तह मक्का के बाद ही संतुष्ट हुआ। ईमान लाने के बाद हकीम बिन् हज़ाम ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! क्या आप यह फ़ौज अपनी क़ौम को तबाह और बर्बाद करने के लिये उठा लाए हैं ? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, इन लोगों ने अत्याचार किए, इन लोगों ने गुनाह व पाप किये और तुम लोगों ने हुदैबिय: में किये हुए समझौते को तोड़ दिया और ख़ुज़ाआ (क़बीला) के खिलाफ़ हिंसक जंग की और उस पवित्र स्थान पर जंग की जिस को ख़ुदा ने अमन दिया हुआ था। हकीम ने कहा, हे अल्लाह के रसूल ! आप ठीक कहते हैं इसमें कोई शक नहीं कि आप की क़ौम ने ऐसा ही किया है। परन्तु आप को मक्का पर हमला करने के विपरीत हवाज़िन क़बीला पर हमला करना चाहिये था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह क़ौम भी अत्याचारी है परन्तु मैं ख़ुदा तआला से आशा रखता हूँ कि वह मक्का की फ़तह (विजय) और इस्लाम की विजय और हवाज़िन की पराजय यह सारी बातें मेरे हाथ पर ही पूरी करेगा। इसके पश्चात अबु सुफ़ियान ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! यदि मक्का के लोग तलवार न उठाएँ तो क्या वह अमन में होंगे ? आपने फ़रमाया हाँ, प्रत्येक वह व्यक्ति जो अपने घर का

दरवाज़ा बन्द कर ले उसे अमन दिया जायेगा । हज़रत अब्बास(र) ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! अबु-सुफ़ियान अभिमान पसन्द व्यक्ति है इसका मतलब यह है कि मेरी इज़्ज़त व सम्मान का भी ध्यान रखा जाए । आपने फ़रमाया ठीक है जो व्यक्ति अबु सुफ़ियान के घर चला जाये उसे भी अमन दिया जायेगा । जो हकीम बिन हिज़ाम के घर में चला जाये उसको भी अमन दिया जायेगा । जो मस्जिदे काबः में दाखिल हो जाये उसको भी अमन दिया जायेगा, जो अपने हथियार फैंक दे, उसको भी अमन (सुरक्षा) दिया जायेगा । जो अपना दरवाज़ा बंद करके बैठ जायेगा उसे भी अमन दिया जायेगा । इसके पश्चात् अबु रवीहा(र) जिनको आपने बिलाल हब्शी(र) का भाई बनाया हुआ था उनके संबन्ध में फ़रमाया, हम इस समय अपना झण्डा अबु रवीहा(र) को देते हैं जो व्यक्ति अबु रवीहा के झण्डे के नीचे खड़ा होगा हम उसको भी कुछ नहीं कहेंगे और बिलाल(र) से कहा तुम साथ-साथ यह घोषणा करते जाओ कि जो व्यक्ति अबु रवीहा(र) के झण्डे के नीचे आ जायेगा उसको भी अमन दिया जायेगा । (अल्-सीरतुल् हल्बियः, भाग 3, पृ. 91)

इस आदेश में बड़ी ही बुद्धिमत्ता से काम लिया गया था । मक्का के लोग बिलाल के पैरों में रस्सी डालकर उसको गलियों में ख़ींचा करते थे । मक्का की गलियां मक्का के मैदान बिलाल के लिये अमन की जगह नहीं थे बल्कि अज़ाब और अपमानता तथा व्यंग का स्थान थे । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सोचा कि आज बिलाल का मन बदला लेने के लिये बार-बार भावुक होता होगा । इस वफ़ादार साथी का बदला लेना भी अति अवश्यक है । परन्तु यह भी ज़रूरी है कि हमारा बदला इस्लाम की शान के अनुसार हो । अतः आपने बिलाल(र) का बदला इस प्रकार नहीं लिया कि तलवार के साथ उसके दुश्मनों की गर्दनें काट दी जायें, अपितु उसके भाई के हाथ में बड़ा झण्डा देकर उसे खड़ा कर दिया और बिलाल(र) को इस उद्देश्य के लिये नियुक्त कर दिया कि वह घोषणा कर दे कि जो कोई मेरे भाई के झण्डे के नीचे आ खड़ा होगा उसको अमन दिया जायेगा । यह बदला कैसा शानदार था और कितना प्यारा बदला था । जब बिलाल(र) ऊँची आवाज़ से यह घोषणा करते होंगे कि हे मक्का वालों ! आओ मेरे भाई के झण्डे के नीचे खड़े हो जाओ तुम्हें अमन दिया जायेगा । तो उसका दिल स्वयं ही बदले की भावना से

खाली होता जाता होगा और उसने महसूस कर लिया होगा कि जो बदला मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे लिये चुना है इससे अधिक शानदार और उससे प्यारा बदला मेरे लिये और कुछ नहीं हो सकता । जब फ़ौज मक्का की ओर बढ़ने लगी तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बास(र) को आदेश दिया कि वह अबू सुफ़ियान और उसके साथियों को लेकर सड़क के किसी ऐसे कोने (नुक्कड़) पर खड़े हो जाओ ताकि वह इस्लामी फ़ौज और उसकी फ़िदाइय्यत एवं वफ़ादारी को देख सके । हज़रत अब्बास(र) ने ऐसा ही किया । अबु सुफ़ियान और उसके साथियों के सामने से एक-एक करके अरब के वह क़बीले गुज़रने शुरू हुए जिनकी सहायता पर मक्का भरोसा करता था परन्तु आज वह कुफ़र का झण्डा नहीं फ़हरा रहे थे । आज वह इस्लाम का झण्डा फ़हरा रहे थे और उनकी ज़ुबान (जीभ) पर एक सर्वशक्तिमान ख़ुदा की घोषणा थी । वे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान लेने को आगे नहीं बढ़ रहे थे जिसकी मक्का वाले उम्मीद रखते थे अपितु वह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिये अपने ख़ून की आख़री बूँद तक बहाने के लिये तैयार थे । और उनकी सर्वोत्तम इच्छा केवल यह थी कि एक ख़ुदा का एकेश्वरवाद (तौहीद) और उसकी तब्लीग़ एवं प्रचार को दुनिया में स्थापित कर दें । एक के पश्चात् एक फ़ौज गुज़र रही थी कि इतने में अश्जा क़बीले की सेना गुज़री, इस्लाम की मुहब्बत और उसके लिये न्योछावर होने का जोश उनके चेहरों और उनके नारों से प्रकट हो रहा था । अबु सुफ़ियान ने कहा अब्बास यह कौन हैं ? अब्बास ने कहा यह अश्जा क़बीला है । अबु सुफ़ियान ने आश्चर्यचकित होकर अब्बास का मुँह देखा और कहा पूरे अरब में इनसे बढ़कर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई दुश्मन नहीं था । अब्बास(र) ने कहा यह अल्लाह का फ़ज़ल (कृपा) है । जब उसने चाहा उनके दिलों में इस्लाम की मुहब्बत दाख़िल कर दी । सबसे अंत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुहाजरीन और अनसार की सेना लिये हुए गुज़रे । यह लोग दो हज़ार की संख्या में थे और सर से लेकर पैर तक कवच में ढके हुए थे । हज़रत उमर उनकी कतारों को ठीक करते चल रहे थे और फ़रमाते जाते थे कि क़दमों को संभाल कर चलो ताकि कतारों की दूरी ठीक रहे । इन

पुराने फ़िदाकारों (जान नियोछावर करने वालों) का इस्लाम का जोश और उनका संकल्प और उनका उत्साह उनके चेहरों से टपकता था । अबु सुफ़ियान ने उनको देखा तो उसका मन दहल् गया । उसने पूछा अब्बास(र) यह कौन लोग हैं । उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अनसार और मुहाजरीन की फ़ौज में जा रहे हैं । अबु सुफ़ियान ने कहा, इस फ़ौज का मुक़ाबला करने की दुनिया में किस को ताक़त है । फिर वह अब्बास(र) से सम्बोधित हुआ और कहा अब्बास ! तुम्हारे भाई का बेटा आज दुनिया का सबसे बड़ा बादशाह हो गया है । अब्बास(र) ने कहा, अब भी तेरे दिल की आँखें नहीं खुलीं, यह बादशाहत नहीं नबुव्वत है । अबु सुफ़ियान ने कहा हां हां, अच्छा फिर नबुव्वत ही सही । जिस समय यह फौज अबु सुफ़ियान के सामने से गुज़र रही थी अनसार के कमान्डर साअ्द बिन ओबादा(र) ने अबु सुफ़ियान को देखकर कहा, आज ख़ुदा तआला ने तलवार के ज़ोर से मक्का में दाखिल होना हमारे लिये हलाल कर दिया है । आज कुरैश क़ौम ज़लील कर दी जायगी । जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबु सुफ़ियान के पास से गुज़रे तो उसने ऊँची आवाज़ से कहा, हे अल्लाह के रसूल ! क्या आपने अपनी क़ौम (जाति) के क़त्ल की आज्ञा दे दी है ?

अभी अभी अनसार के सरदार सअद(र) और उनके साथी ऐसा-ऐसा कह रहे थे । उन्होंने ऊँचे स्वर में यह कहा है आज लड़ाई होगी और मक्का की हुर्मत (पवित्रता) आज हमको लड़ाई से नहीं रोक सकेगी और क़ुरैश को हम ज़लील व अपमानित करके छोड़ेंगे । हे अल्लाह के रसूल ! आप दुनिया में सबसे अधिक नेक व पवित्र, सबसे अधिक रहीम व दयावान और सबसे अधिक सिला रहम अथवा रिश्तेदारों से सद्व्यवहार करने वाले व्यक्ति हैं । क्या आज आप अपनी क़ौम के अत्याचारों को भूल न जायेंगे ? अबु सुफ़ियान की यह शिकायत और विनती सुनकर वह मुहाजरीन भी जिनको मक्का की गलियों में पीटा और मारा जाता था, जिनको घरों और जायदादों से बेदखल किया जाता था, तड़प गए और उनके दिलों में भी मक्का के लोगों के प्रति हमदर्दी व उदारता उत्पन्न हो गई । उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल अनसार ने मक्का वालों के अत्याचारों की जो घटनाएँ सुनी हैं उनकी वजह से हम नहीं जानते कि वह आज क़ुरैश के साथ कैसा व्यवहार करेंगे । रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबु सुफ़ियान ! सअद ने ग़लत कहा है। आज रहम का दिन है । आज अल्लाह तआला क़ुरैश और ख़ानः काबः को सम्मान प्रदान करने वाला है । फिर आप(स) ने एक आदमी को सअद(र) की ओर भेजा और फ़रमाया अपना झण्डा अपने बेटे क़ैस को दे दो कि वह तुम्हारे स्थान पर अनसार की सेना का कमांडर होगा ।

(अल् सीरतुल हल्बिय्यः भाग, 3, पृ. 93)

इस प्रकार आप(स) ने मक्का वालों का भी दिल रख लिया और अनसार के दिलों को भी दुःख पहुँचने से बचा लिया । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़ैस पर पूरा भरोसा भी था । क़ैस बहुत ही नेक तबियत के नौजवान थे । इतने सरल स्वभाव के कि उनके सम्बन्ध में इतिहास में लिखा है कि उनकी मृत्यु के निकट जब कुछ लोग उनकी अयादत अर्थात हाच-चाल पूछने के लिये आए और कुछ नहीं आए तो उन्होंने अपने दोस्तों से पूछा कि क्या कारण है कि मेरे कुछ जानने वाले भी मेरा हाल चाल पूछने नहीं आए । उनके दोस्तों ने कहा कि आप दानशील व्यक्ति हैं, आप प्रत्येक व्यक्ति को उसकी दुःख की घड़ी में कर्ज़ दे देते हैं । नगर के बहुत से लोग आप का क़र्ज़ लौटाने वाले हैं और वह इस लिये आप का हाल पता करने नहीं आए कि हो सकता है कि आप को रूपयों की आवश्यकता हो और आप उनसे रूपया मांग बैठें । आपने फ़रमाया कि ओ हो अकारण ही मेरे दोस्तों को तकलीफ़ हुई । अतः मेरी ओर से सारे शहर में घोषणा करवा दो कि प्रत्येक व्यक्ति जिस पर क़ैस का कर्ज़ है वह उसे माफ़ है । इस पर इतने लोग उनका हाल पता (बीमार पुर्सी) करने के लिए आए कि उनके मकान की सीढ़ियाँ टूट गईं । जब फ़ौज गुज़र गई तो अब्बास(र) ने अबु सुफ़ियान से कहा, अब अपनी सवारी दौड़ाकर मक्का पहुँचो और उन लोगों को सूचित कर दो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आ गए हैं और उन्होंने इस इस रूप में मक्का के लोगों को अमान (सुरक्षा) प्रदान की है । इस प्रकार अबु सुफ़ियान अपने मन में ख़ुश था कि उसने मक्का के लोगों के बचाओ का रास्ता निकाल लिया है परन्तु उसकी पत्नी हिन्दा ने जो प्रथम दिन से इस्लाम से बहुत ही द्वेष और दुश्मनी रखने की शिक्षा लोगों को देती आई थी, यद्यपि वह काफ़िर होने के बावजूद में एक बहादुर औरत थी । उसने आगे बढ़कर अपने पति की दाढ़ी

पकड़ ली और मक्का वालों को आवाज़ें देने लगी कि आओ और इस बूढ़े मूर्ख को क़त्ल कर दो । क्योंकि यह इसके विपरीत तुम को उपदेश देता कि जाओ और अपनी जानों और अपने शहर के सम्मान के लिये लड़ते हुए मारे जाओ, बल्कि यह तुम में अमन और सुरक्षा की घोषणा कर रहा है । अबु सुफ़ियान ने उसके ऐसा करने पर कहा मूर्ख यह ऐसी बातों का समय नहीं, जा और अपने घर में छुप जा, मैं उस सेना को देख कर आया हूँ जिस सेना के मुक़ाबले की पूरे अरब में ताकत नहीं है । फिर अबु सुफ़ियान ने ऊँची आवाज़ से अमान एंव सुरक्षा की शर्तें बयान करनी आरम्भ कीं और लोग अंधां धुंध उन घरों और उन स्थानों की ओर दौड़ पड़े जिनसे सम्बन्धित सुरक्षा की घोषणा की गई थी । केवल ग्यारह पुरुष और चार औरतें ऐसी थीं जिनके सम्बन्ध में हिंसक अत्याचार क़त्ल और फ़साद के जुर्म साबित थे । मानो वह जंगी मुज्रिम अथवा दोषी थे और उनके सम्बन्ध में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश था कि वह क़त्ल कर दिये जायें, क्योंकि वह केवल कुफ़र और लड़ाई के दोषी ही नहीं, अपितु जंगी दोषी हैं ।

इस अवसर पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ालिद बिन् वलीद(र) को बड़ी सख्ती से आदेश दिया था कि जब तक कोई व्यक्ति तुम से न लड़े तुम ने नहीं लड़ना, परन्तु जिस ओर से ख़ालिद(र) शहर में दाख़िल हुए उस तरफ़ अमन व सुरक्षा दिये जाने की घोषणा अभी तक नहीं पहुँची थी । उस क्षेत्र की फौज ने ख़ालिद(र) का मुक़ाबला किया और 24 आदमी मारे गए । चूँकि ख़ालिद(र) का स्वभाव बड़ा जोशीला था किसी ने दौड़कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना दे दी और निवेदन किया कि ख़ालिद(र) को रोका जाए अपितु वह सारे मक्का वालों को क़त्ल कर देगा । आपने शीघ्र ही ख़ालिद को बुला भेजा और फ़रमाया क्या मैंने तुम को लड़ाई से मना नहीं किया था ? ख़ालिद(र) ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! आपने मना तो फ़रमाया था परन्तु इन लोगों ने पहले हम पर हमला किया और तीर बरसाने शुरू कर दिये । मैं कुछ देर तक रुका और मैंने कहा हम तुम पर हमला नहीं करना चाहते, तुम ऐसा न करो, परन्तु जब मैंने देखा कि यह किसी प्रकार रुकेंगे नहीं तो फिर मैं उनसे लड़ा और ख़ुदा ने उनको चारों ओर छिन्न-भिन्न कर दिया । केवल इस छोटी सी घटना के अतिरिक्त कोई और घटना नहीं घटी और मक्का पर मुहम्मद

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का क़ब्ज़ा हो गया । जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का में प्रवेश किया आपसे लोगों ने पूछा हे अल्लाह के रसूल ! क्या आप अपने घर में ठहरेंगे ? आप ने फ़रमाया क्या अक़ील (यह आप के चचेरे भाई थे) ने हमारे लिये कोई घर छोड़ा भी है ? अर्थात मेरी हिजरत (स्वदेश त्याग) के बाद मेरे रिश्तेदारों ने मेरी सारी जायदाद बेच-बाच कर खा ली है । अब मक्का में मेरे लिये कोई ठिकाना नहीं है । फिर आप ने फ़रमाया हम ख़ैफ़ बनी कनाना में ठहरेंगे । यह मक्का का एक मैदान था । जहां क़ुरैश और कनाना क़बीला ने मिलकर क़समें खाई थीं कि जब तक बनु हाशिम और बनु अब्दुल मुत्लिब् मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पकड़ कर हमारे हवाले न कर दें और उनका साथ न छोड़ दें, हम उनसे न विवाह सम्बन्ध रखेंगे, न खरीदो फरोख्त (क्रय-विक्रय) करेंगे । इस प्रतिज्ञा के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके चाचा अबु तालिब और आपकी जमात के सभी लोग घाटी अबु तालिब में अपने बचाओ के लिये शरणागत हो गए । इस प्रकार तीन साल की कठोर तकलीफों के पश्चात् ख़ुदा तआला ने उन्हें वहां से मुक्ति दिलाई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस स्थान को चुनना कितना उपयुक्त था । मक्का वालों ने इसी स्थान पर कस्में खाई थीं कि जब तक मुहम्मद रसूलुल्लह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे हवाले न कर दिये जाएँ हम आपके क़बीला से समझौता नहीं करेंगे । आज मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसी मैदान में पड़ाव डाला । मानो आप मक्का वालों से कह रहे हों कि जहां तुम चाहते थे मैं वहां आ गया हूँ परन्तु बताओ तो सही क्या आज तुम में ताक़त है कि आज मुझे अपने ज़ुल्मों का निशाना बना सको । वह स्थान जहां तुम मुझे अपमानित और प्रकोप ग्रस्त रूप में देखना चाहते थे और इच्छा रखते थे कि मेरी क़ौम मुझे पकड़ कर इस स्थान पर तुम्हारे हवाले कर दे । वहां मैं ऐसे रूप में आया हूँ कि मेरी क़ौम ही नहीं सारा अरब मेरे साथ है और मेरी क़ौम ने मुझे तुम्हारे हवाले नहीं किया अपितु मेरी क़ौम (जाति) ने तुम्हें मेरे हवाले कर दिया है । ख़ुदा तआला का यह भी एक करिश्मा है कि यह दिन भी पीर (सोमवार) का दिन था । और इस ही दिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ारे सौर (सौर गुफ़ा) से निकल कर सिर्फ अबु बकर(र) के साथ मदीना की ओर हिजरत (स्वदेश त्याग)

कर गए थे। और इसी दिन जिसमें आपने बड़े दु:ख से सौर पहाड़ी पर से मक्का की ओर देखते हुए कहा था, हे मक्का तू मुझे दुनिया की सब बस्तियों से प्यारी है परन्तु तेरे निवासी मुझे उस स्थान पर रहने नहीं देते।

मक्का में प्रवेश करते समय हज़रत अबु बकर(र) आपकी ऊँटनी की लगाम पकड़े हुए आपके साथ बातें करते जा रहे थे और सूर: फ़त्ह जिसमें मक्का की विजय की ख़बर दी गई थी वह भी पढ़ते जाते थे । आप सीधे ख़ान: काब: की ओर आए और ऊँटनी पर बैठे-बैठे सात बार ख़ान: काब: का तवाफ़ (चक्कर) किया । उस समय आप के हाथ में एक छड़ी थी । आप ख़ान: काब: के चारों ओर जिसे हज़रत इब्राहीम(अ) और उनके बेटे हज़रत इस्माईल(अ) ने एक ख़ुदा की इबादत (पूजा) के लिये बनाया था । चक्कर लगाया और वह (360) तीन सौ साठ बुत जो उस स्थान पर रखे हुए थे । उनमें से एक एक बुत पर छड़ी मारते जाते थे और यह कहते जाते थे ।

جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ط اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا

यह वह आयत है जो हिजरत (स्वदेशत्याग) से पूर्व सूर: बनी इस्राईल में आप पर नाज़िल (अल्लाह की ओर से उतरी) हुई थी । और जिसमें हिजरत तथा फिर मक्का की फ़त्ह की ख़बर दी गयी थी । यूरोप के लेखक भी इस बात पर सहमत हैं कि यह सूर: हिजरत से पहले की है । इस सूर: में ये वर्णन किया गया है कि :-

وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِىْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِىْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّىْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطَانًا نَّصِيْرًا ٥ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ط اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا٥ (بنی اسرائیل:۸۱-۸۲)

(बनी इस्राईल, आयत 81-82)

अर्थात् तू कह दे ऐ मेरे रब्ब ! मुझे इस शहर अर्थात् मक्का में नेक (अच्छे) ढंग से दाखिल करना अर्थात् हिजरत के पश्चात् फ़त्ह और ग़ल्ब: (आधिपत्य) देकर और इस शहर से ख़ैरियत (अच्छे ढंग) से निकालना अर्थात हिजरत के समय, और स्वयं ही अपने तरफ से मुझे ग़ल्ब: और

सहायता के, सामान भेजना तथा यह भी कहो कि हक़ (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य) अर्थात शिर्क (अनेकेश्वरवाद) पराजित होकर भाग गया है और बातिल अर्थात शिर्क (अनेकेश्वरवाद) के लिये तो भागना सदैव से ही मुकद्दर था । इस पेशगोई (भविष्यवाणी) का शब्द-शब्द पूरा होने तथा हज़रत अबु बकर(र) का उस समय इसका तिलावत करने से मुसलमानों और कुफ़्फ़ार के मन में जो भावनाएँ उत्पन्न हुई होंगी वह शब्दों में वर्णन नहीं की जा सकतीं । भाव यह कि उस दिन फिर इब्राहीम(अ) का स्थान एक ख़ुदा की इबादत के लिये खास तौर से चुन लिया गया । और बुत सदा के लिये तोड़ दिये गए । जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुबुल नामी बुत के ऊपर अपनी छड़ी मारी और वह अपने स्थान से गिरकर टूट गया । तो हज़रत ज़ुबैर(र) ने अबु-सुफ़ियान की तरफ़ मुस्कुराते हुए देखा और कहा अबु सुफ़ियान याद है उहद (की जंग) के दिन जब मुसलमान घावों से चूर एक तरफ़ खड़े हुए थे, तुमने अपने अहंकार में यह ऐलान किया (था) कि ओलो हुबुल, ओलो हुबुल, हुबुल (बुत) की जय हो, हुबुल की जय हो और यह कि हुबुल ने ही तुमको उहद (की जंग) के दिन तुम्हें मुसलमानों पर विजय दी थी, आज देखते हो वह सामने हुबुल के टुकड़े पड़े हैं । अबु सुफ़ियान ने कहा, ज़ुबैर यह बातें छोड़ो, आज हम भली भांति देख रहे हैं कि यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुदा के अतिरिक्त कोई और ख़ुदा भी होता तो आज जो कुछ हम देख रहे हैं इस प्रकार कभी न होता । फिर आप ने खानः काबः के अन्दर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के जो चित्र आदि बने हुए थे उनके मिटाने का आदेश दिया और खानः काबः में खुदा तआला के वादों के पूरा होने के शुक्रिया के रूप में दो रक्अत नमाज़ पढ़ी । खानः काबः में बने चित्रों को मिटाने के लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर(र) को नियुक्त किया था । उन्होंने इस विचार से कि हज़रत इब्राहीम(अ) को तो हम भी मानते हैं हज़रत इब्राहीम(अ) के चित्र को नहीं मिटाया । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब इस चित्र को बना हुआ पाया तो फ़रमाया उमर ! तुमने यह क्या किया । क्या ख़ुदा ने यह नहीं फ़रमाया कि :-

مَا كَانَ إِبْرَاهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ○ (سورۃ آل عمران:٦٨)

(सूर: आले इम्रान, आयत 68)

अर्थात इब्राहीम(अ) न यहूदी था, न नसरानी (इसाई) बल्कि वह ख़ुदा तआला का पूरा-पूरा फ़रमाबरदार तथा ख़ुदा तआला की सारी सच्चाइयों को मानने वाला और ख़ुदा तआला का मवह्हिद अर्थात एक ख़ुदा को मानने वाला बन्दा था । अतः आपके आदेश पर यह चित्र भी मिटा दिया गया । ख़ुदा तआला के चमत्कार को देखकर उस दिन मुसलमानों के दिल ईमान से भरते चले जा रहा थे और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शान पर उनका विश्वास बढ़ रहा था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब ज़म-ज़म के चश्मे से पानी पीने का मंगवाया (जो इस्माईल(अ) पुत्र इब्राहीम(अ) के लिये अल्लाह तआला ने चमत्कार के रूप में स्रोत निकाला था)। उसमें से पानी पीने के बाद कुछ पानी बचा तो उससे आप ने वज़ू किया। तो आप के शरीर से पानी की एक बूँद भी धरती पर नहीं गिर सकी, मुसलमान शीघ्र ही उसे उचक लेते और बरकत के तौर पर अपने शरीर पर मल लेते थे । और मुश्रिक यह कह रहे थे कि हमने दुनिया का कोई ऐसा बादशाह नहीं देखा जिसके साथ उसकी प्रजा को इतनी मुहब्बत हो । जब आप इन बातों से फ़ारिग (निश्चिंत) हुए और मक्का वाले आप की सेवा में प्रस्तुत किए गए तो आप ने फ़रमाया हे मक्का के लोगो ! तुमने देख लिया कि ख़ुदा तआला के निशानात (चमत्कार) किस प्रकार ज्यों का त्यों पूरे हुए हैं। अब बताओ कि तुम्हारे उन अत्याचारों और शरारतों का क्या बदला दिया जाए । जो तुमने एक खुदा की इबादत करने वाले ग़रीब लोगों पर किए थे । मक्का के लोगों ने कहा कि हम आप से उसी व्यवहार की आशा रखते हैं जो यूसुफ़(अ) ने अपने भाइयों से किया था । यह ख़ुदा की क़ुद्रत (शक्ति का करिश्मा) थी कि मक्का वालों के मुँह से वही शब्द निकले जिनकी भविष्यवाणी सूर: यूसुफ़ में ख़ुदा तआला ने पहले से कर रखी थी और फ़तह मक्का से दस वर्ष पूर्व ही बता दिया था कि तू मक्का वालों से वैसा ही

व्यवहार करेगा जैसा यूसुफ़(अ) ने अपने भाईयों से किया था। अत: जब मक्का वालों के मुख से यह बात सिद्ध हो गई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही यूसुफ़(अ) के मसील (तुल्य) थे और यूसुफ़ की तरह ही अल्लाह तआला ने उनको अपने भाईयों पर फ़त्ह (विजय) दी थी तो आपने भी घोषणा कर दी कि :-

تَا اللّٰهِ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ

''तल्लाहे ला तस्रीब अलैकुमुल् यौम'' ख़ुदा की क़सम आज तुम्हें किसी प्रकार का दण्ड नहीं दिया जायेगा और न किसी प्रकार की डाँट-डपट की जायेगी। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम काब: के ज़ियारत (दर्शनों) से संबंधित इबादत (पूजा) के कार्यों में व्यस्त थे और अपनी क़ौम (जाति) के साथ कृपा और दया तथा माफ़ी देने में लगे हुए थे तो अनसार के दिल अन्दर ही अन्दर बैठे जा रहे थे और वह एक दूसरे से इशारों में कह रहे थे। शायद आज हम ख़ुदा के रसूल को अपने से जुदा (पृथक) कर रहे हैं। क्योंकि ख़ुदा तआला ने उनका शहर उनके हाथ पर विजय कर दिया है और उनका क़बीला उन पर ईमान ले आया है। उस समय अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वही (ईशवाणी) के द्वारा अनसार की सारी शंकाओं की सूचना दे दी। आप ने सिर उठाया, अनसार की ओर देखा और फ़रमाया हे अनसार ! तुम समझते हो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने शहर की मुहब्बत सताती होगी और अपनी क़ौम की मुहब्बत उसके मन में गुदगुदियां लेती होगी। अनसार ने कहा हां हे अल्लाह के रसूल यह ठीक है हमारे दिल में ऐसा विचार गुज़रा था। आप ने फ़रमाया तुम्हें पता है मेरा नाम क्या है। अर्थात यह कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ तथा उसका रसूल कहलाता हूँ फिर किस प्रकार हो सकता है कि तुम लोगों को जिन्होंने दीने इस्लाम की कमज़ोरी के समय अपनी जानें न्योछावर कीं उन्हें छोड़ कर किसी और स्थान पर चला जाऊँ। फिर फ़रमाया हे अनसार ! ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ। मैंने ख़ुदा के लिये अपने देश को छोड़ा था। इसके बाद मैं अपने देश वापस नहीं जा सकता। मेरा जीवन तुम्हारे जीवन से है और मेरी मौत

तुम्हारी मौत से सम्बंधित है । मदीना के लोग आपकी यह बातें सुनकर और आपके प्रेम और वफ़ादरी को देखकर रोते हुए आगे बढ़े और कहा, हे अल्लाह के रसूल ! ख़ुदा की क़सम हमने ख़ुदा और उसके रसूल के सम्बन्ध में कुधारणा (बदज़न्नी) से काम लिया । वास्तविक्ता यह है कि हमारे दिल इस धारणा को सहन नहीं कर सके कि ख़ुदा का रसूल हमें और हमारे शहर को छोड़कर कहीं और चला जाए । आपने फ़रमाया अल्लाह और उसका रसूल तुम लोगों को बरी (मुक्त) समझते हैं और तुम्हारे इख़्लास (निस्वार्थता) की तस्दीक करते हैं । जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और मदीना के लोगों में यह प्रेम और बुहब्बत की बातें हो रही होंगी, यदि मक्का के लोगों की आखों ने आँसू नहीं बहाए होंगे तो उनके दिल अवश्य ही आँसू बहा रहे होंगे कि वह क़ीमती हीरा जिससे बढ़कर कोई बहुमूल्य चीज़ इस दुनिया में पैदा नहीं हुई, ख़ुदा ने उनको दिया था परन्तु उन्होंने उसको अपने घरों से निकाल कर फेंक दिया । अत: अब जब कि वह ख़ुदा के फ़ज़ल और उसकी कृपा तथा सहायता के साथ दोबारा मक्का में आया था तो वह अपने वादा को पूरा करते हुए अपनी इच्छा और अपनी खुशी से मक्का को छोड़कर मदीना वापस जा रहा है ।

जिन लोगों के सम्बन्ध में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फैसला फ़रमाया था कि उनके अत्याचारी कार्यों और यातनाओं के कारण वह क़त्ल किये जायें उनमें से अधिकतर को कुछ मुसलमानों की सिफ़ारिश पर आपने छोड़ दिया । उन्हीं लोगों में से अबु जहल का बेटा अक्रम: भी था । अक्रम: की पत्नी दिल से मुसलमान थी । उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल ! अक्रम: को भी आप माफ़ कर दें । आपने फ़रमाया हां-हां हम उसे माफ़ करते हैं । अक्रम: भाग कर यमन की ओर जा रहे थे कि पत्नी अपने पति के प्यार में उसे तलाश करती हुई पीछी-पीछे गई । जब वह समुद्र तट पर किश्ती में बैठकर अरब को सदा के लिये छोड़ने पर तैयार था कि परेशान हाल, नंगे सर, घबराई हुई उसकी पत्नी वहां पहुँची और कहा हे मेरे चचा के बेटे ! (अरब औरतें अपने पति को चचा का बेटा कहा करती थीं) इतने शरीफ़ (भद्र-पुरुष) और इतने दयावान व्यक्ति को छोड़कर कहां जा रहे हो । अकरम: ने चकित होकर

अपनी पत्नी से पूछा क्या मेरी उन सारी दुश्मनियों के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे माफ़ कर देंगे ? अक्रमः की पत्नि ने कहा हां-हां ! मैंने उनसे वादा ले लिया है और उन्होंने तुम को माफ़ कर दिया है । जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने प्रस्तुत हुए तो निवेदन की कि हे अल्लाह के रसूल ! मेरी पत्नी कहती है कि आपने मुझ जैसे व्यक्ति को भी माफ़ कर दिया है तो आप ने फ़रमाया तुम्हारी पत्नी ठीक कहती है । हमने तुम को माफ़ कर दिया है । अक्रमः ने कहा कि जो व्यक्ति इतने कट्टर दुश्मन को माफ़ कर सकता है वह झूठा नहीं हो सकता । मैं गवाही देता कि अल्लाह एक है और उसका कोई साथी नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तुम उसके बन्दे और उसके रसूल हो । और फिर उसने लज्जा से अपना सिर झुका लिया । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी शर्म की हालत को देखकर उसके मन की शांति के लिये फ़रमाया । अक्रमः हमने तुम्हें केवल माफ़ ही नहीं किया बल्कि उससे अधिक यह बात भी है कि यदि आज तुम मुझ से कोई ऐसी चीज़ मांगो जिसके देने की मुझमें ताकत हो तो मैं वह भी तुम्हें दे दूँगा । अक्रमः ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! मेरी इससे अधिक क्या इच्छा हो सकती है कि आप ख़ुदा तआला से ये दुआ करें कि मैंने जो आपकी दुश्मनियाँ की हैं वह मुझे माफ़ कर दें । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया हे मेरे अल्लाह ! वह सारी दुश्मनियाँ जो अक्रमः ने मुझ से की है उन्हें उसे माफ़ कर दे और वह सारी गालियाँ जो उसके मुँह से निकली हैं वह उसे माफ़ कर दे । फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उठे और अपनी चादर उतारकर उसके उपर डाल दी और फ़रमाया जो अल्लाह पर ईमान लाते हुए हमारे पास आता है हमारा घर उसका घर और हमारी जगह उसकी जगह है ।

अकरमः के ईमान लाने से वह भविष्यवाणी पूरी हुई जो कई साल पहले मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा(र) से बयान फ़रमाई थी कि मैंने सपने में देखा है कि जैसे मैं स्वर्ग में हूँ । वहां मैंने अंगूर का एक गुच्छा देखा और लोगों से पूछा कि यह किस के लिये है ? तो किसी उत्तर देने वाले ने कहा अबु जहल के लिये । यह बात मुझे

अद्भुत लगी । अतः मैंने कहा स्वर्ग में तो केवल मोमिन के और कोई दाखिल नहीं होता फिर जन्नत (स्वर्ग) में अबु जहल के लिये अंगूर कैसे लाए गए हैं । जब अक्रमः ईमान लाया तो आपने फ़रमाया वह गुच्छा अक्रमः का था। ख़ुदा ने बेटे के स्थान पर बाप का नाम प्रकट किया । जैसा कि सपनों में अधिकतर ऐसा हो जाया करता है ।

(अस्सीरतुल हल्बियः, भाग 3, पृ. 104)

वह लोग जिनके क़त्ल का आदेश दिया गया था उनमें वह व्यक्ति भी सम्मिलित था जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बेटी हज़रत ज़ैनब(र) की मौत का कारण बना था। उस व्यक्ति का नाम हिबा था । उसने हज़रत ज़ैनब(र) के ऊँट का तंग (काठी बांधने की रस्सी) काट दिया था और हज़रत ज़ैनब(र) ऊँट से नीचे गिर पड़ीं थीं । जिसके कारण गर्भपात हो गया तथा कुछ समय पश्चात् उनकी मृत्यु हो गई । दूसरे जुर्मों के अतिरिक्त केवल यह दोष (जुर्म) भी उसको क़त्ल का दोषी ठहराने के लिये काफी था । ये व्यक्ति भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में प्रस्तुत हुआ और उसने कहा, हे अल्लाह के नबी ! मैं आपसे भाग कर ईरान की ओर चला गया था । फिर मैंने विचार किया कि अल्लाह तआला ने अपने नबी के द्वारा हमारे अनेकश्वर वाद के विचारों को दूर किया है और हमें रूहानी (आध्यात्मिक) मौत से बचाया है । मेरा दूसरे लोगों में जाने से अच्छा है कि क्यों न मैं उसके पास जाऊँ और अपने पापों को इक़रार करके उससे माफ़ी मांग लूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा हिबा ! जब ख़ुदा ने तुम्हारे दिल में इस्लाम की मुहब्बत पैदा कर दी है तो मैं तुम्हारे पापों को क्यों न माफ़ करूँ । जाओ मैंने तुम्हें माफ़ किया, इस्लाम ने तुम्हारे पहले सारे अपराध मिटा दिये हैं।

यहां विस्तार का अवसर नहीं कि मैं इस लेख को लम्बा करूँ अपितु इन खतरनाक दोषियों में से जिन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने छोटे-छोटे बहानों पर माफ़ फ़रमा दिया, अधिकतर की घटनाएँ इतनी दुःखद और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रहम और दया को इतना स्पष्ट करने वाली हैं कि एक पत्थरदिल (निष्ठुर) व्यक्ति भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

# हुनैन की जंग

चूँकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मक्का में प्रवेश यकायक हुआ । इसलिये मक्का से कुछ ही दूरी पर जो क़बीले विशेषत: दक्षिण की ओर रहते थे । उन्हें मक्का पर हमले की सूचना उस समय हुई जब आप मक्का में दाख़िल हो चुके थे । इस सूचना के मिलते ही उन्होंने अपनी फ़ौजें इकट्ठी करनी शुरू कर दीं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुक़ाबला की तैयारी करने लगे । हवाज़न और सक़ीफ़ दो अरबी क़बीले अपने आप को विशेषकर बहादुर समझते थे । उन्होंने आपस में विचार विमर्श करके अपने लिये एक सरदार चुन लिया तथा मालिक बिन् औफ़ नामी व्यक्ति को अपना सरदार नियुक्त किया । उसके पश्चात् उन्होंने आस-पास के क़बीलों को दावत दी कि वह भी आकर उनके साथ सम्मिलित हो जाएँ । इन्हीं क़बीलों में बनु सअ्द बिन् बकीर भी थे । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दाई हलीमा (जिन्होंने आप को दूध पिलाया था) इसी क़बीला में से थीं । और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसलम ने बचपन की उम्र इसी क़बीला में गुज़ारी थी । ये लोग एकत्रित हो कर मक्का की तरफ चल पड़े तथा उन्होंने अपने साथ अपना माल एवं अपनी पत्नियों और बच्चों को भी ले लिया । जब उनके सरदारों से पूछा गया कि उन्होंने ऐसा क्यों किया है ? इसके उत्तर में उन्होंने कहा, इसलिये ताकि सिपाहियों को याद रहे कि यदि हम भागे तो हमारी पत्नियाँ और बच्चे क़ैद हो जायेंगे तथा हमारा माल लूट लिया जायेगा । इससे पता चलता है कि वे कितना दृढ़ संकल्प करके मुसलमानों को बर्बाद करने के लिये निकले थे । अन्तत: इस फ़ौज ने औतास घाटी में डेरा डाला जो जंगी व्यवस्थाओं को देखते हुए एक बहुत ही उचित घाटी थी क्योंकि इसमें छुपने की भी जगहें थी तथा जानवरों के लिये चारा और मनुष्यों के लिये पानी भी मौजूद था । इसी प्रकार घोड़े दौड़ाने के लिये मैदान भी उचित था । जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस की सूचना मिली तो आप ने अब्दुल्लाह बिन अबी हदरद(र) नामी एक सहाबी को जानकारी प्राप्त करने के लिये भेजा । अब्दुल्लाह ने आकर बताया कि फ़ौज के एकत्रित होने की सूचना सच है और वह लड़ने-मरने पर तत्पर हैं ।

चूँकि यह क़ौम तीर चलाने में बड़ी निपुण थी और जिस स्थान पर उन्होंने डेरा डाला था वह स्थान भी ऐसा था कि केवल थोड़ी सी जगह पर लड़ाई की जा सकती थी परन्तु इस स्थान पर भी आक्रमणकारी बड़ी सफाई से तीरों का निशाना बन सकता था । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मक्का के सरदार सफ़वान से जो बहुत धनवान और व्यापारी था, इस जंग के लिये हथियार और कुछ रुपया मांगा । सफ़वान ने कहा हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) क्या अपनी हुकूमत के बल पर आप मेरा माल छीनना चाहते हैं ? आपने फ़रमाया नहीं हम छीनना नहीं चाहते अपितु तुमसे उधार के रूप में मांगते हैं तथा उसकी ज़मानत देने के लिये तैयार है । इस पर उसने कहा फिर ठीक है । आप मुझ से यह चीज़ें ले लें । अतः उसने सौ कवच तथा उनके साथ उचित हथियार उधार के रूप में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दिये । इसके अतिरिक्त तीन हज़ार रुपया उधार दिया । इसी प्रकार आपने अपने चचेरे भाई नौफ़ल बिन् हारिस से तीन हज़ार नेज़े (भाले) अस्थाई रूप में लिये । जब यह फ़ौज हवाज़न की ओर चली तो मक्का वालों ने इच्छा प्रकट की कि यद्यपि हम मुसलमान नहीं परन्तु अब हम इस्लामी हुकूमत में शामिल हो चुके हैं हमें भी लड़ाई में सम्मिलित होने का अवसर दिया जाए । अतः दो हज़ार सैनिक मक्का से आप के साथ चले । मार्ग में अरब की एक प्रसिद्ध दर्गाह (तीर्थ स्थान) पड़ती थी जिसको 'ज़ाते अन्वात' कहते थे । यह एक पुराना बेरी का पेड़ था । जिसको अरब वासी पवित्र मानते थे । अरब के बहादुर जब कोई हथियार ख़रीदते तो पहले 'ज़ाते अन्वाद' में जाकर लटकाते थे ताकि उसको बरकत प्राप्त हो । जब सहाबा उसके पास से गुज़रे तो कुछ ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! हमारे लिये भी आप एक 'ज़ाते अन्वात' स्थापित करें । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह बड़ा है, यह तो वही मूसा(अ) की क़ौम वाली बात हुई कि जब वह कन्आन की ओर चले और उन्होंने कन्आन के लोगों को बुत पूजते हुए देखा तो मूसा(अ) से कहा —

یا موسی اجعل لنا الها کما لهم الهة. (سورة اعراف: ۱۳۹)

हे मूसा जिस तरह इन के माबूद (उपास्य) हैं हमारे लिये भी कोई

उपास्य बना दीजिए । (सूरः आराफ़, आयत 139)

फ़रमाया यह तो मूर्खता की बातें हैं मैं डरता हूँ कि कहीं इस प्रकार के वहमों (भ्रम) के कारण कहीं तुम में से भी एक दल ऐसी हरकतें न करने लग जाए ।

हवाज़न और उनके सहायक क़बीलों ने मुसलमानों पर हमला करने के लिये एक कमीनगाह (घात लगाकर बैठने की जगह) बना छोड़ा था जैसे आजकल लड़ाई के मैदान में छुपी खंदकें होती हैं । जब इस्लामी सेना हुनैन के स्थान पर पहुँची तो वह उनके सामने छोटी-छोटी मुन्ढेरें बनाकर उनके पीछे बैठ गए और बीच में से एक तंग रास्ता मुसलमानों के लिये छोड़ दिया । अधिकतर सिपाही तो इन टीलों के पीछे छुपकर बैठ गए और कुछ सिपाही ऊँटों पर सामने कतारों में खड़े हो गए । मुसलमानों ने समझा कि सेना वही है जो सामने खड़ी है अतः आगे बढ़कर उस पर हमला कर दिया । जब मुसलमान बहुत आगे बढ़ गए तो घात में छुपे हुए सिपाहियों ने देखा कि अब हम अच्छे ढंग से हमला कर सकते हैं तो आगे खड़ी हुई फ़ौज ने सामने से आक्रमण कर दिया । तथा दोनों दिशाओं से तीर अन्दाज़ों ने यकायक तीरों की बरसात कर दी । मक्का के लोग जो यह सोच कर सम्मिलित हुए थे कि आज हमको भी बहादुरी दिखाने का अवसर मिलेगा । इस दोनों दिशाओं से हुए हमला को सहन न कर सके और वापस मक्का की तरफ भागे । यद्यपि मुसलमानों को इस प्रकार की कठिनाईयाँ उठाने की आदत पड़ चुकी थी परन्तु जब दो हज़ार घोड़े और ऊँट उनकी पंक्तियों में से अन्धा-धुन्ध भागते हुए निकले तो उनके घोड़े और ऊँट भी डर गए और सारी की सारी फ़ौज अन्धा धुन्ध पीछे की तरफ भागने लगी । तीनों ओर के आक्रमण में केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप के साथ सिर्फ बारह सहाबी खड़े रहे परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि सारे सहाबी भाग गए थे बल्कि सौ के लगभग और भी लोग मैदान में डटे रहे थे परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुछ दूरी पर खड़े थे । आपके पास एक दर्जन के लगभग आदमी रह गए । एक सहाबी कहते हैं कि मैं और मेरे साथी अत्याधिक प्रयत्न करते थे कि किसी प्रकार हमारी सवारी के जानवर जंग के मैदान की तरफ़ आयें । परन्तु दो हज़ार ऊँटों के भागने के कारण वह ऐसे बिदक गए थे कि हमारे हाथ

लगाम खींचते खींचते ज़ख़्मी हो जाते थे परन्तु ऊँट और घोड़े वापस लौटने का नाम नहीं लेते थे कभी कभी हम सवारी की लगाम इतनी ज़ोर से खींचते थे कि सवारी का सिर उसकी पीठ से लग जाता था परन्तु जब हम एड़ी लगाकर उसको पीछे जंग के मैदान की तरफ़ मोड़ते तो वह पीछे मुड़ने के बजाय और भी तेज़ गति से आगे की तरफ़ भागने लग जातीं । हमारा दिल धड़क रहा था कि पीछे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क्या अवस्था होगी । परन्तु हम बहुत ही मजबूर थे । इधर सहाबा की यह हालत थी और उधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सिर्फ कुछ साथियों के साथ जंग के मैदान में खड़े थे । दाएँ बाएँ और सामने तीनों ओर से तीर पड़ रहे थे और पीछे की तरफ़ केवल एक छोटा सा तंग रास्ता था, जिस में से एक समय में केवल कुछ ही व्यक्ति गुज़र सकते थे परन्तु फिर भी इस रास्ते के अतिरिक्त बचाओ का और कोई साधन नहीं था । उस समय हज़रत अबु बकर(र) ने अपनी सवारी से उतरकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खच्चर की लगाम पकड़ ली और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल ! थोड़ी देर के लिये पीछे हट जायें, यहां तक कि इस्लामी सेना एकत्रित हो जाए । आप(स) ने फ़रमाया अबू बकर(र) मेरी खच्चर की लगाम छोड़ दो और फिर खच्चर को ऐड़ लगाते हुए आपने उस तंग रास्ते पर आगे बढ़ना शुरू किया जिसके दाएँ बाएँ घात लगाए बैठे सिपाही तीर बरसा रहे थे, और फरमाया :-

انا النبی لا کذب انا ابن عبدالمطلب

मैं ख़ुदा का नबी हूँ मैं झूठा नहीं हूँ । परन्तु यह भी याद रखो कि इस ख़तरे के स्थान पर खड़े हुए भी जो मैं दुश्मन के आक्रमण से सुरक्षित हूँ तो इसका यह अर्थ नहीं कि मेरे अन्दर कोई खुदाई शक्ति है अपितु मैं मनुष्य हूँ और अब्दुल् मुतलिब का पौत्र हूँ । फिर आपने अब्बास(र) को जिन की आवाज़ बहुत ऊँची थी आगे बुलाया और फ़रमाया अब्बास(र) ऊँची आवाज़ से पुकार कर कहो कि हे वो सहाबः ! जिन्होंने हुदैबिया के दिन पेड़ के नीचे बैत की थी, और हे वे लोगो ! जो सूरः बकरः के ज़माने से मुसलमान हो खुदा का रसूल तुमको बुलाता है । हज़रत अब्बास(र) ने बड़े ही ऊँचे स्वर में जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह संदेश सुनाया तो उस समय

सहाबा की जो हालत हुई, उसका अन्दाज़ा केवल उन्हीं की ज़ुबान से हालात सुनकर लगाया जा सकता है । वह सहाबी जिनका मैंने उपर वर्णन किया है वह कहते हैं कि हम ऊँटों और घोड़ों को वापस लाने के यत्न कर रहे थे कि अब्बास(र) की आवाज़ हमारे कानों में पड़ी । उस समय हमें ऐसा लगा कि हम इस दुनिया में नहीं बल्कि क़यामत (प्रलय) के दिन ख़ुदा तआला के सामने प्रस्तुत हैं और उसके फ़रिश्ते हमें हिसाब देने के लिये बुला रहे हैं तब हम में से कुछ ने अपनी तलवारें और ढालें अपने हाथों में ले लीं और अपने ऊँटों से कूद पड़े और डरे हुए ऊँटों को उन्होंने खाली छोड़ दिया कि वह जिधर चाहें चले जाएँ और कुछ ने अपनी तलवारों से अपने ऊँटों की गर्दनें काट दीं और स्वयं पैदल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ दौड़ पड़े । वह सहाबी कहते हैं कि उस दिन अनसार इस तरह दौड़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ जा रहे थे जिस प्रकार ऊँटनियाँ और गायें अपने बच्चे के चीख़ने की आवाज़ सुनकर उस तरफ दौड़ पड़तीं हैं । अतः थोड़ी ही देर में सहाबा और विशेषकर अन्सार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गिर्द जमा हो गए और दुश्मन पराजित हो गया ।

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुव्वते कुद्सिया (पवित्र शक्ति) का यह निशान है कि वह व्यक्ति जो कुछ ही दिन पहले आप की जान का दुश्मन था और आपके मुक़ाबला पर कुफ़्फ़ार की फ़ौजों की कमान किया करता था अर्थात् अबु सुफ़यान वह आज हुनैन के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ था । जब कुफ़्फ़ार के ऊँट पीछे की तरफ दौड़े तो अबु सुफ़यान जो बड़ा बुद्धिमान और होशियार व्यक्ति था उसने यह समझ कर कि मेरा घोड़ा भी बिदक जायेगा, शीघ्र ही अपने घोड़े से कूदा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़च्चर की लगाम पकड़े हुए आपके साथ पैदल चल पड़ा । अबु सुफ़ियान का बयान है कि उस समय खिंची हुई तलवार मेरे हाथ में थी और मुझे अल्लाह की क़सम है जो दिलों के भेद जानता है कि मैं उस समय दृढ़ संकल्प के साथ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़च्चर के साथ पहलू में खड़ा था कि कोई व्यक्ति मुझे मारे बिना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक नहीं पहुँच सकता । उस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे

चकित होकर देख रहे थे। शायद आप ये सोच रहे थे कि आज से केवल दस पंद्रह दिन पूर्व यह व्यक्ति क़त्ल के लिये अपनी फ़ौज को लेकर मक्का से निकलने वाला था। लेकिन कुछ ही दिनों में खुदा तआला ने उसके अन्दर ऐसी तबदीली पैदा कर दी है कि मक्का का कमान्डर एक साधारण सिपाही के रूप में मेरी खच्चर की लगाम पकड़े हुए खड़ा है और उसका चेहरा बता रहा है कि यह आज अपनी मौत से अपने पापों का प्रायश्चित करेगा। अब्बास(र) ने जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आश्चर्य से अबुसुफ़यान की तरफ देखते हुए देखा तो कहा हे अल्लाह के रसूल ! यह अबु सुफ़यान आपके चाचा का बेटा और आप का भाई है, आज तो आप इस से खुश हो जायें। आपने फ़रमाया अल्लाह तआला इसकी वह सारी दुश्मनियाँ माफ़ करे जो कि इस ने मेरे साथ की हैं। अबु सुफ़यान कहते हैं उस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझसे मुखातिब हुए और फ़रमाया हे भाई ! तब मैंने मुहब्बत के जोश से आप के उस पैर को जो खच्चर की रकाब में था चूम लिया।

मक्का की विजय के पश्चात् वह जंगी सामान जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अस्थाई रूप में लिया था उसके मालिकों को वापस किया तथा उसके साथ बहुत से तोहफ़े व इनाम भी दिये तो उन लोगों ने यह जान लिया कि यह व्यक्ति इस युग के साधारण व्यक्तियों जैसा नहीं। अतः सफ़वान उसी समय मुसलमान हो गए।

इस जंग की एक और अद्भुत घटना का भी इतिहास में वर्णन मिलता है। शैबः नामी एक व्यक्ति जो मक्का का रहने वाला था। वह ख़ानः काबः की सेवा के लिये नियुक्त था। वह कहता है कि मैं भी इस लड़ाई में शामिल हुआ परन्तु मेरी नीयत यह थी कि जिस समय दोनों सेनाएँ आपस में टकराएँगी तो मैं अवसर पाकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़त्ल कर दूँगा। मैंने दिल में कहा कि अरब और ग़ैर अरब तो दूर रहे यदि सारी दुनिया भी मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के धर्म में दाखिल हो गई तो भी मैं नहीं हूँगा। जब लड़ाई तेज़ हो गई और इधर के लोग उधर के लोगों में मिल गए तो मैंने तलवार खींची और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के निकट होना शुरू कीया। उस समय मुझे प्रतीत हुआ कि मेरे तथा

आपके बीच अग्नि की एक ज्वाला उठ रही है और निकट है कि वह मुझे भस्म कर दे । उस समय मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ सुनाई दी कि शैब: मेरे निकट आओ । जब मैं आपके निकट गया, आपने मेरी छाती पर हाथ फेरा और कहा हे ख़ुदा ! शैब: को शैतानी विचारों से छुटकारा दे । शैब: कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ फेरने के साथ ही मेरे दिल से सारी दुश्मनियाँ तथा शत्रुताएँ ख़त्म हो गयीं और उस समय से मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी आँखों से और अपने कानों से तथा अपने मन से अधिक प्यारे हो गए । फिर आप ने फ़रमाया शैब: आगे बढ़ो और लड़ो । तब मैं आगे बढ़ा और उस समय मेरे मन में इसके अतिरिक्त और कोई इच्छा नहीं थी कि मैं अपनी जान न्योछावर करके भी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान बचाऊँ । यदि उस समय मेरा पिता भी जीवित होता और वह मेरे सामने आ जाता तो मैं अपनी तलवार उसकी छाती में भोंकने से कभी पीछे नहीं हटता ।

(सीरत इब्ने हश्शाम, भाग 3, पृ. 9 तथा ज़ादुल मआद बर हाशिया ज़रक़ानी भाग 4, पृ. 465)

इसके पश्चात आप ताइफ़ की ओर चले, यह वह नगर है जिसके वासियों ने पथराव करते हुए मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने शहर से निकाल दिया था । इस शहर का आपने कुछ समय तक घेराव किया परन्तु फिर कुछ लोगों के परामर्श पर कि इनका घेराव करके समय नष्ट करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि सारे अरब में अब सिर्फ यह शहर कर ही क्या सकता है ? आप घेराव छोड़ कर वापस आ गए परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् ताइफ़ के लोग भी मुसलमान हो गए ।

## विजय मक्का और हुनैन के पश्चात्

इन जंगों से निश्चिंत होने के पश्चात् वह माल जो पराजित दुश्मनों के जुर्मानों और लड़ाई के मैदान में छोड़ी हुई चीज़ों से जमा हुआ था विधि अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लस को इस्लामी फ़ौज में बांटना था परन्तु इस अवसर पर आपने मुसलमानों में बांटने के स्थान पर मक्का के आस-पास के लोगों में बांट दिया । इन लोगों में अभी ईमान तो पैदा नहीं

हुआ था । बहुत से तो अभी काफ़िर ही थे और जो मुसलमान थे वह अभी नए-नए मुसलमान हुए थे । यह उनके लिये एक बहुत ही नई चीज़ थी कि एक क़ौम अपना माल दूसरे लोगों में बांट रही है । इस माल के बांटने से उनके मन में नेकी और तक़वा (सयंम) पैदा होने के स्थान पर और भी लालसा बढ़ गई । उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लस के गिर्द जमघटा (घेरा) डाल लिया और अधिक मांग मांग कर आप को तंग करना शुरू किया, यहां तक कि धकेलते हुए वह आपको एक पेड़ तक ले गए । एक व्यक्ति ने आप की चादर जो आपके कंधों पर रखी हुई थी पकड़ कर इस तरह मरोड़ना शुरू की कि आप का दम घुटने लगा । आप ने फ़रमाया हे लोगो ! यदि मेरे पास कुछ और होता तो मैं वह भी तुम्हें दे देता । तुम मुझे कभी कंजूस या कमज़ोर दिल नहीं देखोगे । फिर आप अपनी ऊँटनी के पास गए और उसका एक बाल तोड़ा और उसे ऊँचा किया और फ़रमाया हे लोगों । मुझे तुम्हारे मालों में से इस बाल के बराबर भी आवश्यकता नहीं । सिवाय इस पाँचवें भाग के जो अरब के नियमानुसार सरकार का अधिक़ार है परन्तु वह पाँचवां भाग भी मैं अपने ऊपर ख़र्च नहीं करता बल्कि वह भी तुम्हीं लोगों के कार्यों पर ही खर्च किया जाता है । अतः याद रखो ख़ियानत (ग़बन) करने वाला व्यक्ति क़यामत (प्रलय) के दिन ख़ुदा के सामने इस ख़ियानत (ग़बन) के कारण अपमानित होगा ।

(अल् सीरतुल् हल्बियः, भाग 3, पृ. 135)

लोग कहते हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लस बादशाह बनने के इच्छुक थे । क्या बादशाहों और प्रजा में ऐसा ही संबन्ध हुआ करता है ? क्या किसी को इतना साहस होता है कि बादशाह को इस प्रकार धकेलता हुआ ले जाए और उसके गले में पटका डालकर उसको घोंटे । अल्लाह के रसूलों के अतिरिक्त यह उदाहरण और कौन दिखा सकता है । लेकिन सारा माल ग़रीबों में बांट देने पर भी, फिर भी कुछ ऐसे कठोर दिल लोग उपस्थित थे जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लस की इस बाँटने की क्रिया को न्यायिक प्रक्रिया नहीं समझते थे । अतः ज़ुल् ख़ैसरा नामी एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और उसने कहा, हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) जो कुछ आपने आज किया है वह

मैंने देखा है । आपने फ़रमाया तुमने क्या देखा ? उसने कहा कि मैंने यह देखा कि आपने आज ज़ुल्म किया है और न्याय से काम नहीं लिया । आपने फ़रमाया तुम पर अफ़सोस ! यदि मैंने न्याय नहीं किया तो फिर दुनिया में और कौन सा व्यक्ति है जो न्याय करेगा । उस समय सहाबा(र) जोश में खड़े हो गए। अत: जब वह व्यक्ति मस्जिद से उठ कर गया तो उनमें से कुछ ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! यह व्यक्ति वाजिबुल् क़त्ल अर्थात् इसे मौत का दण्ड दिया जाना चाहिए । क्या आप हमें आज्ञा देते हैं कि हम इसे मौत के घाट उतार दें ? आपने फ़रमाया यदि यह व्यक्ति क़ानून की पाबंदी करता है तो हम इसको किस प्रकार मार सकते हैं । सहाबा(र) ने कहा हे अल्लाह के रसूल एक व्यक्ति देखने में कुछ और होता है परन्तु उसके मन में कुछ और होता है। क्या ऐसा व्यक्ति दण्डनीय नहीं होता ? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे ख़ुदा ने यह आदेश नहीं दिया कि मैं लोगों से उनके मन के विचारानुसार व्यवहार करूँ । मुझे तो यह आदेश दिया गया है कि मैं उनके ज़ाहिर (प्रकट) व कथनानुसार उनके साथ व्यवहार करूँ । फिर आपने फ़रमाया यह और इसके साथी एक दिन इस्लाम से बग़ावत करेंगे । अत: हज़रत अली(र) के युग में यह व्यक्ति और इसके क़बीले के लोग उन बाग़ियों के सरदार थे जिन्होंने हज़रत अली से बग़ावत की और 'ख़्वारिज़' के नाम से आज तक प्रसिद्ध हैं ।

हवाज़न से निश्चिंत होकर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना तश्रीफ़ ले गए । यह मदीना वालों के लिये फिर एक नया ख़ुशी का दिन था । एक बार ख़ुदा के रसूल मक्का के लोगों के अत्याचारों से तंग आकर मदीना चले गए थे और आज ख़ुदा का रसूल मक्का फ़त्ह (विजय) करने के बाद अपनी ख़ुशी से और अपने वचन को निभाने के लिए दोबारा मदीना में दाखिल हो रहा था ।

## ग़ज़्वऐ तबूक

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का विजय कर लिया तो अबु आमिर मदनी जो ख़ज़रज क़बीला में से था और यहूदियों और इसाईयों के मेल मिलाप होने के कारण ज़िक्र व वज़ीफ़ा (झाड़-फूँक) करने का आदी

(व्यसनी) था । अतः इसी कारण लोग उसको राहिब (वैरागी) कहते थे । परन्तु वह धर्म से इसाई नहीं था । यह व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मदीना में पहुँच जाने के बाद मक्का की तरफ भाग गया था । जब मक्का भी फ़त्ह हो गया तो यह सोचने लगा कि अब मुझे इस्लाम के ख़िलाफ़ षडयन्त्र रचने के लिये कोई और उपाय करना चाहिये । अन्ततः उसने अपना नाम और वेष-भूषा व स्वभाव बदल लिया और मदीना के पास क़बा नामी गांव में जाकर रहना शुरू कर दिया । वर्षों बाहर रहने के कारण और कुछ वेश-भूषा बदल देने के कारण मदीना के लोगों ने आम तौर पर उसको न पहचाना केवल वही मुनाफ़िक़ ही उसको जानते थे जिनके साथ उसने अपना संबन्ध स्थापित कर लिया था । उसने मदीना के मुनाफ़िक़ों के साथ मिल कर यह षड्यन्त्र रचा कि मैं शाम (सीरिया) जाकर इसाई हुकूमत और इसाई अरब क़बीलों को भड़काता हूँ और उनको मदीना पर हमला करने के लिये तैयार करता हूँ । इधर तुम यह मशहूर करना शुरू कर दो कि शाम की फ़ौजें मदीना पर हमला कर रही हैं । यदि मेरी स्कीम कामयाब हो गई तो फिर भी इन दोनों की मुठभेड़ हो जायेगी और यदि मेरी स्कीम कामयाब नहीं हुई तो अफ़्वाहों (जन श्रुति) के कारण हो सकता है कि मुसलमान शायद स्वयं जाकर शाम पर आक्रमण कर दें । इस प्रकार क़ैसर की सरकार और इनमें लड़ाई शुरू हो जायेगी और हमारा काम बन जायेगा । अतः यह व्यक्ति ये तहरीफ़ (हलचल) पैदा करके शाम चला गया तथा मदीना के मुनाफ़क़ों ने प्रतिदिन मदीना में यह ख़बरें मशहूर करनी शुरू कर दीं कि हमें फ़लां क़ाफ़िला मिला था और उसने बताया था कि सीरिया की फ़ौजें मदीना पर हमला करने की तैयारी कर रही हैं । दूसरे दिन फिर कह देते हमें फ़लां क़ाफ़िला के लोग मिले थे और उन्होंने कहा था कि मदीना पर सीरिया की सेनाएँ चढ़ाई करने वाली हैं । यह ख़बरें इतनी तेज़ी से फैलनी शुरु हुईं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उचित समझा कि आप इस्लामी फ़ौज लेकर स्वयं शामी फ़ौज के मुक़ाबला के लिये जायें मुसलमानों के लिये यह बहुत ही कठिनाई के दिन थे । भुखमरी का साल था । पिछले मौसम में फल और अनाज की पैदावार भी कम हुई थी । और इस मौसम का अनाज अभी पैदा नहीं हुआ था । सितम्बर का अन्तिम या अक्तूबर का प्रारम्भ था ।

जब आप(स) इस जंग के लिये निकले । मुनाफ़िक़ तो जानते थे कि यह सब शरारत है और यह कि उन्होंने यह सब चालाकी इसलिये की है कि यदि सीरिया की फ़ौज आक्रमण न करे तो स्वयं मुसलमान सीरिया वालों से जा लड़ें। अत: इस प्रकार बर्बाद हो जायें । मौता की जंग के हालात उनके सामने थे। उस समय मुसलमानों को इतनी बड़ी सेना से पाला पड़ा था कि वह बहुत कुछ नुकसान उठाकर बड़ी मुश्किल से बचे थे । अब वह एक दूसरी मौता अपनी आँखों से देखना चाहते थे, कि जिसमें स्वयं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नऊज़ोबिल्ला शहीद हो जायें । इसलिए मुनाफ़िक़ एक तरफ प्रतिदिन ख़बरें उड़ाते थे कि हमें इस ढंग से पता चला है कि दुश्मन हमला करने वाला है और हमें ऐसे सूत्रों से पता चला है कि शाम की फौजें आ रही हैं परन्तु दूसरी तरफ लोगों को डरा रहे थे कि इतनी बड़ी फ़ौज का मुक़ाबला आसान नहीं, तुम्हें जंग के लिये नहीं जाना चाहिये । ऐसा करने से उनका उद्देश्य यह था कि मुसलमान हमला करने के लिये अवश्य जायें किन्तु थोड़ी संख्या में ताकि वह अधिक से अधिक पराजित हों परन्तु मुसलमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की घोषणा पर कि हम सीरिया की ओर जाने वाले हैं बड़े जोश और इख़्लास से आगे बढ़कर अपने आपको प्रस्तुत कर रहे थे । ग़रीब मुसलमानों के पास जंग का सामान कहां थे ? राज्य का कोष भी ख़ाली था । ऐसे में उनके समृद्ध दीनी भाई ही उनकी सहायता कर सकते थे । इसी कारण, प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से बढ़ कर क़ुर्बानी प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहा था । हज़रत उसमान(र) ने उस दिन अपने धन का अधिकतर भाग प्रस्तुत कर दिया जो कि एक हज़ार सोने के दीनार अर्थात् लगभग 25 हज़ार रुपये थे। इसी प्रकार दूसरे सहाबियों ने भी अपनी अपनी आय एवं सामर्थ्य अनुसार चन्दा दिया और इस प्रकार ग़रीब मुसलमानों के लिये सवारियाँ या तलवारें या भाले आदि इकट्ठे किये । सहाबा में क़ुर्बानी का इतना जोश था कि यमन के कुछ लोग जो मुसलमान होने के पश्चात् मदीना में आ गए थे और बहुत ही ग़रीबी की हालत में थे । उनके कुछ लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और कहा हे अल्लाह के रसूल ! हमें भी अपने साथ ले चलें, हम और कुछ नहीं चाहते । केवल यह कि हमें वहां तक पहुँचने का सामान मिल जाए । क़ुर्आन करीम में इन लोगों का वर्णन इस

प्रकार आता है कि :-

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ۝ (سورة توبہ:۹۲)

(सूर: तौब: आयत 92)

अर्थात् इस जंग में उन लोगों का सम्मिलित न होना कोई पाप नहीं जो तेरे पास इसलिये आते हैं कि तू उनके लिये कोई ऐसा साधन कर दे कि वह वहां तक पहुँच सकें । परन्तु तूने उनसे कहा कि मेरे पास तुम्हें वहां पहुँचाने का कोई साधन नहीं । फिर वह तेरी सभा से उठकर चले गए । ऐसी अवस्था में कि उनकी आँखों से दु:ख के कारण आँसू बह रहे थे कि अफ़सोस उनके पास कोई माल नहीं जिसको खर्च करके वह आज इस्लाम की सेवा कर सकें। अबू मूसा इन लोगों के सरदार थे, जब उनसे पूछा गया कि आपने उस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क्या मांगा था ? इस पर उन्होंने कहा ख़ुदा की क़सम ! हमने ऊँट नहीं मांगे, हमने घोड़े नहीं मांगे, हमने सिर्फ यह कहा था कि हम नंगे पाँव हैं और इतनी लम्बी यात्रा पैदल नहीं चल सकते हमें केवल जूतियों के जोड़े मिल जायें तो हम जूतियां पहनकर भागते हुए ही अपने भाईयों के साथ इस जंग में सम्मिलित हो जायेंगे । चूँकि फ़ौज को सीरिया की ओर जाना था और मौता की जंग का दृश्य मुसलमानों की आँखों के सामने था । इसलिये प्रत्येक मुसलमान के मन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुरक्षा का विचार सब विचारों से श्रेष्ठ था । औरतें तक भी इस ख़तरा को महसूस कर रहीं थीं तथा अपने पतियों और अपने बेटों को जंग में जाने की प्रेरणा दे रही थीं । इस इख़्लास और जोश का अनुमान इस प्रकार भी हो सकता है कि एक सहाबी जो किसी कार्य से बाहर गए हुए थे वह उस समय लौटे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सेना लेकर मदीना से निकल चुके थे । एक लम्बी जुदाई के बाद जब वो ये विचार लेकर अपने घर में प्रवेश हुए कि अपनी प्रिय पत्नी को जाकर देखेंगे और ख़ुश होंगे तो उन्होंने अपनी पत्नी को आंगन में बैठे हुए देखा और प्यार से गले लगाने और प्रेम व्यक्त करने के लिये तेज़ी से उसकी ओर बढ़े । जब वह

अपनी पत्नी के निकट गए तो उनकी पत्नी ने उनको दोनों हाथों से धक्का देकर पीछे हटा दिया । उस सहाबी ने चकित होकर अपनी पत्नी का मुँह देखा और पूछा कि इतने समय दूर रहने के पश्चात् मिलने पर ऐसा व्यवहार किस लिए ? पत्नि ने उत्तर दिया कि क्या तुमको शर्म नहीं आती कि ख़ुदा का रसूल उस ख़तरे के स्थान पर जा रहा है और तुम अपनी पत्नि से प्रेम प्रसंग का साहस करते हो । पहले जाओ अपना फ़र्ज़ (कर्तव्य) पूरा करो उसके पश्चात् यह बातें देखी जायेंगी । वह सहाबी उसी समय घर से निकल गए । और अपनी सवारी पर काठी चढ़ाई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से तीन कोस की दूरी पर जाकर मिल गए।

कुफ़्फ़ार का यह विचार था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन अफ़वाहों के कारण बिना सोचे समझे सीरिया की सेनाओं पर आक्रमण कर देंगे परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस्लामी चरित्र के अनुयायी थे । जब आप सीरिया के निकट ''तबूक'' नामक स्थान पर पहुँचे तो आपने इधर-उधर आदमी भेजे ताकि वह पता करें कि वास्तविकता क्या है । जब इन सभी सूचनाकारों ने यह सूचना दी कि कोई सीरिया की सेना एकत्र नहीं हो रही । इस पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ दिन वहां ठहरे तथा आस-पास के क़बीलों से समझौता करके बिना किसी लड़ाई के वापस आ गए ।

यह सारी यात्रा दो अढ़ाई महीने की थी । जब मदीना के मुनाफ़िक़ों को पता चला कि लड़ाई भिड़ाई कुछ नहीं हुई और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सकुशल वापस आ रहे हैं तो वह समझ गए कि हमारी मुनाफ़िक़ाना चालों का भेद मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर खुल गया होगा और शायद यह कि अब हम दण्ड से नहीं बच सकते । तब उन्होंने मदीना से कुछ दूरी पर एक तंग रास्ता पर जिसमें से केवल एक सवार ही गुज़र सकता था कुछ आदमी बिठा दिये । जब आप उस स्थान के निकट पहुँचे तो अल्लाह तआला ने आपको वही (आकाशवाणी) द्वारा बता दिया कि आगे दुश्मन रास्ता के दोनों ओर छुपा हुआ है । आपने एक सहाबी को आदेश दिया कि जाओ और वहां जाकर देखो । वह सवारी को तेज़ करके वहां पहुँचे तो उन्होंने कुछ आदमी छुपे हुए देखे । जो इस प्रकार बैठे हुए थे जैसे

आक्रमणकारी बैठा करते हैं। उनके वहां पहुँचने पर वह वहां से भाग गए, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका पीछा करना उचित नहीं समझा।

जब आप मदीना पहुँचे तो मुनाफ़िक़ों ने जो इस जंग में सम्मिलित नहीं हुए थे कई प्रकार से विवशता प्रकट करनी शुरू कर दी और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें मान लिया, परन्तु अब समय आ चुका था कि मुनाफ़िकों (जिनके मन में कुछ, और बाहर कुछ और होता है) की वास्तविकता मुसलमानों पर स्पष्ट कर दी जाये। अतः अल्लाह तआला ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आदेश दिया कि 'क़बा' की वह मस्जिद जो मुनाफ़िक़ों ने इस लिये बनाई थी कि नमाज़ के बहाने से वहां जमा हुआ करेंगे और मुनाफ़क़ाना मशविरे किया करेंगे, वह गिरा दी जाये और उन्हें मजबूर किया जाये कि वह मुसलमानों की दूसरी मस्जिदों में नमाज़ पढ़ा करें। यद्यपि यह इतनी बड़ी शरारत थी परन्तु उनको कोई शारीरिक दण्ड या जुर्माना आदि नहीं किया गया।

तबूक से वापसी के बाद तायफ़ के लोगों ने भी आकर इस्लाम क़बूल कर लिया और उसके पश्चात् अरब के विभिन्न क़बीलों ने बारी बारी आकर इस्लामी राज्य में शामिल होने की आज्ञा प्राप्त की। इस प्रकार थोड़े ही समय में सारे अरब पर इस्लामी झण्डा फहराने लगा।

## हज्जतुल् विदा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक ख़ुत्बः (आँहज़रत(स) का अन्तिम एतिहासिक भाषण)

हिजरी सन् के नौवें साल आप(स) ने मक्का जाकर काबा का हज्ज किया और उसी दिन आप पर क़ुर्आन शरीफ़ की यह प्रसिद्ध आयत उतरी कि :-

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْناً. (سورہ مائدہ:۴)

(सूरः अल्-माइदः, आयत-4)

अर्थात् आज मैंने तुम्हारे धर्म को तुम्हारे लिये संपूर्ण कर दिया है और जितने रूहानी इनाम (आध्यात्मिक अनुदान) ख़ुदा तआला की ओर से बन्दों पर उतारे जा सकते हैं वह सब मैंने तुम्हारी उम्मत (समुदाय) को प्रदान कर दिये हैं और इस बात का फ़ैसला कर दिया है कि तुम्हारा दीन ख़ालिस अल्लाह तआला की अताअत अर्थात आज्ञा पालन पर आधारित है।

आपने यह आयत मुज़्दल्फ़: के मैदान में जबकि सभी लोग हज के लिये एकत्रित होते हैं सब लोगों के सामने ऊँची आवाज़ में पढ़कर सुनाई। मुज़्दल्फ़: से लौट कर हज के नियमानुसार आप मिना में ठहरे और ग्यारहवीं ज़ुलहिज्जह को आपने सभी मुसलमानों के सामने खड़े होकर भाषण दिया। जिसका विषय यह था :-

''हे लोगो ! मेरी बात को भलि भांति सुनो, क्योंकि मैं नहीं जानता कि इस साल के बाद कभी भी मैं तुम लोगों के बीच इस मैदान में खड़े होकर कोई भाषण दे सकूँगा। तुम्हारी जानों और तुम्हारे मालों को ख़ुदा तआला ने एक दूसरे के हमला से क़यामत (प्रलय) तक के लिये सुरक्षित ठहरा दिया है। ख़ुदा तआला ने प्रत्येक व्यक्ति के लिये विरासत (उत्तराधिकार) में उसका भाग निश्चित कर दिया है। ऐसी कोई वसीयत उचित नहीं, जो दूसरे वारिस के हक़ (अधिकार) को नुकसान पहुँचाए। जो बच्चा जिसके घर में पैदा हो वह उसका समझा जायेगा और यदि कोई बद्कारी (दुराचार) की बुनियाद पर उस बच्चे का दावा करेगा तो वह स्वयं शरअ् (धर्मानुसार) दण्डित होगा। जो व्यक्ति किसी के पिता की ओर अपने आपको मन्सूब अथवा संबंधित करता है या किसी को झूठ मूठ अपना मालिक ठहराता है। ख़ुदा और उसके फ़रिश्तों और समस्त मानव जाति की उस पर लानत (धिक्कार) है। हे लोगो ! तुम्हारे कुछ हक़ (अधिकार) तुम्हारी पत्नियों पर हैं तथा तुम्हारी पत्नियों के कुछ अधिकार तुम पर हैं। उन पर तुम्हारा यह अधिकार है कि वह इफ़्फ़त अथवा पवित्र जीवन व्यतीत करें और ऐसे चरित्रहीन ढंग न अपनाएँ जिससे पति को अपनी जाति में अपमानित होना पड़े, यदि वह ऐसा करें तो तुम (जैसा कि क़ुर्आन करीम का आदेश है कि पूरी तहक़ीक और अदालती फ़ैसला के बाद ऐसा किया जा सकता है।) उन्हें दण्ड दे सकते हो परन्तु उसमें भी सख़्ती न करना, परन्तु यदि वह ऐसा कोई अपराध नहीं करतीं जो परिवार

और पति की इज़्ज़त को बट्टा लगाने वाला हो तो तुम्हारा काम है कि तुम अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनके खाने पीने और पहनने आदि का प्रबन्ध करो और याद रखो कि सदैव अपनी पत्नियों से अच्छा व्यवहार करना क्योंकि ख़ुदा तआला ने उनकी देख रेख तुम्हें सौंपी है, औरत कमज़ोर होती है और वह अपने अधिकारों की स्वयं रक्षा नहीं कर सकती है । तुमने जब उनके साथ विवाह किया तो उनके अधिकारों की रक्षा के लिए ख़ुदा तआला को गवाह ठहराया था और ख़ुदा तआला के क़ानून और अधिकार के अर्न्तगत ही तुम उनको अपने घर लाए थे । (अतः ख़ुदा तआला की ज़मानत को अपमानित या निरादर न करना तथा औरतों के अधिकार निभाने का सदैव ध्यान रखना ।) हे लोगो ! तुम्हारे हाथों में अभी कुछ जंगी क़ैदी भी शेष हैं । मैं तुम्हें उपदेश देता हूँ कि उनको वह खाना देना जो तुम स्वयं खाते हो तथा जो तुम स्वयं पहनते हो, उनको भी वैसा ही पहनाना । यदि उनसे कोई ऐसा अपराध हो जाये जो तुम माफ़ नहीं कर सकते तो उनको किसी और के पास बेच दो, क्योंकि वह ख़ुदा के बन्दे हैं और उनको दुःख देना किसी प्रकार भी उचित नहीं । हे लोगो ! जो कुछ मैं तुमसे कहता हूँ सुनों और उसको भली भांति याद रखो । प्रत्येक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है । तुम सब एक ही श्रेणी के हो । तुम सभी मानव चाहे किसी जाति और किसी हैसियत अथवा प्रतिष्ठा के हो, मानव होने के कारण एक ही श्रेणी के हो और यह कहते हुए आपने अपने दोनों हाथ उठाए और दोनों हाथों की उंगलियां मिला दीं और कहा जिस तरह दोनों हाथों की उंगलियां आपस में बराबर हैं उसी प्रकार तुम (समस्त) मानव जाति आपस में समान हो । तुम्हें एक दूसरे पर श्रेष्ठता और प्रतिष्ठता प्रकट करने का कोई अधिकार नहीं । तुम आपस में भाइयों की तरह हो । फिर फ़रमाया, तुम्हें पता है आज कौन सा महीना है ? क्या तुम्हें पता है यह कौन सा क्षेत्र है ? क्या तुम जानते हो यह कौन सा दिन है ? लोगों ने कहा हां ! यह पवित्र (मुक़द्दस) महीना है, यह पवित्र क्षेत्र है और यह हज का दिन है । हर जवाब पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे जिस प्रकार यह महीना पवित्र है, जिस प्रकार यह क्षेत्र पवित्र है, जिस प्रकार यह दिन पवित्र है उसी प्रकार अल्लाह तआला ने हर इन्सान (मानव) की जान और उसके माल को पवित्र (मुक़द्दस) ठहराया है ।

अत: किसी की जान और किसी के माल पर हमला करना ऐसा ही अनुचित (नाजायज़) है जैसे कि इस महीने, इस क्षेत्र तथा इस दिन का अपमान और अनादर करना । यह आदेश आज के लिये नहीं कल के लिये नहीं, अपितु उस दिन तक के लिये है कि तुम ख़ुदा से जाकर मिलो । फिर फ़रमाया यह बातें जो मैं तुमसे आज कहता हूँ इनको दुनिया के किनारों तक पहुँचा दो, क्योंकि संभव है कि जो लोग आज मुझसे सुन रहे हैं उनकी अपेक्षा वह लोग जो मुझसे नहीं सुन रहे, इन (बातों का अधिक अनुसरण करने वाले हों (अर्थात अमल करने वाले हों) ।''

यह संक्षिप्त ख़ुत्बा (उपदेश) बताता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मानव जाति के कल्याण और उसके अमन का कितना ख्याल था तथा औरतों और कमज़ोरों के अधिकारों का आप कितना ध्यान रखते थे । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब यह जान गए कि उनकी मृत्यु निकट है । मानो अल्लाह तआला ने आप(स) को बता दिया था कि अब आप की ज़िन्दगी के दिन थोड़े रह गए हैं । आपने न चाहा कि वह औरतें जो मनुष्य के जन्म से ही पुरुषों की दासी ठहराई जाती थीं उनके अधिकारों को सुरक्षित रखने का आदेश देने से पहले, आप इस दुनिया से चले जायें । वह जंगी क़ैदी जिनको लोग दास का नाम दिया करते थे तथा जिन पर भिन्न-भिन्न प्रकार के अत्याचार किया करते थे, आपने न चाहा कि उनके अधिकार सुरक्षित करने से पहले आप इस दुनिया से गुज़र जायें । मानव जाति का आपस में ऊँच नीच तथा भेद-भाव का वह अन्तर जो मानव जाति में से कुछ को तो आकाश पर बिठा देता था और कुछ को अथाह गहराइयों में फेंक देता था, जो क़ौमों, जातियों तथा देश-विदेश के बीच फूट और लड़ाई पैदा करने और उसके निरन्तर जारी रखने का कारण होता था । आप(स) ने न चाहा कि जब तक इस ऊँच-नीच तथा भेद-भाव के अन्तर को न मिटा दें इस दुनिया से चले जायें । वह एक दूसरे के अधिकारों का हनन करना तथा एक दूसरे की जान और माल को लूट लेना अपने लिये हलाल एवं उचित समझना जो सदा ही चरित्रहीन युग में मनुष्य की सबसे बड़ी लानत और फटकार होती है । आपने न चाहा कि जब तक इस विचार धारा को कुचल न दें और मानव जाति की जानों और उनके मालों को वह पवित्रता तथा वह इज़्ज़त न प्रदान

कर दें जो ख़ुदा तआला के पावन महीनों और ख़ुदा तआला के पवित्र और बरकत वाले स्थानों को प्राप्त है, आप इस दुनिया से गुज़र जायें । क्या औरतों से सहानुभूति, अधीन अथवा सहायक लोगों पर हमदर्दी, मानव जाति में अमन व शांति की स्थिरता की इच्छा और मानव जाति में समानता की स्थिरता की इतनी इच्छा दुनिया के किसी और व्यक्ति में पाई जाती है ? क्या आदम से लेकर आज तक किसी मनुष्य ने भी मानव जाति से हमदर्दी का ऐसा आवेश और ऐसा जोश दिखाया है ? यही कारण है कि इस्लाम में औरत आज तक अपनी जायदाद की मालिक है जबकि यूरोप ने इस श्रेणी व दर्जा को इस्लाम के तेरह सौ साल बाद प्राप्त किया । यही कारण है कि इस्लाम में दाखिल होने वाला प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के समान हो जाता है । चाहे वह कितनी ही छोटी और नीच समझी जाने वाली जाति से सम्बन्ध रखता हो । आज़ादी और समानता का जज़्बा (मनोवृति) सिर्फ इस्लाम ने ही दुनिया में स्थापित किया है और ऐसे रंग में स्थापित किया है कि आज तक भी दुनिया की दूसरी क़ौमें उसका उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकतीं । हमारी मस्जिद में एक बादशाह और एक महान व श्रेष्ठ धार्मिक गुरु और साधारण आदमी बराबर है । उनमें कोई भेदभाव और अन्तर नहीं कर सकता, जबकि दूसरे धर्मों के पूजा स्थलों में अब तक छोटे और बड़े का भेदभाव किया जाता है । यद्यपि वह कौमें आज़ादी और समानता का दावा मुसलमानों से भी कहीं अधिक ज़ोर शोर से कर ही हैं ।

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात (मृत्यु)

जब आप इस (हज) यात्रा से वापस आ रहे थे तो रास्ते में पुनः आप(स) ने अपने सहाबा(र) को अपनी मृत्यु की ख़बर दी । आप(स) ने फ़रमाया, हे लोगो ! मैं तुम्हारी तरह का एक आदमी हूँ । निकट है कि अल्लाह तआला का फ़रिश्ता मेरी तरफ़ आए और मुझे उसका जवाब देना पड़े । फिर फ़रमाया हे लोगों ! मुझे मेरे मेहरबान और ख़बर देने वाले आक़ा अर्थात् अल्लाह ने सूचना दी है कि नबी अपने से पहले नबी की आधी आयु पाता है (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बताया गया था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की आयु लगभग एक सौ बीस (120) वर्ष थी और उससे

आपने तर्क दिया कि मेरी आयु साठ (60) वर्ष के लगभग होगी । चूँकि उस समय आप की आयु बासठ या त्रेसठ वर्ष की थी । आपने इस ओर इशारा किया कि मेरी आयु समाप्त होती दिखाई देती है । इस हदीस का यह अर्थ नहीं कि प्रत्येक नबी अपने से पहले आने वाले नबी से आधी आयु पाता है । अपितु इस हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने केवल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की आयु का अपनी आयु से मुक़ाबला किया है) अत:मेरा विचार है कि अब मैं जल्दी बुलाया जाऊँगा और मैं मृत्यु को प्राप्त हो जाऊँगा हे मेरे सहाबा(र) मुझसे भी ख़ुदा के सामने पूछा जायेगा, तुम उस समय क्या कहोगे ? उन्होंने कहा, हे अल्लाह के रसूल ! हम कहेंगे कि आपने भली भांति इस्लाम का प्रचार किया और आपने अपना सारा जीवन ख़ुदा के दीन (धर्म) की सेवा में लगा दिया और आपने मानवता की भलाइयों को उसकी ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया । अल्लाह आपको हमारी ओर से अच्छे से अच्छा बदला दे । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, क्या तुम इस बात की गवाही नहीं देते कि अल्लाह एक ही है और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) उसके बन्दे और रसूल हैं। और जन्नत भी हक़ (सच) है और दोज़ख़ (नर्क) भी सत्य है । इसी प्रकार मौत भी प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य आनी है और मौत के बाद जीवन भी प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य मिलना है । क़यामत (प्रलय) भी अवश्य आने वाली है । अत: यह कि अल्लाह तआला समस्त मानव जाति को क़बरों में से दोबारा जीवित करके इकट्ठा करेगा । उन्होंने कहा हां, हे अल्लाह के रसूल हम इसकी गवाही देते हैं। इस पर आपने ख़ुदा तआला को संबोधित करते हुए कहा हे ख़ुदा तू भी गवाह रह कि मैंने इन्हें इस्लाम के उसूल पहुँचा दिये हैं।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस हज से वापस आने के बाद लगातार मुसलमानों के अख़लाक़ (चरित्र) और उनके कर्मों के सुधार में लगे रहे और मुसलमानों को अपनी वफ़ात के दिन की उम्मीद के लिये तैयार करते रहे । एक दिन आप ख़ुत्बः के लिये खड़े हुए और फ़रमाया आज मुझे अल्लाह तआला की ओर से इल्हाम (भविष्यवाणी) हुआ है कि उस दिन को याद करो जब ख़ुदा तआला की सहायता और विजय उसकी ओर से पिछले युगों से भी अधिक ज़ोर (तीव्रता) से आयेगी । प्रत्येक क़ौम व जाति तथा धर्मों के लोग

गिरोहों के रूप में इस्लाम में दाखिल होना शुरू होंगे । अतः हे मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अब तुम ख़ुदा तआला की प्रशंसा में लग जाओ तथा उससे दुआ करो कि जिस दीन (धर्म) की नींव तुमने रखी है वह उस से हर प्रकार की बाधाओं को दूर कर दे । यदि तुम यह दुआएँ करोगे तो ख़ुदा तआला अवश्य ही तुम्हारी दुआओं को सुनेगा । इसी प्रकार आप ने फ़रमाया, ख़ुदा तआला ने अपने एक बन्दे से कहा कि चाहे तुम मेरे पास आ जाओ या तुम चाहो तो कुछ देर और दुनिया का सुधार करो, परन्तु उस ख़ुदा के बन्दे ने जवाब में कहा कि मुझे आप के पास आना अधिक पसंद है । जब आप ने सभा में यह बात सुनाई तो हज़रत अबू बकर रो पड़े । सहाबा(र) को हैरानी हुई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो इस्लाम की कामियाबियों की बात कर रहे हैं और अबू बकर रो रहे हैं । हज़रत उमर(र) कहते हैं मैंने कहा इस बूढ़े को क्या हो गया है कि यह खुशी की सूचना पर रोता है, परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समझते थे कि अबू बकर ही आप की बात को सही व उचित ढंग से समझता है तथा उसने यह समझ लिया है कि इस सूरः में मेरी वफ़ात की ख़बर है । आपने फ़रमाया अबू बकर मुझे बहुत ही प्यारा है । यदि अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी से अथाह प्यार करना जायज़ होता तो मैं अबू बकर(र) से ही प्यार करता । हे लोगो ! मस्जिद में जितने लोगों के दरवाज़े खुलते हैं आज से सब दरवाज़े बंद कर दिये जायें केवल अबू बकर(र) का दरवाज़ा खुला रहे । इसमें यह भविष्यवाणी थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात् अबु बकर(र) ख़लीफ़ा होंगे तथा नमाज़ पढ़ाने के लिये मस्जिद में उस रास्ता से आना पड़ेगा । इस घटना के वर्षों बाद जब हज़रत उमर(र) ख़लीफ़ा थे । एक बार आप मज्लिस में बैठे हुए थे कि आप ने फ़रमाया बताओ इज़ा जाअ नस्रुल्लाहे वल् फ़त्हो वाली सूरः में से क्या विषय निकलता है ? मानों अपनी सभा में बैठने वालों की इस संबन्ध में परीक्षा ली । जिसके समझने से वह इस सूरः के उतरने के समय वंचित रहे थे । इब्ने अब्बास जो उस समय दस ग्यारह वर्ष के थे । इस समय लगभग 17-18 वर्ष के नौजवान थे । शेष सहाबा तो न बता सके । इब्ने अब्बास(र) ने कहा हे अमीरुल मोमेनीन । इस सूरः में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु की सूचना दी गई है ।

क्योंकि जब नबी अपना काम कर लेता है तो फिर दुनिया में रहना पसंद नहीं करता । हज़रत उमर(र) ने कहा सच है और मैं तुम्हारी बुद्धिमता की प्रशंसा करता हूँ । जब यह सूरः उतरी तो अबू बकर(र) इसका मतलब समझ गये थे। परन्तु हम न समझ सके ।

अन्ततः वह दिन आ गया जो प्रत्येक मनुष्य पर आता है । मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुनिया में अपना काम समाप्त कर चुके। ख़ुदा की वह्यी पूरी की पूरी उतर चुकी । मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र कूव्वते कुदसिया से एक नई क़ौम और एक नये आसमान तथा एक नई ज़मीन की नींव डाल दी गई । बोने वाले ने ज़मीन में हल चलाया, पानी दिया और बीज बो दिया तथा फ़सल तैयार की । अब फ़सल काटने का काम उसके ज़िम्मा नहीं था । वह एक मज़दूर की हैसियत से आया और मज़दूर ही की हैसियत से उसे इस दुनिया से जाना था, क्योंकि उसका इनाम (पुरस्कार) इस दुनिया की चीज़ें नहीं थीं बल्कि उसका इनाम अपने पैदा करने वाले और भेजने वाले की रज़ामन्दी प्राप्त करना था। जब फसल कटने पर आई तो उसने अपने रब्ब (पैदा करने वाले) से यह. इच्छा व्यक्त की कि वह उसे दुनिया से उठा ले और यह फ़सल बाद में दूसरे लोग काटें । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बीमार हुए । कुछ दिन तो कष्ट उठा कर भी मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने के लिये आते रहे । अन्ततः यह शक्ति भी न रही कि आप मस्जिद में आ सकते । सहाबा(र) कभी यह सोच भी नहीं सकते थे कि आपकी मृत्यु हो जायेगी परन्तु आप उन्हें बार-बार अपनी मृत्यु के निकट होने की सूचना देते रहे । एक दिन सहाबा की मज्लिस (सभा) लगी हुई थी । आपने फ़रमाया यदि किसी व्यक्ति से ग़लती हो जाए तो उचित यही है कि वह इसी दुनिया में उसे दूर कर दे, ताकि ख़ुदा के सामने लज्जित न होना पड़े । यदि मुझसे किसी का हक़ अनजाने में मारा गया हो तो वह मुझसे अपना हक़ मांग ले । और यदि अनजाने में मुझसे किसी को दुःख पहुँचा हो तो वह मुझसे आज बदला ले ले, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मुझे ख़ुदा के सांमने लज्जित होना पड़े । ये सुनकर सहाबा की आँखें भर आयीं तथा उनके मन में यह विचार गुज़रने लगा कि किस प्रकार दुःख उठाकर भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके आराम का ध्यान रखते रहे, किस

प्रकार आप भूखे रहकर उनको खिलाते रहे, अपने कपड़ों में पैबन्द (जोड़) लगाकर उनको अच्छा पहनाते रहे। फिर भी आपको दूसरों के हक़ का इतना ख्याल है कि आप उनसे कह रहे हैं कि यदि जाने अन्जाने में मुझसे किसी को दुःख पहुँचा हो तो आज वह मुझसे बदला ले ले। उस समय एक सहाबी(र) आगे बढ़े और उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! मुझे आपसे एक बार कष्ट पहुँचा था, जंग की कतारें तैयार हो रही थीं कि आप(स) पंक्ति में से होकर आगे बढ़े, उस समय आपकी कोहनी मेरे शरीर को लग गई थी, चूँकि आपने फ़रमाया है कि यदि जाने-अनजाने में भी किसी को कष्ट पहुँचा हो तो वह मुझसे बदला ले ले। अतः मैं चाहता हूँ कि इस समय आपसे उस कष्ट का बदला ले लूँ। सहाबा(र) जो दुःख के समुद्र में डूबे जा रहे थे यकायक उनकी यह अवस्था बदल गई। उनकी आँखों में से खून टपकने लगा। प्रत्येक व्यक्ति यह सोचने लगा कि यह व्यक्ति जिसने ऐसे अवसर पर सीख लेने के बजाय इस प्रकार की बात छेड़ दी है। इसे कड़े से कड़ा दण्ड मिलना चाहिये, परन्तु उस सहाबी(र) ने परवाह न की। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम ठीक कहते हो। तुम्हारा हक़ है। तुम बदला लो। अतः आपने करवट बदली और अपनी पीठ उसकी तरफ़ फेर दी और फ़रमाया लो मुझे कोहनी मार लो। उस सहाबी ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! जब मुझे कोहनी लगी थी उस समय मेरा शरीर नंगा था क्योंकि मेरे पास कुर्ता नहीं था, आपने फ़रमाया मेरा कुर्ता उठा दो और नंगे शरीर पर कोहनी मार कर अपना बदला ले लो। उस सहाबी ने आपका कुर्ता उठाया और कांपते हुए होंठों और आँसू बहाती हुई आँखों से झुक कर आपकी पीठ पर बोसा (चुम्मा) दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, यह क्या ? उसने जवाब में कहा हे अल्लाह के रसूल ! जब आप फ़रमाते हैं कि आप की मौत निकट है तो आपको छूने और आपको प्यार करने के अवसर हमें कहाँ मिलेंगे। यद्यपि आपकी कोहनी जंग के अवसर पर मुझे लगी थी परन्तु किसके मन में उस कोहनी के लगने से बदला लेने का विचार भी आ सकता है। मेरे मन में विचार आया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ये फ़रमाते हैं कि आज मुझसे बदला ले लो तो चलो इस बहाने से मैं आप को प्यार ही कर लूँ।

(बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब मरज़ुन्नबिय्यो व वफ़ातहू)

वे सहाबी जिनके दिल गुस्से से खून हो रहे थे इस बात को सुनकर उनके मन पश्चाताप करने लगे कि शायद यह अवसर हमें प्राप्त होता ।

रोग बढ़ता गया, मौत निकट आती गई । मदीना का सूरज पहले की सी चमक-दमक के बजाय अब सहाबा(र) की नज़रों में लगा । दिन चढ़ते थे परन्तु उनकी आँखों पर अन्धेरे का पर्दा बढ़ता चला जाता था । अन्ततः वह समय आ गया जब ख़ुदा के रसूल की पवित्र आत्मा दुनिया को छोड़कर अपने पैदा करने वाले ख़ुदा के चरणों में लीन होने वाली थी । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का श्वास तेज़ होने लगा तथा सांस लेने में कष्ट महसूस करने लगे । रसूलुल्लााह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आइशा(र) से फ़रमाया मेरा सर उठाकर अपनी छाती के साथ रख लो क्योंकि लेटे-लेटे सांस नहीं लिया जाता । हज़रत आइशा(र) ने आप(स) का सर उठाकर अपने सीने के साथ लगा लिया और आप(स) को सहारा देकर बैठ गईं । मौत का कष्ट भी आप सहन कर रहे थे । आप घबराहट से बैठे-बैठे कभी इस पहलू पर झुकते कभी उस पहलू पर और फ़रमाते थे ख़ुदा बुरा करे यहूद व नसारा (इसाइयों) का कि उन्होंने अपने नबियों के मरने के पश्चात् उनकी क़ब्रों को मस्जिदें बना लिया ।

(बुख़ारी किताबुल् मग़ाज़ी बाब मरज़न्नबिय्यो व वफ़ातहू)

यह आपका अपनी उम्मत के लिये अन्तिम उपदेश था कि यद्यपि तुम मुझे सब नबियों से अधिक प्रतिष्ठावान देखोगे और सबसे सफल पाओगे परन्तु याद रखना मेरे बन्दे (मानव) होने को कभी भूल न जाना । ख़ुदा का स्थान ख़ुदा के लिये ही समझना और मेरी क़ब्र को कभी एक क़ब्र से अधिक कुछ न समझना । यद्यपि दुनिया की शेष क़ौमें चाहे अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिदें बनालें और वहां बैठकर चिल्ले किया करें और उन पर चढ़ावे चढ़ाया करें या नज़रें (मन्नत-चढ़ावा) दें, परन्तु तुम्हारा ये काम नहीं होना चाहिये । तुम एक ख़ुदा की इबादत को स्थापित करने के लिये खड़े किये गए हो । यह कहते कहते आप की आँखें चढ़ गईं । उस समय आप इन शब्दों का उच्चारण फ़रमा रहे थे ।

اِلَى الرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى اِلَى الرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى.

इलर्रफ़ीक़िल् आला इलर्रफ़ीक़िल् आला

मैं अरशे मुअल्ला (ईश्वर के बैठने का सिंहासन) पर बैठने वाले अपने मेहरबान एवं कृपालु प्रियतम की ओर जाता हूँ । यह कहते कहते आपकी आत्मा शरीर से निकल गई ।

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर सहाबा(र) की हालत

जब सहाबा को मस्जिद में यह सूचना मिली, जिनमें से अधिकतर अपना काम-काज छोड़कर मस्जिद में आपके स्वस्थ होने का शुभसमाचार सुनने की प्रतीक्षा में बैठे थे तो उन पर एक पहाड़ सा टूट पड़ा । उस समय हज़रत अबूबकर(र) थोड़ी देर के लिये किसी काम से बाहर गए हुए थे । हज़रत उमर(र) मस्जिद में थे । जब उन्होंने लोगों को यह कहते सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु हो गयी है । तो उन्होंने म्यान से तलवार निकाल ली, और कहा ख़ुदा की क़सम ! जो व्यक्ति यह कहेगा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु हो गई है, मैं उसका सिर उड़ा दूँगा । अभी तक मुनाफ़िक दुनिया में बाकी हैं, इसलिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत (देहान्त) नहीं हो सकते । यदि उनकी आत्मा शरीर से अलग हुई है तो वह मूसा की तरह खुदा से मुलाक़ात के लिये गई है और फिर वापस आयेगी और दुनिया से मुनाफ़िक़ों का ख़ात्मा करेगी । यह कहा और नंगी तलवार लेकर इस दिल को हिला देने वाली ख़बर के दु:ख से पागलों की तरह इधर-उधर टहलने लगे और साथ-साथ यह कहते जाते थे कि यदि कोई व्यक्ति यह कहेगा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु हो गयी है तो मैं उसे क़त्ल कर दूँगा । सहाबा कहते हैं कि जब हमने हज़रत उमर(र) को इस प्रकार टहलते हुए देखा तो हमारे दिलों को कुछ ढाढस बंधी और हमने कहा उमर(र) सच कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु नहीं हुई है । लोगों को इस संबन्ध में धोखा लगा है । इस प्रकार उमर(र) की इस बात के साथ हमने अपने मन को तसल्ली (सांतवना) देनी शुरू की । इस बीच कुछ लोगों ने दौड़ कर हज़रत अबू बकर(र) को सारी घटना से सूचित किया और वह भी मस्जिद में पहुँच गए परन्तु किसी से बात न की, सीधे घर में चले गए और जाकर हज़रत

आयशा(र) से पूछा क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहान्त हो गया है ? हज़रत आयशा(र) ने फ़रमाया हां ! आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गए आपके मुँह से कपड़ा उठाया । आपके माथे पर चुम्बन दिया तथा मुहब्बत के चमकते हुए आँसू आप की आँखों से गिरे और आपने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआला आपको दो मौतें नहीं देगा अर्थात् यह नहीं होगा कि एक तो शारीरिक रुप से आपका देहान्त हो जाये और दूसरी मौत आप पर यह आ पड़े कि आपकी जमाअत एवं समुदाय ग़लत अक़ीदों (अशुद्ध विश्वास) तथा अशुद्ध विचारों में पड़ जाए । यह कहकर आप बाहर आए और कतारों को चीरते हुए ख़ामोशी के साथ मिम्बर (उपदेश मंच) की ओर बढ़े । जब आप मिम्बर (मंच) पर खड़े हुए तो हज़रत उमर(र) भी तलवार खींचकर आपके पास खड़े हो गए । इस नीयत के साथ कि यदि अबू बकर(र) ने यह कहा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु हो गई है तो मैं उनको क़त्ल कर दूँगा । जब आप बोलने लगे तो हज़रत उमर(र) ने उनका कपड़ा खींचा और आपको ख़ामोश करना चाहा, लेकिन उन्होंने कपड़े को झटककर उनके हाथ से छुड़ा लिया और फिर क़ुर्आन करीम की यह आयत पढ़ी-

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَائِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰى اَعْقَابِكُمْ

(सुरः आले इम्रान 145)

अर्थात् हे लोगो ! मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल अल्लाह तआला के एक रसूल थे उनसे पहले बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं और सबके सब मृत्यु पा चुके हैं । क्या यदि वह वफ़ात (मृत्यु) पा जायें या मारे जायें, तो तुम लोग अपने दीन (धर्म) को छोड़ कर फिर जाओगे ? दीन ख़ुदा का है मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तो नहीं । यह आयत उहद (जंग) के समय उतरी थी । जिस समय कुछ लोग यह सुनकर कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं । दिलछोड़ कर बैठ गए थे । इस आयत के पढ़ने के बाद आपने फ़रमाया, हे

लोगो ! من كان يعبد الله فان الله حي لا يموت मन काना यअ्बोदुल्लाह फ़इन्नल्लाह हरयुन ला यमूतो।

(अर्थात्) जो तुममें से अल्लाह की इबादत (पूजा) करता था तो उसे याद रखना चाहिये कि अल्लाह तआला जीवित है उसको कभी मौत नहीं आ सकती।

ومن كان منكم يعبد محمدا فان محمدا قدمات

व मन् कान मिन्कुम् यअ्बोदो मुहम्मदन् फ़इन्न मुहम्मदन् क़द् मात

(अर्थात्) और जो कोई मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इबादत (पूजा) करता था तो उसको मैं बता देता हूँ कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहान्त हो चुका है । हज़रत उमर(र) कहते हैं कि जिस समय अबू बकर(र) ने वमा मुहम्मदुन् इल्ला रसूल वाली आयत पढ़नी शुरू की तो मेरे होश उड़ गये। इस आयत के समाप्त होने तक मेरी रूहानी आँखें खुल गईं और मैं समझ गया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वास्तव में फ़ौत हो गए हैं । तब मेरे घुटने कांप गए और मैं निढाल होकर ज़मीन पर गिर गया । वह व्यक्ति जो तलवार से अबू बकर(र) को मारना चाहता था वह अब अबू बकर(र) के सत्य से भरपूर वाणी से स्वयं क़त्ल हो गया । सहाबा(र) कहते हैं कि हमें उस समय ऐसा लगता था कि यह आयत हमें भूल ही गई थी । उस समय हस्सान बिन् साबित(र) ने जो मदीना के एक बहुत बड़े कवि थे यह शैर पढ़े —

كنت السواد لناظری فعمی علیکم الناظر

من شاء بعدک فلیمت علیک کنت احاذرٌ

हे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ! तू मेरी आँख की पुतली था । आज तेरे मरने से मेरी आँखें अन्धी हो गईं । अब तेरे मरने के बाद कोई मरे । मेरा बाप मरे, मेरा भाई मरे, मेरा बेटा मरे, मेरी बीवी मरे, मुझे उनमें से किसी की मौत की परवाह नहीं, मैं तो सिर्फ तेरी ही मौत से डरता था।

यह शैर (पद्य) हर मुसलमान के दिल की आवाज़ था । इसके पश्चात् कई दिनों तक मदीना की गलियों में मुसलमान पुरुष और मुसलमान औरतें और मुसलमान बच्चे यही शैर पढ़ते फिरते थे कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ! तू तो हमारी आँखों की पुतली था, तेरे मरने से हम तो अन्धे हो गए, अब हमारा कोई प्यारा और निकटवर्ती रिश्तेदार भी मरे हमें इसकी परवाह नहीं । हमें तो तेरी ही मौत का ख़ौफ़ एवं डर था ।

اللهم صلى على محمد و على آل محمدٍ و بارك وسلم

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन् व अला आले मुहम्मदिन् व बारिक् व सल्लिम् ।